सुदूर दक्षिण पूर्व

सुदूर दक्षिण पूर्व

सुदूर दक्षिण पूर्व

गोविन्ददास

आदर्श प्रकाशन, जबलपुर
प्रगति प्रकाशन, नयी दिल्ली

कापी राइट
प्रथम संस्करण
१९५१

मूल्य ५॥)

आदर्श प्रकाशन, गोपाल बाग जबलपुर द्वारा प्रकाशित
और जयहिंद मुद्रणालय जबलपुर द्वारा मुद्रित।

लेखक

अनुक्रमणिका

न्यूजीलैंड में होनेवाली कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी परिषद मे भाग लेने वाले सदस्य
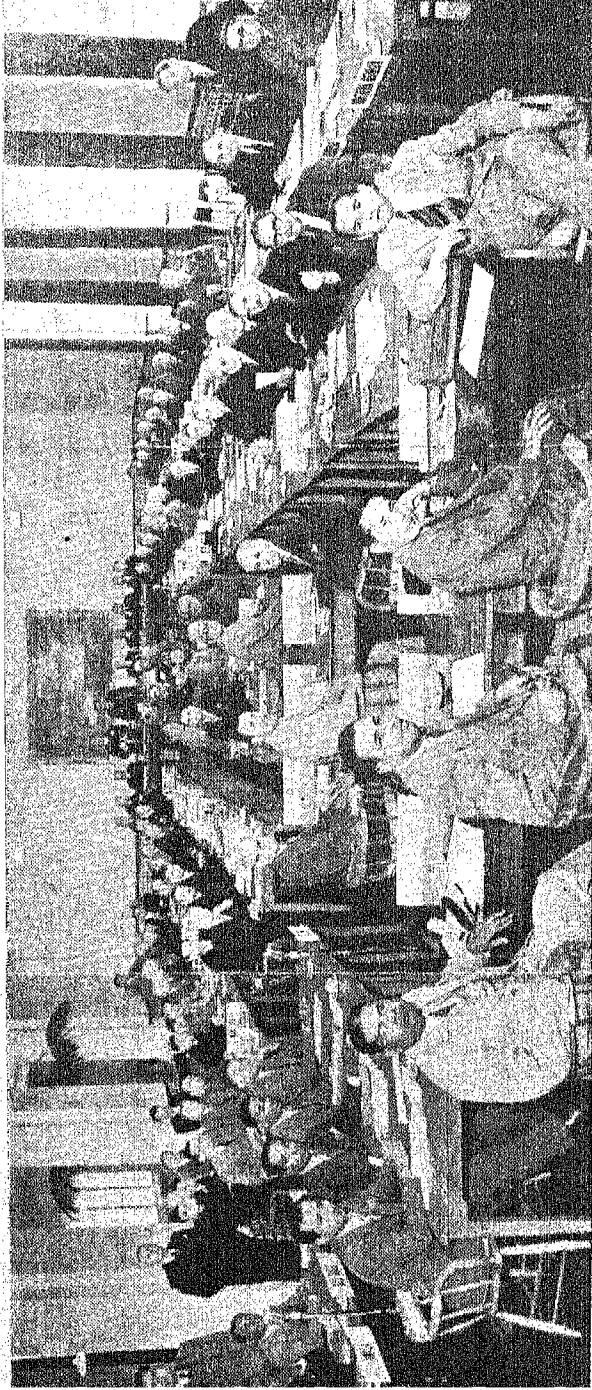
कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी एसोसियेशन की परिषद के प्रतिनिधियों का सामूहिक चित्र

१

जब सन १९३७-३८ में मैं पूर्व और दक्षिण आफ्रिका से लौटा था और उस यात्रा पर मैंने 'हमारा प्रधान उपनिवेश' नामक एक पुस्तक लिखी थी उस समय मैंने उस पुस्तक में लिखा था--

"किसी भी देश का पूरा ज्ञान समाचार-पत्रों या वहां से संबन्ध रखने वाली पुस्तकों के अध्ययन से नहीं हो सकता, इसका अनुभव मुझे आफ्रिका-यात्रा से हो गया।"

दक्षिण पूर्व में न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, सिंगापूर और फीजी जाकर मेरा उपर्युक्त विचार और अधिक दृढ़ हो गया। भारत इतना बड़ा देश है, हमारी समस्याएं इतनी जटिल और महान् हैं, हमारे देश में अन्य देशों की यात्रा की इतनी कम प्रथा है और गरीबी के कारण यात्रा के इतने कम साधन हैं कि हम इस संसार के भिन्न-भिन्न भागों में क्या है इसे बहुत कम जानते हैं। जो संपन्न हैं और जो विदेशों को जाते भी हैं उनकी ये यात्राएं योरोप तथा अमेरिका तक ही परिमित रहती हैं। अतः अधिक से अधिक योरोप और अमेरिका को छोड़ संसार के अन्य भागों से हमारा कोई संपर्क नहीं है और यदि है भी तो नहीं के बराबर। भूगोल में जिनको अनुराग है वे संसार के भिन्न-भिन्न भागों और विभागों को नक्शे पर अवश्य पहचान लेते हैं। इतिहास और संस्कृति से जिन्हें प्रेम है वे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से जिन स्थानों का महत्व है वहां का ज्ञान रखते हैं। परन्तु किसी भी जगह की सच्ची जानकारी जो वहां जाने से हो सकती है वह इस प्रकार की पहचान और ज्ञान से सर्वथा भिन्न है।

सन १९२३ में केवल २७ वर्ष की अवस्था में मैं स्वर्गीय पंडित मोतीलाल जी नेहरू के नेतृत्व में सर्वप्रथम केन्द्रीय धारा सभा का सदस्य हुआ। तब से अब तक इन २८ वर्षों में मैं केन्द्रीय असेम्बली, कौंसिल आफ स्टेट, विधान परिषद और पार्लमेंट किसी न किसी का सदस्य रहा। हां, उन वर्षों को छोड़कर जब कांग्रेस वाले जेल में रहे। इस काल में मेरा स्थान भी जेल ही था। धारा सभा के अपने इस लम्बे अवधि-काल में मैं वैदेशिक विभाग, विशेषकर उन स्थानों से जहां भारतीय बसे हैं, सदा दिलचस्पी रखता रहा। केन्द्रीय

सुदूर दक्षिण पूर्व

धारा सभा की वैदेशिक विभाग की समिति का भी वर्षों से मैं सदस्य हूं और इस समिति के कांग्रेसी सदस्यों का 'कनवीनर'। परन्तु इतने लम्बे समय से इस विभाग के अनुराग के पश्चात् भी मैं इसे मुक्त कंठ से स्वीकार करने के लिये तैयार हूं कि जब तक मैं आफ्रिका नहीं गया था तब तक वहां का और जब तक मैं सुदूर दक्षिण पूर्व के इन देशों को न गया था तब तक इनका जो ज्ञान मुझे था वह नहीं के बराबर था। आफ्रिका से लौटकर जो पुस्तक मैंने वहां के संबन्ध में लिखी थी उसे उस समय लोगों ने बड़े चाव से पढ़ने की कृपा की थी। जब न्यूजीलेंड जाने वाले भारतीय प्रतिनिधि मंडल के नामों की घोषणा हुई और यह घोषित किया गया कि इस प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व का भार मुझे सौंपा गया है तब ऐसे कुछ मित्रों ने जिन्होंने मेरी आफ्रिका यात्रा पर लिखी हुई पुस्तक को पढ़ा था, मुझसे न्यूजीलेंड पर भी कुछ लिखने के लिये कहा। मेरा स्वयं भी अपनी इस समूची यात्रा पर कुछ न कुछ लिखने का विचार हुआ। आफ्रिका पर जो पुस्तक मैंने लिखी थी वह वहां से लौटते हुए जहाज में। समय बचाने के लिये मेरी यह यात्रा हवाई जहाज से हुई। भारत लौटकर अन्य कामों में फिर से बुरी तरह फँस जाने की आशंका थी इसलिये इस यात्रा में ही मैंने इस पुस्तक का अधिकांश भाग समाप्त कर लिया।

चूंकि यह पुस्तक उन देशों से संबन्ध रखती है जहां का हमें योरोप और अमेरिका से भी कहीं कम ज्ञान है इसलिये मुझे विश्वास है कि इसे पढ़ने में पाठकों का कुछ न कुछ चाव अवश्य होगा।

२

न्यूजीलैंड भारतीय प्रतिनिधिमंडल गया था कामनवेल्थ पार्लिमेन्टरी एसोसियेशन में भाग लेने के लिये; अतः सर्वप्रथम कामनवेल्थ पार्लिमेन्टरी एसोसियेशन तथा उससे संबन्ध रखने वाली कुछ बातों का दिग्दर्शन करा देना उपयुक्त होगा —

सन् १९११ में सम्राट् पंचम जार्ज के राज्याभिषेक के समय एक संस्था का निर्माण हुआ जिसका नाम एम्पायर पार्लमेंटरी एसोसियेशन रखा गया। विशाल ब्रिटिश साम्राज्य के सभी देशों में पारस्परिक स्नेह बढ़ाने और विचारों के आदान-प्रदान के लिये इस स्थायी संस्था की स्थापना की गयी थी। इस संस्था का सर्वप्रथम उद्देश्य था ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत सभी देशों की पार्लमेंट सभाओं में घनिष्ठ संपर्क स्थापित करना।

पिछले ३५ वर्ष में इस संस्था की आशातीत उन्नति हुई--उसके कार्य क्षेत्र का प्रसार हुआ और ब्रिटिश साम्राज्य के प्रायः सभी देशों में एम्पायर पार्लमेंटरी एसोसिएशन की शाखाएं स्थापित हुईं। इसी अवधि में राजनैतिक उथल-पुथल के कारण ब्रिटिश साम्राज्य के देशों में अनेक परिवर्तन हुए और कई देशों में स्व-शासन की स्थापना हुई। फलस्वरूप एम्पायर पार्लमेंटरी एसोसियेशन के विधान में परिवर्तन करने की आवश्य कता हुई। इस एसोसियेशन के सदस्य देशों के पारस्परिक संबन्धों में तथा ब्रिटिश सरकार से इन सभी देशों के संबन्धों में आमूल परिवर्तन हो जाने के कारण एसोसि-येशन के विधान की कई बातें अब अनुपयुक्त सिद्ध हो गयीं।

इन वैधानिक परिवर्तनों के लिये ५ फरवरी सन् १९४८ को एसोसियेशन की कनेडा शाखा ने एक प्रस्ताव पास किया। अक्टूबर १९४८ में लन्दन में कामनवेल्थ पार्लमेंटरी कान्फ्रेंस ने इन वैधानिक परिवर्तनों को स्वीकार किया। इसी समय इस एसोसियेशन का नाम एम्पायर पार्लमेंटरी एसोसियेशन की जगह कामनवेल्थ पार्लमेंटरी एसोसियेशन हुआ। यह भी सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया कि एसोसियेशन का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिये एक जनरल कौंसिल, उसके दफ्तर और आवश्यक निधि

का प्रबन्ध किया जाये। सभी शाखाओं की स्वीकृति प्राप्त होने पर मई सन् १९५० में जनरल कौंसिल की बैठक ओटावा में हुई। इस समय एसोसियेशन के नये विधान का मसौदा बनाया गया। नवम्बर सन् १९५० म जनरल कौंसिल ने यह नया विधान स्वीकार किया। इस विधान की मुख्य बातों का उल्लेख परिशिष्ट १ में किया गया है।

इस संस्था में वे ही देश सम्मिलित हो सकते हैं जो स्वतंत्र हों और साथही कामनवेल्थ के सदस्य। स्वतंत्र होने के पश्चात् हमारे देश के स्वाधीन प्रजातंत्र घोषित होने तक हमारी स्थिति उपनिवेश की स्थिति रही अतः सन् १९४८ में लन्दन में जब इस कामनवेल्थ पार्लमेंटरी एसोसियेशन की परिषद हुई तब उसमें भाग लेने के लिये भारत ने ९ सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल भेजा। इसके नेता हमारी केन्द्रीय धारा सभा के अध्यक्ष माननीय श्री मावलंकरजी थे। दो वर्षों के पश्चात् सन् १९५० में फिर से जब न्यूजीलैंड में एसोसियेशन की परिषद बुलायी गयी तब भारत ने पांच प्रतिनिधियों के प्रतिनिधि मंडल भेजने का निश्चय किया—श्री० आर० के० सिधवा, श्री० सी० सी० शाह, श्री वेंकटरमन, श्री० देवकान्त बरुआ और मैं। मुझे इस मंडल को नेतृत्व का काम सौंपा गया।

कामनवेल्थ पार्लमेंटरी एसोसियेशन संसार की कदाचित् एकमात्र ऐसी संस्था है जिसकी परिषदों में कोई प्रस्ताव पास नहीं होते, और कोई मतदान नहीं होता। इस परिषद की सारी कार्यवाही गोपनीय (कैमरा में) होती थी, पत्र प्रतिनिधियों के लिये खुली नहीं। केवल इस वर्ष इसकी कुछ बैठकों में पत्र प्रतिनिधियों को बुलाया गया। इस परिषद में जिन बातों पर विचार होता है वे अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इस वर्ष की न्यूजीलैंड परिषद में निम्नलिखित बातों पर विचार किया गया :—

सोमवार २७ नवम्बर, १९५०.....आर्थिक व्यवस्था—अर्थ और वाणिज्य संबन्धी बातें।

मंगलवार २८ नवम्बर, १९५०.....पार्लमेंटरी सरकारें।

बुधवार २९ नवम्बर, १९५०.....सुरक्षा और प्रशांत महासागर देशीय बातें।

गुरुवार ३० नवम्बर, १९५०.....आबादी का तबादला (migration)।

शुक्रवार १ दिसम्बर, १९५०.....वैदेशिक नीति।

न्यूजीलैंड की इस परिषद की तारीखें घोषित होने के पश्चात् एसोसियेशन की भारतीय शाखा की बैठक नयी दिल्ली में हुई और इस बैठक ने तय किया कि भारतीय पार्लमेंट के अध्यक्ष श्री मावलंकर भारतीय प्रतिनिधि मंडल के नामों का निर्णय करें।

श्री मावलंकार जी ने मंडल के नेता का चुनाव कहां तक उपयुक्त किया इस पर तो मुझे कुछ कहने का अधिकार नहीं है, परन्तु जहां तक मंडल के सदस्यों का संबन्ध है मेरे मता-नुसार यह चुनाव सर्वथा उपयुक्त सिद्ध हुआ। मंडल के सदस्यों में श्री शाह की गम्भीरता, श्री वेंकटरगन की कार्यतत्परता, श्री बरुआ की मिलनसारी और श्री सिधवा की वाचा-लता सभी श्लाघनीय रहीं। परिषद में हमारे मंडल के सदस्यों ने जो भाग लिया उससे तो उनकी योग्यता सिद्ध हुई ही, परन्तु परिषद में भाग लेने के सिवा जो संबन्ध इस मंडल के सदस्यों ने अन्य देशों के प्रतिनिधि मंडलों के सदस्यों से स्थापित किया उससे भारत देश और भारतीय संस्कृति का सभी पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इन परिषदों में परिषद की कार्यवाही के अतिरिक्त आपसी संबन्धों का बहुत अधिक महत्व है, कदाचित परिषद की कार्यवाही से भी कहीं अधिक और इस दिशा में भारतीय प्रतिनिधि मंडल ने आशातीत सफलता प्राप्त की है।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल के अतिरिक्त जिन देशों के प्रतिनिधिमंडल इस परिषद में भाग लेने के लिये आये उन देशों के नाम ये हैं :—

(१) यूनाइटेड किंगडम
(२) कनेडा
(३) आस्ट्रेलिया
(४) यूनियन आफ साउथ आफ्रिका
(५) पाकिस्तान
(६) सीलोन
(७) दक्षिण रोडेशिया
(८) जमैका
(९) बरमूडा
(१०) बारबाडोस
(११) बहामा
(१२) गोल्ड कोस्ट
(१३) ब्रिटिश गायना
(१४) मारीशस
(१५) उत्तर रोडेशिया
(१६) सिंगापुर
(१७) ब्रिटिश होन्डूरास
(१८) विन्डवर्ड द्वीप
(१९) नाइजीरिया
(२०) फेडरेशन आफ मलाया
(२१) न्यूजीलेंड

प्रतिनिधिमंडलों के सदस्यों के नाम तथा संख्या इस पुस्तक में एक परिशिष्ट में दी गयी हैं।

३

न्यूजीलैंड में होने वाली इस कामनवेल्थ पार्लमेंटरी परिषद के लिये भारतीय प्रतिनिधि मंडल की रवानगी २८ अक्टूबर को निश्चित हुई थी। हमारे मंडल के तीन प्रतिनिधि श्री शाह, श्री वेंकटरमन और श्री बरुआ न्यूजीलैंड बम्बई से जहाज द्वारा जाने वाले थे और श्री सिधवा तथा मैं दिल्ली से हवाई जहाज से। परन्तु श्री सिधवा बीमार हो गये और मुझे कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजर्षि पुरुषोत्तम दास जी टंडन ने कांग्रेस की कार्य समिति का सदस्य घोषित कर दिया। कांग्रेस की कार्य समिति की प्रथम बैठक नई दिल्ली में ता० ४ नवम्बर को निश्चित् हुई। श्री सिधवा ने अपनी बीमारी के कारण और मैंने कांग्रेस की कार्य समिति के कारण अपने जाने की तारीखें आगे बढ़ाने के लिये भारतीय संसद के मंत्री श्री कौल को लिखा। चूंकि न्यूजीलेंड की परिषद तारीख २४ नवम्बर को होने वाली थी अतः श्री सिधवा की और मेरी रवानगी की तारीखें आगे बढ़ाने में श्री कौल को कोई कठिनाई न पड़ी।

हमारे प्रतिनिधिमंडल की रवानगी के पूर्व हमारे प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू पूरे प्रतिनिधिमंडल से मिलना चाहते थे। यह भेंट तारीख २४ अक्टूबर को निश्चित हुई। श्री सिधवा को छोड़ हम सब तारीख २३ को दिल्ली पहुँचे। ता० २४ को नेहरू जी से कोई एक घंटे हमारी बातें हुईं। उन्होंने बड़ी दिलचस्पी और सहृदयता से हमसे इस प्रतिनिधिमंडल के संबन्ध में बातें कीं।

जहाज से जाने वाले सदस्य ता० २८ अक्टूबर को बम्बई से रवाना हुए। कांग्रेस कार्य समिति की बैठक के पश्चात्, मैं ता० ११ नवम्बर को कलकत्ते से हवाई जहाज से और श्री सिधवा ता० १९ नवम्बर को हवाई जहाज से।

प्रतिनिधिमंडल के नेतृत्व का भार मुझपर रहने के कारण बम्बई से हमारे तीनों प्रतिनिधियों को बिदा करने के लिये जाना मैंने अपना कर्तव्य समझा।

जहां तक मेरी बिदाई का संबन्ध है, बम्बई, जबलपुर, दिल्ली और कलकत्ता में सभी जगह भिन्न भिन्न संस्थाओं तथा मित्रों ने मुझे जिस प्रेम और उत्साह से बिदा किया वह

जीवन भर मेरे विस्मृत करने की बात नहीं है । कांग्रेस कार्य समिति में मेरे आने तथा न्यूजीलेंड के इस प्रतिनिधिमंडल के नेता नियुक्त होने से जबलपुर के लोगों में तो जिस उत्साह की लहर दौड़ी थी वह जबलपुर के इतिहास में एक उल्लेखनीय घटना है । सन् ३० में जब मैं पहिली जेल यात्रा के बाद छूटा था उस समय तथा सन् ३२ के सत्याग्रह के समय जो सभा मैंने जबलपुर में चार दिन और चार रात तक चलाई थी उसके बाद इन दो अवसरों के सिवा जबलपुर में मैंने ऐसा उत्साह कभी नहीं देखा था । मेरे कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य और उसी के साथ इस प्रतिनिधि मंडल के नेता होने का सम्मान जबलपुर निवासियों ने मेरा सम्मान न मानकर अपना सम्मान माना । लगातार चार दिनों तक बिदाई के इन समारोहों की बाढ़सी आगयी थी । हर १५ मिनिट पर एक समारोह । कैसा प्रेम का प्रवाह था, कैसे उत्साह की लहर ! कैसी आत्मीयता का प्रदर्शन !

हम सब में मेरी इतनी लम्बी यात्रा के कारण करुण रस का भी कम मिश्रण न था । मेरे कुटुम्बियों, खासकर मेरी माताजी और पत्नी के मन में तो चिन्ता की भी अत्यधिक मात्रा थी । कुटुम्बियों से बिदा लेते समय मुझे पिताजी का कितना स्मरण आया । जब मैं आफ्रिका गया उस समय पिताजी थे । सन् १९३२ में मैं कौटुम्बिक संपत्ति से त्यागपत्र दे चुका था और राजा गोकुलदास महल में न रहकर एक किराये के मकान में रहता था । मेरे संपत्ति से त्याग पत्र देने पर गांधीजी ने मुझे अपने एक पत्र में लिखा था कि अब तुम्हारा और पिता जी का प्रेम और बढ़ेगा । गांधीजी की यह भविष्य-वाणी सर्वथा सत्य सिद्ध हुई थी । पिताजी के और मेरे सिद्धांतों में आकाश-पाताल का अन्तर रहने के कारण उनका और मेरा सन् १९२१ से ही जो संघर्ष चला करता था उसकी इस संपत्ति के त्याग से समाप्ति हो गयी थी और सन् १९३२ के पश्चात् उनका और मेरा स्नेह संबन्ध कहीं अधिक बढ़ गया था । आफ्रिका जाते हुए सन् १९३७ में उन्होंने भी मुझे बड़ी कारुणिक भावनाओं से बिदा किया था, पर मेरे हृदय में उनके कारण एक प्रकार का धैर्य था । आज मैं वृद्धा माताजी को उनकी रुग्ण अवस्था में छोड़कर उनके इकलौते पुत्र होते हुए भी ८००० मील दूर जा रहा था ।

कलकत्ते मुझे पहुँचाने के लिये मेरे बड़े पुत्र मनमोहनदास और उनके मित्र सन्तकुमार तिवारी आये थे । वे अपने साथ माता जी का एक पत्र लाये थे । जब मैंने वह पत्र पढ़ा भावुक होने के कारण मेरी आँखों से आँसू बह निकले । इस पत्र को मुझे लिखे गये पत्रों में मैं अत्यन्त महत्व का पत्र मानता हूँ । पत्र नीचे उद्धृत किया जाता है :—

सुदूर दक्षिण पूर्व

राजा गोकुलदास महल
जबलपुर
८-११-५०

चिरंजीव भैया,

तुम बहुत दूर जा रहे हो। एक बार और भी दूर गये थे आफ्रिका। उसके पहले तुम कभी इतनी दूर न गये थे। जब आफ्रिका गये थे तब जहाज से गये थे उस वक्त भी मेरा मन बहुत उथल पुथल हुआ था। इस बार हवाई जहाज से जा रहे हो, मेरा मन और भी उथल-पुथल हो रहा है। कितने लोग जहाज से समुद्र की मुसाफिरी करते हैं, कितने लोग हवाई जहाज से जाया आया करते हैं। मैं नहीं जानती कि इन यात्राओं में जब पुत्रों के संग मां नहीं रहतीं तब मां के मन कैसे होते होंगे। पर मेरा मन जैसा हो रहा है उसका भान मां ही कर सकती है, और कोई नहीं। तुम्हारी इस मुसाफिरी में तुम्हारे साथ कोई नहीं रहेगा, तुम बिलकुल अकेले जाओगे, इससे मेरी चिन्ता और बढ़ गयी है। मुझे वह जमाना याद आता है जब बिना बीस पच्चीस संगी साथियों, नौकर चाकरों के तुम्हें कहीं बाहर नहीं जाने दिया जाता था।

तुम जब से जन्मे थे तब से लेकर अब तक तुम ही मेरा सहारा रहे हो। तुमने जब कांग्रेस का काम शुरू किया था तब चाहे तुम्हारे कक्का साहब (पिताजी) उसके खिलाफ रहे हों पर मैं नहीं। मैंने यह जरूर नहीं सोचा था कि उस काम का नतीजा जेल जाना और जेल के अनगिनती दुख उठाना हो सकता है। जब तुम पहले पहल जेल गये तब मैं कितनी घबराई थी वह मुझे अभी भी याद है और तुम्हारे जेल से छूटने पर मुझे कितनी खुशी हुई थी वह भी मैं नहीं भूली हूं। जिस दिन तुम छूटे थे, घर के फाटक पर जसोदा जी के समान मैंने तुम्हारी आरती की थी। तुम्हें बिदा करते हुए मैं स्टेशन पर तुम्हारी आरती कर तुम्हें आसीरवाद देना चाहती थी पर तुम्हारे कक्का साहब के जाने के बाद मेरा सरीर इसके लायक नहीं रहा। आज चि० मनमोहन तुम्हे पहुँचाने कलकत्ता जा रहे हैं। उन्हीं के साथ तुम्हे यह आसीस भेज रही हूँ।

भैया, तुम्हारा कुटुम्ब सदा भगवान का बिस्वासी और भक्त रहा है। तुम्हे बड़े करते हुए मैं रामायण की यह चौपाई सदा रटती रहती थी--

"पुत्रवती युबती जग सोई--रघुवर भक्त जासु सुत होई"।

तुमने मुझे समझा दिया है कि भगवान की सेवा और जगत की सेवा एक ही चीज है यहाँ तक कि भगवान खुद जगत की सेवा के लिये अवतार लेते हैं।

सुदूर दक्षिण पूर्व

तुम्हारे कारन मैं अपनी कूख को सफल मानती हूं। मेरा मन तुम्हारी इस लम्बी मुसाफिरी के कारन उथल पुथल जरूर हो रहा है पर भगवान पर मेरा अटल विस्वास है। तुमने हमेसा ही जोखमें उठायी हैं। उन जोखमों में भगवान तुम्हारे सहाय रहे है। इस यात्रा में भी वे ही तुम्हारी रक्षा करेंगे।

मां की आसीस है कि तुम्हारे कामों में कोई विघ्न न पड़े। तुम सफल होकर राजी खुसी लौटो। मैं तुम्हारे लौटने तक जीती रहूँ और जब तुम लौटकर आओ तब घर के दरवाजे पर फिर मैं तुम्हारी आरती उतार सकूं यह भगवान से मेरी विनय है।

तुम्हारी,
मां

४

कलकत्ते से मेरा हवाई जहाज ता० ११ को प्रातःकाल ४।। बजे रवाना होने वाला और न्यूजीलेंड के आकलेंड नगर में ता० १४ को प्रातःकाल पहुँचने वाला था। हवाई जहाज की इस लम्बी उड़ान का कार्यक्रम नीचे लिखे अनुसार था।

११ नवम्बर	कलकत्ता से रवानगी	४।। बजे सुबह
	सिंगापुर पहुँच	२ बजे दोपहर
१२ नवम्बर	सिंगापुर रवानगी	६ बजे सुबह
	जकारटा पहुँच	८।। बजे सुबह
	जकारटा रवानगी	१० बजे सुबह
	डार्विन पहुँच	७ बजे शाम
	डार्विन रवानगी	१० बजे रात
१३ नवम्बर	सिडनी पहुँच	७ बजे सुबह
	सिडनी रवानगी	११-५९ रात
१४ नवम्बर	आकलेंड पहुँच	८-३० बजे सुबह

कांग्रेस कार्य समिति की बैठक से मैं ता० ५ नवम्बर की संध्या को निपटा। दो तीन दिनों के लिये जबलपूर होकर मैं कलकत्ता पहुँच सकता था, परन्तु ता० ९ को दिवाली थी और दिवाली के दिन घर से रवाना होना उचित बात न जान पड़ी अतः बीच के इन दिनों को कलकत्ते में बिताने का निश्चय कर ता० ७ नवम्बर को दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा कलकत्ता आ गया। पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल श्री डा० कैलाश नाथ काटजू को जब भारतीय संसद के मंत्री श्री काल ने कलकत्ता होकर मेरे न्यूजीलेंड जाने की बात लिखी तब श्री काटजू साहब से मेरा निकट का संबन्ध होने के कारण उन्होंने मुझे गवर्नमेंट हाउस में ठहरने के लिये निमंत्रित किया। ता० ७ के तीसरे पहर से ता०११ के उषःकाल तक मैं कलकत्ते के गवर्नमेंट हाउस में ठहरा और इस काल में डा० काटजू ने मेरा जो आतिथ्य सत्कार किया उसके लिये मैं उन्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूँ।

सुदूर दक्षिण पूर्व

ता० ११ को ४।। बजे प्रातःकाल जाने वाले हवाई जहाज के लिये डमडम के एरोड्रोम पर ३।। बजे पहुँच जाना आवश्यक था । यद्यपि मैं सदा ही उषःकाल में उठ जाने का अभ्यस्त हूँ, परन्तु उषःकाल का अर्थ होता है ५ बजे के आसपास । ३।। बजे हवाई अड्डे पर पहुँचने का मतलब ३ बजे गवर्नमेंट हाउस से चलना और देर से देर २।। बजे उठकर शौचादि से निवृत्त होना था । उस दिन कलकत्ते में मेरी बिदाई के भी कई समारोह थे- बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से, बड़ा बाजार कांग्रेस जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से, माहेश्वरी भवन में जनता की ओर से । अन्तिम समारोह से लगभग ११ बजे रात को मैं गवर्नमेंट हाउस लौटा । यद्यपि राज्यपाल ए० डी० सी० को मेरे २।। बजे जगा देने तथा ३ बजे मोटर से एरोड्रोम ले जाने की सारी व्यवस्था की आज्ञा थी, पर मुझे एक क्षण को भी नींद न आयी और मैं दो बजे ही एरोड्रोम पर जाने के लिये तैयार हो गया। इसका कदाचित् एक कारण यह भी था कि स्टेशन, हवाई अड्डे इत्यादि गाड़ी अथवा हवाई जहाज आदि की रवानगी के कम से कम ४५ मिनिट पहले पहुँच जाने की मेरी आदत हो गयी है । कई मित्र मेरे इस आचरण पर हँसा भी करते हैं और मुझे देहाती कहते हैं । परन्तु मेरा यह निश्चित मत है कि ऐसे स्थानों पर सदा अपने समय की गुँजाइश रख कर पहुँचना चाहिये, जिससे यदि रास्ते में मोटर पंक्चर हो जाय अथवा इसी प्रकार की कोई बाधा आ जाय तो भी रेल या प्लेन न चूके । मुझे इस बात पर थोड़ा सा अभिमान है कि मैं कहीं किसी काम के लिये देर से नहीं पहुँचता और अत्यधिक यात्रा करते रहने पर भी आज तक कभी भी मैंने कोई गाड़ी या विमान नहीं चुकाया ।

जब २।। बजे राज्यपाल ए० डी० सी० मुझे जगाने पहुँचे तब उन्हें देखकर यह आश्चर्य हुआ कि मैं जाने के लिये तैयार था । मेरे छोटे पुत्र जगमोहनदास के मित्र डाक्टर गुलाब चन्द चौरसिया, जो हाल ही में अमेरिका से अपना विद्यार्थी जीवन समाप्त कर लौटे थे मुझे पहुँचाने मेरे साथ दिल्ली से कलकत्ता आये थे और मेरे साथ ही गवर्नमेंट हाउस में ठहरे थे । जब तक हम दोनों सामान के साथ मोटर में बैठें तब तक मेरे पुत्र मनमोहनदास, श्री सन्त कुमार तिवारी, मेरे दामाद घनश्यामदास, उनके पिता श्री गोवर्धन दासजी बिन्नानी आदि भी गवर्नमेंट हाउस आ गये और हम सब लोग निश्चित किये गए समय ३।। बजे डमडम के एरोड्रोम पर पहुँच गये ।

हवाई जहाज ठीक समय पर कलकत्ता पहुँच गया था । भारत में चलने वाले 'डकोटा' दो एंजिन वाले वायुयान में मैं बहुधा यात्रा किया करता हूँ, पर यह वायुयान उन हवाई जहाजों से कहीं बड़ा था । इसमें चार एंजिन थे और चालीस यात्रियों के बैठने का स्थान ।

पासपोर्ट और हैजे तथा माता के टीके के प्रमाण पत्रों की जांच एवं कस्टम्स मुहकमें में सामान आदि के निरीक्षण में मेरा थोड़ा सा समय भी न गया, क्योंकि मैं ऐसे कार्य से जा रहा था, जिसमें इन झगड़ों से निवृत्ति का भार सरकार ले लेता है।

वायुयान यद्यपि ४।। बजे रवाना होने वाला था परन्तु समय पर रवाना न हो सका। मुझे विदा करने आने वाले किसी भी व्यक्ति को उस समय अन्य कोई कार्य न था और सभी यही चाहते थे कि उस दिन मुझसे जी भरकर अधिक से अधिक बातें कर लें, फिर भी जहाज की रवानगी में जो यह देर हो रही थी, वह किसी को भी रुचिकर न थी; मैं जाने वाला था अतः मुझे रुचिकर न हो यह स्वाभाविक था, पर जो मुझसे जी भर कर बातें करना चाहते थे उन्हें भी नहीं। निश्चित होने वाली बात में उसके अप्रिय होने पर यदि विलम्ब लगने लगता है तो भी मनुष्य ऊब उठता है, यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है।

लगभग ५।। बजे हवाई जहाज में बैठने की घोषणा हुई। मुझे छोड़कर शेष समस्त यात्री योरोपियन थे। जो मुझे विदा करने आये थे उन सबसे मिल भेंट कर मैं जहाज म बैठा। ५।।। बजे विमान रवाना हुआ। दिवाली के बाद की द्वितीया का प्रातःकाल था। कलकत्ते का समय स्टेंडर्ड टाइम से २४ मिनिट आगे होने के कारण नवम्बर मास में भी उषःकाल का प्रकाश चारों ओर फैल गया था। आकाश निर्मल था और ठंडी ठंडी वायु चल रही थी। जब एरोप्लेन चला और उसकी खिड़की में से मैंने अपने पहुँचाने वालों को देखा तब उनके मुखों से उनके भारी हृदयों का हाल छिप न सका। खासकर मनमोहन के मुख पर उनकी उस समय की भावनाएं स्पष्ट रूप से अंकित थीं। मैं अपने को अनेक दृष्टियों से बड़भागी मानता हूं। पर सबसे अधिक इसलिये कि मैं सर्वत्र ही अत्याधिक स्नेह का पात्र रहा हूं। अनेक मतभेदों के रहते हुए भी मेरे कौटुम्बिक जीवन में जो प्रेम का प्रवाह रहा है उसने सारे मतभेदों को बहाकर मेरे कौटुम्बिक जीवन को अत्यधिक सुखी रखा है और एक बात और। माता-पिता का अपनी संतति पर जितना स्नेह रहता है संतति का मातृ पिता पर नहीं; परन्तु कदाचित् मैं उन बिरले व्यक्तियों में हूं जिनकी संतति का भी माता-पिता पर माता-पिता के स्नेह से कम स्नेह नहीं रहता।

५

थोड़ी ही देर में हमारा विमान कोई १५००० फुट की ऊंचाई पर चढ़ गया और लगभग २७५ मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ने लगा।

इतनी दूर किसी भी कुटुम्बी या मित्र अथवा संगी साथी के बिना अकेले मेरी यह पहली यात्रा थी। यद्यपि इन दिनों अकेले रेल अथवा एरोप्लेन में मैं अनेक बार यात्रा किया करता था, पांच बार की जेल यात्राओं में भी कई बार अकेला रखा गया था, पर उस अकेले पन और इस अकेलेपन में अब मुझे स्वयं ही कुछ अन्तर जान पड़ा। सदा इस प्रकार की यात्राएं करने वालों के मन पर चाहे इस प्रकार के अकेलेपन का कोई प्रभाव न पड़ता हो, पर इसके भी अभ्यास की आवश्यकता होती है।

मुझे आज अपने जीवन की अनेक घटनाएं याद आने लगीं। माताजी ने मुझे आशीर्वाद का जो पत्र कलकत्ता भेजा था उसमें लिखा था, "मुझे वह जमाना याद आता है जब बिना बीस पच्चीस संगी साथियों, नौकर चाकरों के तुम्हें कहीं बाहर नहीं जाने दिया जाता था।" ठीक लिखा था उन्होंने। मेरे जीवन का एक यह अध्याय भी था। सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने के पश्चात् भी यात्रा में कुछ न कुछ नौकर चाकर, संगी साथी रहते थे, अर्दली तो बहुत समय तक और यह अर्दली बड़े शहरों में सड़क तक पार करने में मुझे सहायता देता था। सन् १९२२ में एक बार जब मैं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक के लिये लखनऊ गया था और एक दिन अर्दली साथ न रहने के कारण मुझे सड़क पार करने में असमंजस हुई थी तब मेरे मित्र पं० द्वारकाप्रसाद जी मिश्र ने मेरा खूब मजाक उड़ाया था। मुझे अपना वह समय भी याद आया। सन् ३० में जब मैं जेल में सर्वप्रथम अकेला रखा गया उस समय की घटनाएं भी मेरे मन में उठीं। और आजकल जो मैं अनेक बार अकेले यात्रा किया करता था वे प्रसंग भी याद आये। तो धीरे धीरे मुझे पुराने ढंग के सहारे की आवश्यकता न रह गयी थी यह तो स्पष्ट था, पर फिर भी अब तक मैं जिन परिस्थितियों में अकेला रहा था उनमें और आज की इस परिस्थिति में मुझे अन्तर जान पड़ा। बहुत देर तक इस अन्तर का कारण मेरी समझ में न आया; पर एकाएक मुझे वह कारण

ज्ञात हो गया। अब तक यदि मैं कहीं भी अकेला रहा था तो अपने देश की भूमि पर। चाहे मेरी जान पहचान वाले मेरे साथ न हों, पर मेरे देश के निवासी किसी न किसी रूप में मेरे आस पास अवश्य रहे थे। आज मैं जा रहा था देश के बाहर, अपने देश के एक भी साथी के बिना। सदा नौकरों चाकरों, संगी साथियों से घिरे रहने के अभ्यास से मुक्त हो अपने देश में ही अकेले रहने की स्थिति का तो मुझे अभ्यास हो गया था, पर अपने देश के बाहर अपने देश निवासियों के संग से रहित इस प्रकार अकेले रहने का यह पहला प्रसंग था और इसका उस समय मेरे मन पर कम प्रभाव न पड़ा। इस प्रभाव को मेरी बिदाई के उन समारोहोंने तथा मेरे कुटुम्बियों ने जिन भारी हृदयों से मुझे बिदा किया था उन सारे संस्मरणों ने और बढ़ा दिया और कुछ देर के लिये मैं व्यथित सा हो गया।

मौसम बड़ा अच्छा था। न बादल थे और न वायु में ही किसी प्रकार का वेग था। वायुयान काफी ऊंचा उठ चुका था और उसकी चाल भी काफी तेज थी, पर इस शांत वायुमंडल में बिना थोड़े से भी 'बंपिंग' के वह इतनी शांति से चल रहा था कि जब तक खिड़की में से नीचे न देखा जाय और नीचे की बड़ी बड़ी चीजें खिलौने के रूप में जोर से पीछे की ओर भागती हुई न दिख पड़ें तब तक जान पड़ता था जैसे वह विमान बिना हिले डुले निश्चल खड़ा है। हवाई यात्रा का अभ्यास होजाने के कारण अब मुझे न हवाई-यात्रा के कारण अस्वस्थता (एयर सिकनैस) होती थी और न कानों में कोई कष्ट। रात को मुझे जरा भी नींद न आयी थी अतः अपनी उधेड़ बुन में गोते लगाते लगाते मैं अपनी सीट पर बैठे बैठे ही सो गया। कितनी देर सोया यह तो मै नहीं कह सकता, पर उठा तब जब एरोप्लेन की स्टूअर्डेस ने मुझे कलेये के लिये उठाया। इतनी उधेड़ बुन के पश्चात् भी मुझे बिना सपनों वाली गहरी नींद आयी थी। इस नींद ने मेरे शरीर को ही आराम नहीं पहुँचाया, मेरे मन को भी शांत कर दिया।

कलेवा अधिकतर मांसाहारियों के लिये था। जब मैंने स्टुअर्डेस से कहा कि मैं कट्टर शाकाहारी हूं और वह मुझे ऐसी चीजें दे जिसमें न मांस हो, न मछली और न अंडा, तब वह मुझे डबल रोटी, मक्खन और चाय के सिवा और कुछ न दे सकी। कलेवे में थोड़ा सा दूध लेने के सिवा अन्य कुछ खाने की मुझे आदत भी न थी अतः जो कुछ मुझे मिला, वह मेरे लिये काफी था।

फिर से मेरा मन उसी प्रकार की उद्विग्नता में न पड़ जाय, इसलिये खा पीकर मैंने पढ़ना आरम्भ किया। कामनवेल्थ पार्लिमेंटरी कांफ्रेंस के सन् १९४८ के पिछले अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ना मेरे लिये आवश्यक था और एरोप्लेन में वही पढ़ने के लिये मैं लाया भी था। लंच (दोपहर का खाना) का समय १ बजे होता है पर ११। बजे ही खाने पीने

का सामान आ गया। इतने जल्दी खाने की व्यवस्था पर मुझे आश्चर्य भी हुआ, पर शाकाहार में जो डबल रोटी, टमाटो, फ्रूट-सलाड इत्यादि हलकी चीजें थीं वे जल्दी भी खाई जा सकती थीं अतः मैंने खाना समाप्त करना ही उचित समझा।

सिंगापुर विमान २ बजे पहुँचने वाला था। कलकत्ते से देर से रवाना होनेके कारण मेरा खयाल था कि और भी कुछ देर से पहुँचेगा पर जब मेरी घड़ी कोई सवा बारह बजा रही थी तब एकाएक एरोप्लेन की चाल धीमी हुई और उसने उतरना आरम्भ किया। साथ ही सामने वे अक्षर चमकने लगे जिनके द्वारा हवाई जहाज के चढ़ते और उतरते समय सीट के पट्टे को कमर बांधने की हिदायत दी जाती है।

मैं कुछ घबरा सा गया। दो ढाई घंटे पहिले वायुयान क्यों उतर रहा है, कोई एंजिन का झगड़ा है या अन्य कोई बात। योरोपियन सभ्यता के नियमों के अनुसार बिना 'इन्ट्रोडक्शन' के एक दूसरे से बातचीत नहीं होती। ऐसे भी किस्से सुने गये हैं कि दो व्यक्ति वर्षों एक दूसरे के आमने-सामने के मकानों अथवा होटल के कमरों में रहे पर उन्होंने 'इन्ट्रोडक्शन' न होने के कारण कभी एक दूसरे से बात न की। पर एरोप्लेन के एकाएक उतरने के कारण जैसी परिस्थिति की मैंने कल्पना की थी उस परिस्थिति में सभ्यता के ये बन्धन ढीले ही नहीं हो जाते, टूट भी जाते हैं। मैंने जब अपने एक अंग्रेज साथी से बिना 'इन्ट्रोडक्शन' के ही वायुयान के उतरने का कारण पूछा तब उसने बताया कि सिंगापुर आ गया और जब मैंने कहा कि दो ढाई घंटे पहिले ही, तब उसने उत्तर दिया कि सिंगापुर का समय कलकत्ते के समय से दो घंटे आगे है। एरोप्लेन ठीक समय पर ही सिंगापुर पहुँच रहा है।

अन्य यात्रियों के समान मैं भी उतरने की तैयारी करने लगा और इस तैयारी में सबसे पहिले मैंने अपनी घड़ी के कांटों को दो घंटे आगे बढ़ाया। यह कहा जाता है कि २४ घंटे के दिन और रात में चाहें किसी ऋतु में दिन बढ़ जायं या रातें, पर समय क्षणमात्र भी न बढ़ता है और न घटता तथा दिन और रात के सदा २४ घंटे ही रहते हैं। यह बात एक स्थल पर रहने वालों अथवा छोटी मोटी यात्राएं करने वालों के लिये ठीक है, पर ऐसी लम्बी यात्राओं के यात्रियों के लिये नहीं। देखिए न आप ही, हमारे लिये २४ घंटों का दिन २२ घंटों का रह गया; यदि हम सिंगापुर से कलकत्ता आते होते तो २४ घंटों का दिन २६ घंटों का हो जाता।

६

कलकत्ता से सिंगापुर की यात्रा ९ घंटे की लिखी हुई थी, परन्तु सिंगापुर का समय दो घंटे आगे होने के कारण इस यात्रा में यथार्थ में ७ घंटे ही लगे थे। इन ७ घंटों की यात्रा बड़े सुख से हुई थी; मौसम बहुत ही अच्छा होने के कारण तथा हमारे विमान का आकार अत्यधिक विशाल होने की वजह से और उसके १५००० से १८००० फुट की ऊंचाई पर उड़ने के कारण एक बार भी 'बंपिंग' नहीं हुआ था। फिर भी ऐसा जान पड़ता था जैसे यात्रा में दिन महीने और वर्ष ही नहीं, युग बीत गये हों। साथ ही प्रिय जनों को छोड़ न जाने कितनी दूर आना हो गया हो, सात-सात घंटे की विमान की यात्रा मैं इसके पहले भी कई बार कर चुका था, परन्तु इस समय मन में जैसी भावनाएं थीं वैसी इसके पहले की यात्राओं में कभी न उठी थीं।

जब मैं एरोप्लेन से बाहर निकला उस समय सर्व प्रथम सिंगापुर के भारतीय प्रतिनिधि श्री थान और सिंगापुर के व्यापारी प्रतिनिधि श्री सरदार जोगेन्द्रसिंह मिले, भारत सरकार के आदेशानुसार ये लोग मुझे लेने के लिये हवाई अड्डे पर आये थे। कितना हर्ष हुआ मुझे इन भारतीयों को यहां देखकर। भारतवासियों को छोड़े अभी मुझे केवल ७ घंटे ही हुए थे, पर इन ७ घंटों के बाद जो दो भारतीय दिख पड़े, जान पड़ा जैसे युगों के पश्चात् भारतीयों के दर्शन हुए हैं।

यहां भी पासपोर्ट और टीकों के प्रमाण पत्रों की जांच तथा कस्टम्स में सामान के निरीक्षण में कोई समय नहीं लगा। यहां से इन दो भारतीय प्रतिनिधियों के साथ मैं उस होटल में पहुंचा जहां मेरे ठहरने की व्यवस्था थी।

हमारा विमान दूसरे दिन प्रातःकाल ६ बजे जाने वाला था अतः श्री थान ने ४॥ बजे संध्या को मुझे सिंगापुर घुमाने का निश्चय किया। मैंने स्नानादि से छुट्टी पाना तय किया।
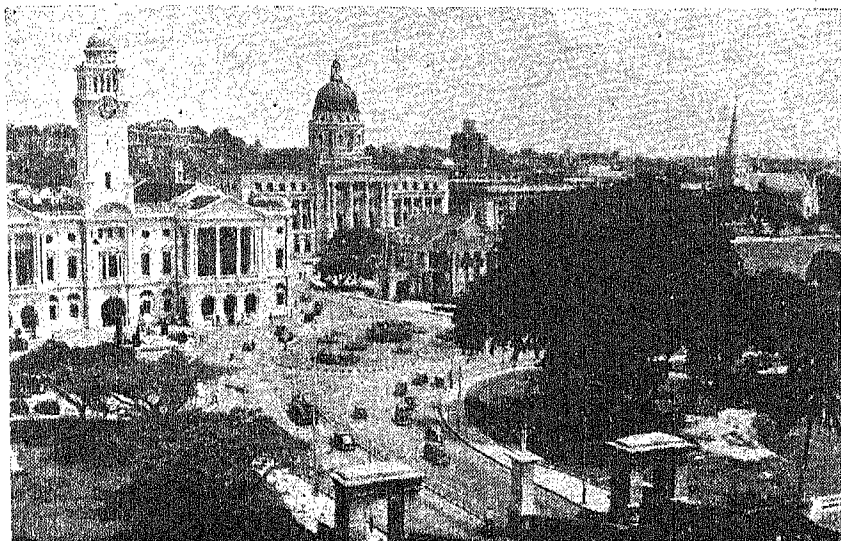
सिंगापुर की एक सड़क का दृश्य

सिंगापुर सुप्रीम कोर्ट एवं म्युनिसिपल भवन

सिंगापुर का एक विशेष मकान
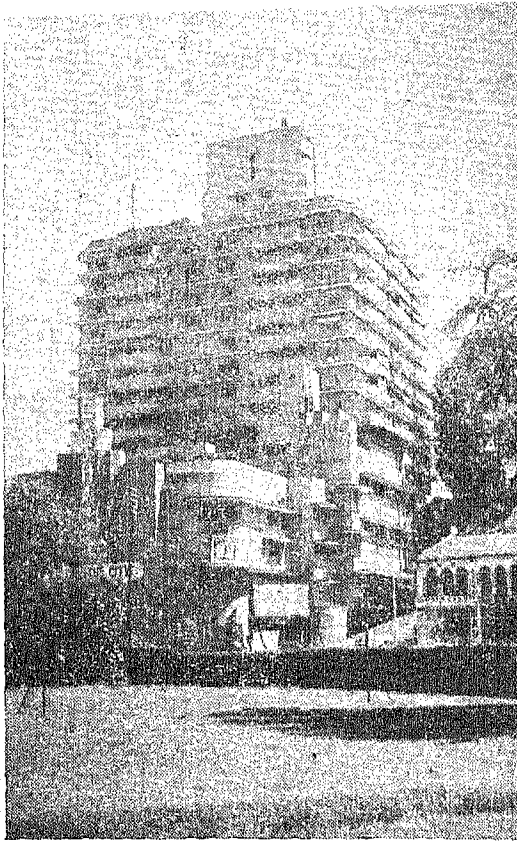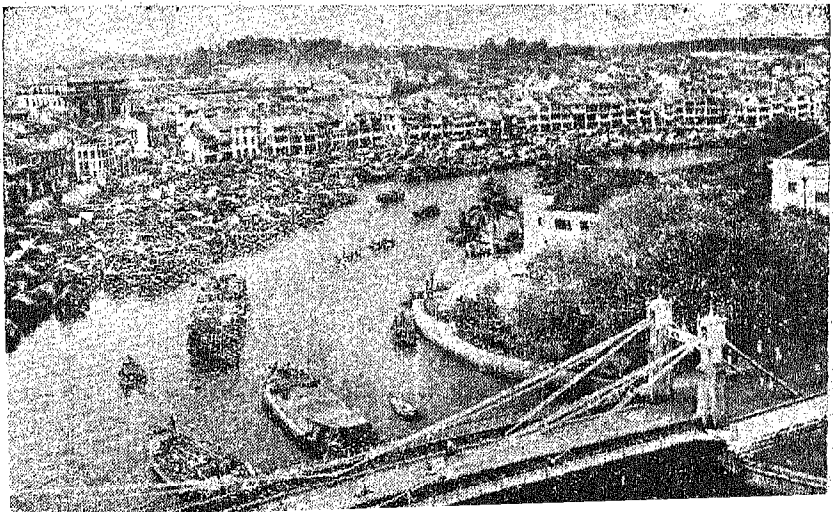
स्नानकर मैंने संध्या पूजा भी की, पर इतनी देर से संध्या पूजा से निवृत्त होने की अपेक्षा मैंने यह तय किया कि इस यात्रा में स्नान से संध्या पूजा का संबन्ध न रखा जाय। संध्या पूजा तो प्रातःकाल भोजन के पहले ही हो जाना चाहिये और जिस जगह भी हो उस जगह। स्नान मौके से ही हो सकते है तथा संध्या पूजा के बाद भी।

कलकत्ते से जब हमारा हवाई जहाज रवाना हुआ उस समय आकाश एकदम स्वच्छ था। सिंगापुर पहुँचने तक बादल भी न मिले थे, पर सिंगापुर के आसपास कुछ बादल अवश्य दिखायी देने लगे थे। सिंगापुर पहुँचने ही घटाएँ उठीं और जब मैं सिंगापुर के होटल में स्नान कर रहा था उस समय मेघों ने सिंगापुर की भूमि को भी स्नान कराना आरम्भ किया। पानी काफी जोर से बरसा, जिसके कारण श्री थान ४॥ बजे न आकर ५। बजे के लगभग पहुँच पाये। मालूम हुआ कि यहां बारहों महीने इस प्रकार पानी कभी भी बरस जाता है। जब श्री थान होटल में पहुंचे उस समय मैं बाहर जाने को तैयार होकर बैठा था। पानी भी रुक गया था अतः श्री थान के साथ में सिंगापुर देखने के लिये उनकी मोटर में रवाना हुआ।

सिंगापुर की आज की घुमाई में शहर के बाजारों और सड़कों को छोड़ हम लोग तीन विशिष्ट स्थानों को गये। एक यहां के 'बुटैनिकल' बगीचे को, दूसरे सिंगापुर में लगी हुई मलाया की ९ जमींदारियों में से जूहू नामक एक जमींदारी को और तीसरे रबर के बगीचे को।

सिंगापुर में सबसे पहले मेरा ध्यान जिस वस्तु ने आकर्षित किया वह एक विचित्र वृक्ष था। इसके पत्ते ठीक केले के पत्तों के सदृश थे और वृक्ष का आकार था ठीक पंखे के समान। मुझे यह वृक्ष बड़ा सुन्दर जान पड़ा। मैंने अब तक इस प्रकार का वृक्ष कहीं नहीं देखा था। इस वृक्ष से मेरी इस प्रकार की दिलचस्पी देखकर ही श्री थान मुझे 'बुटैनिकल' बगीचे में ले गये और यहां उन्होंने मुझे एक विचित्र वृक्ष और दिखाया जिसके पत्ते के नीचे के डंठल एकदम लाल होते हैं और इन लाल डंठलों पर बेंत के वृक्ष के पत्तों के सदृश हरे पत्ते बड़े लुभावने जान पड़ते हैं। 'बुटैनिकल' बाग भी बड़ी सुन्दरता से लगाया गया है।

जूहू जमींदारी सिंगापुर से लगभग १३ मील दूर है और समुद्र पर लगभग १ मील का पुल है जिस पर से होकर इस जमींदारी में जाना पड़ता है। समुद्र के इस पुल को देखकर मुझे रामायण के सेतु बन्ध की कथा का स्मरण आये बिना न रहा।

सिंगापुर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से बड़े महत्त्व का स्थान है। संसार के बड़े से बड़े बंदरगाहों में यह भी एक है। सिंगापुर पूर्वी गोलार्ध

का सबसे विशाल समुद्री अड्डा है। बड़े से बड़े युद्ध-पोतों की मरम्मत के लिए सूखे डॉक् (dry docks) यहाँ हैं। पानी भरे हुए डॉक् (wet docks) में जहाजों के बेड़े ठहरने के लिये बड़ी अच्छी सुविधा है। समुद्री-शक्ति का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र होने के कारण विदेशी आक्रमणों से रक्षा की पूर्ण व्यवस्था सिंगापुर में है। द्वितीय महायुद्ध में जापानियों ने समुद्र से आक्रमण करने के बदले जमीन से आक्रमण किया। उस समय केवल समुद्री आक्रमण से रक्षा करने के लिये सिंगापुर में उचित व्यवस्था थी। अब इसकी व्यवस्था की जा रही है कि जमीन, समुद्र और हवाई आक्रमण से सिंगापुर की सदा रक्षा की जा सके।

ओकीनावा, हाँगकाँग, सिंगापुर और कोलम्बो पूर्वी गोलार्ध के समुद्री अड्डों की सबसे प्रबल श्रृंखला है। इन केन्द्रों पर आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, इन्डोनेशिया, स्याम, भारत, बर्मा और लंका सभी की गिद्ध-दृष्टि लगी रहती है। हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर के बीच सिंगापुर की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सिंगापुर मलाया देश का ही एक भाग है परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से महत्व रखने के कारण मलाया की सरकार से इसकी सरकार को अलग कर दिया गया है।

सिंगापुर खूब फैला हुआ बसा है। अत्यन्त साफ सुथरा है। पर सड़कें काफी चौड़ी हैं और मकान यथेष्ट रूप से बड़े। शहर देखते ही उसकी संपन्नता छिपी नहीं रहती। सिंगापुर की आबादी करीब दस लाख मनुष्यों की है जिनमें ११९६२३ मलयी, ७६१९६२ चीनी,७०७४९ भारतीय, २०६३९ योरपियन तथा युरेशियन और ७८४५ अन्य हैं। मलयी सिंगापुर के मूल निवासी हैं और शेष समुदाय बाहर से आये हुए। बाहर से आने वालों में चीनियों का बहुमत हो गया है।

मलयी साधारण कद के गेहुएँ वर्ण के मनुष्य हैं; आँख नाक और चेहरा मंगोल जाति से मिलता हुआ। आनंद पूर्वक रहना और कम से कम काम करना इनकी विशेषता है। मलयी लोगों में पुरुषों से स्त्रियां कहीं अधिक काम करती हैं; पुरुष तो शहद की मक्खियों के नरों के सदृश अधिकतर अलमस्त पड़े रहते हैं। दूकानें चलाना, सौदा लेना और बेचना, घर का काम सभी अधिकांश में स्त्रियां करती हैं। मलयों की अपनी भाषा है और अपने रीति रिवाज। चीनियों ने अपनी भाषा और अपने रीति रिवाजों को कायम रखा है। भारतीयों में हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं; दक्षिण भारत के लोग अधिक। और सबसे कम योरपियन होने पर भी राजनैतिक दृष्टि से सब से अधिक महत्वशाली योरपियन हैं।

मलयी, चीनी और भारतीय तीनों का आपसी संबन्ध बुरा नहीं है। पर तीनों मिलकर योरपियनों को बुरी दृष्टि से ही देखते हैं; इसका मुख्य कारण योरपियनों की इतनी कम संख्या होने पर भी योरपियनों का राज सत्ता अपने हाथ में सुरक्षित रखना है।

सिंगापुर में चार भाषाओं का प्रचार है—मलयी, चीनी, तामिल और अंग्रेजी; पर बाजारों के साइनबोर्डों आदि पर दो ही भाषाएँ दृष्टिगोचर होती हैं-चीनी और अंग्रेजी।

शिक्षा, सफाई, आरोग्यता आदि की दृष्टि से सिंगापुर काफी अच्छी स्थिति में है। अपढ़ों की संख्या यहां नहीं के बराबर है। हाल ही में सिंगापुर ने अपना विश्वविद्यालय स्थापित किया है।

यहाँ के प्रधान व्यापारों में तीन व्यापार हैं--रबर, टीन, और अनानास। रबर के बगीचे हैं, जहाँ पहले रबर के वृक्षों में छेद कर उनमें छोटी-छोटी हंडियां बांध ताड़ी के सदृश उनका दूध निकाला जाता है। फिर यह दूध रबर के कारखानों में आकर यहाँ रबर तैयार होती है। टीन की कच्ची धातु को गलाकर टीन तैयार करने के यहाँ कई कारखाने हैं।

इसी प्रकार अनानास को सुरक्षित कर डब्बों में पैककर भेजने के भी कई कारखाने हैं।

रबर, टीन और अनानास के सिवा इमारती लकड़ी, ईंट, रंग, ताड़ी, बिस्कुट, साबुन, नारियल का तेल, मूंगफली, फर्नीचर, एल्यूमीनियम की चीजें और एसबेस्टस के भी यहाँ कारखाने हैं; पर प्रधानतया रबर, टीन और अनानास के ही।

रबर, टीन और अनानास का मलाया के भिन्न-भिन्न स्थानों से यहाँ आयात होता है और इस सामग्री के सारे निर्यात का यही बन्दरगाह है। सिंगापुर के लोगों के खाने के लिये चावल और पहनने के लिये कपड़ा विदेशों से आता है। प्रधानरूप से सिंगापुर एक बड़ा व्यापार-केन्द्र और महत्वपूर्ण सैनिक (strategic) अड्डा है।

सिंगापुर द्वीप है करीब २६ मील लम्बा और १४ मील चौड़ा। समुद्री और सम आब हवा है तथा खूब वर्षा होती है। तापमान में अन्तर बहुत कम रहता है; ८७° से अधिक और ७४° से कम तापमान नहीं रहता। ग्रीष्म और ठंड जैसी कोई ऋतुएं नहीं होतीं; प्रायः साल भर वर्षा होती है। वर्षा की औसत ९५″ है।

आजकल सिंगापुर में साम्यवादियों के बड़े उपद्रव हो रहे हैं। चीन में साम्यवादी राज्य-व्यवस्था हो जाने के कारण सिंगापुर के चीनियों की आन्तरिक सहानुभूति साम्यवादियों के साथ है।

शाम की इस घुमाई में सिंगापुर की कुछ चीजों को देख, कुछ की जानकारी श्री थान आदि से बातों में प्राप्त कर हम लोग ७॥ बजे होटल को लौट आये।

मेरे स्वागत में श्री थान ने रात को ८ बजे अपने निवास स्थान पर एक भोज रखा था। इस भोज में सिंगापुर के सभी प्रधान प्रधान भारतीय आये थे।

इस भोज में भारतीयों से वर्तमान परिस्थिति पर अनेक विचार विनिमय हुए।

रात को लगभग १०॥ बजे मैं फिर होटल लौटा। प्रातःकाल ६ बजे हमारा विमान रवाना होना था। पाँच बजे श्री थान के दफ्तर से दो सज्जन मोटर लेकर पहुँच गये। मैं शौचादि से निवृत हो तैयार था। जब हम एरोड्रोम पर पहुँचे उस समय आकाश निर्मल था। हवाई अड्डे के भवन की छत खूब विशाल थी और वायुयान के उड़ने में अभी विलम्ब था। मुझे प्रातःकाल नित्य लगभग एक घंटा घूमने की आदत है और यथा संभव दौरे में भी मैं इसे निभाने का प्रयत्न करता हूँ। विमान जाने में देर के कारण कलकत्ते के एरोड्रोम पर भी घूमा जा सकता था, पर वहां आत्मीयजनों के रहने के कारण उस दिन का वायुमंडल इस चहलकदमी के योग्य न था। सिंगापुर की ऐसी अवस्था न थी अतः मैंने एरोड्रोम के भवन की छत पर घूमना आरम्भ किया। मुझे घूमते हुए आधा घंटा ही बीता होगा कि एरोप्लेन में सवार होने की घोषणा हुई।

आज जब हवाई जहाज उड़ा तब की और कल कलकत्ते से जब हवाई जहाज उड़ा था तब की मेरी मानसिक अवस्था में बड़ा अन्तर था। चौबीस घंटों में ही कितना फर्क पड़ गया था। मनुष्य के परिस्थिति के अनुकूल बनने में अन्य प्राणियों की अपेक्षा शायद बहुत कम समय लगता है। मुझे भी इस परिस्थिति का कितना जल्दी अभ्यास हो चला था।

७

सिंगापुर से हिन्देशिया की राजधानी जकारटा पहुँचने में हमें बहुत देर न लगी। सिंगापुर से जकारटा केवल २॥ घंटे की उड़ान थी। यद्यपि कलकत्ते से सिंगापुर तक जैसा मौसम रहा था वैसा अब नहीं था और आकाश बार बार बादलों से आच्छादित हो जाता था, परन्तु वायुयान बादलों के ऊपर हो गया था। और तूफान इत्यादि था नहीं, इसलिये 'बंपिंग' जरा भी नहीं हो रहा था। पृथ्वी पर रहने और चलने वालों के ऊपर बादल रहते हैं। पहाड़ों पर कभी कभी जब बादल आ जाते हैं, तब पहाड़ों पर घूमने-फिरने वालों के चारों ओर भी बादल हो जाते हैं। पर बादलों के ऊपर विमान में ही बैठकर जाया जा सकता है और यह दृश्य भी अतीव सुन्दर रहता है। विमान का तेजी से बादलों के ऊपर उड़ते हुए जाना, विमान के नीचे भिन्न-भिन्न आकारों के बादलों की दौड़, कभी-कभी बिजली की चमक और मेघों की गरज, कभी-कभी नीचे वर्षा होना और ऊपर सूर्य की किरणें तथा उन किरणों के कारण घटाओं में तथा नीचे बरसने वाले पानी में चमकदार सातों रंगों के दर्शन; सब मिलकर एक अजीब नजारा हो जाता है।

जब हमारा हवाई जहाज जकारटा के हवाई अड्डे पर उतरा और हम सब यात्री उसके बाहर निकले तब भारतीय दूतावास की ओर से भेजे गये एक सज्जन मुझसे मिले। एरोप्लेन यहां केवल १॥ घंटे ठहरता था अतः एरोड्रोम से कहीं जाने का प्रश्न ही न था, कम से कम मेरे सदृश व्यक्ति के लिये जो न्यूनतम ४५ मिनिट पहले स्टेशन या एरोड्रोम पहुँच जाने का आदी हो।

एक जमाने में हिन्देशिया में आर्य सभ्यता पूर्ण विकसित रूप में आ चुकी थी। हिन्देशिया के 'बाली' आदि टापुओं में मन्दिर इत्यादि के रूप में आज भी उसके चिन्ह मौजूद थे अतः मेरे सदृश व्यक्ति जिसे आर्य सभ्यता और संस्कृति से थोड़ा बहुत प्रेम हो, हिन्देशिया के इन स्थानों के दर्शन का इच्छुक होना एक स्वाभाविक बात थी। ता० २८ अक्टूबर को भारत से न्यूजीलैंड जाने वाले कार्यक्रम में कुछ दिन हिन्देशिया में

ठहरना भी तय किया गया था, परन्तु जब जब मैं न्यूजीलैंड देर से जा रहा था तब जाते हुए वहां ठहरना सम्भव न था। लौटते समय ४, ५ दिन के लिये हिन्देशिया में ठहरने की अपनी इच्छा भारतीय दूतावास प्रतिनिधि को मैंने बतायी और उनसे कहा कि वे ऐसा कार्यक्रम तैयार कर मुझे वेलिंगटन भेज दें जिससे मैं ४, ५ दिन में हवाई जहाजों द्वारा यात्रा कर हिन्देशिया के प्रधान स्थानों को देख सकूँ।

एरोप्लेन के रवाना होने तक कुछ शाकाहारी कलेवा करने तथा भारतीय दूतावास के सज्जनों से बातें करने के सिवा अन्य कोई काम न था। ठीक समय पर वायुयान ने जकारता के एरोड्रोम को छोड़ दिया।

८

इन्डोनेशिया के जकारटा से एरोप्लेन आस्ट्रेलिया के डारविन में ठहरने वाला था । उड़ान काफी लम्बी थी—वही कलकत्ते से सिंगापुर तक की ९ घंटे वाली; परन्तु अब मुझे समय के अन्तर की बात मालूम हो गयी थी । जकारटा से डारविन के समय में भी कलकत्ता और सिंगापुर के समय के अन्तर के सदृश लगभग २ घंटे का फर्क था; अर्थात् जकारटा से डारविन का समय दो घंटे आगे था; इस प्रकार जकारटा से डारविन की उड़ान भी करीब ७ घंटे की ही रह जाती थी ।

हवाई जहाज के रवाना होते ही मैंने संध्या पूजा से निपट लेना उचित समझा । यह मैं निश्चय कर ही चुका था कि इस यात्रा में संध्या-पूजा और स्नान से कोई संबन्ध नहीं रहेगा; संध्या के लिये जल भी नहीं था अतः एरोप्लेन की सीट पर बैठे-बैठे ही बिना जल के मैंने पहले संध्या की, फिर जप और तदुपरान्त पाठ । इसके पश्चात् पढ़ना आरम्भ किया पर आज अधिक नहीं पढ़ा जा सका; थोड़ी ही देर में पढ़ते—पढ़ते मुझे नींद आगयी; दो दिनों से पूरी नींद हो जो न पायी थी । मुझे यों तो अधिक नींद की आवश्यकता नहीं रहती, पर पाँच घंटे बिना छेड़छाड़ के नींद न मिलने पर उनींदा हो जाने के कारण ऊंघ सी आने लगती है और ऐसे अवसरों पर यदि पढ़ने लगूँ या कोई कथा अथवा भाषण सुनने चला जाऊँ तो ऐसी नींद आने लगती है कि रोके नहीं रुकती । कई बार तो इस प्रकार के प्रसंगों पर मुझे लज्जित तक होना पड़ता है । चिन्ताओं से दूर मन की निश्चिन्तता भी शायद इसका कारण है । मेरे जीवन में ऐसे अवसर मुझे बहुत कम याद पड़ते हैं, जब मैंने नींद या भूख खोयी हो; जेलों तक में नहीं ।

'लंच' के समय विमान की 'स्टुअर्डेस' ने मुझे जगाया । अब विमान वालों को मेरे शाकाहार की बात मालूम हो गयी थी अतः 'वेजी-टेबिल सूप', 'वेजीटेबिल कटलैट', 'फ्रूटसलाड' आदि सभी मेरे लिये तैयार कर लिये गये थे । खाते-खाते जब मैंने बाहर देखा तब मालूम हुआ कि मौसम बहुत खराब हो गया है । विमान के नीचे बड़े घने बादल हैं और ऊपर भी; कभी कभी बादलों के बीच से बादलों को चीरते हुआ एरोप्लेन उड़ता है और उस समय

बादलों की धुन्ध के सिवा और कुछ दिखायी नहीं देता। फिर भी तूफान के कोई चिन्ह अब तक नहीं थे; वायु मे वेग भी नहीं था अतः 'बंपिंग' अभी भी नहीं हो रहा था। विमान कोई तीस हजार फुट की ऊँचाई पर जा रहा था और उड़ने की रफ्तार भी वही २५० से २७५ मील फी घंटे की।

जब भूमध्य रेखा (ईक्वेटर) हमने पार की तब इस रेखा को पार करते ही विमान के व्यवस्थापकों ने सब यात्रियों को सुन्दर रंगीन छपा हुआ एक प्रमाण पत्र दिया। इस प्रमाण पत्र पर हर यात्री का नाम लिखा हुआ था।

इसके बाद मे फिर थोड़ी देर के लिये सो गया और अब जब उठा तब ऐसा जान पड़ा जैसे नींद पूरी हो चुकी है। नींद की खुमारी भी अब न रह गयी थी। उठने के पश्चात् मैंने निर्विघ्नता से पढ़ना आरम्भ किया, जो बराबर डारविन तक चलता रहा। आज मैंने सन् १९४८ की 'कामनवेल्थ पार्लिमेंटरी कान्फन्रेंस' की कार्यवाही के वे भाग पूरे कर उन पर नोट बना लिये जो मेरी दृष्टि से आगामी कांफ्रेंस के लिये आवश्यक थे।

ठीक समय हम लोग डारविन पहुँच गये। तीन घंटे के बाद रात ही को एरोप्लेन सिडनी के लिये रवाना होने वाला था। डारविन का मौसम बहुत खराब था। जोर से हवा चल रही थी और वर्षा हो रही थी।

हवाई अड्डे से एक बस मे हम लोग एक होटल मे आये। आज मै नहाया नहीं था पर इस हवा पानी के कारण कुछ ऐसा ठंडा था कि नहाने का मेरा साहस नहीं हुआ; जब मैं शौच से निवृत्त होने के लिये स्नानागार की ओर गया तब मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि हमारे साथी योरपियन यात्रियों में से कई एक दूसरे के सामने नंगे होकर बिना किसी संकोच के नहा रहे है। सभ्य समाज में भी स्त्रियों के इस प्रकार नहाने की बात मैने सुनी थी। योरपीय समाज में 'प्राइवेसी' पर बड़ा लक्ष रखा जाता है, यह भी मै सुन चुका था। पुरुषों का और योरपीय समाज के पुरुषों का यह व्यवहार मेरी समझ में न आया।

शौचादि से निवृत्त हो सायं सन्ध्या कर जब मैं खाने के कमरे में पहुँचा तब मैंने देखा कि डबल रोटी, मक्खन फल और दूध, के सिवा इस होटल में कोई शाकाहारी वस्तु नहीं है। पर पेट भरने के लिये इतना क्या कम था ?

भोजन से निपट जो बस हमें यहां लायी थी वही हमें एरोड्रोम ले चली। जोर की बारिश हो रही थी, तेजी से हवा चल रही थी। वर्षा की बड़ी बड़ी बूंदों और वेग के कारण जो वृक्ष लहरा रहे थे उनसे यथेष्ट शब्द हो रहा था।

अब तक रात को मैंने हवाई जहाज से कोई यात्रा न की थी, उस पर ऐसा मौसम ! मन में बड़ी फिक्र थी, पर न जाने का उपाय ही क्या था। जेल जाते समय की विवशता मुझे याद आयी। यद्यपि आज यात्रा के लिए वैसी कोई कानूनी विवशता नहीं थी। परन्तु मानव के सामाजिक प्राणी रहने के कारण केवल कानून ही उसे नहीं बाँधते; उसके लिए अन्य अनेक बन्धन कानूनी बन्धनों से भी कहीं अधिक कठिन होते हैं। इन बन्धनों के कारण जबतक कोई अत्यधिक निर्लज्ज ही न हो, वह अपने समूह से पृथक ऐसा कोई काम नहीं कर सकता जो उसे किसी भी प्रकार उसके समूह में नीचा दिखावे; अनेक बार तो उसे अपने समूह के साथ हँसते-हँसते अपने उन प्राणों को देने के लिये भी तैयार होना पड़ता है जिनसे अधिक प्रिय अन्य कोई वस्तु इस सृष्टि में किसी भी जीवधारी के लिये नहीं है।

रात्रि के घोर अन्धकार में तथा बरसते हुए मूसलधार पानी और चलती हुई आँधी में हम सबको लेकर वायुयान डारविन से बिदा हुआ। कुछ देर बड़ी जोर का 'बंपिंग' हुआ, पर हम लोग सीट के कमर पट्टे के द्वारा सीट पर बँधे हुए थे। विमान ने बादलों को चीरते हुए ऊपर उठना शुरू किया। यद्यपि आँधी पानी से हमें अभी भी छुटकारा न मिला था, पर ऊपर उठने से 'बंपिंग' बहुत कम अवश्य हो गया।

यात्रियों ने सोने की ठानी। मुझे भी कुछ देर बाद झपकी लग गयी; पर घंटा भर भी न बीता होगा कि फिर से 'बंपिंग' शुरू हुआ।

अब तो इतना अधिक 'बंपिंग' होने लगा कि कई यात्रियों ने कै करना शुरू किया। मैं कै से तो बच गया, पर चक्कर मुझे भी बहुत आने लगे।

कुछ देर बाद हवाई जहाज ने नीचे उतरना शुरू किया। सिडनी पहुँचने का समय प्रातःकाल था; अभी केवल दो बजे थे अतः इस समय हवाई जहाज का नीचे की ओर रुख होने के कारण मैं तथा मेरे साथी कई यात्री घबरा उठे। मालूम हुआ कि तूफान और घटाओं की सघनता के कारण वायुयान का बादलों के ऊपर उड़ना संभव नहीं है और चूंकि इस क्षेत्र में ऊंचे पर्वत नहीं हैं इसलिये अब निचाई पर ही चलना होगा। जो वायुयान करीब बीस बाईस हजार फुट की ऊँचाई पर उड़ रहा था, वह सात हजार फुट पर आगया। और जब वह एकाएक नीचे उतरा तब सामने वे अक्षर पुनः चमकने लगे जिनके द्वारा सीट के पट्टे बाँधने का आदेश रहता है। यद्यपि प्रसंग काफी गंभीर था, पर इस गम्भीर अवसर पर भी एक मजेदार घटना हो गयी। जिससे मैं और अनेक यात्री खिलखिलाकर हँस पड़े। घटना यों हुई। मेरे निकट की सीट पर जो एक योरपियन

सज्जन बैठे हुए थे वे कभी इस पट्ट को नहीं बाँधते थे। अवसर की गम्भीरता देख मैंने उनसे पट्टा बाँधने की प्रार्थना की। इस पर मेरी खिल्ली सी उड़ाते हुए वे बोले कि वे तमाम दुनिया को उड़कर नाप चुके हैं और उन्होंने कभी इस पट्टे का आश्रय नहीं लिया। कुछ ही क्षणों के बाद के 'बंपिंग' में आप अपनी सीट से ऐसे उछटे कि सामने की सातवीं सीट के निकट गिरे।

वर्षा हो रही थी। हवा का जोर ज्यों का त्यों था। खूब 'बंपिंग' था। अधिकांश यात्री कुशल पूर्वक सिडनी पहुँचने की भगवान से प्रार्थना कर रहे थे, जिनमें मैं भी एक था।

और जिस समय हम यह प्रार्थना कर रहे थे, उस समय मुझे सन् १९१७ की एक घटना का स्मरण आया। सन् '१७ में पिता जी और माता जी के साथ मैं श्री जगदीशपुरी, श्री रामेश्वर और श्री द्वारकापुरी तीन धामों की यात्रा के लिये गया था। जब हम नौकाओं द्वारा बेट द्वारका से द्वारका लौट रहे थे उस समय द्वारका और बेट द्वारका के बीच की समुद्री खाड़ी में बड़ा भारी तूफान आ गया। कैसी डाँवाडोल होती थी उस समय हमारी नाव। आज के सदृश उस दिन भी हम सब ने इसी प्रकार कुशल से किनारे लगने के लिये भगवान से प्रार्थना की थी। बड़े से बड़े नास्तिक को भी ऐसी परिस्थितियों में कदाचित् ईश्वर याद आता होगा।

६

लगभग ४।। बजे उषःकाल के समय मौसम ठीक हुआ; पौ फटने के साथ बादल भी फटे। भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण में ऋतुएँ एकदम बदल जाती हैं। हम उत्तर के देशों में रहने वालों के लिये जो ऋतु जाड़े की रहती है वह दक्षिण के देशों में रहने वालों के लिये गरमी की। यह बात मुझे जब मैं दक्षिण आफ्रिका गया तब मालूम हो गयी थी; अतः मुझे देख कर कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि ४ बजे ही उषा की लाली पूर्वाकाश में फैलने लगी है। दृश्य बड़ा ही मनोहारी था। घने मेघों के टुकड़े हो रहे थे और वे अनेक थलचरों, जलचरों, नभचरों के रूप ले-लेकर तेजी से दौड़ रहे थे। उषा का प्रकाश कहीं उन्हें लाल और कहीं सुनहरी रंग दे रहा था। वायुयान सिडनी के समीप समुद्र पर से उड़ रहा था और बादलों के ऊपरी सतह के बीच-बीच जिस प्रकार नीलाकाश दिख रहा था उसी प्रकार बादलों के नीचे की सतह के बीच-बीच नीला सागर। हवाई जहाज के ऊपर और नीचे दोनों ही दृश्य सर्वथा समान थे। रात को अत्यधिक कष्ट के बाद, जो कष्ट भय से भी भरा हुआ था, यह दृश्य और भी चित्ताकर्षक हो गया था।

जब लगभग ६।।। बजे हवाई जहाज ने सिडनी नगर की परिक्रमा प्रारम्भ की तब काफी निचाई पर आ जाने के कारण नगर का दृश्य बहुत स्पष्ट हो गया। वायुयान की इस परिक्रमा से ही नगर की विशालता का अनुमान होने में कठिनाई नहीं पड़ी। और जब हमारा हवाई जहाज इस प्रकार आस्ट्रेलिया देश के सबसे बड़े नगर सिडनी की परिक्रमा कर रहा था तब मुझे एकाएक आस्ट्रेलिया देश के 'आस्ट्रेलियन वैलर' घोड़ों का स्मरण आया। एक जमाने में आस्ट्रेलिया देश इन घोड़ों के लिये बड़ा प्रसिद्ध था और चूँकि मेरे पिताजी को घोड़ों का बड़ा शौक था इसलिये यहाँ के घोड़े हमारे यहाँ भी रखे जाते थे। उस समय हमारे अस्तबल में करीब ३०० घोड़े रहते थे और उनमें जीन सवारी के काठियावाड़, मारवाड़ तथा अरब नसल के होते थे, तथा बग्घी के आस्ट्रेलियन वैलर। इन बग्घी के घोड़ों में चौकड़ियां एवं छकड़ियां तो कई रहती ही थीं, पर एक चहर नाम की पोस्टेलियन बग्घी थी, जिसमें चार-चार की पंक्ति में सोलह घोड़े जुतते थे

तथा आठ पोस्टेलियन कोचवान बैठकर उस सोलह घोड़ों की बग्घी को चलाते थे। इस बग्घी के आगे आठ और पीछे आठ सवार रहते थे। इस प्रकार बत्तीस एक रंग और रूप के दीर्घकाय आस्ट्रेलियन बैलर और घोड़ों के मैंने अपने घर में दर्शन किये हैं। इसी प्रकार के खर्चों में लाखों नहीं करोड़ों रुपया केवल हमारे घर का साफ हुआ यह नहीं, भारत के राजे महाराजे, जमींदार मालगुजार भी इसी तरह के खर्चे किया करते थे। किसी देश के जब निन्यानबे आदमी गरीबी से दबोचे हुए हों तब एक को इस प्रकार के गुलछर्रे उड़ाने का क्या अधिकार है? यह प्रश्न भी तत्काल मेरे मन में उठा और मुझे इस बात पर अनेक बार के सदृश आज फिर बड़ा हर्ष हुआ कि इन राजे महाराजों के अधिकार समाप्त हो गये हैं तथा जमींदारी प्रथा भी जा रही है।

जब हवाई जहाज सिडनी के अड्डे पर उतरा और हम लोग उसके बाहर निकले, तब भारतीय सरकार के व्यापारी प्रतिनिधि श्री बख्शी और आस्ट्रेलियन सरकार के प्रतिनिधि श्री आर. आर. क्वांबी ने मेरा स्वागत किया, जिसके लिये आज ये लोग एरोड्रोम पर आये थे।

जिस एरोप्लेन से हम लोग कलकत्ते से यहां तक आये थे उसकी यात्रा लन्दन से सिडनी तक होती है अतः सिडनी से न्यूजीलैंड के आकलैंड नगर को हमें दूसरे हवाई जहाज से जाना था, जो सिडनी से रात को १२ बजे चलता था। गत रात्रि को जो भय से मिश्रित कष्ट हमें हुआ था उसके कारण मैंने अपने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि चाहे एक दिन अधिक लग जाय, पर सिडनी से आकलैंड मैं दिन के जाने वाले हवाई जहाज से जाऊँगा, पर दिन को कोई वायुयान आकलैंड जाता ही न था; दूसरे यह कहा कैसे जाता कि मैं रात को जाने वाले विमान से यात्रा न करूँगा, जब रोज ही हवाई जहाज सिडनी से आकलैंड जाते हैं और इतने यात्री उससे यात्रा करते हैं। अतः रात के ही वायुयान से आकलैंड रवाना होने का तय कर मैंने हवाई अड्डे पर ही दिन भर सिडनी घूमने का कार्यक्रम बना डाला और श्री बख्शी तथा श्री क्वांबी के साथ श्री बख्शी के मकान को रवाना हुआ। पासपोर्ट, टीकों के सर्टीफिकेट और कस्टम्स के मामलों में भी यहां कोई दिक्कत नहीं हुई। आस्ट्रेलियन सरकार के प्रतिनिधि जो मुझे लेने पधारे थे। जब मुझसे श्री क्वांबी ने पूछा कि मेरे ठहरने का प्रबन्ध आस्ट्रेलिया की सरकार ने सिडनी के सर्वश्रेष्ठ होटल में किया है, पर श्री बख्शी चाहते हैं कि मैं उनके यहां ठहरूँ तब मुझे ठहरने के स्थान के चुनाव में कोई देर न लगी। अच्छे से अच्छे होटल के विशाल से विशाल कमरों की अपेक्षा मुझे किसी गृहस्थ के छोटे से छोटे मकान और उनका जरा सा कमरा कहीं अधिक रुचिकर होता है। पूर्वी और दक्षिण आफ्रिका के दस सप्ताह के दौरे में मैं एक

दिन भी किसी होटल में न ठहर वहां के लोगों का मेहमान ही हुआ था।

श्री बख्शी एक छोटे से परन्तु बड़े ही सुन्दर साफ सुथरे, बगीचे से घिरे हुए मकान में रहते हैं। उनके साथ उनकी पत्नी और तीन बच्चों तथा एक बच्ची का निवास है। नौकर चाकर यहां मिलते नहीं। मकान की सफाई, बाग की देख-रेख, घर का सारा काम भोजन बनाना, बर्तन माँजना इत्यादि कुटम्बियों को ही करना पड़ता है। श्री बख्शी के इस मकान तथा इसके आसपास के मकानों को देखकर आस्ट्रेलिया के लोगों की रहन-सहन का मुझे तत्काल पता लग गया। यहां के प्रायः सभी लोग इस प्रकार के छोटे-छोटे मकानों में रहते हैं और अपने घरू कामों के लिये बिना अन्य किसी को कष्ट दिये अपने काम स्वतः किया करते हैं। मुझे तो यह रहन-सहन बड़ी पसन्द आयी और जब मैं इस रहन-सहन की मन ही मन सराहना कर रहा था, उस समय मुझे अपनी पहली गिरफ्तारी का स्मरण आया। यद्यपि असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित होने के पश्चात् मेरी उस समय के पूर्व की रहन-सहन में बहुत परिवर्तन हो गया था, पर उसमें आमूल परिवर्तन तो पहली जेल-यात्रा के बाद ही हुआ और वह एक मजेदार घटना के पश्चात् जिसे मेरे अनेक मित्र जानते हैं और जिसका जिक्र वे तथा मैं दोनों ही कई प्रसंगों पर कर चुके हैं। यह घटना थी जेल में मेरा पहले दिन का स्नान। इस स्नान के पूर्व मैं कभी स्वयं नहीं नहाता था। एक नौकर शरीर में साबुन इत्यादि लगा शरीर को मल देता था और दूसरा पानी उड़ेल देता था। जब मुझे जेल में पहले दिन स्वयं नहाना पड़ा और नहाते-नहाते कई बार लोटा भटाभट सिर में लगा और इतने पर भी कान का साबुन न छूटा तब मेरे उस समय के साथी पं० रविशंकर शुक्ल, माखनलालजी चतुर्वेदी आदि ठठाकर मुझ पर हंसे थे। मेरे मन में भी इसके कारण अपने ही ऊपर इतनी ग्लानि उत्पन्न हुई थी कि मैंने अपना सारा कार्य स्वयं करने का निश्चय किया था। खुद मैं अपनी जेल की बैरक को झाड़ा करता, अपने कपड़े धोता, अपने बर्तन मांजता, यहां तक कि अपना पैखाना भी साफ करता। इन कामों के कारण आरम्भ में मुझे कष्ट भी कम नहीं हुआ। बैरक झाड़ते-झाड़ते धूल नाक मुंह में भरने से मुझे खांसी हुई, कपड़े भी एक तो कठिनाई से साबुन लगाकर धोये जाते, फिर उन्हें निचोड़ने में भुजाएं भर आतीं; बर्तनों का घी कठिनाई से छूटता एवं घंटों हथेलियां जला करतीं और पैखाना साफ करने में तो जी मचल कर अनेक बार कै करने की इच्छा होती। पर जब मैंने कैदियों को मुंह और नाक कपड़े से लपेटकर झाड़ू देते देखा, कपड़े हिस्से कर कर साबुन लगाते तथा निचोड़ते देखा, पत्तों की सहायता से बर्तनों को मांजते देखा तब मुझे भी उनका अनुसरण कर इन कामों को करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। और पैखाना साफ करते समय मैं गांधीजी के आश्रम

का जीवन स्मरण कर लेता; उससे मुझे बल मिलता। धीरे-धीरे पैखाना साफ करने की भी आदत हो गयी। कितना हर्ष हुआ था मुझे उस समय सर्वथा स्वावलंबी हो जाने पर। भारत में धनवानों की संतति जिस ढंग से बड़ी की जाती है वह ढंग उसे सर्वथा निकम्मा बना देता है। मैं अपनी ३४ वर्ष की अवस्था में सर्वप्रथम जेल भेजा गया था। ३४ वर्ष का व्यक्ति स्वयं नहा न सके इससे अधिक लज्जा और ग्लानि की और कोई बात हो सकती है ? इस लज्जा और ग्लानि ने मुझे स्वावलंबी बनाया।

नौकर न मिलने के कारण यहां के सम्पन्न व्यक्ति भी छोटे-छोटे मकानों में रहते तथा अपने घर के सारे काम स्वयं करते हैं। इस स्वावलंबन से उन्हें तो सुख मिलता ही है, परन्तु एक बात और होती हैं। घरेलू कामों के लिये एक बहुत बड़ा समुदाय जो अशिक्षित तथा मनुष्योचित गुणों के अभाव में रह जाता है तथा जिन्हें नौकरों पर अवलंबित रहने की आदत रहती है वह इस समुदायको जो इसी स्थिति में रखने का इच्छुक रहता है, वह बाग नहीं रहती। घरेलू कामों के लिये नौकरों को रखना यह गुलाम प्रथा का ही एक प्रकार का अवशेष है। समाज की आर्थिक अवस्था तथा रचना तो इसका कारण है ही और उसमें परिवर्तन अत्यावश्यक है जिससे एक आदमी को महल में रहने तथा ९९ को उसका काम करने की आवश्यकता न पड़े, परन्तु कम से कम घरेलू नौकरों के समुदाय का तो अन्त शीघ्र से शीघ्र होना चाहिये और इसके लिये छोटे मकानों की रहन-सहन। एक विशेष नाप के ऊपर के नाप के मकानों का निवास कानून द्वारा बन्द होना आवश्यक है। बड़े मकानों में रहने की जिनकी आदत है यह उनके हित की भी बात होगी। बात यह है कि जिस काल में किले, महल, बड़े बड़े मकान बनवाये गये थे और उनमें राजा महाराजे, संपत्ति शाली व्यक्ति रहते थे, उस समय और इस काल में बड़ा अन्तर हो गया है। इस समय ये बड़े निवास स्थान आराम के नहीं, कष्ट के स्थल हैं। मैं स्वयं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं कि आज ऐसे निवास स्थानों के निवास से सुख न मिलकर कष्ट ही होता है। इतने पर भी यदि ये निवास नहीं छूटते तो इसका कारण इनसे मोह है और इस मोह का शीघ्र निवारण कदाचित् कानून के निर्माण से ही हो सकता है।

मैंने आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बड़े बड़े आदमियों को इसी प्रकार के मकानों में रहते देखा। न्यूजीलैंड के प्रधान मंत्री मिस्टर हालैंड तक का मकान ऐसा ही था। न्यूजीलैंड में तो इन मकानों का नाप कानून द्वारा नियुक्त है। मकानों की जमीन $\frac{1}{2}$ से $\frac{1}{4}$ एकड़ तक रहती है। मकान ११०० वर्ग फुट लंबा चौड़ा और १५ से १८ फुट ऊंचा बनता

है जिसमें एक रसोई घर; एक बैठने, एक खाने तथा दो सोने के कमरे मय स्नानागार और पैखाने के रहते हैं। कमरे बहुत बड़े नहीं होते और उनकी ऊंचाई ८॥ फुट रहती है। एक वर्गफुट जमीन की कीमत करीब तीस रु० और ऐसे मकान बनाने में करीब पच्चीस हजार रुपये लगता है। हर मकान में गरम और ठंडा पानी चौबीसों घंटे नल के द्वारा मिलता है। कुटुंब के बड़े होने पर म्यूनिस्पैलिटी की इजाजत से एक-दो कमरा और जोड़ा जा सकता है।

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में होटल, दफ्तर, गोदामें, सिनेमा आदि के सिवा रहने के लिए बड़े मकान बहुत कम हैं। आस्ट्रेलिया में फिर भी कुछ दिख जाते हैं, पर न्यूजीलैण्ड में नहीं।

१०

निश्चित् कार्यक्रम के अनुसार मुझे सिडनी घुमाने के लिये सरकारी मोटर १०॥ बजे आ गयी। तय यह हुआ था कि आस्ट्रेलियन सरकार के श्री वार्ड (Mr. Ward) मेरे साथ जाकर मुझे सारा शहर तथा अन्य देखने योग्य स्थान दिखा देंगे।

हम लोग पहले पहल पार्लिमेंट हाउस गये। आस्ट्रेलिया की केन्द्रीय पार्लिमेंट कैनबरा में होती है, जो सिडनी से लगभग २०० मील है। सिडनी में सिडनी स्टेट की पार्लिमेंट होती है। भारतीय राज्यों के सदृश आस्ट्रेलिया के स्टेटों की धारा सभाएँ हैं और सरकारें। केन्द्र की धारा सभा और केन्द्रीय सरकार सबके ऊपर है। सिडनी के इस धारा सभा का सुन्दर भवन है।

पार्लिमेंट हाउस देखने के पश्चात् हम लोग शहर में घूमे।

इसके पश्चात् हम लंच के लिये श्री बख्शी के यहाँ लौटे और लंच खाकर तत्काल सिडनी का जू देखने गये जो सारे संसार का सबसे बड़ा जू माना जाता है।

जू अत्यन्त विशाल है, साथ ही अत्यधिक व्यवस्थित। मानवों को छोड़ कर सभी प्रकार के थलचर, जलचर, नभचरों का संग्रह है। इतना बड़ा संग्रह मैंने अब तक कहीं नहीं देखा था। इस संग्रह में सबसे बड़े और सब से सुन्दर दो संग्रह हैं—नभचरों में रंग बिरंगे पक्षियों के, और जलचरों में रंग बिरंगी मछलियों के। इन जीवों के कैसे आकर्षक चटकदार भिन्न भिन्न रंग और एक-एक जन्तु में विविध रंगों का मिश्रण। कई के विचित्र रूप भी। अनेक पक्षियों और मछलियों पर से तो उनके रंगों और रूपों के कारण दृष्टि ही न हटती थी। कहते हैं आस्ट्रेलिया तथा उसी के निकट गायना के वनों में जैसे पक्षी एवं चारों ओर के समुद्रों में जैसी मछलियाँ मिलती हैं वैसी संसार के किसी अन्य स्थान पर नहीं। जू से लौटकर हम फिर श्री बख्शी के घर पर आये और वहाँ सिडनी नगर तथा आस्ट्रेलिया के विषय में बहुत सी बातें करते रहें।

आस्ट्रेलिया महाद्वीप लगभग उतना ही विशाल है जितना संयुक्त राष्ट्र अमेरिका।
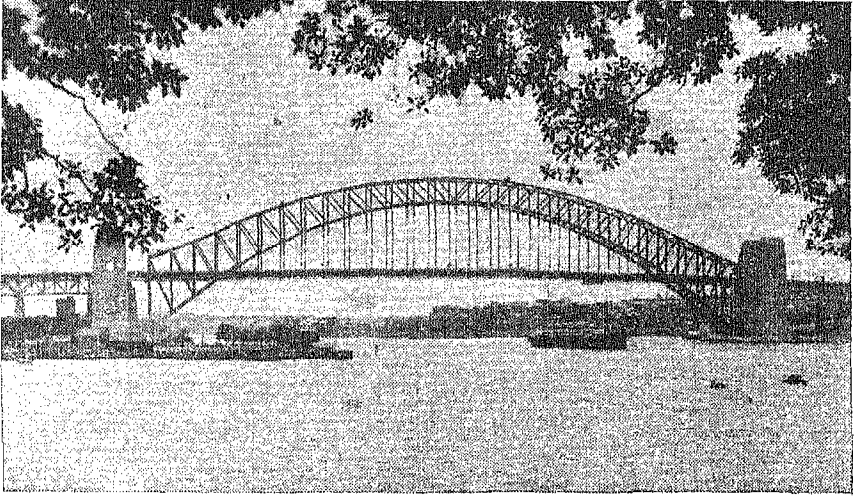
सिडनी का वह झूलता पुल जिस पर आस्ट्रेलिया को बड़ा गर्व है ।
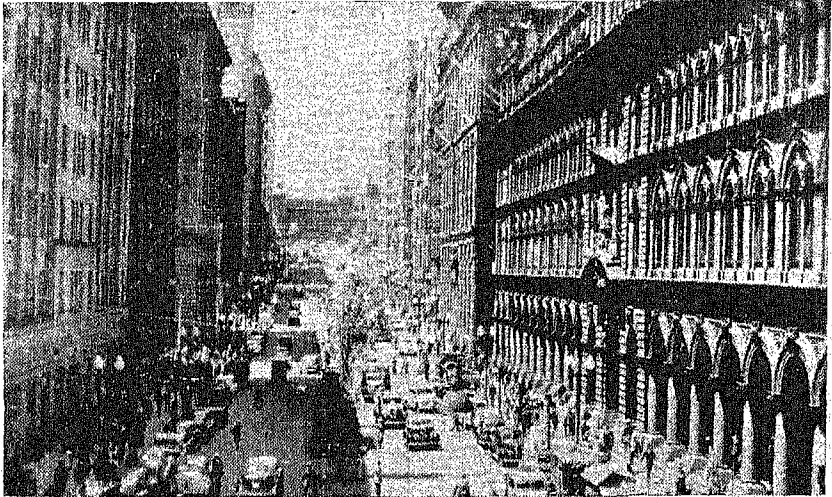
सिडनी के मुख्य बाजार का एक दृश्य

आस्ट्रेलिया का 'कोआला' नाम का पशु जो केवल यही होता है ।

आस्ट्रेलिया के 'कंगारू' नामक जानवर जो केवल यही होते हैं ।
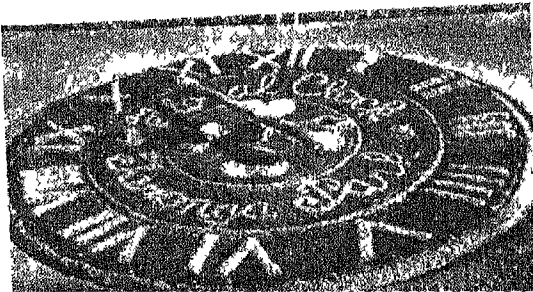
सिडनी के "जू" की एक फूलपत्तियों की विचित्र घड़ी जो समय देती है और प्रत्येक घंटे पर बजती है ।

इसका क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल से बहुत अधिक है। आस्ट्रेलिया की प्रायः पूरी आबादी उसके समुद्री किनारों में केन्द्रित है, प्रधानतः पाँच राजधानियों में--सिडनी, मेलबोर्न, ब्रिसबेन, एडीलेड और पर्थ। आस्ट्रेलिया की कुल आबादी ८० लाख है। यद्यपि यह पूर्वी गोलार्ध का एक महाद्वीप है, आस्ट्रेलिया की संस्कृति, रीतिरिवाज, और जीवन का दृष्टि-कोण यूरोपियन है। इस देश का जीवन-धोरण अत्यंत ऊँचा है और निर्धन वर्ग जैसी कोई श्रेणी नहीं। बेकारी का नाम तो लोगों ने सुना नहीं। सब लोगों को व्यवसाय प्राप्त है और सभी कामों का कम-से-कम वेतन कानून द्वारा निर्धारित कर दिया गया है। यह वेतन दुनियाँ के अधिकांश देशों के वेतन से कहीं अधिक है।

इस समय काम करने वाले लोगों की भारी कमी है और सरकारी सूत्रों का अनुमान है कि लगभग १२०,००० रिक्त स्थान हैं जिनके लिये स्त्री पुरुष कर्मचारी प्राप्त नहीं हैं। घरेलू काम काज के लिये नौकर अप्राप्य हैं। घंटे दो घंटे काम करने के लिये घरेलू काम करने वाली स्त्रियाँ इतने अधिक वेतन पर मिलती हैं कि साधारण हैसियत के लोग उनको नहीं रख सकते।

आस्ट्रेलिया के विभिन्न हिस्सों की जलवायु भिन्न प्रकार की है। कैनबरा में बड़े जोर की सर्दी पड़ती है, सिडनी में उतनी नहीं। ग्रीष्म ऋतु कष्टप्रद नहीं होती। १००-फैरन हीट से ऊपर कभी तापमान नहीं होता। वर्षा और धूप बहुतायत में रहती है। आस्ट्रेलिया की जलवायु-संबन्धी सबसे मनोरंजक बात यह है कि भूमध्य रेखा के दक्षिण में होने के कारण ग्रीष्म ऋतु का मध्यान्ह दिसम्बर-जनवरी में होता है और शिशिर का मध्यान्ह जून जुलाई में। याने जब हमारे यहाँ गर्मी होती है तो वहाँ जाड़ा और जब हमारे यहाँ जाड़ा तो वहाँ गर्मी।

आस्ट्रेलिया की रहन-सहन पश्चिमी ढंग की है। प्रायः सभी घरों में वर्तमान युग की सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं जैसे रेफ्रीजरेटर, स्नानागार का पानी गरम करने की मशीन, खाना पकाने वाली बिजली की मशीन इत्यादि। साधारण स्थिति के लोगों को भी ये सुविधायें प्राप्त हैं। घरेलू काम के नौकरों की प्रथा ही आस्ट्रेलिया में नहीं है इसलिये गृहिणियों को सब काम कर अपना घर साफ और स्वच्छ रखना पड़ता है। यह सब परिश्रम का कार्य है और प्रायः सभी आस्ट्रेलियन स्त्रियाँ परिश्रमशील होती हैं। आस्ट्रेलिया में खाद्य संकट बिल्कुल नहीं है। वहाँ तो इतना अधिक अन्न है कि प्रति वर्ष संसार के विभिन्न देशों को वहाँ से अन्न भेजा जाता है। भारतवर्ष में भी आस्ट्रेलिया से अन्न आता है।

हां, मजदूरी मँहगी होने के कारण कुछ खाद्य सामग्री बहुत मँहगी मिलती है। गेहूँ, दूध, मक्खन और शक्कर भारतवर्ष की अपेक्षा सस्ते मिलते हैं। मांस और अंडे की कीमत वही है जो भारतवर्ष में। शाक-सब्जी बहुत मँहगी है। मक्खन और चाय पर प्रतिबन्ध है। राशन में आधा पौंड चाय और डेढ़ पौंड मक्खन प्रति व्यक्ति को प्रति माह मिलता है। आम तौर पर मिलने वाली सब्जियों में मुख्य हैं-पत्ता गोभी, फूल गोभी, मटर, लेटूस, कुम्हड़ा, प्याज, गाजर और आलू। मसूर और मटर की दाल के सिवा और कोई दाल वहां नहीं मिलती। मिर्च-मसाले भी काफी मुश्किल से मिलते हैं। चावल किसी को नहीं मिलता लेकिन भारतीय अफसरों को सरकारी परमिट के द्वारा मिल जाता है। फल बारहों महीने मिलते हैं लेकिन काफी मँहगे। डिब्बे में बंद और पकी हुई खाद्य-सामग्री मनचाही मिलती है।

औरतों और मर्दों की पोशाक पश्चिमी ढँग की है। साधारणतया ठंड रहने के कारण सूती या रेशमी कपड़ों का व्यवहार कम होता है। ग्रीष्म-काल में हलके ऊनी कपड़ों का उपयोग किया जाता है। प्रायः सभी सूती कपड़ा विदेशों से मँगाया जाता है और मँहगा रहता है। जो भारतीय कुछ वर्ष आस्ट्रेलिया में रहने के विचार से वहां जावें उन्हें सूती कपड़े विशेष रूप से साथ ले जाना चाहिये। होटलों में ठहरने वालों के लिये ड्रेसिंग गाउन बहुत आवश्यक है। आस्ट्रेलिया में धोबी के यहाँ से कपड़े धुलने में बहुत अधिक खर्च आता है। प्रायः सभी घरों में कपड़ा धोने की मशीनें रहती हैं और लोग अपने कपड़े स्वयं धोते हैं।

आस्ट्रेलिया का सिडनी नगर

सिडनी शहर की आबादी लगभग १५ लाख है। बम्बई, कलकत्ते की तरह सिडनी में भी अपार जन समूह दिखाई देता है; लेकिन सिडनी यूरोपियन ढँग का शहर है। इसे लंदन का छोटा स्वरूप कह सकते हैं। सिडनी का मौसम उत्तरी भारत के पहाड़ी स्थल की तरह ठंडा रहता है। तापमान ७०° फेरनहीट से अधिक प्रायः कभी नहीं होता। ग्रीष्म काल याने दिसम्बर-जनवरी-फरवरी में कभी कभी १००° तापमान हो जाता है, लेकिन यह दो-तीन दिन से अधिक नहीं रुकता। इतनी गरमी के बाद वर्षा होती है और तापमान एकदम ६०° या उससे भी कम उतर आता है। सिडनी अधिक ठंडा नहीं है इस कारण ओवरकोट की आवश्यकता कम पड़ती है, लेकिन पोशाक का ढँग परम्परा से निर्धारित है और अकसर पुराने ढँग की पोशाक ही दिखाई देती है। किसी किसी होटल में बिना नेक-टाई के प्रवेश निषेध रहता है। गुलाबी रँग के सूट, चौड़ी पट्टी के या भड़कीले कपड़ों

का उपयोग श्रेष्ठ नहीं माना जाता। फैल्ट हैट का आम रिवाज है लेकिन धूप में काम करने वाले सूत या बेत का टोप लगाते हैं। सिडनी में बना बनाया ऊनी सूट सौ रुपए और उससे ऊपर मिलता है। अपने नाप का सूट सिलवाने में डेढ़ सौ से तीन सौ रुपये तक लगते हैं।

सिडनी में कोई भारतीय भोजनालय नहीं है लेकिन चीनी भोजनालयों में चावल और तरकारी मिलती है। इस प्रकार के भोजन का दाम डेढ़ से तीन रुपये तकहै। होटलों में रहने की जगह मिलना मुश्किल नहीं है, लेकिन किसी अच्छे होटल में, शहर में या शहर के पास, ठहरने के लिये तीन से पाँच सप्ताह पहले सूचना देनी पड़ती है। शहर के बाहर 'गैस्ट हाउस' नामक ठहरने के स्थान रहते हैं जहां सोने और नाश्ते का उत्तम प्रबन्ध रहता है। चालीस मील लम्बा और चौदह मील चौड़ा शहर होने के कारण शहर के बाहर रहने में सुविधा नहीं रहती। होटलों में बैरों को इनाम (Tipping) देने की आम प्रथा है, करीब ८% से १०% टिप देना पड़ती है। रहने के लिये फ्लेट या मकान बहुत मुश्किल से मिलते हैं और अकसर 'पगड़ी' देना पड़ती है।

सिडनी शहर में ट्राम, रेल और मोटर की अच्छी सुविधा है। किराया साधारण है। साधारण जनता के साथ सरकारी अफसर भी सार्वजनिक ट्राम या बस में यात्रा करते हैं। साइकिलें बहुत कम दिखायी देती हैं, उनका उपयोग प्रायः नहीं के बराबर होता है।

आस्ट्रेलिया का न्यूनतम वेतन

आस्ट्रेलिया में किसी भी कार्य का न्यूनतम वेतन (Basic Wage) कानून द्वारा निश्चित कर दिया गया है। कॉमनवेल्थ कोर्ट आफ कन्सीलियेशन एण्ड आरबीट्रेशन (Commonwealth Court of Conciliation and Arbitration) नामक सरकारी संस्था इस न्यूनतम वेतन को जीवन की आवश्यकताओं और आर्थिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए तय करती है। अत्यन्त कुशल कार्य या असाधारण कार्य परिस्थिति में अधिक वेतन देने का प्रबन्ध भी इस कानून में है। विभिन्न उद्योग-धंधों के काम की शर्तें तथा न्यूनतम वेतन से अधिक वेतन का समुचित प्रबन्ध उन्हीं उद्योग-धंधों के जिम्मे रहता है। कॉमनवेल्थ कोर्ट न्यूनतम वेतन में समय समय पर आवश्यकतानुसार रद्दोबदल करता है। इस परिवर्तन के पहले मालिक और मजदूरों के विचारों और सुझावों पर पूरा ध्यान दिया जाता है, और कई प्रकार से जांच पड़ताल की जाती है। खाद्य-सामग्री, मकान-किराया, घर के काम का सामान, कपड़े, मनोरंजन इत्यादि के मूल्य के आधार पर ही न्यूनतम वेतन तय किया जाता है। इस बात का

प्रयत्न किया जाता है कि जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति न्यूनतम वेतन में हो सके। जून १९३७ में राजधानी के ६ बड़े शहरों में न्यूनतम वेतन ३।। पौंड प्रति सप्ताह था। अप्रेल १९५० में यह वेतन ६ पौंड १५ शिलिंग हो गया है। आज के इस न्यूनतम वेतन की तुलना संसार के किसी भी देश के न्यूनतम वेतन से भली भाँति हो सकती है। १ जनवरी १९४८ से ४० घंटे का सप्ताह सभी कामों के लिए तय कर दिया गया है। इससे अधिक काम करने पर कर्मचारियों को अधिक वेतन दिया जाता है।

आस्ट्रेलिया में उद्योग-धंधों की प्रगति हुई है पर अभी भी खेती ही अधिक है। सन् १९३९ में २६,९४१ कारखाने थे; १९४७-४८ में ३४,७६७ और १९४८-४९ में ४०,०१० कारखाने हो गये। मोटर ट्रेक्टर, न्यूज प्रिंट, रेआन नामक कपड़ा आदि बनने के बड़े बड़े कारखाने वहां हैं।

आस्ट्रेलिया के मूल निवासी

नये बसे हुए अन्य देशों की भांति आस्ट्रेलिया में भी आदिम निवासियों और आगन्तुकों में संघर्ष हुआ और आदिम निवासियों को भारी क्षति पहुँची। यह अनुमान लगाया गया है कि सन् १७८८ में जब नवागुन्तुकों की प्रथम टोली आस्ट्रेलिया में आयी तो वहां ३,००,००० आदिम निवासी थे। आज पूर्ण रूप से आदिम निवासियों की संख्या ५०,००० और अर्ध-रूप से आदिम निवासियों की संख्या २५,००० बतलायी जाती है। ये आदिम निवासी संसार के अत्यन्त प्राचीन मानवों में से हैं लेकिन उनकी संस्कृति अन्य देशों के आदिम निवासियों की अपेक्षा अधिक समुन्नत है।

विद्वानों का अनुमान है कि आस्ट्रेलिया के मूल-निवासियों का आस्ट्रेलिया में आगमन लगभग ६०,००० वर्ष पहले हुआ था। ये लोग कहां से आये यह कल्पना का विषय है लेकिन इतना स्पष्ट है कि दक्षिणी पूर्वी एशिया के किसी भाग से ये लोग आये थे।

पाषाण-युग की तरह आज भी ये मूल-निवासी नग्नावस्था में रहते हैं। कमर में एक पट्टा पहनते हैं जिसमें सीप या फर (Fur) का लोलक (झुमका) लटकता है। मनुष्य के बालों से ये पट्टे बनाये जाते हैं और कई गज लम्बे होते हैं। दक्षिणी भाग के निवासी ठंड से रक्षा करने के लिये कंगारू के चमड़े का कम्बल पहनते हैं।

इनकी युवतियां सुन्दर होती हैं; लेकिन अधेड़ होने के पहले ही उनका यौवन विलीन हो जाता है और वे कुरूप हो जाती हैं। स्वाभाविक रूप से आदिम युवक मूर्ति-कला के लिए उपयुक्त विषय रहता है। वृद्ध अकसर गुप्त सभाओं में बैठ अपने हित के लिए जातीय मामलों का निर्णय करते हैं। युवक अच्छे शिकारी होते हैं। जातीय कानून के अनुसार

शिकार के जानवरों का सबसे स्वादिष्ट भाग जाति के वृद्धों को दिया जाता था। अन्य आदिम जातियों की तरह आस्ट्रेलिया के आदिम निवासी भी आदमखोर थे। जमीकंद (Yam) और कई प्रकार की शाक-सब्जी इनका मुख्य आहार था। लेकिन कई गन्दी और घृण्य वस्तुएं भी ये लोग बड़े शौक से खाते थे, जैसे-सफेद चीटियां (White ants), और उनके अंडे, झिनगा (Caterpillar), डिंगो नामक कुत्ता, छोटे-बड़े पक्षी, साँप और छिपकली।

आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों में राजा या मुखिया नहीं होता, लेकिन किसी एक व्यक्ति को नेतृत्व का भार सौंप दिया जाता है। बहुधा दवा देने वाला व्यक्ति नेता (Head man) माना जाता है। उसका प्रभुत्व जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वीकार किया जाता है। और सभी मामलों में उसके निर्णय अन्तिम माने जाते हैं। दवा और जंतर-मंतर के द्वारा ये वैद्य इलाज तो करते ही थे, दुश्मन को जान से मार डालने के लिये कई टोटके करते थे, जिसके लिये उन्हें पर्याप्त पारिश्रमिक मिलता था।

इन मूल निवासियों में कई विचित्र प्रथाएँ हैं। सबसे आश्चर्यजनक प्रथा है अपनी सास को कभी न देखना। कोई भी व्यक्ति अपनी पत्नी की मां को कभी देख नहीं सकता और न सास अपने दामाद को। इस प्रथा के उल्लंघन करने वाले को कड़ी सजा दी जाती है। शादी-विवाह और सभी सामाजिक प्रथाओं के कानून अत्यन्त कठोरता से लागू किये जाते हैं। आस्ट्रेलिया के मूल-निवासियों की समाज-व्यवस्था संसार की प्रायः सभी आदिम जातियों की समाज-व्यवस्था से अच्छी मानी जाती है। बहुत खोज होने के बाद भी अभी न जाने कितनी मनोरंजक बातें इन मूल निवासियों के संबन्ध में प्रकाश में नहीं आ पायी हैं। विद्वान् जाति-विशेषज्ञ बड़े अध्यवसाय से अनुसंधान में रत हैं।

आस्ट्रेलिया के जंगली प्राणी और पक्षी—

अन्य देशों की तरह आस्ट्रेलिया के जंगली प्राणी और पक्षी सैकड़ों प्रकार के नहीं हैं। भयानक प्राणी भी यहाँ नहीं हैं जो मानवी कल्पना पर आधिपत्य जमा लेते हैं। लेकिन आस्ट्रेलिया के जंगली प्राणियों पर वहां की अपनी एक छाप है, जो अन्य देशों में नहीं पायी जाती। अधिकांश जानवर अत्यन्त प्राचीन समय के हैं और मानवी इतिहास के पूर्व के जीवन के अवशेष हैं जो संसार के अन्य देशों से लापता हो चुके हैं।

प्रायः सभी जाति के पक्षी आस्ट्रेलिया में पाये जाते हैं। एमू (emu) नामक पक्षी जो उड़ नहीं सकता; लायर पक्षी (lyre-bird) जो दूसरों की आवाज नकल करने में पटु है; लुभावना नीला रैन (blue wren); और कूकाबर्रा (kookaburra)

नामक आस्ट्रेलिया का विशेष पक्षी, जिसके हंसने की कर्कश ध्वनि से हरेक झाड़ी गूंजती रहती है।

कोआला (Koala) नामक आस्ट्रेलिया का निवासी भालू सबसे आकर्षक जानवर है। अत्यधिक चिढ़ाने और डरे हुए रहने की बात अलग है अन्यथा कोआला उतना ही सीधा होता है जितना वह दिखता है। बड़ा कोआला करीब दो फुट लम्बा होता है और उसका पूरा बदन मोटे ऊनी फर से ढका रहता है जो शरीर के ऊपरी भाग में भूरा और नीचे के भाग में पिलाई लिये हुए सफेद रहता है। यह जानवर यूकिलिपटस पेड़ की कुछ विशेष जातियों में रहता है। जमीन पर तो वह धीरे धीरे चलता है लेकिन पेड़ों पर चढ़ने में भारी फुर्ती दिखाता है। खाने पीने के मामले में कोआला बड़ा कट्टर है—एक तो सिवा यूकिलिपटस के पत्तों के और कुछ खाता ही नहीं, उसमें भी जो ६०० प्रकार के युकिलिपटस के पत्ते हैं उनमें से केवल २० प्रकार के पत्ते ही वह खाता है। इन पत्तों से उसे भोजन और पानी दोनों प्राप्त होते हैं, क्योंकि कोआला कभी पानी नहीं पीता। साधारण रूप से कोआला दो बरस में एक बच्चा जनती है और एक बार में एक ही बच्चा पैदा होता है। कोआला अपने बच्चे को ६ माह तक सेती और दूध पिलाती है। इस समय में वह ६" लम्बा और आधा पौंड भारी रहता है। जब तक वह एक वर्ष का नहीं हो जाता, कोआला की माँ उसे गोद में या पीठ पर लेकर चलती है। कोआला के पेट की आंत का नीचे का हिस्सा लगभग आठ फुट लम्बा होता है जितना अन्य किसी प्राणी का नहीं होता। यूकिलिपटस के जो पत्ते वह खाता है उसके रस का एक विशेष भाग इस स्थल पर जमा रहता है जिससे उसे सदा नशा-सा चढ़ा रहता है जो उसकी झूमती हुई मुद्रा, विशेषकर आंखों से जान पड़ता है।

कंगारू (Kangaroo) आस्ट्रेलिया का सबसे प्रसिद्ध जानवर है। कंगारू के शरीर की बनावट सुडौल और सुन्दर होती है, पर उसका हिरन की तरह छोटा सिर और आगे के दोनों बहुत छोटे पैर उसके पूरे शरीर के हिसाब से बेमेल होते हैं। पीछे के पैर लम्बे और आगे के पैर छोटे होने के कारण चलते समय कंगारू बड़ा भद्दा दिखायी देता है। लेकिन जब वह सिर ऊपर उठाकर कूदने लगता है तो बड़ा भला मालूम होता है। कंगारू बड़ी लम्बी छलांग भरकर चलता है और पूरे वेग से चलने पर फी घंटा ४० मील तक जाता है। साधारणतया इसकी छलांग १० फुट की होती है लेकिन कभी-कभी २० फुट लम्बी छलांग तक वह लगा लेता है और ७ फुट ऊँची झाड़ी आराम से लाँघ लेता है। कंगारू के बच्चे अन्य प्राणियों के बच्चों की तरह पूरे होकर पैदा नहीं होते। जन्म के समय वे अधूरे रहते हैं क्योंकि कंगारू की माता को केवल तीन से सात सप्ताह तक

ही गर्भ धारण करना पड़ता है। बच्चा पैदा होने पर उसकी माँ अपनी लार से एक मार्ग बना देती है। बच्चा इस मार्ग पर सरकते हुए आता है और माँ के स्तन को मुँह में दबाकर चुपचाप पड़ा रहता है। स्तन धीरे-धीरे दूध से भर जाता है और बच्चे के मुँह में स्वयँ बहने लगता है। माँ की मांस-पेशियों में जो स्पन्दन होता है उसके कारण दूध अपने आप बच्चे के मुँह में पहुँचता है। यदि किसी कारणवश बच्चा माँ के स्तन से छूट जावे तो बड़ी कठिनाई से स्तन तक वापिस जा सकता है। कंगारू की माँ अपने बच्चे को पेट की एक विचित्र थैली में जो कंगारू की ही विशेषता है, ६ माह से अधिक साथ लिये रहती है। दूध पीकर तुरन्त बच्चा थैली में आ बैठता है। वहीं सोता है और किसी भी प्रकार का भय आने पर माँ के पेट से चिपट जाता है।

श्री बख्शी के यहाँ ६॥ बजे संध्या को शाम का भोजन था। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के निवासी इस विषय में जैन हैं। दिन रहते ही उनका शाम का भोजन समाप्त हो जाता है। इस भोजन में श्री बख्शी ने उस समय सिडनी में रहने वाले या वहाँ आये हुए समस्त भारतीयों को बुलाया था जिनकी संख्या केवल सात थी।

यह भोजन बड़े आनन्द से हुआ। सभी ने खूब खाया और खूब बातें की।

सिडनी से न्यूजीलैंड के आकलैंड नगर को हवाई जहाज रात को ११बजकर ५९ मिनिट पर जाता था। यह हवाई जहाज जमीन से न उड़कर समुद्र से उड़ता था अर्थात् यह 'सी प्लेन' था। सिडनी से आकलैंड तक समुद्री वायुयान की व्यवस्था का कदाचित यह कारण था कि सिडनी और आकलैंड के बीच समुद्र को छोड़कर जमीन का एक टुकड़ा भी न था अतः यदि कभी एंजिन इत्यादि की गड़बड़ी हो तो वायुयान समुद्र में उतर सके।

हम लोग ११ बजे समुद्री हवाई अड्डे पर पहुँच गये। चार एंजिन वाला उतना ही बड़ा एरोप्लेन था, जितना कलकत्ते से सिडनी तक आने वाला प्लेन; पर दोनों की बनावट में बहुत अन्तर था। जमीन से उड़ने वाले हवाई जहाज के एंजिन यात्रियों के बैठने के स्थान के दोनों ओर होने पर भी नीचे की ओर होते हैं। समुद्री वायुयान समुद्र पर से उड़ता है अतः इसमें बैठने वालों के स्थान की बनावट नीचे से नाव के सदृश रहती है और इसके एंजिन यात्रियों के बैठने के स्थान के दोनों ओर होने पर भी जमीन से उड़ने वाले हवाई जहाज के सदृश नीचे की ओर न रहकर ऊपर की ओर रहते हैं। हमारे इस प्लेन में एक बात और भी थी। यात्रियों के बैठने की ४२ कुर्सियाँ दो मंजिल में थीं। ये दो मंजिल वैसी ही थीं जैसी बम्बई कलकत्ते की कई मोटर बसों तथा ट्रामों में रहती हैं।

सबसे मिल भेंटकर आकलैंड जाने वाले यात्री मय सामान के एक छोटी सी स्टीमर में

बैठ हवाई जहाज पर पहुँचे । कल रात का अनुभव अभी बहुत पुराना न हुआ था अतः धड़कते हुए मन से मैंने एरोप्लेन की अपनी कुर्सी पर आसन जमाया ।

सर्च लाइट समुद्री हवाई अड्डे पर घूमने लगी और प्लेन के एंजिन चले । थोड़ी ही देर में जहाज के सदृश अपने चारों ओर के पानी को क्षुब्ध करते तथा नील नीर सागर को श्वेत क्षीर सागर बनाते हुए एरोप्लेन वैसी ही तेजी से पानी में रवाना हुआ जैसी तेजी से जमीन से उड़ने के पहले जमीन पर चलता है । जहाज में मैं आफ्रिका हो आया था और भी कई बार बैठ चुका था । जहाज बहुत धीरे-धीरे मस्ती से झूमता-सा पानी में चलता है पर एरोप्लेन की चाल उससे ठीक विपरीत थी । वायुयान के चारों ओर का क्षुब्ध और उड़ता हुआ समुद्र का पानी, उस पर सर्चलाइट का प्रकाश और एरोप्लेन की उड़ने के पहले की तेज चाल ने अन्धेरी रात में एक नजारा ही उपस्थित कर दिया । थोड़ी ही देर में जमीन के सदृश पानी को भी वायुयान ने छोड़ दिया ।

आज सिडनी में दिन भर खुला मौसम रहा था । इस समय भी आकाश स्वच्छ था, पर क्षण-क्षण और जगह-जगह पर यहाँ मौसम बदलता है । सिडनी से आकलैंड काफी दूर था और इस दूर की यात्रा में कभी भी, कहीं भी फिर से कल रात वाला हाल हो सकता था अतः एक शंका-सी मन में मौजूद थी । पर इस समय एरोप्लेन पूर्ण शांति से जा रहा था । रात की उनिद्रा थी ही । मुझे बहुत जल्दी बैठे-बैठे ही नींद आ गयी ।

११

जब मेरी नींद खुली तब पौ ही नहीं फटी थी, पर सूर्योदय हो गया था। बैठे-बैठे कुर्सी पर इतनी लम्बी और गहरी नींद में मैं कभी सोया होऊं, ऐसा मुझे स्मरण नहीं है। यदि आदमी उनींदा हो तो कांटों पर भी नींद आ जाती है, यह विचार कितना सही है इसका मुझे आज प्रमाण मिल गया। जब मैंने खिड़की से बाहर की ओर देखा तो एक अद्भुत दृश्य था। ऊपर बादल का एक भी टुकड़ा नहीं था। भगवान सहस्रांशु अपनी समस्त अंशुओं को निर्मल नीलाकाश में फैलाये हुए चमक रहे थे, परन्तु नीचे घने बादल थे। इन बादलों का एक बृहत शामयाना सा पृथ्वी पर तना हुआ था और ऐसा शामयाना जिसमें एक भी सिकुड़न, एक भी शल, कहीं भी दृष्टिगोचर न होता था। शामयाने के रूप में पृथ्वी पर तने हुए इन बादलों की एक सी सतह थी, कहीं ऊंची नीची नहीं; इस सतह के बाहर बादल का एक छोटे से छोटा टुकड़ा भी तो इधर-उधर कहीं भी नजर नहीं पड़ रहा था। हवाई जहाज को बादलों पर से उड़ते तो मैं कई बार देख चुका था, परन्तु ऊपर सर्वथा निर्मल नीलाकाश में भगवान भास्कर का पूर्णालोक तथा नीचे ऐसे बादलों की सतह इसके पहले मैंने कभी नहीं देखी थी। वायुयान कोई बीस हजार फुट की ऊँचाई पर तीन सौ मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ा चला जा रहा था, परन्तु चूंकि उसके ऊपर अथवा नीचे न बादलों की दौड़ दिखायी देती थी और न पृथ्वी पर की किसी वस्तु की। इसलिये जान पड़ता था कि वायुयान खड़ा हुआ है और उसमें कोई गति नहीं है। वायुयान काफी ऊँचाई पर था अतः बड़ी सर्दी जान पड़ी। यद्यपि मैं गरम स्वैटर और गरम शेरवानी पहने हुए था, पर उतने वस्त्र काफी नहीं जान पड़े और मुझे कम्बल ओढ़ना पड़ा। कम्बल ओढ़ने के पश्चात् प्राकृतिक दृश्यों से थोड़ा बहुत अनुराग रहने के कारण न जाने कितनी देर मैं इस दृश्य को देखता रहा।

हमारा विमान ८॥ बजे आकलैंड पहुँचने वाला था। घड़ी देखने पर जान पड़ा कि अभी ६ भी नहीं बजे हैं। मुझे मालूम हो गया कि समय में फिर अन्तर पड़ा है। पूछने पर एक घंटा मुझे घड़ी और आगे बढ़ानी पड़ी। अब भारत के समय और यहाँ के समय में पूरे ५॥ घंटों का अन्तर पड़ गया था। यहाँ का समय भारत के 'स्टैंडर्ड टाइम' से ५॥ घंटे आगे था।

आकलैंड पहुँचने में अभी डेढ़ घंटा शेष देख शौचादि से निवृत्त हो, हजामत बना संध्या पूजा से भी निपट लेना मैंने उचित समझा। नित्य कर्म से निपट जब मैं संध्या करने बैठा तब मुझे संध्या के संकल्प में परिवर्तन आवश्यक जान पड़ा। आजकल भूमध्य रेखा के उत्तर के देशों में जाड़े का मौसम था, छोटे दिन और बड़ी रातें थीं, सूर्य दक्षिणायन था। अत: संध्या के संकल्प में कहा जाता था–"श्री सूर्य दक्षिणायने शरद ऋतौ कार्तिक मासे शुभे शुक्ल पक्षे..........इत्यादि" परन्तु भूमध्य रेखा के दक्षिण में इसके ठीक विपरीत स्थिति थी। जाड़े की जगह चाहे अब तक हमें गरमी न मिली हो, पर रातें छोटी और दिन बड़े थे और सूर्य उत्तरायण स्पष्ट ही दृष्टि गोचर होता था। अतः संध्या के संकल्प को मैंने इस प्रकार कर दिया–'श्री सूर्य उत्तरायणे अमुक ऋतौ कार्तिक मासे शुभे शुक्ल पक्षे ....इत्यादि'। दिन बड़े हो जाने तथा सूर्य उत्तरायण होने पर भी गरमी न थी अतः ऋतु कौन सी कही जाय यह मेरी समझ में न आने के कारण 'अमुक ऋतौ' कह कर ही संतोष किया, परन्तु सूर्य उत्तरायण में स्पष्ट दीख पड़ते थे, अतः सूर्य उत्तरायण कहना ही उचित था। और महीना तो हमारे लिए कार्तिक था ही। कार्तिक मास में सूर्य उत्तरायण! आश्चर्य की बात जान पड़ती है! यदि कुरुक्षेत्र का भारत युद्ध भूमध्य रेखा के उत्तर में न होकर दक्षिण में होता तो उत्तरायण सूर्य के लिये भीष्म पितामह को महीनों तक बाण शैया पर पड़े रहने का कष्ट न उठाना पड़ता। एक दूसरी बात भी उस समय की जा सकती थी। भूमध्य रेखा के दक्षिण में इस ऋतु में सूर्य उत्तरायण रहते हैं यह तो उस समय के लोगों को ज्ञात होगा ही। विमान भी उस समय थे। फिर भीष्म पितामह को किसी विमान पर भूमध्य रेखा के दक्षिण में लाकर बाण शैया के उनके कष्ट को क्यों निवारण न कर दिया गया। बहुत सोचने विचारने पर भी मुझे इसका कारण समझ में न आया।

मछली पकड़ने को कठकुल्ला पक्षी जिस प्रकार ऊपर से पानी में सीधा गोता लगाता है उसी प्रकार आज हवाई जहाज कठकुल्ला पक्षी की चाल से एकदम नीचे उतरा। बादलों की इस सतह को चीरते हुए जब वह नीचे उतर रहा था उस समय कुछ 'बंपिंग' अवश्य हुआ, पर नहीं के बराबर। बादलों की सतह को पार करने में वायुयान को देर नहीं लगी। अब बादल ऊपर हो गये और मार्तण्ड भगवान को उन्होंने आच्छादित कर लिया। नीचे आकलैंड नगर दिखायी पड़ने लगा। कुछ ही देर में आकलैंड का वह बन्दरगाह दिख पड़ा जिसके पानी में हमारे हवाई जहाज को उतरना था।

जिस प्रकार पानी को उछालते हुए यह विमान ऊपर उठा था उसी प्रकार पानी उछालते हुए यह आकलैंड के समुद्री हवाई अड्डे पर उतरा। 'वार्फ' पर बड़ी भीड़ दिखायी दी।

इस भीड़ में जिस वस्तु ने मेरा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया वह थी गांधी टोपी। दूर से तीन गांधी टोपियां दृष्टिगोचर हो रही थीं। यहां भी एक छोटे स्टीमर में हम लोग विमान से वार्फ तक लाये गये। दूर से जो तीन गांधी टोपियां दिखी थीं वे थीं भारतीय प्रतिनिधि मंडल के मेरे साथी श्री शाह, श्रीबरुआ और श्री वेंकटरमन की। कितना हर्ष हुआ मुझे इन लोगों को देखकर। शेष भीड़ भी मुझे लेने को आयी थी। आकलैंड में रहने वाले सभी भारतीय मौजूद थे, जिनमें मुख्य थे भारत के व्यापारी प्रतिनिधि श्री सनयाल, तथा उनकी पत्नी श्रीमती सनयाल, आकलैंड के प्रसिद्ध भारतीय डाक्टर सत्यानंद, न्यूजीलैंड के इंडियन एसोसियेशन के सभापति श्री नेटाली, न्यूजीलैंड के इंडियन एसोसियेशन की आकलैंड शाखा के सभापति श्री देहली, आकलैंड के भारतीय प्रसिद्ध व्यापारी श्री सिंह इत्यादि। न्यूजीलैंड की सरकार की ओर से न्यूजीलैंड की धारासभा के सदस्य श्री एडरमैन और एक सरकारी कर्मचारी श्री मिडिल मैस आये थे। पत्रप्रतिनिधियों का भी एक जमघट था।

सबसे मिल भेंटकर मैं 'स्टेशन होटल' में लाया गया जहाँ मुझे ठहरना था। मुझे यह देखकर थोड़ी सी निराशा हुई कि मेरे साथी किसी दूसरी होटल में ठहराये गये हैं।

१२

स्नान से निबटने में मुझे बहुत समय नहीं लगा, क्योंकि हजामत बनाकर संध्यापूजा में स्नान के पहले ही कर चुका था। आकलैंड में सबसे पहला काम पत्र-प्रतिनिधियों से भेंट करने का हुआ। 'वार्फ' पर जो पत्र-प्रतिनिधि आये थे उनमें आकलैंड के दो दैनिक पत्रों के प्रतिनिधि मुख्य थे। इन पत्रों के नाम हैं 'आकलैंड स्टार' और 'न्यूजीलैंड हैरल्ड' ८-८ कालम के १२-१२ पृष्ठों के ये अखबार हैं। पहला सायंकाल में प्रकाशित होता है और दूसरा प्रातःकाल। विशाल-पत्र, सुन्दर से सुन्दर छपाई, सफाई, ब्लाक, कार्टून और खबरों तथा विज्ञापनों आदि से भरे हुए। हमारे देश के 'टाइम्स आफ इंडिया' और स्टेट्समैन' से भी नाप-तोल में बड़े। हमारे यहाँ के बड़े से बड़े और अच्छे से अच्छे पत्रों में सात कालम रहते हैं, पर यहाँ के पत्रों में आठ। छोटा सा बीस लाख व्यक्तियों का देश, आकलैंड की आबादी दो लाख के आसपास और ऐसे पत्र। सुना गया कि 'न्यूजीलैंड हैरल्ड' की ग्राहक-संख्या साठ हजार और 'आकलैंड स्टार' की चालीस हजार है। अशिक्षित व्यक्ति तो यहाँ कोई है नहीं और सभी संपन्न हैं तथा अखबार पढ़ने के आदी।

इन पत्रों को जो विज्ञापन मिलते हैं उनमें अधिकतर ६ प्रकार के विज्ञापन होते हैं।

(१) भिन्न-भिन्न कामों के लिये आदमी की आवश्यकता के विज्ञापन। इस प्रकार के विज्ञापनों में इन कामों के बड़े आकर्षक वर्णन दिये जाते हैं। आबादी कम होने के कारण 'जगह खाली नहीं', 'नो वेकैन्सी' के स्थान पर यहाँ 'सर्वत्र खाली जगह' 'वेकैन्सी' है।

(२) छोटे बड़े स्टोर और दूकानें अपना माल बेचने के लिये अपने स्टोरों और दूकानों के माल की बहुत अधिक विज्ञप्ति करते हैं।

(३) व्यक्तिगत कामों के लिये विज्ञापन देने की प्रथा है; जैसे कोई कहीं गया और वह किसी से मिलने का इच्छुक है, तो वह तत्काल विज्ञापन देगा।

(४) होटलों में न रहकर किसी कुटुम्ब के साथ रहने के इच्छुक "बोर्ड वान्टेड" के नाम से बहुत विज्ञापन देते हैं।

(५) छोटी बड़ी हर प्रकार की सभाओं के विज्ञापन ।

(६) स्थावर और जंगम हर प्रकार की संपत्ति खरीदने और बेचने के विज्ञापन ।

विज्ञापन छापने की दर भारतवर्ष के बड़े-बड़े पत्रों के समान ही है। और आकलैंड में मैंने जैसे पत्र देखे वैसे ही वैलिंगटन में भी। इन पत्रों में 'आकलैंड स्टार' के प्रतिनिधि ने मुझ से ११॥ बजे और 'न्यूजीलैंड हैरल्ड' के प्रतिनिधि ने २॥ बजे का समय वार्फ पर ही तय कर लिया था। ११॥ बजे 'आकलैंड स्टार' का प्रतिनिधि पहुँच गया और उसने मेरी तस्वीर उतार मुझसे कुछ प्रश्न किये। इन प्रश्नों से मुझे ज्ञात हो गया कि भारत के संबन्ध में यहाँ के लोगों को कितनी कम जानकारी है और भारत के स्वतंत्र हो जाने के पश्चात् इस जानकारी के लिये ये लोग कितने इच्छुक हैं।

१२॥ बजे श्री देवली के यहाँ लंच था। सिडनी में बख्शी जी के छोटे से साफ सुथरे मकान के सदृश ही छोटा सा साफ सुथरा मकान। कोई नौकर-चाकर नहीं और सब काम कुटुम्बियों द्वारा। रहन सहन पश्चिमी ढंग की पर भोजन गुजराती तथा बड़ा स्वादिष्ट। भोजन के लिये हम चारों भारतीय प्रतिनिधियों के सिवा श्री सनयाल, श्रीमती सनयाल, डाक्टर सत्यानंद, श्री नराली, श्री सिंह आदि भी बुलाये गये थे। समस्त उपस्थित समुदाय में सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करती थीं श्रीमती सनयाल। श्रीमती सनयाल एक स्काच महिला हैं, वर्ण योरप के लोगों के सदृश एकदम सफेद, पर इतना श्वेत वर्ण होने पर भी काली आँखें और काले बाल। श्रीमती सनयाल ने भारतीय वेषभूषा को अपना लिया है—साड़ी और चोलका पहनती हैं, इतना ही नहीं, ललाट पर लाल टिकली लगाती हैं। वे अपने को योरपियन न कहकर भारतीय कहती हैं और भारतीय कहती हैं इतना ही नहीं,उन्हें भारत से अत्यधिक प्रेम हो गया है। भारत के उनके सच्चे प्रेम के हमें न्यूजीलैंड में रहते हुए अनेक प्रमाण मिले। श्रीमती सनयाल के वर्ण की शुभ्रता के कारण उनके भारतीय होने में यदि किसी को शंका होती है तो वे अपनी आँखों और बालों की श्यामलता की ओर संकेत कर देती हैं। योरप के भी कुछ लोगों की आँखें और बाल काले होते हैं, पर जिनकी आँखें और बाल काले होते हैं, उनके रंग की सफेदी भी कम रहती है। श्रीमती सनयाल के रंग की शुभ्रता के सदृश शुभ्रता में आँखों और बालों की श्यामलता एक आश्चर्य की बात जान पड़ी। श्रीमती सनयाल का विवाह श्री सनयाल से होने को सात वर्ष बीत जाने पर भी वे अब तक भारत नहीं गयी हैं, परन्तु उन्होंने भारत के संबन्ध में पढ़-लिखकर इतनी जानकारी अवश्य प्राप्त कर ली है कि अपने भाषणों, रेडियो के ब्राडकास्ट आदि में भारत के संबन्ध में वे अनेक बातें कहती हैं।

लंच के पश्चात् २॥ बजे 'न्यूजीलैंड हैरल्ड' के प्रतिनिधि की भेंट थी, और इसके पश्चात्

३ बजे कामनवेल्थ पार्लिमेंटरी कान्फ्रेंस के प्रतिनिधियों में से कोई बीस प्रतिनिधि आकलैंड देखने के लिये एक मोटर बस में जा रहे थे, जिसका प्रबन्ध न्यूजीलैंड सरकार की ओर से किया गया था। न्यूजीलैंड की पार्लिमेंट के एक प्रधान कर्मचारी श्री मिडिल मैस के जिम्मे हम लोगों का यह दौरा था और केवल आकलैंड नगर दिखाने का ही यह दौरा नहीं, पर आज से लेकर ता० २२ को वैलिंगटन पहुंचने तक उत्तरी टापू के सारे देखने योग्य स्थानों के दिखाने का दौरा भी। आज आकलैंड देखने के पश्चात् कल ३ बजे हम उत्तरी टापू के निरीक्षण के लिये रवाना होने वाले थे।

आकलैंड न्यूजीलैंड का सबसे बड़ा नगर है। मीलों में फैला हुआ और आबादी है २,७९,०००। रहने के मकान एक मंजिल होने तथा हर मकान के साथ थोड़ासा हाता रहने के कारण नगर का फैलाव बहुत बढ़ गया है। साथ ही सुन्दरता भी बहुत आ गयी है। सफाई तो इतनी अधिक है कि क्या कहा जाय। इतनी कम आबादी का नगर होने पर भी बाजारों की दूकानें देखते ही बनती हैं। रहने के मकान जितने छोटे, दूकानें उतनी ही बड़ी। दूकानों में कितना सामान और कितनी बिक्री। जनता की आर्थिक अवस्था अत्यधिक अच्छी होने के कारण उसकी क्रय शक्ति भी अत्यधिक अच्छी है अतः दूकानों की यह हालत है। बड़े दिन (क्रिस्टमस) की अभी से तैयारी हो रही थी अतः दूकानों की सजावट और बढ़ गई थी।

हमारी बस पहले आकलैंड के बाजारों में घूमी। आकलैंड के मुख्य बाजार में हम लोगों ने जो दूकानें देखीं उनमें डिपार्टमेंटल स्टोर्स कही जाने वाली दूकानें विशेषता रखती हैं। इनमें मिलने एण्ड चायस लि० (Milne and Choyce Ltd.) और स्मिथ एण्ड काफे लि० (Smith and Caghucy Ltd.) नामक कंपनियों के ये स्टोर दर्शनीय हैं। डिपार्टमेंटल स्टोर पश्चिमी सभ्यता की एक विशेष वस्तु है। इस स्टोर में पहिनने के कपड़े, गृहस्थी का सभी सामान, किताबें, स्टेशनरी याने सभी कुछ मिलता है। अकसर छै सात मंजिल के मकान में यह स्टोर होता है और हरएक मंजिल में एक-एक प्रकार का सामान रहता है जैसे एक मंजिल में जूते—औरतों, मर्दों और बच्चों के बीसों प्रकार के जूते; एक मंजिल में मर्दों के कपड़े; एक में औरतों के कपड़े; एक में बच्चों के कपड़े; एक में खाने-पकाने के बर्तन; इत्यादि। इन स्टोरों में विशेष सजावट होती है जो समय-समय पर बदली जाती है। ऐसा आकर्षक दृश्य इन स्टोरों में रहता है कि पास में पैसा रहने पर कोई भी खाली हाथ दुकान से बाहर नहीं आता। और दुकान के कर्मचारी भी कितने विनम्र कितने हँसमुख। सचमुच व्यापार की सभी कलाओं में ये कर्मचारी, जिनमें पुरुष और महिलाएँ दोनों होते हैं, पारंगत रहते हैं। इन दूकानों में सबसे भव्य थी फार्मर्स ट्रेडिंग कंपनी लि०(Farmers Trading Co. Ltd.)। एक बड़े डिपार्टमेंटल

स्टोर के साथ ही इस दुकान की विशेषता थी बड़े आकर्षक चाय पीने के कमरे और मकान की सबसे ऊपरी छत में खेलने के मैदान।

'मैपिल फर्निशिंग कंपनी लि०' (Maple Furnishing Co. Ltd.) में सैकड़ों तरह का फर्नीचर दिखायी दिया। एक नयी चीज जो भारत में कम दिखायी देती है औरतों के 'ब्यूटी सेलून'। इन्हें औरतों के बाल संवारने की दुकान कहते हैं। समय-समय पर बाल संवारने की नई फैशन निकलती हैं और सभी स्त्रियों को इन सेलूनों में आना पड़ता है।

बाजार देखते हुए हम लोग आकलैंड के प्राकृतिक सौंदर्य और दर्शनीय स्थानों को देखने गये ; इनमें सबसे उल्लेखनीय "वैटाकेयर सिनेक ड्राइव" (Waitakere Scenic Drive) है। अत्यन्त मनोहर प्राकृतिक दृश्यों के बीच से होकर एक बहुत ऊंचे स्थान पर यह मार्ग समाप्त होता है। इस ऊंचाई से आकलैंड शहर और वाइटमेटा' (Waitemata) तथा 'मनुकाउ' (Manukau) बन्दरस्थान बड़े रम्य दिखायी देते हैं। यहां से लौटकर हम लोग अलबर्ट पार्क देखने गये। इस पार्क में छायादार पेड़ और सतरंगे फूलों की अद्वितीय शोभा थी।

आज की घुमाई में यहां से चल हमने एक विचित्र वृक्ष देखा। इसका नाम था 'काउरी' (Kauri) वनस्पति शास्त्र में इसका लैटिन नाम है 'अगाथिस आस्ट्रेलिस' (Agathis Australis) इस वृक्ष की ऊंचाई थी लगभग सौ फुट और मुटाई थी ३२ फुट। इस पेड़ की लकड़ी हल्के पीले रंग की होती है। यह लकड़ी सीधी, मजबूत और बिना गठान की होती है। इस लकड़ी में बड़ी सुविधा से काम किया जा सकता है। शायद संसार में इससे अच्छी नरम लकड़ी नहीं होती। पहले इस लकड़ी का उपयोग मकान बनाने में बहुत होता था, लेकिन अब कीमत बढ़ जाने के कारण रेल के डिब्बे, सुन्दर कीमती संदूक और अलमारियां बनाने में इसका उपयोग होता है। काउरी गम नामक कीमती रेजिन resin भी इसी पेड़ से निकलती है।

५।। बजे संध्या को हम लोग वापस लौटे, क्योंकि ६ बजे यहां के भोजन का समय था।

आकलैंड देखकर ही हमें न्यूजीलैंड कैसा देश है, यहां की जनता कैसी है और कितनी संपन्न, सुखी तथा संतुष्ट इसका अनुमान हो गया।

१३

आज ही रात को ८ बजे आकलैंड के मेयर (म्यूनिस्पल सभापति) द्वारा हम लोगों के स्वागत का आयोजन था। यह आयोजन आकलैंड के टाउन हाल में किया गया था। आयोजन के लिये टाउन हाल पत्र-पुष्पों से सजाया गया था। कितने रंगों के कैसे सुन्दर पुष्पों की सजावट थी।

मेयर का नाम था मि० एलम। अवस्था लगभग ६० वर्ष की। मि० एलम तीन-तीन वर्ष के लिये तीन बार लगातार आकलैंड के मेयर हो चुके थे और चौथी बार के चुनाव में फिर खड़े थे जो चुनाव थोड़े ही दिनों में होने वाला था।

एक लम्बा रेशमी काले रंग का चोगा जिसका कालर लाल रंग का था और जिसमें सामने की ओर सोने की एक मोटी माला सी लगी हुई थी, पहने हुए मेयर अपनी पत्नी के साथ टाउन हाल के द्वार पर हम लोगों के स्वागत के लिये खड़े थे।

कामनवेल्थ पार्लिमेंटरी कान्फ्रेंस के प्रतिनिधियों में से भारत, आस्ट्रेलिया, दक्षिण आफ्रिका और रोडेशिया के लगभग ३० प्रतिनिधि इस स्वागत समारोह में शामिल होने वाले थे और इनके अतिरिक्त आकलैंड का सभ्य समाज।

ठीक समय पर हम लोग पहुँचे और आकलैंड का समाज भी। प्रतिनिधियों के बैठने के लिये मंच पर व्यवस्था की गई थी, जिसमें यथेष्ठ स्थान था और शेष निमंत्रित सज्जनों के लिये मंच के नीचे कुर्सियों पर।

मंच पर पहली पंक्ति में ६ कुर्सियां थीं। बीच की कुर्सी पर मेयर उनके पास श्रीमती एलम तथा शेष चार कुर्सियों पर आस्ट्रेलिया, रोडेशिया, दक्षिण आफ्रिका और भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेताओं के बैठने की व्यवस्था थी। इस पंक्ति के पीछे शेष प्रतिनिधियों के बैठने का प्रबन्ध था।

पहले न्यूजीलैंड का राष्ट्रीय गीत हुआ और उस गीत को सबने खड़े होकर तथा मिल कर गाया। राष्ट्रीय गीत के पश्चात् मेयर का स्वागत भाषण हुआ। उसके उत्तर में

आस्ट्रेलिया, रोडेशिया, दक्षिण आफ्रिका और भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेताओं के भाषण हुए। भाषणों की सतह काफी ऊंची थी।

जब मैंने यह कहा कि न्यूजीलैंड की जिस बात ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया वह है न्यूजीलैंड के श्वेतांगों का यहां के माओरियों को हर बात में समानाधिकार देना तब हाल में सबसे अधिक करतल ध्वनि हुई। और इस करतल ध्वनि के कारण चेहरा उतर गया दक्षिण आफ्रिका के प्रतिनिधिमंडल के नेता का जो दक्षिण आफ्रिका की पार्लिमेंट का अध्यक्ष था जैसे हमारे देश में श्री मावलेंकर। इसके पश्चात् मैंने भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात् भारतीय विधान में हर बालिग को मताधिकार देने की चर्चा की तथा यह भी बताया कि यद्यपि हम फिर से प्रजातंत्र चलाना चाहते हैं, पर प्रजातंत्र हमारे देश के लिये कोई नयी बात नहीं है; जिस प्रकार यूनान में एथन्स और स्पार्टा में प्रजातंत्र थे उसी प्रकार भारत में लिच्छवियों और वज्जियों, साम्यों और मल्लों आदि के भी प्रजातंत्र थे। श्रोताओं की मुद्राओं से जान पड़ा कि उन्हे मेरी बात पर कम आश्चर्य नहीं हुआ। और जब मैंने उन्हें यह बताया कि प्रजातंत्र का सबसे बड़ा प्रयोग तो भारत में होने जा रहा है जहां १८ करोड़ मतदाता अगले चुनाव में भाग लेंगे; जितने मतदाताओं ने इसके पहले संसार के किसी देश के किसी चुनाव में कभी भी भाग नहीं लिया तब मैंने श्रोताओं की मुद्रा से देखा कि उन्हे मेरी पहली बात से भी इस बात पर अधिक आश्चर्य हुआ। अन्त में मैंने गांधीजी का जिक्रकर बताया कि जिस प्रकार हमने बिना किसी हिंसा के अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की है, उसी प्रकार अहिंसा द्वारा हम विश्व में बन्धुत्व स्थापित करने में अपनी ओर से कुछ उठा न रखेंगे। जब भाषणों के बाद खाना-पीना आरम्भ हुआ तब मुझे अपने इस भाषण पर न जाने कितनी बधाइयाँ मिलीं; कुछ बधाई देने वालों ने तो यहां तक कह डाला कि मेरा भाषण आज का सर्वोत्तम भाषण था, पर मैं समझता हूं कि यह अतिशयोक्ति थी। हां, भाषण बुरा नहीं हुआ था, इसका मुझे भी अवश्य विश्वास था।

भाषणों के बीच-बीच में गायन भी हुए और यह आयोजन समाप्त होकर जब खाना चला तब आकलैंड के समाज से हमारी सच्ची जान पहचान हुई। आकलैंड का सारा सभ्य समाज आज के इस आयोजन में सम्मिलित था; पुरुष और महिलाएं दोनों। सबसे अधिक उत्सुकता वहां के लोगों को थी भारत के विषय में जानकारी की जो वे अनेक प्रश्नों द्वारा हम चारों भारतीय प्रतिनिधियों से प्राप्त कर रहे थे। हमारी राष्ट्रीय पोशाक काली शेरवानी, सफेद गांधी टोपी और सफेद चूड़ीदार पाजामा का भी कम प्रभाव न पड़ रहा था। शेष सबकी वेषभूषा योरपियन थी; भारतीय प्रतिनिधि ही एक निराली वेषभूषा में थे।

रात्रि को १० बजे यह आयोजन समाप्त हुआ ।

दूसरे दिन प्रातःकाल के 'न्यूजीलैंड हैरल्ड' में मैंने देखा कि उस पत्र का प्रतिनिधि जो मुलाक़ात मुझ से करके गया था उस मुलाक़ात को तथा मेयर के स्वागत समारोह में मेरा जो भाषण हुआ था उस भाषण को पत्र में मेरे चित्र के साथ बड़ा महत्त्व मिला है ।
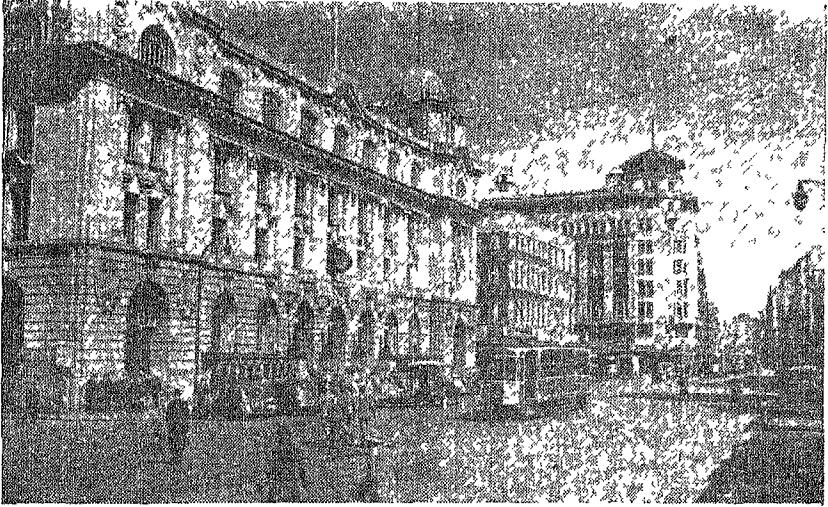
आकलैंड का "क्वीन-स्ट्रीट"
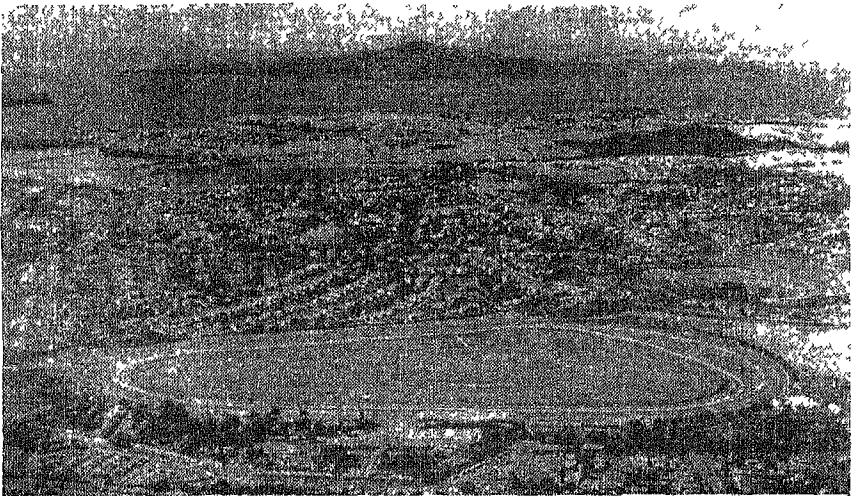
आकलैंड के घुड़दौड़ का मैदान
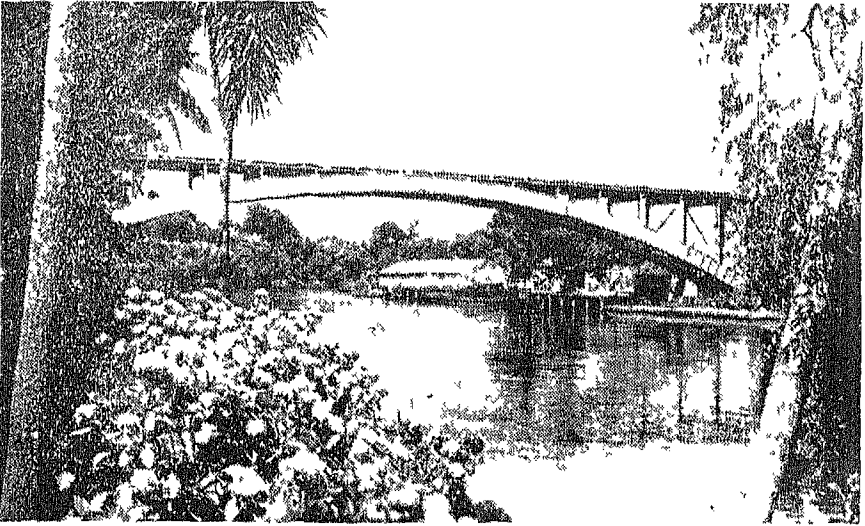
हेमिल्टन की नदी का पुल
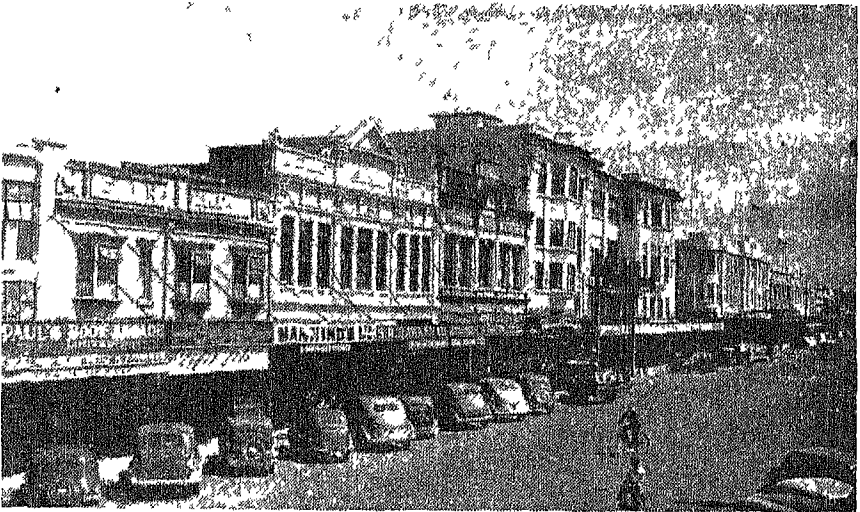
हेमिल्टन की विक्टोरिया स्ट्रीट
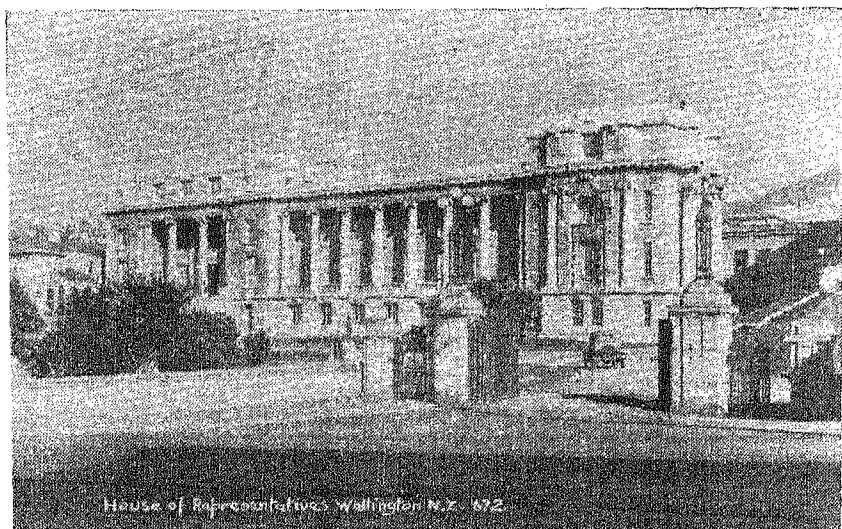
न्यूज़ीलेंड की धारा सभा का वेलिंग्टन में भवन

वेलिंग्टन की सेंट जार्ज होटल जहां भारतीय प्रतिनिधि मंडल ठहरा था
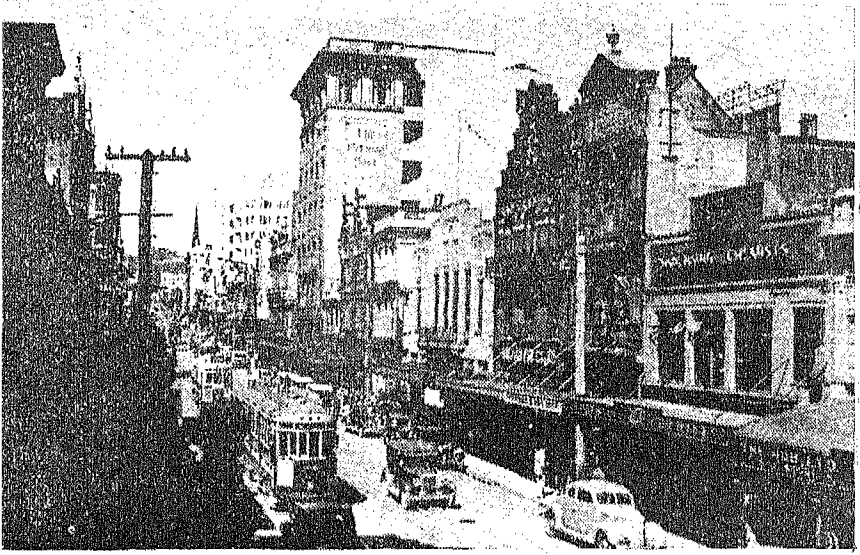
वेलिंग्टन के मुख्य बाजार का एक दृश्य
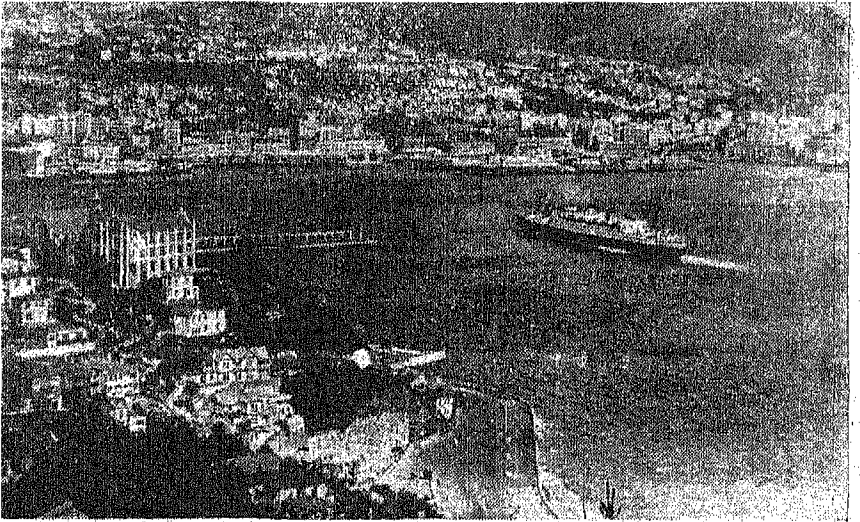
लिंग्टन के बंदरगाह और उसके आसपास का दृश्य

१४

ता० १५ नवम्बर के प्रातःकाल हम लोगों ने पैदल ही आकलैंड के कुछ बाजारों और सड़कों की घुमाई की। न्यूजीलैंड में भी उन दिनों में उषःकाल के ४ बजे ही उषा की लाली फैल जाती थी; सूर्योदय ५ बजे के पहले हो जाता था; संध्या को सूर्यास्त ७ बजे होता था और संध्या का प्रकाश ८ बजे रात तक रहता था। हम लोगों की पैदल घुमाई ७ बजे के करीब शुरू हुई थी। मोटरों पर बैठकर सड़कें, मकान और भिन्न-भिन्न प्रकार के दृश्य देखे जा सकते हैं, परन्तु मानवों को देखने के लिये पैदल ही घूमना आवश्यक होता है। बहुत जल्दी दिन निकल आने के कारण ७ बजे प्रातःकाल ही सड़कों के दोनों ओर के फुट-पाथों पर खूब भीड़ हो गयी थी। सड़क के बीच मे ट्रामों, बसों और मोटरों की भरमार थी। पौने तीन लाख की आबादी के छोटे से नगर में भी कितना जीवन था। जनता अधिकतर गौरांग थी। साधारण से साधारण लोग भी अच्छे से अच्छे वस्त्र पहने हुए थे और खूब साफ सुथरे थे। यत्र–तत्र कोई–कोई माओरी जाति का व्यक्ति भी दिख पड़ता था। गोरों से माओरी अधिक ऊंचे और बलिष्ट थे। माओरियों का रंग गेहुंआ था और बाल तथा आंखें काली। कुछ ऐसे लोग भी हमें मिले जो गोरों और माओरियों के मिश्रित संतान थे। दो चार भारतीयों के भी हमें दर्शन हुए। सबकी वेषभूषा योरोपीय ही थी। हम लोग शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहने थे तथा सिर पर गांधी टोपी लगाये थे अतः हमारी वेषभूषा के कारण हमारी ओर हठात् लोगों का ध्यान आकर्षित हो जाता था और प्रायः लोग हमें घूरने से लगते थे। यह हमें भी कुछ असमंजस में डाल देता था। पं० जवाहरलाल जी नेहरू का यह कथन कि विशिष्ट अवसरों को छोड़ साधारण घुमाई-फिराई में योरोपीय देशों में योरोपीय लिबास को छोड़ अन्य वेषभूषा नहीं जमती, मुझे पहले दिन की घुमाई में ठीक जान पड़ा परन्तु इससे एक लाभ भी हुआ। हमारी इस वेषभूषा के कारण कुछ लोग स्वतः हमारे पास आये, हमसे 'गुडमार्निंग' कह 'हम कहां के हैं' यह और 'हमें उनका देश कैसा जान पड़ा' इस संबन्ध में अनेक प्रश्न हमसे पूछने लगे। न्यूजीलैंड नया देश है, यहां का सारा निर्माण लगभग सौ वर्षों के अन्दर हुआ है। इस नये मानव राष्ट्र में अत्यधिक

उत्साह, बड़ी सरलता और अपने देश के लिये उत्कृष्ट प्रेम है । बाहर से आये लोगों से ये प्राय: अपने देश के संबन्ध में इसी प्रकार के प्रश्न पूछा करते हैं और यदि उन्हें उनके देश तथा वहां की जनता के लिये प्रशंसा के उद्‌गार सुनने को मिल जायँ तो उन्हे इतना हर्ष होता है, जिसका वर्णन करना कठिन है । इस प्रशंसा के उत्तर में जब वे कुछ कहते हैं तब उनकी मुद्रा से कैसा अनुग्रहमय हर्ष टपकता है, उनका स्वर कैसा गद्-गद् हो जाता है। यह उनकी सरलता भी बताता है । पहले दिन की इस पैदल घुमाई मे कितने लोग अपने आप हमारे पास आये और किसी ने भी हम कहां से आये हैं यह तथा अपने देश के संबन्ध में इस प्रकार के प्रश्न पूछने के सिवा अन्य कोई बात हमसे नहीं पूछी । इन लोगों के इस प्रकार हमारे पास आने तथा हमसे ऐसे प्रश्न पूछने से मुझ अपन एक ऐतिहासिक नाटक 'हर्ष' का स्मरण हो आया । चीनी यात्री यांगचांग के उस काल की भारतीय राजधानी कान्यकुब्ज, आधुनिक कनौज में चीनी वेषभूषा में आने पर अनेक भारतीयों के उसके पास जाने तथा अपने देश के संबन्ध में इसी प्रकार के प्रश्न करने का मैंने इस नाटक के एक दृश्य म वर्णन किया है । आज के इस अनुभव के सदृश उस समय यद्यपि मुझे कोई अनुभव न हुआ था , परन्तु किसी बाहरी व्यक्ति को देख मानव के मन में उससे किस प्रकार के प्रश्न पूछने की इच्छा होती है यह कदाचित् मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मेरे मन में उठा होगा । मेरा वह अनुमान सही था इसका मुझ आज प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया । 'हर्ष' नाटक के इस प्रकार के प्रश्नों को यहाँ उद्धृत करना अनुपयुक्त न होगा ।

एक महाशय--आप कहां से आये हैं ?

यानचांग--चीन देश से बन्धु ।

वही--ओहो ! आप तो हमारी भाषा अच्छी तरह समझ और बोल लेते हैं ।

यानचांग--मैंने आपकी भाषा का अध्ययन किया है ।

दूसरा--आपका नाम क्या है, महाशय ?

यानचांग--यानचांग ।

तीसरा--आप कदाचित् बौद्ध होंगे और यहां यात्रा के लिए आये होंगे ।

यानचांग--हां, मैं बौद्ध हूं, यात्रा के लिए भी आया हूं और आपका देश देखने के लिए भी ।

चौथा--हमारा देश आपको कैसा लगता है ?

यानचांग--आपके देश का जितना भाग मैंने देखा ह वह तो मुझ बहुत अच्छा लगा ।...

चौथा--आप हमारे देश में कहां-कहां गये हैं ?

हम लोगों से न्यूजीलैंड वालों ने कुछ इसी प्रकार के प्रश्न पूछे ।

माओरियों के प्रति हम कुछ अधिक आकृष्ट हुए, क्योंकि एक तो उनकी संख्या बहुत कम होने के कारण उनकी ओर ध्यान का आकर्षित होना स्वाभाविक था दूसरे न्यूजीलैंड आना तय होने पर न्यूजीलैंड की हर बात की जानकारी प्राप्त करने के लिये हमने जो कुछ पढ़ा था उस में माओरियों का बहुत बड़ा स्थान था । मावरी जाति न्यूजीलैंड में गोरों के बहुत पहले आयी थी । इनकी अलग सभ्यता और संस्कृति थी और आज भी है । पहले माओरियों और गोरों में बड़े झगड़े हुए । गोरों ने इस जाति को ही समाप्त कर देना चाहा, परन्तु जब यह न हो सका तब इन्हें न्यूजीलैंड में समान अधिकार दिये गये । इतना ही नहीं, गोरों और माओरियों में विवाह संबन्ध भी होने लगे । आज न्यूजीलैंड में ऐसे अनेक कुटुम्ब हैं, जहाँ यदि पति गोरा है तो पत्नी माओरी और पति माओरी तो पत्नी गोरी । माओरियों के प्रति इस प्रकार की उदारता के व्यवहार के लिये न्यूजीलैंड के गोरों की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी कम है । किसी भी देश में वहाँ के मूल निवासियों के प्रति गोरों ने ऐसी उदार नीति का बर्ताव नहीं किया जैसा न्यूजीलैंड के गोरों ने मावरियों के प्रति । माओरियों के संबन्ध में कुछ ब्यौरेवार चर्चा इस पुस्तक में आगे चल कर की जायगी ।

हां, तो मावरियों के प्रति हम अधिक आकृष्ट हुए और हमने उनसे कुछ प्रश्न पूछे जैसे—'क्या आप मावरी हैं?' उत्तर हमें बड़े गर्व से मिला—'जी हाँ' इस प्रकार प्रश्नोत्तरी में हमें एक उत्तर पर बड़ा आश्चर्य हुआ । कुछ मावरियों ने हमें उत्तर दिये—'हम आधे मावरी हैं आधे योरपीय'; 'हम तीन चौथाई मावरी हैं, एक चौथाई योरपीय'; 'हम एक चौथाई मावरी हैं, तीन चौथाई योरपीय' । जिसमें जितना मावरी या योरपीय रक्त था उसने स्पष्ट बता दिया । हमारे यहां इस प्रकार की संतान को 'वर्णसंकर' कहा जाता है और ऐसे लोग इस प्रकार के प्रश्नों का इस प्रकार का उत्तर कदापि नहीं देते वरन ऐसे किसी प्रश्न पर या तो क्रुद्ध हो जाते हैं या लज्जित, परन्तु न्यूजीलैंड में इस प्रकार की मिश्रत संतति का पैदा होना न उस सन्तान के और न अन्य जनता के लिए कोई क्षोभ या लज्जा की बात है । जो इक्के—दुक्के भारतीय हमें मिले उनसे भी हमारी बातें हुईं । कितना हर्ष हुआ इन भारतीयों से हमें मिलकर और इन भारतीयों को हमसे मिलकर ।

आकलैंड कोई बहुत बड़ा शहर न होते हुए भी फैलकर बसा है अतः पैदल पूरे शहर की घुमाई तो हो न सकती थी । कल घूम भी चुके थे । अतः कुछ मुख्य बाजारों और सड़कों में चक्कर लगा भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों से भिन्न—भिन्न प्रकार की बातें कर और न्यूजीलैंड के कुछ दृश्यों की तस्वीरें आदि खरीद लंच के समय हम लोग होटल में लौट

आये । लगभग ४ घंटे की घुमाई में हम कई मील घूम चुके थे ।

लंच के बाद ३ बजे दिन को हम पूर्व निश्चय के अनुसार उत्तर द्वीप के दौरे के लिये मोटर बस से रवाना हो गये ।

१५

आकलैंड शहर छोड़ते ही जिस पहली वस्तु ने मेरा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया वह न्यूजीलैंड की हरी कच्छ चरोखर भूमि थी। मैदानों, पहाड़ियों आदि सर्वत्र मीलों तक यह चरोखर चली गयी थी। न्यूजीलैंड में वर्षा ऋतु कोई पृथक ऋतु नहीं है। हर महीने ४ से ५ इंच पानी बरस जाता है, सालाना वर्षा ३०″ से ७५″ औसतन। जिसके कारण चरोखर भूमि का यह घास सदा हरा बना रहता है। इस घास की उपज को ठीक रखने के लिये कहीं वर्ष में एक बार और कहीं दो बार इस भूमि में 'सुपर फास फेट्स' खाद डाला जाता है। यह खाद फी एकड़ दो से पाँच हंडरवेट तक पड़ता है। एक टन की ७ पौंड १० शिलिंग कीमत होती है। साथ ही चार से छै हंडरवेट तक लाइम का खाद फी एकड़ जमीन में दिया जाता है। इस खाद के कारण चरोखर भूमि की यह घास खूब घनी रहती है और बिगड़ने नहीं पाती। न्यूजीलैंड में खेती बहुत कम होती है। न्यूजीलैंड में कुल भूमि केवल ६६००००००० एकड़ है। ऐसे पहाड़ों और जंगलों को छोड़ जहाँ घने वृक्ष हैं या बस्तियों को छोड़ जहाँ मानव शेष ४००००००० एकड़ भूमि चरोखर भूमि है, सारी चरोखर भूमि में इसी प्रकार का हरा और घना घास बारहों महीने रहता है। संसार के किसी भी देश में इतनी और ऐसी चरोखर नहीं है। ९० प्रतिशत चरोखरों में बिजली पहुँच गयी है। यह भूमि गायों तथा भेड़ों के फार्मों में बँटी हुई है। कुछ इने-गिने फार्मों को छोड़, जहाँ कुछ वैज्ञानिक खोजें हो रही हैं, शेष फार्म यहाँ के निवासियों की व्यक्तिगत संपत्ति हैं। परन्तु व्यक्तिगत संपत्ति रहते हुए भी अधिकांश फार्म सहकारी ढंग से चलते हैं। एक समय बड़े से बड़ा फार्म ४७००० एकड़ का था, पर अब इतने बड़े फार्म नहीं है। अब अधिकांश फार्म ६० से २०० एकड़ के बीच के हैं। इन फार्मों में १८०००००० गायें और ३३०००००० भेड़ें है। कुछ सुअर और कुछ मुर्गियों के फार्म भी हैं, पर ये बहुत कम। अच्छी से अच्छी गाय हमारे ८० तोले के सेर के हिसाब से डेढ़ मन दूध तक देती है, पर पंद्रह सेर से कम दूध तो कोई गाय देती ही नहीं लेकिन दूध की अधिकता यहाँ के गायों का सर्वोच्च गुण नहीं माना जाता। जिस गाय के दूध में अधिक से अधिक मक्खन बैठता है वह गाय सर्वोत्तम मानी जाती है। अच्छी से

अच्छी गाय के दूध में फी सेर एक छटाँक मक्खन निकलता है। नब्बे प्रतिशत गायें मशीन से दुही जाती हैं, हाथ से नहीं। अच्छे से अच्छे सॉड़ों का निर्माण कर अच्छी से अच्छी नसलें यहां तैयार की गयी हैं। पर इन नसलों में अधिक से अधिक मक्खन जिनके दूध में निकल सके ऐसी गायों का निर्माण हुआ है। बैलों की यहां के लोगों को जरूरत नहीं अतः जो बच्छे सांड़ होने के योग्य नहीं माने जाते, मांस के लिये उनका वध कर दिया जाता है। यहां के मानवों के सदृश यहां की गायों की नसलें भी अधिकतर ग्रेट ब्रिटेन से आयी हैं। मुख्य दूध और मक्खन देने वाली नसलें निम्न लिखित हैं—जरसी, फीज्रियन, एशियाई शार्टहार्न, और हालसटीन; पर अस्सी फी सदी गायें जरसी और जरसी से मिली-जुली नस्ल की हैं। इन नसलों को ठीक रखने के लिए आजकल न्यूजीलेंड में कृत्रिम गर्भाधान 'आर्टीफीशिल इनसैमिनेशन' का बहुत अधिक तथा पूर्णतया सफल प्रयोग हो रहा है। न्यूजीलेंड में मक्खन निकालने के करीब १५० और चीस बनाने के करीब ३०० कारखाने हैं। इन कारखानों में ९४ प्रतिशत कारखाने सहकारी संस्थाएँ हैं। न्यूजीलेंड में प्रतिवर्ष लगभग तीस लाख पौंड मक्खन और दस लाख पौंड चीस बनता है। यद्यपि न्यूजीलेंड में मक्खन की खपत संसार में सबसे अधिक है याने ९० पौंड प्रति व्यक्ति के पीछे प्रति वर्ष तथापि आबादी कम होने से वहाँ का ८० प्रतिशत मक्खन अन्य देशों को निर्यात होता है। चीस की वहां प्रति व्यक्ति के पीछे प्रतिवर्ष पांच पौंड की खपत है। ९६ परसेन्ट बाहर जाता है। बाहर जाने वाले मक्खन में ९८ प्रतिशत और बाहर जाने वाले चीस में पूरा का पूरा चीस इंग्लैंड जाता है। यहाँ के निर्यात में ९४ प्रतिशत माल डेरी के पदार्थों का है। यहाँ दूध में पानी अथवा मक्खन में जमाये हुए वनस्पति तेल की मिलावट की बात किसी ने सुनी तक नहीं है। अच्छे से अच्छे दूध का भाव है ६ आने सेर और अच्छे से अच्छे मक्खन का भाव है तीन रुपया सेर।

न्यूजीलैंड के डेरी व्यवसाय की तमाम जगह को विभागों में बाँट दिया गया है, जिससे माल के यातायात में बड़ी सुविधा हो गयी है। माल की तैयारी की जितनी अच्छी व्यवस्था है उतनी ही तैयारी माल की बिक्री तथा यातायात की। इस अच्छी व्यवस्था का प्रधान कारण यह है कि डेरी के धंधे में वहाँ के किसान ही सारा काम करते हैं। किराये के मजदूर केवल दो प्रतिशत हैं और ६० प्रतिशत चरोखरों में तो एक भी मजदूर नहीं है; सब स्वयं सहकारी पद्धति के अनुसार मालिक हैं। इन हरी-भरी चरोखरों में सर्वत्र अत्यधिक सुन्दर, भरे हुए शरीर और भारी थनों की चरती हुई गायों का सौंदर्य देख मैं तो छक गया। मैंने अनेक फार्मों पर अपनी बस को रुकवा न जाने कितनी बेर तक इन गायों के दर्शन किये; इतने पर भी मेरी आंखें न अघायीं। गायों के गले में रस्सी कहीं भी मैंने नहीं

देखी। इन के बँधने के लिये न्यूजीलैंड के किसी भी फार्म में कोई इमारत के भी दर्शन नहीं हुए। दिन और रात इन चरोखरों में ये घूमती और चरती रहती हैं। प्रातःकाल और सांयकाल चरोखरों में ही इन्हें दुह लिया जाता है। हरे घास को छोड़कर यहां की गायों को और कोई खाद्य पदार्थ नहीं दिया जाता और यदि यत्र–तत्र कहीं दिया भी जाता होगा तो नहीं के बराबर।

भेड़ों को यहां ऊन और मांस के लिये पाला जाता है। जिस प्रकार गाय की कई नसलें हैं उसी प्रकार भेड़ों की भी। न्यूजीलैंड में प्रायः सभी नसलों की भेड़ें पायी जाती हैं जैसे–मेरीनो (Merino) लिंकोन (Lincoln) रोमने (Romney) लीसियेटर (Leiceater) श्रोपशायर (Shropshire) साउथडाउन (Southdown) कोरीडेल (Corriedale) हाफ़ब्रेड (Half bred) रीलैंड (Ryeland) इत्यादि। लेकिन सबसे अधिक तादाद में रोमने (Romney) नसल की भेड़ें न्यूजीलैंड में हैं। भेड़ें मटमैले सफेद रंग की हैं। खूब ऊँची पूरी बलिष्ट तन्दुरुस्त। ये भेड़ें भी बिना बँधे इन फार्मों में चरा करती हैं। साल भर में एक बार इनके बाल काटकर ऊन बनाया जाता है। ऊन बाहर भेजा जाता है न्यूजीलैंड में बहुत कम ऊनी कपड़ा तैयार होता है। प्रतिवर्ष लगभग ९६ प्रतिशत ऊन विदेश भेजा जाता है। सन् १९४६-४७ में ३६०,०००,००० पौंड ऊन पैदा किया गया। इसका ९६.३ प्रतिशत विदेश भेजा गया जिसका मूल्य ३२,८७९,०००पौंड था।

बालों से लदी हुई ये मोटी मोटी सफेद भेड़ें इस हरी-हरी चरोखर भूमि में बड़ी सुन्दर दीख पड़ती हैं। कई भेड़ों के तो इतने घने और बड़े बाल हो जाते हैं कि जान पड़ता है मानों उन पर ऊन के गट्ठ लाद दिये गये हों। इन भेड़ों के चारों ओर इन्हीं के रंग के इनके मेमने खूब खेला करते हैं।

न्यूजीलैंड के इन फार्मों की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(१) डेरी और उनके लिये जानवरों का प्राधान्य। इस देश की लगभग ९० प्रतिशत संपत्ति जानवरों में है।

(२) जानवरों का व्यवसाय निर्यात पर निर्भर है। लगभग ७० प्रतिशत लाइवस्टाक (livestock) की उपज विदेश जाती है, अधिकांश इंग्लैंड को।

(३) जानवरों का व्यवसाय चरोखरों पर निर्भर है। जितनी भूमि में घास के चरोखर हैं उसके केवल ३ प्रतिशत अंश में घास के सिवा अन्य फसलें बोई जाती हैं।

(४) घास की फसल और उसके पौष्टिक तत्त्व (nutritious value) का अत्यधिक उपयोग करने की दृष्टि से जानवरों की संख्या और उनके बछड़ों की देख-भाल की जाती है।

(५) डेरी और कृषि दोनों में मशीनों का अत्यधिक उपयोग होता है।

(६) इन सब उपायों से प्रति इकाई परिश्रम का अत्यधिक उत्पादन है। प्रति एकड़ भूमि का उत्पादन भी कई देशों की अपेक्षा बहुत अधिक है। कालिन क्लार्क (Colin clark) महोदय ने सन् १९४१ में प्रति इकाई उत्पादन के लिये विभिन्न देशों की तुलना की थी वह इस प्रकार है—

देश	१००० एकड़ चरोखर और कृषि भूमि में काम करने वाले पुरुषों की संख्या	प्रति व्यक्ति का उत्पादन (१९३४–३५ की अन्तर्राष्ट्रीय इकाई के आधार पर)
न्यूजीलेंड	८.१	२,४४४
आस्ट्रेलिया	२.८	१,५२४
अरजेनटीन	२.८	१,२३३
अमेरिका	१०.०	६६१
कैनेडा	१४.०	६१८
इंगलेंड	२८.०	४७५
फ्रांस	५४.०	४१५

उपर्युक्त तुलना से ज्ञात होता है कि न्यूजीलेंड के पुरुष मजदूरों का प्रति इकाई उत्पादन आस्ट्रेलिया के मजदूरों के उत्पादन से ५० प्रतिशत अधिक है और अमेरिका के मजदूरों के उत्पादन से चार गुना अधिक।

भविष्य का विचार करते हुए यह स्पष्ट मालूम होता है कि न्यूजीलेंड के डेरी व्यवसाय में उत्पादन की वृद्धि के लिये विदेशी बाजार को कायम रखना और उसे बढ़ाना आवश्यक है। विदेशी बाजारों में न्यूजीलेंड के माल की माँग कम होने के भय के कारण अब वहाँ के लोगों का ध्यान उद्योग–धंधों की ओर जा रहा है और कई प्रकार के कारखाने खोले जा रहे हैं।

इस प्रकार न्यूजीलेंड को चरोखरों का देश कहा जा सकता है और यहां के मानवों को ग्वालों की जाति।

गाय चरते हुए ऐसी चरोखरों को देख मुझे भगवान श्रीकृष्ण के समय के भारत और विशेष कर बृज मंडल का स्मरण आये बिना न रहा। 'नौ लख धेनु नंद घर दूहें' बल्लभ संप्रदाय के मन्दिरों में गाये जाने वाले पदों में एक पद का उपर्युक्त चरण भी मुझे याद आ गया। उस काल के भारत के संबन्ध में यह कहा जाता है कि भारत में उस समय दूध

और वहीं की नदियां बहती थीं । कैसा भारत होगा उस काल का इसका अनुमान आजकल के न्यूजीलैंड को देखकर किया जा सकता है । आज भी हम गो पूजक कहे जाते हैं, परन्तु हमारी गो-पूजा कैसी है इसका पता लगता है हमारी गायों के कंकालवत् शरीरों के देखने से । आज भी हमें गायों की आवश्यकता नहीं है यह नहीं कहा जा सकता । न्यूजीलैंड मक्खन के रोजगार के लिये गो-पालन करता है; हमें तो गाय चाहिये अपने देश के लोगों को जीवित रखने के लिये । हमें सबसे अधिक आवश्यकता है अन्न की और हमारे यहाँ की खेती की ही नहीं जा सकती बिना बैलों के । फिर हमारे यहां निरामिष भोजकों की बहुत बड़ी संख्या है । उनके लिये हमें दूध चाहिये, घी चाहिये । अरे ! हमारे बच्चे मर रहे हैं बिना दूध के त्राहि त्राहि ! पाहि पाहि ! करते हुए । बच्चों की मरण संख्या जितनी भयानक हमारे देश में है उतनी कहीं नहीं । इस गरीब देश में क्या भाव है दूध का और क्या घी का और इस किसी भाव में भी क्या कहीं भी एक छटाक दूध या एक रत्ती घी शुद्ध मिल सकता है ? गौ रक्षा पर हमारे देश का सब कुछ अवलंबित है और इसकी ऐसी दशा हो गयी है कि सरकारी पूर्ण शक्ति लगे बिना इस दिशा में कुछ भी होना संभव नहीं है ।

इन चरोखरों के सिवा आज जिस अन्य दृश्य ने मेरा ध्यान आकर्षित किया वह था वहाँ का जंगल । पहाड़ियों पर तथा जमीन पर के जंगल को देख मेरे मन में एकाएक उठा कि यह सारी वन-राशि तो ऐसी व्यवस्थित सी है कि मानव द्वारा लगायी जान पड़ती है और जब मैंने अपना यह मत श्री मिखिल मैस को कहा तब उन्होंने बताया कि मेरा अनुमान ठीक है । न्यूजीलैंड देश में पांच लाख एकड़ में यहां के मानवों ने करोड़ों वृक्ष उनके बीज छिटककर या किसी मशीन से बोकर नहीं, एकएक वृक्ष को अपने हाथों से लगाया है । ऐसी आश्चर्यजनक बात न्यूजीलैंड को छोड़कर दुनिया के किसी भी देश में कदाचित् नहीं हुई होगी । वर्षों तक यहां के कैदियों से यह काम लिया गया और इसका यह फल निकला है । जो वृक्ष लगाये गये हैं उनमें चीड़, ब्लोगम, यूकलिप्टिस और पोपलर हैं । इन वृक्षों में सबसे सुन्दर हैं पोपलर । अब ये पौधे न रहकर ऊंचे पूरे वृक्ष हो गये हैं और अपनी हरियाली से इस हरे भरे देश को और अधिक हरीतिमा दे रहे हैं ।

इन चरोखरों और हरे वृक्षों को देखते-देखते कोई सौ मील का मार्ग कैसे समाप्त हो गया, इसका मुझे तो भान ही न हुआ । कोई ५॥ बजे हम लोग हैमल्टीन नगर में पहुँचे जहां हमारा पहला मुकाम था ।

१६

हेमल्टीन ने न्यूजीलैंड देश के 'नगर' पद को प्राप्त कर लिया है। इस देश में चार बड़े-बड़े शहर हैं—आकलैंड, वेलिंगटन, क्राइस्ट चर्च और ड्यूनेडीन। इन चारों की आबादी एक लाख के ऊपर है। सबसे बड़ा है आकलैंड जो पहले न्यूजीलैंड की राजधानी भी था और दूसरा है वेलिंगटन जो अब राजधानी है। आकलैंड से वेलिंगटन राजधानी हटाने का कारण वेलिंगटन की भौगोलिक स्थिति देश के बीच में होना है जो आकलैंड की नहीं थी। इन चारों बड़े शहरों के सिवा जिन स्थानों की आबादी बीस हजार के ऊपर है वे भी न्यूजीलैंड के नियमानुसार नगरों की श्रेणी में आगये हैं। इन नगरों की म्यूनिस्पैल्टी है और म्यूनिस्पैल्टी के सभापति 'मेयर' कहलाते हैं। उपर्युक्त चार बड़े शहरों को छोड़कर बीस हजार के ऊपर की आबादी के यहाँ कई नगर हैं, जिनमें एक हेमल्टीन भी है। छोटा सा शहर, परन्तु कैसा शानदार और कैसा साफ सुथरा तथा संपन्न आबादी का। बड़ा अच्छा बाजार, बड़ी अच्छी सड़कें। होटल, दफ्तर, सिनेमा आदि की बड़ी-बड़ी इमारतें परन्तु रहने के मकान छोटे-छोटे।

खाना न्यूजीलैंड में ६॥ बजे हो ही जाता था अतः मुंह हाथ धो, खाना खा, हम लोगों ने घंटे भर में नगर घूम डाला। रात को आठ बजे तक संध्या का प्रकाश रहता ही था अतएव नई जगह होने पर भी घूमने में कोई दिक्कत नहीं हुई। यहां की एक छोटी सी नदी वाइकैटो और झील रोटरा के दृश्य बड़े रमणीय हैं।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम लोग सरकारी फार्म देखने गये। आज तीसरे पहर हेमल्टीन के मेयर ने हम लोगों को पार्टी दी थी। पार्टी में हेमल्टीन का सारा सभ्य समाज उपस्थित था। पार्टी के सब लोग पार्टी में खाने की वस्तुओं में से एक चीज पर टूट से पड़े। यह थी स्ट्राबरी। लाल-लाल रंग की पकी हुई देखने और खाने दोनों में ही अद्भुत ये स्ट्राबरियां। न्यूजीलैंड की खालिस गाढ़ी पीली-पीली झांई वाली क्रीम ने इनके सौंदर्य और स्वाद दोनों को बढ़ा दिया था। यद्यपि एक-एक व्यक्ति के लिये एक-एक प्याले की ही व्यवस्था थी, पर कई लोगों ने संकोच छोड़ दो-दो ही नहीं पर तीन-तीन प्याले खाये। मैं भी तीन प्याले वालों में एक था।

पार्टी के बाद भाषण हुए और जो बोले सब ने न्यूजीलैंड देश तथा वहाँ के लोगों और सब से अधिक उनके आव भगत की मुक्तकंठ से प्रशंसा की जो सर्वथा सत्य थी। मैंने देखा कि इस प्रकार की प्रशंसा वहाँ के साधारण लोगों को ही गद्‌गद् नहीं करती थी पर उच्च श्रेणी के लोगों को भी। राष्ट्र की नवीनता का यह भी एक लक्षण था।

१७

ता० १७ को प्रातःकाल ९ बजे हम लोग 'रोटारुआ' नामक स्थान के लिये रवाना हुए। 'रोटारुआ' मुझे एक विचित्र सा नाम जान पड़ा। कठिनाई से तो मुझसे उसका उच्चारण हुआ और फिर उसे स्मरण रखना और कठिन। अपनी भाषा के सिवा जिन भाषाओं को आदमी नहीं जानता उन भाषाओं को सीखना पड़ता है, परन्तु उन भाषाओं को सीखने के पश्चात् भी उन भाषाओं के नामों को उच्चारण करना तथा उन्हें याद रखना किसी भाषाके सीखने और उसे याद रखने से भी कहीं अधिक कठिन है। हम में से जो अंग्रेजी भाषा जानते हैं और अंग्रेजों में से जो हमारी भाषा, वे भी इन भाषाओं के नामों में से कई नामों का उन भाषाओं को जानने पर भी कठिनाई से उच्चारण कर सकते हैं और जितनी कठिनाई इन्हे उच्चारण करने में होती हैं, उससे कहीं अधिक याद रखने में। इसका कारण कदाचित् यह भी है कि नामों को भाषा के शब्दों के सदृश घोटकर याद करने का अवसर नहीं मिलता।

'रोटारुआ' माओरी भाषा का नाम था। ज्ञात हुआ कि न्यूजीलैंड में जहाँ तक स्थानों का संबन्ध है अधिकतर स्थानों के नाम मावरी भाषा के ही पुराने नाम हैं। उन्हे नहीं बदला गया है। यह बात न्यूजीलैंड में ही हुई है ऐसा नहीं, पुराने स्थानों के नामों को बदलने का प्रयत्न औरंगजेब के सदृश धर्मान्धों ने चाहे किया हो, परन्तु संसार में अधिकतर ऐसे प्रयत्न नहीं हुए हैं। इसका कारण कदाचित् यह भी है कि प्रचलित पुराने नामों के स्थान पर नये नामों का प्रचार बड़ी कठिनाई से होता है।

लंच के समय हम रोटारुआ पहुँचे और भोजन के बाद शहर घूमने निकले। साफ-सुथरा छोटा सा शहर। इतने पर भी सारी आधुनिक चीजें और सुविधायें मौजूद। बड़ा अच्छा बाजार 'होटलें' सिनेमाघर इत्यादि सब कुछ।

रोटारुआ में और उसके आस-पास माओरी जाति अधिक रहती है; न्यूजीलैंड का यह विभाग अधिकतर माओरियों से ही भरा हुआ है। आज रात को हमारा माओरियों द्वारा स्वागत हुआ, जिसमें माओरी नृत्य भी दिखाया गया तथा माओरी गान भी सुनवाया
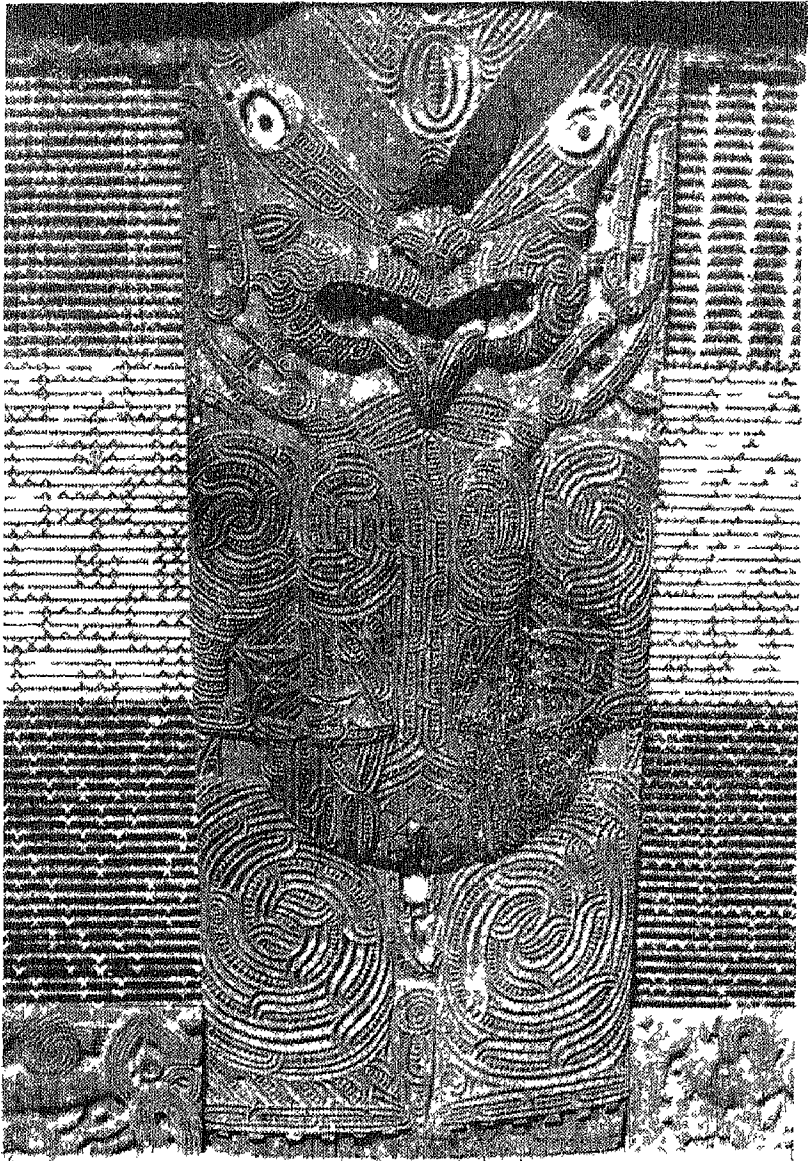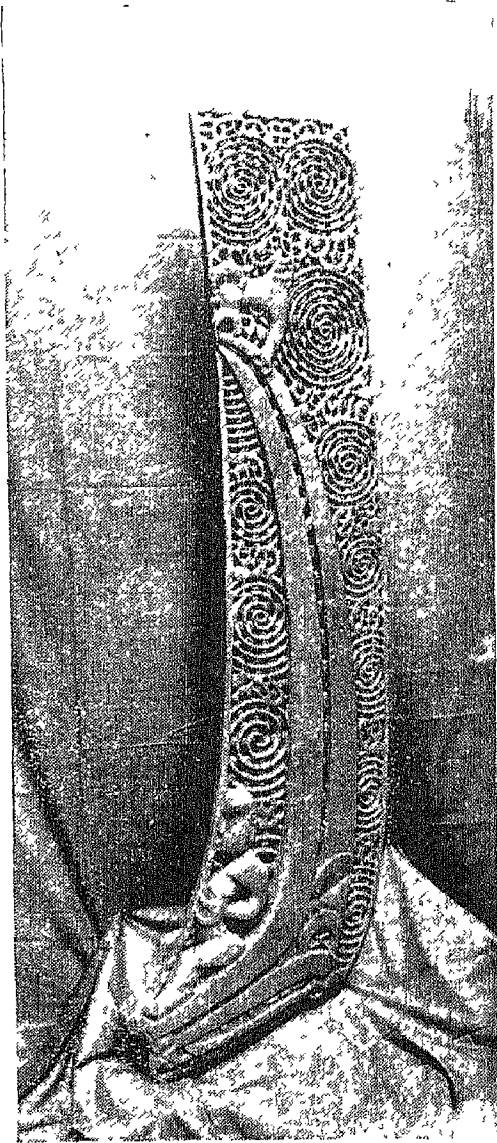
मौरी काष्ठ-कला का एक नमूना

माओरी काष्ठ-कला का एक नमूना
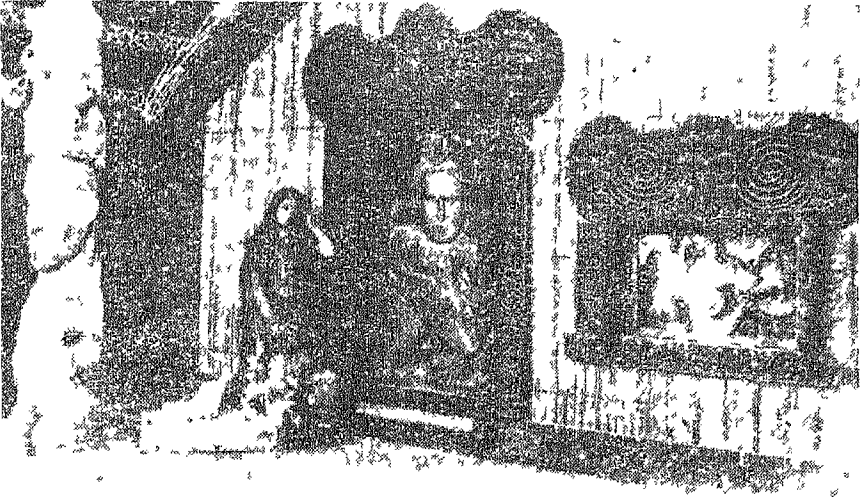
माओरी काष्ठ-कला के कुछ नमूने ।
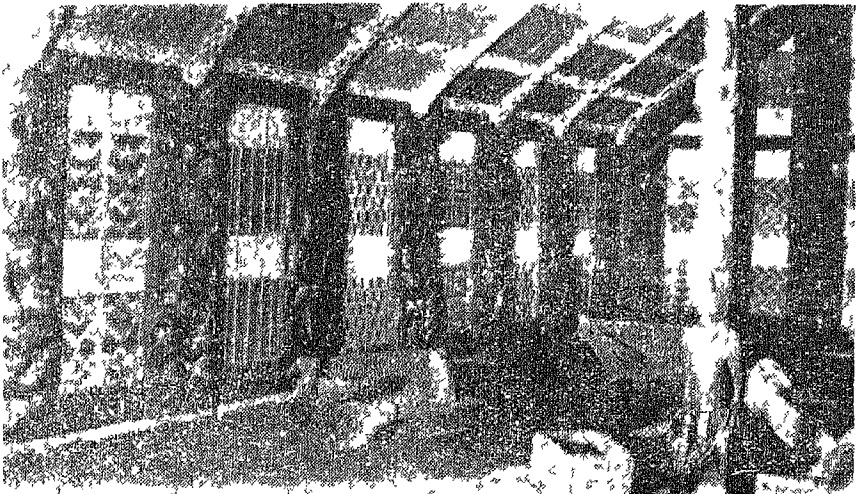
माओरियों के सार्वजनिक भवन का भीतरी दृश्य
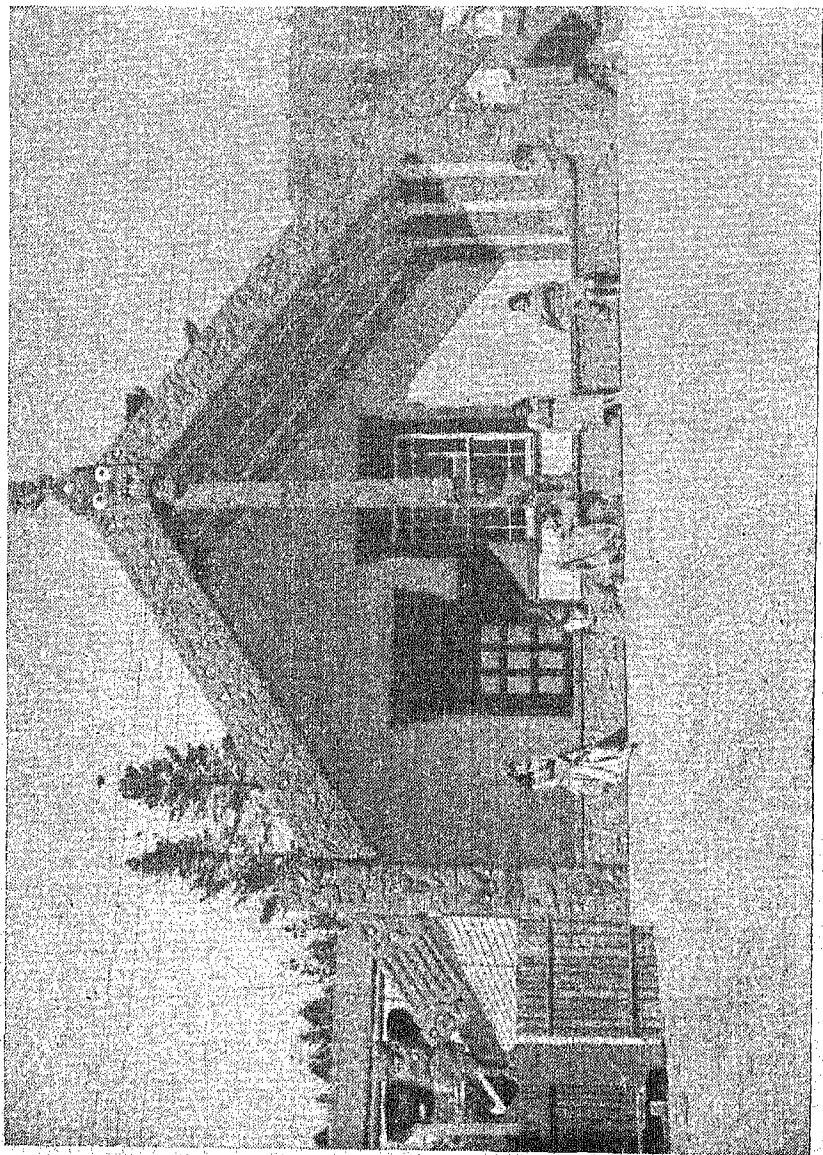
मौरियों के सार्वजनिक भवन का बाहरी दृश्य

गया। हमारा यह स्वागत हुआ माओरियों के एक आलय में जिसे माओरी ढंग की काष्ठ कला आदि का उपयोग कर बनाया गया था। माओरियों का यह स्वागत तथा नृत्य और और संगीत हमारी इस सारी यात्रा की सबसे प्रधान बातों में से एक था। माओरियों के नृत्य और गान के इन दृश्यों को हम कभी न भूल सकेंगे।

सरकारी सूत्र के अनुसार न्यूजीलैंड के माओरी जाति के लोगों की संख्या ८७,५६३ है। लेकिन इस जन-संख्या में न्यूजीलैंड की यूरोपियन आबादी से अधिक वृद्धि हो रही है। आज के संसार में केवल माओरी जाति ही ऐसी है जो अपनी आबादी की स्वाभाविक वृद्धि के लिये सतत् प्रयत्न कर रही है। इस जाति का इतिहास अत्यन्त मनोरंजक है। माओरी जाति में बड़े बहादुर सिपाही, किसान, शिकारी और नाविक हैं। उनमें कलाकार कवि और लेखक भी हैं। माओरी लोग बड़े कट्टर धार्मिक होते हैं और दैवी शक्ति में विश्वास रखते हैं। विशाल पैसिफिक महासागर में शताब्दियों से माओरी जाति के लोग समुद्री-यात्रा करते रहे हैं। अभी कुछ ही समय पहले यह जाति श्वेतांग महाप्रभुओं के आक्रमण से नष्टप्राय हो रही थी। माओरी अपना आत्म-विश्वास खो रहा था और अन्य विलीन जातियों की तरह उसका भी अस्तित्व संसार से समाप्त होने वाला था; लेकिन आज तो सारा नक्शा ही बदल गया। परिस्थितियों में इतना महान् परिवर्तन हुआ कि अब माओरी जाति की दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति हो रही है।

माओरी जाति का यह पुनरुत्थान लगभग २५ वर्ष पहले प्रारम्भ हुआ। इसका प्रधान कारण यह हुआ कि माओरी जाति को सर्वथा नष्ट करने के अपने प्रयास में निष्फल हो वहां के श्वेतांगों ने माओरियों के विषय में अपनी नीति में परिवर्तन किया। इस नीति में परिवर्तन होते ही न्यूजीलैंड की सरकार ने माओरियों की शिक्षा, उनके गांवों में स्वच्छता और खेती में वृद्धि करने के प्रचण्ड प्रयत्न प्रारम्भ किये। आज न्यूजीलैंड के जीवन में माओरी का एक प्रमुख और आदरणीय स्थान है। माओरी को इस बात का गर्व है कि वह न्यूजीलैंड के यूरोपियन नागरिकों की तरह ही अपने राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में अग्रसर हो रहा है। माओरी के इस पुनरुत्थान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि औद्योगीकरण के साथ-साथ माओरी ने अपने प्राचीन उद्योग-धंधों, प्राचीन कला और संगीत को भी नव-जीवन प्रदान किया है।

न्यूजीलैंड में योरोपियन सभ्यता के साथ-साथ माओरी सभ्यता और संस्कृति के अनेक प्रतीक स्थान-स्थान पर दिखायी देते हैं।

विद्वानों का कथन है कि माओरियों के पूर्वज विभिन्न कालों में अधिकांशतः मध्य

पालीनेशिया से न्यूजीलैंड में आये । पालीनेशिया के लोग आज भी संसार में सबसे कुशल और बहादुर नाविक माने जाते हैं । अन्य आदिम जातियों की तरह माओरी भी प्रारंभ में केनीबल थे याने मनुष्य का मांस खाते थे । आने वालों का प्रत्येक दल अपने साथ अपने द्वीप की उस समय की संस्कृति साथ लेकर आया । गरम जलवायु से ठंडी जलवायु में आने के कारण माओरियों के उद्योग-धंधों में कई परिवर्तन हुए, क्योंकि पालीनेशिया में मिलने वाला कच्चा माल न्यूजीलैंड में न मिलता था । इसका परिणाम यह हुआ कि जिस माओरी संस्कृति का परिचय प्रथम योरोपियनों को हुआ वह संस्कृति न तो पूर्णरूप से पालीनेशिया की थी और न पूर्णरूप से न्यूजीलैंड में बनी थी ।

माओरियों की पार्थिव संस्कृति बहुत व्यापक और समुन्नत थी । माओरी कला के संबन्ध में हैमिल्टन की पुस्तक परम विख्यात है । हैमिल्टन के बाद कई लोगों ने माओरी कला और सभ्यता के संबन्ध में इतना लिखा है कि कई ग्रन्थ भरे जा सकते हैं । योरोपियनों का जिस माओरी सभ्यता ने स्वागत किया वह लगभग १००० वर्ष पुरानी थी । योरोपियनों के संपर्क से माओरी संस्कृति में जो परिवर्तन हुए उसकी कहानी बड़ी मनोरंजक है, लेकिन उससे कहीं अधिक मनोरंजक आज की माओरी सभ्यता की कहानी है । माओरी संस्कृति में प्राचीन और अर्वाचीन का श्रेष्ठ समन्वय है ।

जो लोग माओरी सभ्यता को जानते हैं और उससे अनुराग रखते हैं उन्हें यह देखकर बड़ा सुख होता है कि माओरियों की प्राचीन कला और उद्योग-धंधों का पुनरुत्थान हो गया है --लकड़ी में खुदाव की कला शायद माओरी की सबसे उन्नत कला थी और उसीका उत्कर्ष आज की माओरी संस्कृति के वर्णन में सबसे अधिक उल्लेखनीय हैं । माओरियों की प्राचीन हस्त-कौशल कला तथा उनकी चित्ताकर्षक कला की रक्षा तथा उनके प्रोत्साहन के लिये माओरी कला और हस्त-कौशल उद्योग संघ (Maori Arts and Crafts Board) की स्थापना की गयी है ।

मकान--जिस तरह योरोपियन मकानों में एक छप्पर के नीचे सोने रहने खाने पकाने के अलग-अलग कमरे रहते हैं उस तरह प्राचीन माओरियों के मकानों में न थे । अलग-अलग काम के अलग-अलग कमरे होते थे । साधारण लोगों के मकान भी साधारण होते थे । और मुखियों के मकान सजे हुए रहते थे । न्यूजीलैंड के माओरी अपने सभी मकानों में फर्श को नीचा बनाते थे । पालीनेशिया में तो ऊंचे चबूतरे पर मकान बनाये जाते और फर्श भी जमीन से ऊंचे रहते; लेकिन न्यूजीलैंड में आकर उन्होंने जमीन की सतह से नीचा फर्श बनाना सीखा था । जेम्स कुक के कथनानुसार माओरियों के साधारण मकान १८'--२०' लंबे

८'-१०' चौड़े और ५'-६' ऊँचे होते थे। इन मकानों की छप्पर और दीवालों में सूखे घास की टट्टियाँ बाँधी जाती थीं। एक कोने में दरवाजा होता था जो इतना छोटा होता कि घुटनों के बल सरक कर ही लोग अन्दर जा सकते। दरवाजे के पास ही दीवाल में एक बड़ा वर्गाकार छेद रहता जो खिड़की और चिमनी का काम देता। छप्पर दीवालों से दो फुट बाहर तक बढ़ा रहता, जिसके नीचे बेंच पर लोग बैठते। मकान के बीच में अग्निकुंड रहता जिसमें आग जलती रहती। दीवालों के किनारे मकान में चारों ओर प्यॉर बिछा रहता जिस पर घर के लोग सोते। महत्वपूर्ण मकानों में सुन्दर इमारती लकड़ी का प्रयोग होता और कारीगरी के साथ उनको बनाया जाता।

सार्वजनिक मकानों की स्थापत्य कला—माओरियों के सबसे श्रेष्ठ मकान तो सार्वजनिक उपयोग के मकान होते। इन्हें विद्वानों ने मीटिंग हाउस (Meeting House) कहा है। माओरी स्थापत्य कला की चरम सीमा के द्योतक ये मीटिंग हाउस थे। हर एक उपजाति के शिल्पी अपने कौशल का उपयोग कर विभिन्न ढंगों से इन मकानों को बनाते। ये मकान साधारणतः ६० फुट लम्बे होते और बड़ी मजबूत इमारती लकड़ी पर अत्यन्त कुशल शिल्पी खुदाई का काम कर इन मकानों को बनाते। अभी भी स्थान-स्थान पर ऐसे मकान न्यूजीलैंड में पाये जाते हैं। आकलैंड के अजायबघर में होतुनुई (Hotunui) नामक मकान टेम्स (Thams) जिले से लाकर रखा गया है। इसकी लम्बाई ८० फुट, चौड़ाई ३३ फुट और ऊँचाई २४ फुट है। न्यूजीलैंड में इमारती लकड़ी की बहुतायत के कारण मकान बनाने में माओरियों ने लकड़ी का खूब प्रयोग किया, साथ ही लकड़ी की शिल्प-कला में वे प्रवीण भी हुए। माओरियों के अनेक मुखियों की शान-शौकत और सामाजिक अभिलाषाओं के कारण भी इन मीटिंग हाउसेज को बड़ा प्रोत्साहन मिला और बड़े परिश्रम से उनका यत्र-तत्र निर्माण किया गया। शनैः शनैः ये मकान गिरने लगे और ऐसा प्रतीत हुआ कि माओरियों की उन्नत कला के ये प्रतीक सदा के लिये मिट जावेंगे। लेकिन फिर एक पुनरुत्थान की लहर दौड़ी। सरकार ने रोटारुआ में माओरी खुदाई-कला की एक पाठशाला खोली। इस स्कूल ने चतुर कारीगरों और खुदाई के काम की पूर्ण व्यवस्था की। इन नवीन मकानों में कई आधुनिक सुविधाएँ रखी गयीं लेकिन प्राचीन वातावरण को स्थापित रखने का भी सफल प्रयत्न हुआ।

विद्वानों का मत है कि माओरियों ने न्यूजीलैंड में आकर गाँव बसाये और उनकी रक्षा का पूरा प्रबन्ध किया। पालीनेशिया में गाँवों की रक्षा का कोई प्रश्न न था लेकिन न्यूजीलैंड की स्थानीय परिस्थिति ने माओरियों को बाध्य किया कि वे किला-बंदी कर अपने गाँवों की रक्षा करें। प्रायः पहाड़ियों पर गाँव बसाये जाते।

चटाई के बुनाव का काम — लकड़ी के खुदाव के काम के बाद माओरी शिल्प-कला में दूसरा स्थान सोने-बैठने के लिये चटाइयों और घरेलू काम के लिये टोकनियों आदि के बनाने की कला को मिलता है। पालीनेशिया में नारियल के पत्ते और पैन्डेनस (Pandanus) पेड़ के पत्तों से ही चटाइयाँ और भाँति-भाँति की टोकनियाँ बनायी जाती थीं। न्यूजीलैंड में फ्लैक्स (flax) का उपयोग किया गया क्योंकि वह अधिक मजबूत सिद्ध हुआ। औरतों की चोटी की तरह गूँथकर चटाई बनाने और टोकनी बुनने की कला अत्यन्त प्राचीन है। इसमें माओरी बड़े कुशल थे। सोने और बैठने की चटाइयों के साथ ही भोजन इत्यादि रखने की कई प्रकार की टोकनियाँ भी बनती थीं। अग्नि प्रज्वलित करने के लिये पंखे, जूते, कमर के पट्टे और नौकाओं में काम आनेवाले रस्से आदि भी फ्लैक्स से बनाये जाते थे। चित्ताकर्षक बनाने के लिये चटाइयों और टोकनियों में काले रंग का प्रयोग होता था जो धुआँ से बनाया जाता था। पत्तों का स्वाभाविक पीला रंग भी सुन्दरता बढ़ाने में सहायक होता था। बुने गये फ्लैक्स के धागों की संख्या घटा-बढ़ाकर और उन धागों को आड़ा-टेढ़ा लगाकर रेखागणित के आधार पर चटाइयों और टोकनियों में आकर्षक डिजाइनें बनायी जाती थीं।

यूरोपियनों के आने के बाद जब भाँति-भाँति के रंग न्यूजीलैंड में आने लगे तब तो माओरियों की इस चटाई बुनने की कला को अपूर्व अवसर मिला। यूरोप निवासियों ने इन घरेलू काम की चीजों का खूब उपयोग किया और चटाई के व्यापार की आशातीत उन्नति हुई। घरेलू काम में नवीन वस्तुएँ अधिक उपयोगी सिद्ध होने के कारण फ्लैक्स का बना सामान कम काम में आता है लेकिन चटाइयाँ और टोकनियाँ अभी भी सर्वत्र दिखायी देती हैं। परन्तु नयी पीढ़ी की युवतियों को चटाई बुनने के काम का समय कम मिलने के कारण यह कला ह्रास की ओर जा रही है।

पोशाक—पालीनेशियन पोशाक मर्दों के लिये धोती और औरतों के लिये घागरा के सिवा कुछ न थी। मर्दों की धोती १०"–१२" चौड़ी पट्टी थी जो जाँघों और कमर में लपेटी जाती थी। घागरा कमर में बाँधा जाता था। कुमारियों का घागरा घुटने के ऊपर रहता और विवाहित स्त्रियों का घागरा घुटनों के नीचे तक रहता। पेपर मलबरी (paper mulberry) और पैन्डेनस के पत्तों और छाल से धोती और घागरा बनाया जाता था। न्यूजीलैंड में आने के बाद फ्लैक्स का उपयोग पोशाकों के लिये हुआ, क्योंकि मलबरी के पेड़ और नारियल के पत्ते वहाँ नहीं थे। मर्यादा के साथ ही ठंड और पानी से रक्षा भी आवश्यक थी। इसके लिये

माओरी बच्चे

अपनी जातीय पोशाक में एक माओरी युग्म
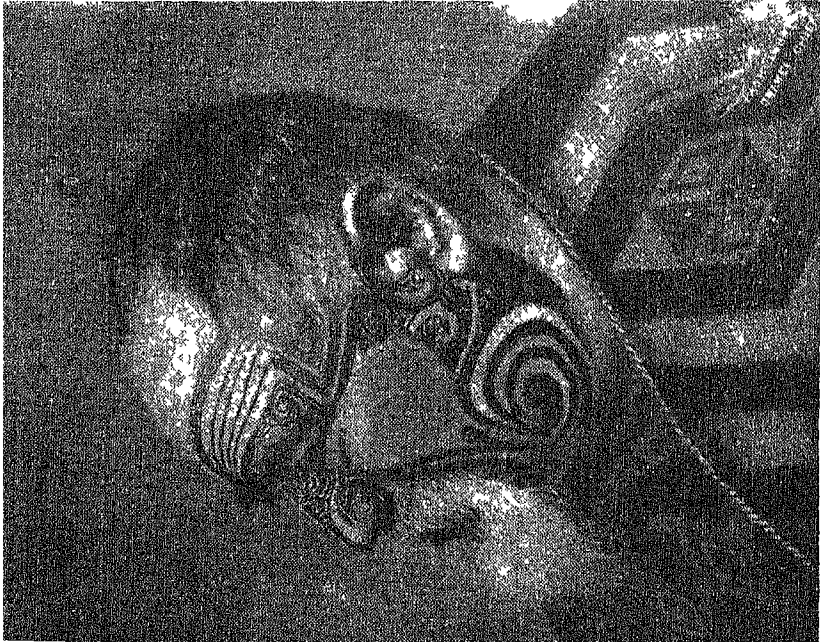
माओरी पुरुष, जो अपने चेहरे को रंगे हुए है।

श्रीमती रागी — एक माओरी महिला

अपनी जातीय पोशाक में दो माओरी महिलाएँ

माओरी नेता आनरेबुल जेम्स कैरोल जो माओरी भाषा में
"टिमीकारा" कहलाते थे तथा उनकी पत्नी लेडी कैरोल
श्री कैरोल न्यूजीलैण्ड के प्रधान मंत्री भी रहे थे ।

स्त्री और पुरुष दोनों बिना अस्तीन का लबादा काम में लाते हैं। कई तरह की बुनाई कर, आकर्षक डिज़ाइनें बना, और रंगों का पूरा उपयोग कर माओरी अपनी पोशाकें बड़ी सुन्दर बनाते थे। उपयोगिता के साथ ही उनकी पोशाकों से उनका कला-प्रेम और कुशल कारीगिरी का परिचय मिलता है। समाज में जो विभिन्न श्रेणियां थीं उनका परिचय उनकी पोशाकों से मिल जाता था। हाथ से बुनी हुई पोशाकों को शादी आदि के समय भेंट में दिया जाता था इससे पुरुष-वर्ग के यूरोपियन पोशाक को अपनाने के बाद भी स्त्रियां पुरानी पोशाक बनाती थीं। यों तो अभी भी ये कीमती पोशाकें यत्र-तत्र दिखायी देती हैं, लेकिन अच्छे कारीगिर दिनों-दिन कम होते जा रहे हैं। अकसर यात्रियों और दर्शकों के स्थानों में ये पुरानी पोशाकें अधिक दिखायी देती हैं।

चेहरों की रंगाई—इन रंग-बिरंगी पोशाकों के साथ माओरी अपने चेहरों को रंगते थे। वे अपने ललाट, कपोल, कान सभी एक विचित्र प्रकार से रंगते। पुरुष और स्त्रियां दोनों वर्गों में यह रंगाई होती। आज भी कुछ पुरानी स्त्रियां अपने चेहरों को रंगती हैं, पर अब यह प्रथा बहुत कम हो गयी है। इसे 'टेटूइंग' (Tattooing) कहते हैं। इस रंगाई में ऐसे रंगों का मिश्रण होता है तथा यह रंगाई इस प्रकार होती है जिससे भयानक रस की उत्पत्ति होती है।

औजार और नौकाएँ—पालीनेशिया का मुख्य औजार पत्थर की कुल्हाड़ी थी। रुखानी और गोलची कई प्रकार की थीं क्योंकि लकड़ी के खुदाव के काम में उनका बहुत उपयोग होता था। पत्थर, हड्डी और लकड़ी में छेद करने के लिये बरमा (drill) का उपयोग किया जाता था। यूरोपियन के आने के बाद और पाषाण-युग का अन्त होने पर धातु के औजारों का उपयोग हुआ।

अपनी लम्बी समुद्र-यात्रा के लिये माओरी दो नौकाओं को बांधकर चलाते थे। दोनों नौकाओं के बीच में एक मकान बना रहता था ताकि तूफान और पानी से नाविक अपनी रक्षा कर सकें। साधारण यात्रा और मछली के शिकार के लिये अलग नौकाएँ थीं। नौका-निर्माण की कला की चरम सीमा युद्ध-पोत बनाने में दिखायी देती थी। ७० फुट लम्बी और बड़े कौशल से खुदाव के काम से सुसज्जित युद्ध-नौका अपने ढंग की निराली चीज थी। इन नौकाओं के अग्र भाग और पीछे के भाग में जो खुदाव का काम था वह माओरियों की इस कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना था।

माओरी कला में भयानकता तथा जीवटपन—माओरी कला के संबन्ध में सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि उनके नृत्य, संगीत, चित्रकारी आदि में भयानकता और असाधारण जीवट सर्वत्र दिखायी देता है। बाल्यावस्था से ही माओरी बच्चे नृत्य में भाग लेते; जीभ बाहर निकाल, आंखों की पुतलियों को नचाते और अंगुलियों को विचित्र प्रकार से

हिलाना सीखते। माओरी नृत्यों में जीभ बाहर निकाल, आँखें फाड़कर अत्यन्त भयावना दृश्य उपस्थित किया जाता है। नाचनेवालों की भृकुटी, आंखों और पूरी मुद्रा से एक भयानक रस का संचार होता है। जिस तरह भारतवर्ष में काली की प्रतिमा और उसके वर्णन से भयानक रस का संचार होता है उसी तरह माओरी कला में भयानक रस की उत्पत्ति स्थान-स्थान पर होती है। अन्य प्राचीन जातियों की तरह माओरी जाति के जीवन में भी कविता और गायन का प्राधान्य था। प्रकृति और मानवी-संबन्धों में वर्णन में माओरी कविता में कुशाग्र बुद्धि और तीव्र अनुभूति का परिचय मिलता है। विद्वानों का मत है कि बुद्धि में माओरी लोग यूरोपियनों से कम न थे, लेकिन भावों (Emotions) का प्रदर्शन माओरी जितनी स्वच्छन्दता से करते थे, यूरोपियन उतने ही संकोच से।

माओरी इतिहास का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि माओरी जीवन में भयानकता के प्राधान्य का प्रमुख कारण माओरी संस्कृति ही है। माओरियों की सबसे प्रमुख संस्था अन्तर्जातीय युद्ध थी। माओरी के जीवन और चरित्र के निर्माण में इन युद्धों का विशेष हाथ था। एक सफल योद्धा बनना ही प्राचीन माओरी का स्वाभाविक जीवन था और यही था उसका आदर्श। बाल्यावस्था से ही युद्ध के शस्त्रों की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती थी; युद्ध की संपूर्ण कलाओं में उनको शिक्षा होती थी। माओरी का युद्ध-प्रेम बड़ा खतरनाक और खूनी खेल था। इस खेल की बड़े सज-धज से तैयारी की जाती थी और उसका गुणगान भी। युद्ध के सिवा माओरी जाति आदमखोर थी यह भी ऐतिहासिक सत्य है। उनकी कला में भयानक रस का यह भी एक कारण हो सकता है। लेकिन यह धारणा बनाना भी गलत होगा कि माओरियों को युद्ध के सिवा और कुछ न आता था। यदि एक ओर वे युद्ध-प्रेमी थे तो दूसरी ओर यह भी सर्वविदित है कि माओरी आपसी संबन्धों और मैत्री को भी अत्यधिक आदर देते थे; वे कौटुम्बिक जीवन में बड़ा स्नेह रखते थे, उनके मनोरंजन के भी कई खेल प्रसिद्ध थे, जिनमें अन्तर्जातीय प्रतिस्पर्धाएँ होती थीं।

जैसा प्रारम्भ में कहा जा चुका है, माओरी जाति का पुनरुत्थान आधुनिक शिक्षा-प्राप्त माओरियों ने ही किया। इस पुनरुत्थान के नेता आनरेबुल सर अपीराना नेटा (Hon Sir. Apirana Ngata), सर जेम्स केरल (Sir, James Carrol), सर माऊ पोमरे (Sir. Maui Pomare) और ते रंगी हिरोआ (Te Rangi Hiroa) जिनका दूसरा नाम डाक्टर पीटर बक (Dr. Peter Buck) भी है। वर्त्तमान संसार के लिये माओरियों का पुनरुत्थान एक विशेष महत्व रखता है। यूरोपियनों ने माओरी के इस पुनरुत्थान में योग दिया। आदिम निवासियों को सभ्य बनाने की कहानी तो अब बहुत पुरानी हो

चुकी है पर इसके अन्य कई कारण हैं, जिनमें मुख्य दो हैं। पहले कारण का उल्लेख ऊपर हो चुका है अर्थात् योरोपियन माओरियों को सर्वथा नष्ट करने में सफल न हो सके। दूसरा कारण आर्थिक है। न्यूजीलैंड में आबादी बहुत कम है—फी वर्गमील आठ आदमी। न्यूजीलैंड की सारी भूमि और प्राकृतिक साधनों का उपयोग कर समुन्नत जीवन-धोरण कायम रखने के लिये यह आर्थिक आवश्यकता थी कि यूरोपियन और माओरी मिल कर काम करें। मिल कर काम करने का परिणाम यह हुआ कि दोनों जातियों में बड़ा स्नेह बढ़ा और एक अपूर्व उदाहरण न्यूजीलैंड मानव-मात्र के सामने प्रस्तुत कर रहा है। माओरी शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, सुरक्षा, कला आदि में न्यूजीलैंड की सरकार प्रचुर मात्रा में धन खर्च कर माओरियों और यूरोपियनों को जीवन के हर क्षेत्र में "समान अवसर" प्रदान कर रही है। दो जातियों के हिल-मिल रह कर परस्पर उन्नति और लाभ के लिये परम्परागत दुश्मनी, वैमनस्य और जाति-भेद (Race prejudice) को दूर हटाने का न्यूजीलैंड से अच्छा उदाहरण कहाँ मिलेगा?

१८

दूसरे दिन प्रातःकाल हम रोटारुआ के आसपास के अद्भुत स्थानों को देखने गये।

रोटारुआ और उसके आसपास प्रकृति गन्धक से खेलती है। गन्धक के इस खेल के जैसे दृश्य यहाँ हैं, वैसे संसार में कहीं नहीं। गन्धक के इन खेलों के कारण अनेक अद्भुत दृश्य हो गये हैं और सारा वायुमण्डल गन्धक की सुगन्ध से भरा हुआ रहता है।

गन्धक की इस क्रीड़ा को दिखाने के लिये हमें एक मावरी रमणी श्रीमती रैंगी ले गयीं, जो यहाँ की सबसे प्रधान 'गाइड' हैं और जिनका गुजर बसर इसी काम से चलता है। श्री रैंगी गेहुएँ रंग की मावरी ढंग के अंगों की होने पर भी अन्य मावरियों के सदृश योरपीय पोशाक पहनती हैं। अंग्रेजी भाषा ऐसी अच्छी तरह जानती हैं और उस भाषा में इस प्रकार बातचीत करती हैं जैसा अंग्रेजों में भी कम कर सकते हैं। फिर उनके सारे संभाषण ऐसे विनोद तथा व्यंग से भरे होते हैं जैसे संभाषण मुझे इसके पहले कभी सुनने को नहीं मिले।

पहले हम लोग गरम और ठंडे पानी के झरनों तथा कुण्डों को देखने गये। ठंडे और गरम पानी का ऐसा विचित्र मिश्रण इसके पहले हमने कभी नहीं देखा था। पानी के एक ही बहाव में बरफ के सदृश ठंडा पानी और एक इंच के अन्तर के बाद २०० डिगरी टैम्परेचर का भाफ निकलता हुआ उबलता पानी। दोनों प्रकार के पानी एक साथ बहते हैं और इतने पर भी ठंडे पानी के बहाव को गरम पानी गरम नहीं बना पाता तथा गरम पानी के बहाव को ठंडा पानी ठंडा नहीं। इस बहते हुए पानी ने अनेक कुण्डों के सिवा एक बड़ी-सी झील बना दी है। इस झील में सदा गरम पानी रहता है और अनेक बार इसमें से फुहारे उड़ने लगते हैं। कई बार तो ये फुहारे पाँच पाँच सौ फुट ऊँचे जाते हैं। हमारे देखते-देखते इस शांत झील में एकाएक एक फुहारा उड़ना आरम्भ हुआ और वह अढ़ाई तीन सौ फुट की ऊँचाई से कम ऊँचा न उड़ा होगा।

गन्धक की यह क्रीड़ा पानी से ही संबन्ध नहीं रखती। अनेक स्थानों पर कीचड़ के
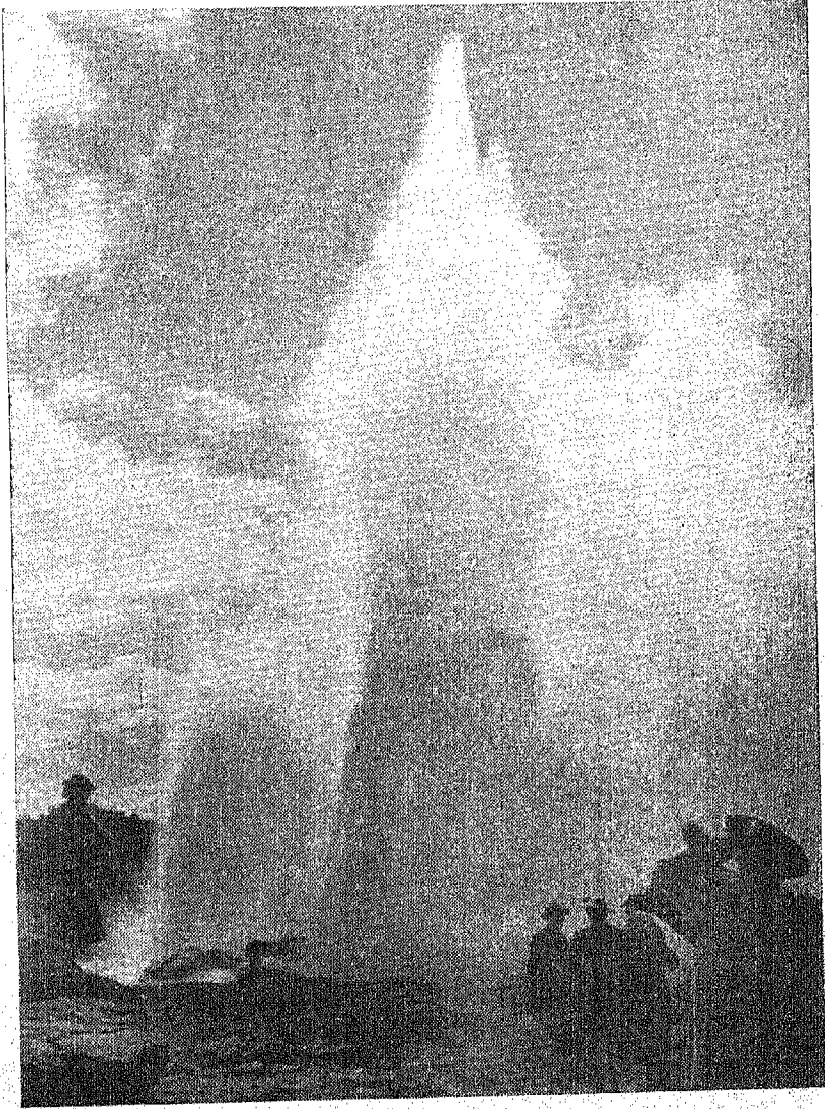
न्यूजीलैंड के 'रोटारुआ' नगर के निकट उबलती झील में से उड़ने वाले फव्वारे जो कभी कभी ५०० फुट ऊंचे तक उड़ते हैं।
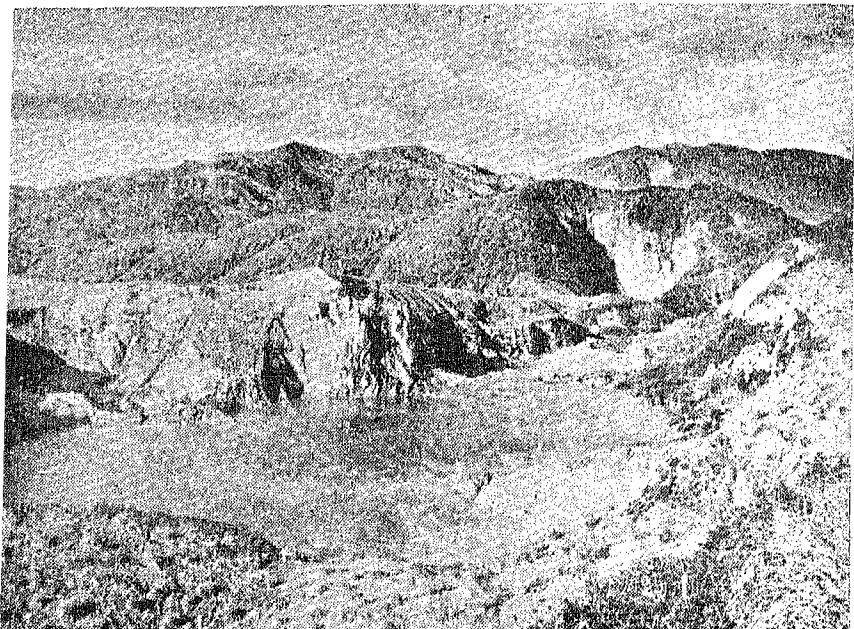
न्यूजीलेंड में 'रोटारुआ' की उबलती झील

'रोटारुआ' की झील का उबलता कीचड़ का दृश्य
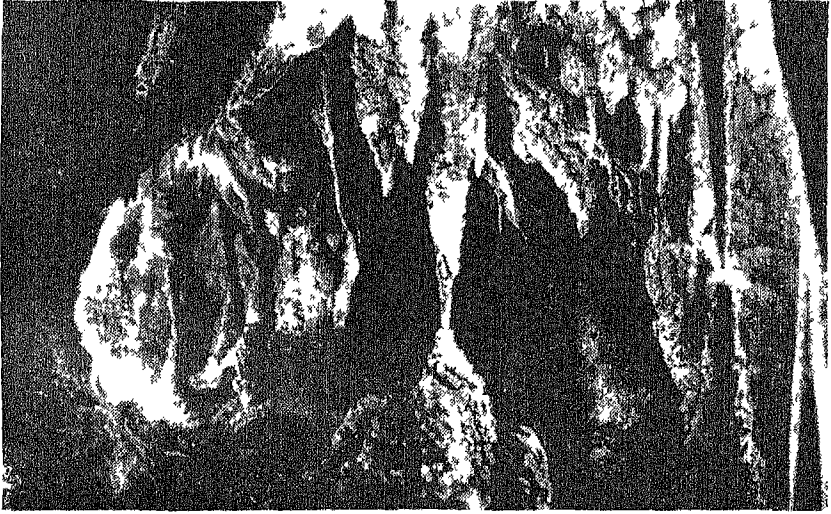
'वाइटायो' गुफा का दृश्य
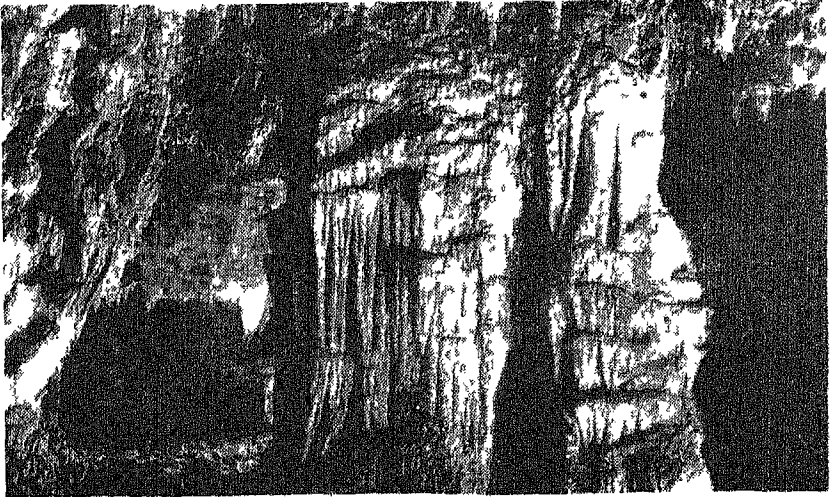
'वाइटायो' की गुफा का एक दृश्य

वाइटाओ गुफा की एक जुगनू
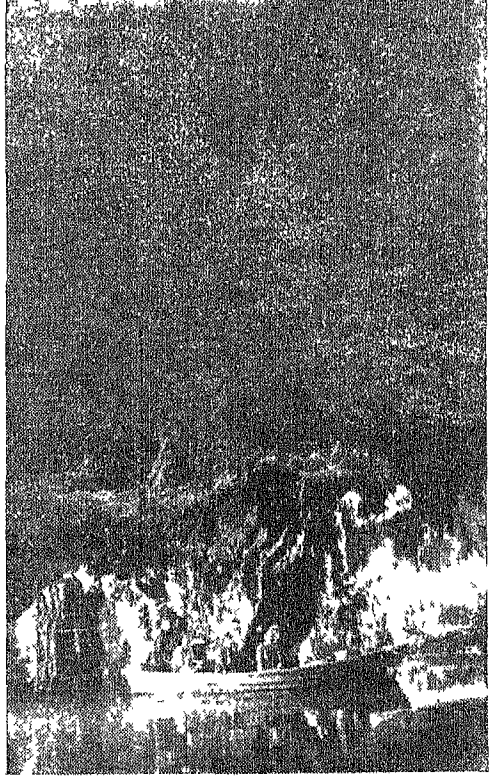
वाइटाओं गुफा में अनन्त जुगनुओं का समूह
जो तारों के सदृश्य चमकता है ।
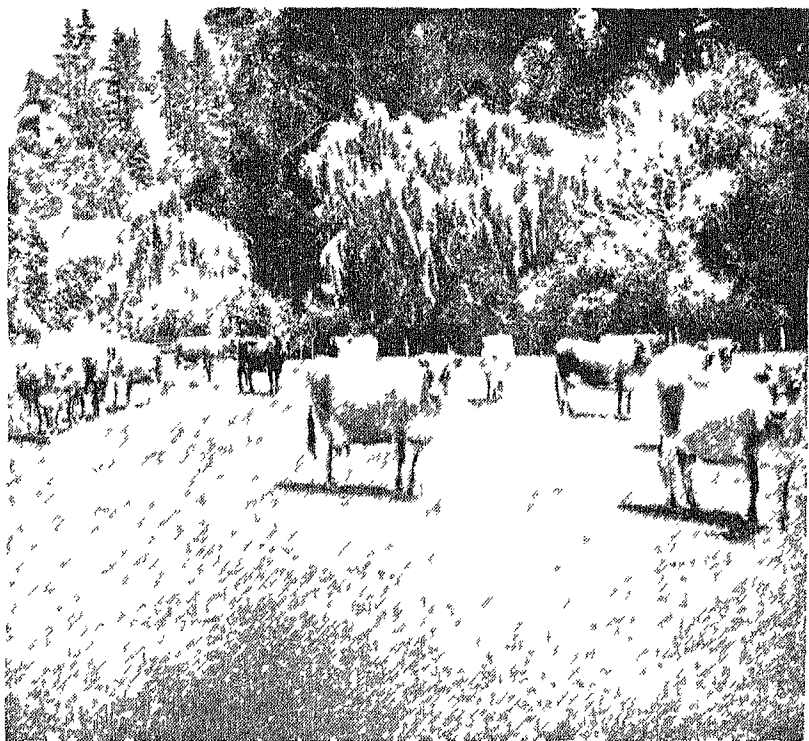
न्यूजीलेंड की गायों का खिरका
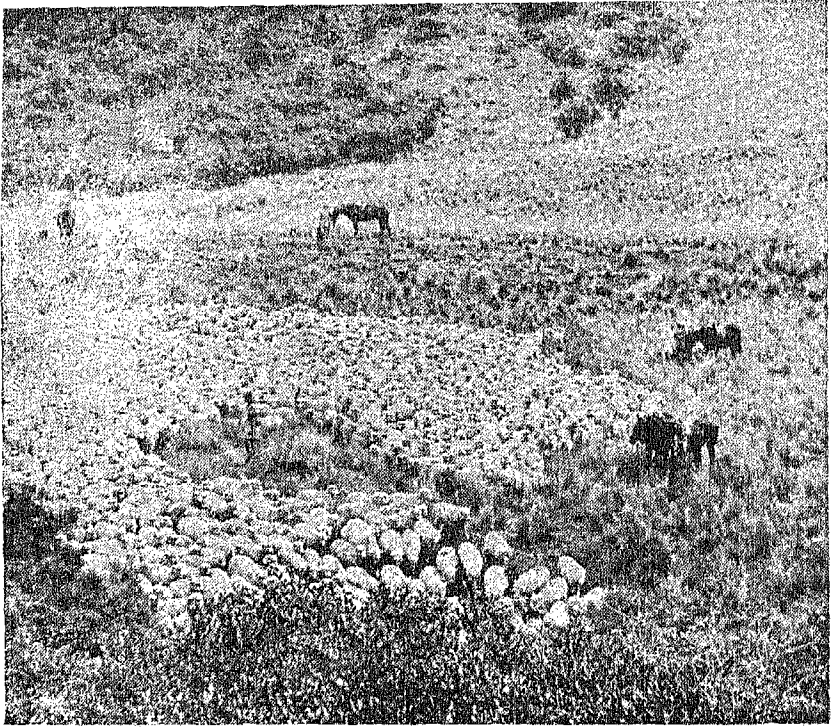
न्यूजीलैंड की भेड़ों का समूह
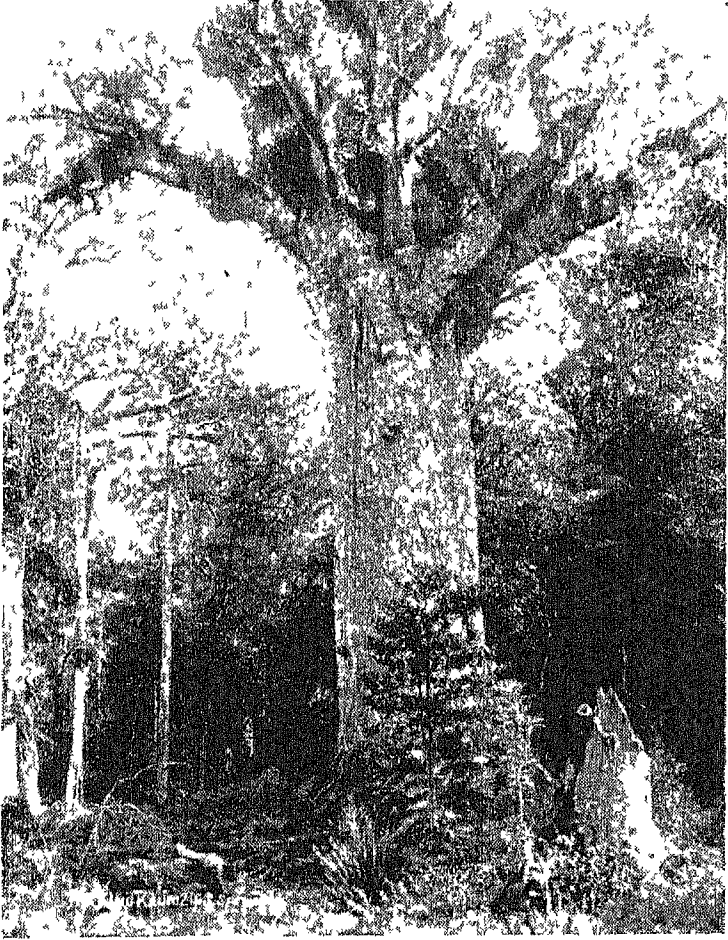
न्यूजीलेंड का प्रसिद्ध 'कावरी' वृक्ष जिसकी ऊँचाई १०० फुट से भी अधिक होती है और मुटाई का घेरा ४० फीट तक होता है ।
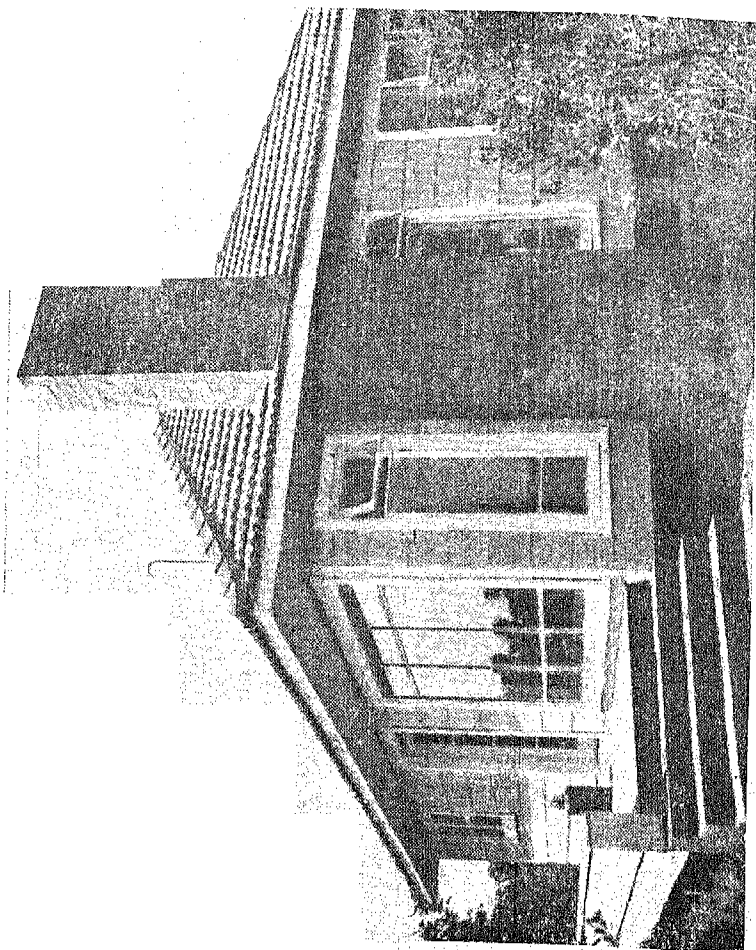
न्यूजीलैंड का एक कुटुम्बीय गृह इसी प्रकार के छोटे छोटे गृहों में न्यूजीलैंड के सब लोग निवास करते हैं

कुंड भी बन गये हैं और इन कुंडों में कीचड़ उबला तथा उबल-उबल कर उछला करता है।

कई जगह न पानी है न कीचड़ और ऐसे स्थानों में सदा भाफें निकला करती हैं। ये भाफें इतनी गरम होती हैं कि इस स्थल के आसपास रहने वाले मावरियों को अपना भोजन बनाने के लिये ईंधन की आवश्यकता नहीं पड़ती। हमने अनेक स्थलों पर मावरियों को अपना भोजन इसी भाफ में बनाते देखा।

चारों तरफ का दृश्य कितना हरा है। कहीं उबलता हुआ पानी और कहीं कीचड़, अगणित स्थानों पर उठती हुई भाफ की राशियाँ और इतने पर भी चारों ओर की सघन हरीतिमा जिसके बीच में खिले हुए अनेक रंगों के फूलों की भरमार जिनमें तारों के सदृश सफेद रंग के 'मोनुका' (Manuka) नामक पुष्पों के गुच्छे सबसे अधिक। ये पुष्प 'टाइट्री' (Titree) नामक दरख्तों से निकलते हैं। एक दूसरे से ठीक विपरीत वस्तुओं का एक विचित्र दृश्य था।

इन अद्‌भुत दृश्यों को देखते हुए हम नीली झील (Blue lake)पर पहुँचे। नाम के अनुसार इस झील का पानी आकाश के गहरे नीले रंग के समान है। चारों ओर की पहाड़ियां चीड़, ब्लोगम और यूकलिप्टिस दरख्तों से भरी हुई हैं। ये सभी वृक्ष यहाँ की पहाड़ियों पर मानवों ने लगाये हैं। यहाँ गन्धक का तमाशा नहीं है। दृश्य अद्‌भुत नहीं, पर अत्यधिक रमणीय है। मिस्टर मिडिल मैस तथा अनेक साथियों ने तैर कर स्नान किये। और जब ये तैर रहे थे तब मुझे अपना पुराने जीवन का एक समय स्मरण आये बिना न रहा। जब सन् २० में असहयोग आन्दोलन के पहले गोविन्द भवन के एक बड़े कुंड में मैं इसी प्रकार न जाने कितनी तरह से तैरना सीख गर्मियों में तैरा करता था तथा उसके बाद अनेक बार गोविन्द भवन के ही एक 'बालरूम' में कई बार अंग्रेजी नाच नाचा करता था एवं 'स्केटिंग' भी किया करता था। उस जीवन को बीते तीस वर्ष से अधिक हो गये थे, फिर भी आज वह जीवन एकाएक याद आ गया। इस प्रकार की घटनाएँ मानव के मन में न जाने कितनी पुरानी स्मृतियों को जागृत कर देती हैं। मेरे मन में एकाएक एक प्रश्न भी उठा। इन तीस वर्षों का जीवन अच्छा था या इसके पूर्व का। मेरे प्रश्न का उत्तर देने में मुझे ही कुछ देर न लगी। वह जीवन विलास पूर्ण जीवन रहा होगा, उसमें पार्थिव सुखों की पराकाष्ठा रही होगी, उसमें शारीरिक सुख प्रचुर से प्रचुर मात्रा में मिले होंगे, परन्तु इन तीस वर्षों के कर्तव्य पूर्ण जीवन में चाहे विलासों की इति भी हो गई हो, पार्थिव सुखों के स्थान पर चाहे अगणित पार्थिव कष्ट मिले हों, शारीरिक सुखों की जगह चाहे अनेकानेक शारीरिक दुख भोगे हों, परन्तु जो मानसिक एवं आत्मिक आनन्द और सन्तोष इन तीस वर्षों के जीवन से मुझे प्राप्त हुआ, वह क्या उस जीवन में

मिल सकता था ? सार्वजनिक जीवन में मैं न आता और गांधीजी का अनुसरण कर अपनी मातृभूमि के उद्धार के लिये मैंने जो कुछ किया वह न किया होता तो अन्य धनवानों, संपत्ति शालियों, रईसों के सदृश मैं भी एक विलासी नरक में बिलबिलाया करता और उसके सुख को उसी प्रकार का सुख मानता जैसा नरक के कीड़ों को भी अपने नरक में मिलता रहता है ।

लंच के समय होटल लौटने के पूर्व हम रेंगी के निवास स्थान पर गये । उन्होंने अपना निवास पुराने कलात्मक मावरी निवास के सदृश बनाया है । मावरी काष्ठ कला का इस निवास में खूब उपयोग हुआ है । कई मावरी मूर्तियाँ और चित्र भी हैं । होटल लौट, खाना खा, हम उबलती झील नामक एक स्थान को देखने चले । मोटर बस से उतर कोई मील डेढ़ मील चढ़ाव उतार का रास्ता तय कर हमने जो दृश्य देखा वह वैसा ही विचित्र था जैसे आज प्रातःकाल के अनेक दृश्य थे ।

हरे भरे तथा ब्रूम (Broom) के पीले पुष्पों के गुच्छों से भरी हुई पहाड़ियों के बीच यह नीले रंग की झील भाफ की राशियों की राशियां उड़ा रही थी । यह झील थी कोई ३॥ एकड़ में, इसकी गहराई थी ८०० फुट और इसके पानी का तापमान रहता था २२० डिगरी । कहते हैं, सारे संसार की उबलती हुई झीलों में यह सबसे बड़ी है । इसका निर्माण न्यूजीलैंड के इस समय के लोगों की याद में हुआ था । सन् १८८६ ईस्वी में उबलते पानी की डेगची के ढक्कन के सदृश कोई ३॥ एकड़ भूमि एक दिन एकाएक उड़ी और उसकी जगह यह झील बन गई । सन् १८८६ में उस दिन की घटना पर न्यूजीलैंड निवासियों ने एक छोटी सी पुस्तिका ही लिख डाली है । उसके कुछ संक्षिप्त उदाहरण देना यहाँ मनोरंजक होगा ।

१० जून सन् १८८६ को न्यूजीलैंड के उत्तरी द्वीप में टारावेरा (Tarawera) नामक पहाड़ अकस्मात् उभड़ गया और एक अत्यन्त भयानक ज्वालामुखी में परिणत हो गया । न्यूजीलैंड के इतिहास में शायद इससे अधिक विचित्र कोई घटना नहीं हुई । संसार के इतिहास में भी ऐसी घटनाएँ कम हुई हैं । उस समय के असिस्टेंट सरवेयर-जनरल श्री एस० परसी स्मिथ का अनुमान है कि टारावेरा के इस भूकम्प और ज्वालामुखी विस्फोट से लगभग १८५० वर्ग मील की जमीन में उथल-पुथल मची और लगभग ५७०० वर्ग मील के क्षेत्र में इस विस्फोट से उड़ी हुई धूल पायी गयी । यह सौभाग्य की बात है कि इस विस्फोट से जो भीषण क्षति हुई वह कुछ मीलों तक ही सीमित रही ।

इस भूकम्प के समय दबी हुई भाफ और उबलता हुआ पानी इतनी जोर से निकला कि

चारों ओर मीलों तक सारी पृथ्वी हिल उठी। पृथ्वी के गर्भ म जो गर्जन-तर्जन हुआ उससे लोगों के दिल में एक विचित्र भय छा गया। टे अरीकी (Te Ariki) और मौरा (Moura) नामक गाँव अपने निवासियों और मकानों सहित पृथ्वी के गर्भ में विलीन हो गये। टोकोनिहो (Tokoniho) और वैटंगी (Waitangi) नामक गाँवों में जान और माल का इतना भारी नुकसान हुआ जो न्यूजीलैंड के इतिहास में अपूर्व है। टारावेरा पहाड़ से लगी हुई रोटोमहना (Rotomahana) नामक झील में उबलते हुए पानी के इतने झरने चारों ओर से फूट पड़े कि झील के पानी का तापमान सैकड़ों डिग्री बढ़ गया। इस पहाड़ के आसपास उबलते हुए पानी के कई झरने फूटे। इनमें गरम भाफ के बादल उमड़ पड़े। उबलते हुए पानी के गड्ढों में बड़ी भयानक आवाजों के साथ पानी उछल-उछल कर प्रलय का स्वाँग रचने लगा। कई जगह पृथ्वी में भयानक दरारें फट गयीं जिनमें से अत्यन्त उष्ण भाफ इतने ज़ोर से निकलने लगी कि उसकी आवाज से प्राणिमात्र घबरा गये। कानों के परदे फाड़ देने वाली थी यह आवाज। गरम पानी के झरनों की तरह गरम कीचड़ के झरने (geysers) जहाँ-तहाँ निकल पड़े। उनमें उबलता हुआ कीचड़ इतनी जोर से ऊपर की ओर उठा मानों कोई दानव पृथ्वी के गर्भ में बैठ लम्बी-लम्बी साँस ले रहा हो। एक नियमित रूप से यह उबलता हुआ कीचड़ ऊपर नीचे आता था और बीच-बीच में हवा के बुदबुदे फूटकर यही स्मरण दिलाते थे कि कोई दानव साँस ले रहा है। कई स्थानों में ये कीचड़ के झरने छोटे ज्वालामुखी की तरह दिखायी पड़ते थे। कई जगह गंधक के झरने बह रहे थे। समस्त वातावरण भाफ से आच्छादित था।

यह भूकम्प जितना आश्चर्यजनक था उससे कहीं आश्चर्यजनक तो यह बात थी कि लोगों को इस भूकम्प की स्वप्न में भी आशंका न थी। किसी भी प्रकार की चेतावनी लोगों को नहीं मिली। १० जून १८८६ की रात को जब यह भयंकर घटना घटी, टारावेरा पहाड़ की तराई में अरीकी गाँव के ५२ माओरी ठीक उसी तरह सोये जैसे वे और उनके पूर्वज सैकड़ों बरसों से बिना किसी आशंका के सोते थे। माओरी लोगों का दृढ़ विश्वास है कि जीवन का पहला नियम है, कल की चिन्ता न करना और यही सब दर्शनों का मूल-मंत्र है। उन अभागे माओरियों को क्या पता था कि उस रात का अन्त होने के पहले ही वे सब घर-बार के ३० फुट नीचे जमीन में गड़ जावेंगे।

टारावेरा पहाड़ से कुछ दूर रोटारुआ (Rotarua) नामक गरम पानी के झरनों का एक बड़ा इलाका है। इस इलाके में वाइरोआ (Wairoa) नामक एक गाँव था जो १८८६ के भूकम्प के पहले बहुत रमणीय था। रोटारुआ देखने के लिए आने वाले हजारों दर्शक

इस गाँव में ठहरते थे। वाइरोआ में कई होटलें थीं और यूरोपियन बस्ती भी। इस गाँव में गिरजाघर, स्कूल आदि भी थे। मुख्यतः वाइरोआ यात्रिओं और दर्शकों का गाँव था। ९ जून १८८६ को रात को रोटारुआ और वाइरोआ के ९१ निवासी सदा की तरह बिल्कुल निश्चिन्त होकर सोये। रात में लगभग १॥ बजे अकस्मात् भूकम्प के कारण लोग जाग उठे। भूकम्प के साथ इतनी जोर की आवाज भी हुई कि लोग घबड़ाकर जल्दी-जल्दी कपड़े पहिन कर यहाँ-वहाँ भागकर देखने लगे कि हुआ क्या। लोगों का कहना है १½ - २ बजे के बीच टारावेरा पहाड़ के ऊपर घोर काले बादल एकत्र हुए। ये बादल बड़ी प्रबल विद्युत् शक्ति से संचारित थे। उसी समय पहाड़ की तीनों चोटियों पर अग्नि की ज्वाला-सी दिखायी दीं और एक प्रलयंकारी भूकम्प से भूमण्डल डोल उठा। उस प्रलय के बाद सुबह तक प्रत्येक दस मिनिट में भूकम्प होता रहा।

वाइरोआ के निवासी इस प्रलय से घबड़ाकर टारावेरा को अच्छी तरह देखने के लिये मू (Mu) नामक ऊँची पहाड़ी पर चढ़ गये। वहाँ से उन्होंने देखा कि टारावेरा के ऊपर के काले बादल लगातार उठते गये और चारों ओर फैलते गये। टारावेरा की चोटियों पर बड़ी प्रबल बिजली का प्रकाश नाचने लगा। आग के गोले पहाड़ की चोटियों से गिरते और चारों ओर फूटकर फैल जाते। रंगीन चमकीली फुलझड़ी की तरह ये आग की गोलियाँ एक कतार बनाकर बिखरती जातीं और दूर तक दौड़तीं। भागते हुए साँपों की तरह ये आग की कतारें मालूम पड़तीं। रक्त की तरह लाल जीभें एकाएक घोर अन्धकार में से निकलतीं और आकाश का मुख चूमकर विलीन हो जातीं। विद्युत् के इस अनोखे खेल के अलावा ज्वालामुखी की तीव्र लपटें बीच-बीच में दिखायी देतीं और अग्नि की तरह लाल पत्थर और लावा पहाड़ की चोटियों से नीचे आता दिखायी दिया।

आकलैंड में जो इस स्थान से १७१ मील दूर है दो बजे रात से चार बजे सुबह तक तोपों की गर्जना जैसी आवाजें सुनायी दीं जिससे लोग घबड़ाकर जाग उठे। बिजली की लपटें भी आकलैंड में दिखायी दीं। अनुमान लगाया गया है कि इतनी दूर तक लपटें दिखायी देने के लिये ये लपटें पहाड़ से छै या आठ मील तक ऊँची रही होंगीं।

इस भूकम्प से वातावरण में ऐसी खलबली मची कि एक कोने से बड़ी ठंडी हवा उठी और वाइरोआ के तरफ चलकर उसने प्रचंड आँधी का रूप धारण किया। इस तूफान से बड़े-छोटे वृक्ष उखड़-उखड़ कर गिरने लगे। टिकीटाऊ बुश (Tikitau Bush) नामक झाड़ी में से जब यह प्रचन्ड आँधी पार हुई तो जड़-समेत सारे वृक्ष उखड़ गये। इस आँधी के बाद जहरीली गैसों से सारा वातावरण सन गया। लावा की राख के साथ दूर-दूर तक मैं

कड़वी और जहरीली गैसें जा पहुँची ।

वाइरोआ और रोटारुआ के निवासियों की क्या हालत हुई यह इसी से पता चलता है कि १४७ माओरी और ६ यूरोपियन मर गये । भूकम्प से मकान हिल कर गिर पड़े । औरतें और बच्चे, जवान और बूढ़े सभी मकानों के गिरने से दबकर मरने लगे । लोग रास्तों में दौड़कर चिल्लाने लगे कि कयामत का दिन (Day of Judgment) आ गया ।

दूसरे दिन सुबह आकलैंड से जहाजें आयीं और लोगों की मदद की गयी । कई दलों में लोग चारों तरफ गये और इस भयंकर विस्फोट की करामात देखकर दंग रह गये । कितनी हानि हुई इस विस्फोट से और कैसी अकस्मात् थी यह घटना । आज तक दर्शकों को यह स्थान बतलाया जाता है । इस घटना का इतिहास उनको बताया जाता है और विस्फोट के पहले तथा बाद के कई चित्र दिखाये जाते हैं जिनसे यह मालूम होता है कि यह विस्फोट अपने ढंग की एक ही घटना थी ।

इस उबलती झील को देखकर जब हम सड़क पर पहुँचे तब लोरिया डेनड्रान (Loria Dendron) नामक एक और विचित्र वृक्ष को देखा । यह वृक्ष लगाये जाने के कोई पचास वर्ष बाद फूलता है और इसके फूल होते हैं गुलाबी रंग के झुक्कों में ।

शाम को होटल पहुँचते-पहुँचते छै बज गये ।

१६

ता० १९ के प्रातःकाल हम लोग 'पैराडाइज वैली' नामक स्थान को गये। कोई खास बात न होते हुए भी यह एक रमणीय स्थान था। चारों ओर छोटी-छोटी हरी-भरी तथा पुष्पों से युक्त पहाड़ियाँ थीं। इन्हीं पहाड़ियों के एक झरने को बाँध कई कुण्ड बनाये गये थे जिनमें अगणित मछलियाँ थीं। इन कुण्डों के चारों ओर अनेकानेक प्रकार के वृक्ष लगाये गये थे। इस सारी पैराडाइज्ड वैली का निर्माण एक कुटुम्ब ने किया था। यह इसकी सबसे बड़ी विशेषता थी। कुटुम्ब का कर्ता एक गोरा था और इसकी पत्नी माओरी। जब हमें ये महाशय इस वैली को दिखा रहे थे तब उन्होंने यह कहा कि न्यूजीलैंड में पैदा होने वाले प्रायः सभी प्रकार के वृक्ष और लताओं को यहाँ लगाने का प्रयत्न किया गया है। इन्होंने इन वृक्षों और पत्तियों में सैकड़ों के नाम बताये। जान पड़ता था जैसे ये महाशय न्यूजीलैंड की उद्‌भिज सृष्टि के चलते-फिरते विश्वकोश हों। कुंडों की इन मछलियों को चुगाया भी गया। जब इन्हें चारा डाला जाता, किस प्रकार लपक-लपक तथा पैंतरे बदल-बदल कर ये मछलियाँ उस चारे को लीलतीं। गंगा, यमुना, नर्मदा आदि अनेक नदियों में मैंने इस प्रकार मछलियों को कई बार चुगाया था। जब मुझे वे दृश्य याद आये तब उन्हीं के साथ एक बात और स्मरण आयी। एक जमाना था जब कागज में लाल चन्दन से रामनाम लिख-लिख उन कागजों के छोटे-छोटे टुकड़ों को आटे की गोलियों में रख-रख उन आटे की गोलियों को मछलियों को खिलाया जाता था। रामनाम के स्मरण तथा रामचरित्र की याद के लिए यह एक साधन बनाना चाहे उपयुक्त कहा जा सके पर रामनाम के कागजों से युक्त ये गोलियाँ मछलियों का उद्धार करने में समर्थ होंगी और इससे उन मछली चुगाने वालों को कोई पुण्य मिलता होगा, इससे अधिक अन्ध विश्वास और मूर्खता की शायद ही कोई बात हो। इस प्रथा का अन्त तब हुआ जब कहा गया कि इस प्रकार कागज से युक्त आटे की गोली खाने से मछलियाँ मर जाती हैं। फिर भगवद् भक्त भला ऐसे हत्या काण्ड में कैसे प्रवृत्त होते ?

पैराडाइज वैली से बिदा होते-होते एक कारुणिक दृश्य उपस्थित हो गया; यह तब जब पैराडाइज वैली की स्वामिनी मावरी महिला ने अपने उस तरुण पुत्र का चित्र दिखाया जिसकी मृत्यु गत युद्ध में लड़ते-लड़ते हुई थी। पति-पत्नी दोनों ने यद्यपि बड़े गर्व से अपने पुत्र की वीरगति का उल्लेख किया तथापि उसमें करुणा का कितना मिश्रण था यह तब प्रकट हुआ जब इस वीर माता ने भावी युद्धों की समाप्ति हो संसार में शांति रहना कितना आवश्यक है इसका जिक्र किया। जिन्होंने अपना कुछ खोया है और ऐसा अमूल्य धन जैसा इस दम्पति ने खोया था उनसे युद्ध और शांति की बात करने पर युद्ध और शांति का सच्चा रहस्य ज्ञात होता है; राजनैतिक नेताओं के भाषणों एवं वक्तव्यों से नहीं।

पैराडाइज वैली से लौट लंच खा हम "वाइट मो" गुफाएँ (Waitomo Caves) देखने रवाना हुए। कोई सौ मील की यात्रा के पश्चात् जब हम वाइटमो गुफाओं के निकट की होटल में पहुँचे तब संध्या के भोजन का समय हो रहा था। भोजनोपरान्त साढ़े सात बजे हम इन गुफाओं को देखने जाने वाले थे।

२०

अब तक के देखे हुए सारे दृश्यों में वाइटामो गुफाएँ और इनमें ग्लोवर्म नामक कीड़ों की लीला सबसे अद्भुत दृश्य था। न्यूजीलैंड को छोड़ दुनिया में कहीं ऐसा दृश्य नहीं है। वाइटामो (Waitamo) माओरी भाषा का शब्द है जिसका मतलब है "ऐसी जगह जहाँ पानी गढ़े में घुसता है।" इन गुफाओं के नीचे से एक नदी बहती है इसलिये इनका नाम वाइटामो पड़ा। ये गुफाएँ न्यूजीलैंड के उत्तरी द्वीप में पश्चिमी किनारे पर हैं। १९वीं शताब्दी के अन्त तक इन गुफाओं के आसपास की भूमि "राजा की भूमि" कहलाती थी। पोटाटौ टे व्हेरोव्हेरो (Patatau te wherewhero) नामक राजा और उसके वंशजों का इस भूमि पर पूर्ण स्वत्व था। यह वर्जित भूमि थी और कोई भी यूरोपियन वहाँ जाकर जिन्दा नहीं लौट सकता था।

सन् १८८७ में फ्रेड मेस (Fred Mace) नामक एक युवक एक माओरी के साथ इस रहस्यमयी पाताल भूमि में घुसा। उस समय डरते-डरते दोनों व्यक्ति बत्तियों के प्रकाश के सहारे गुफाओं में पहुँचे। बाद में कई बार दर्शकों की टुकड़ियों के साथ ये लोग वहाँ गये। अगले २५ वर्षों में आरानुई (Aranui) और रुआकुरी (Ruakuri) नामक दो नवीन गुफाएँ भी उसी भूमि में पायी गयीं। दर्शकों का आवागमन बढ़ने पर इस शताब्दी के प्रारम्भ में ही न्यूजीलैंड सरकार के टूरिस्ट डिपार्टमेंट की ओर से वाइटामो में ठहरने-खाने की भी व्यवस्था कर दी गयी। बग्घियों की जगह मोटर का प्रबन्ध भी किया गया। अब तो ये गुफाएँ सारे संसार में अपनी अद्वितीय शोभा के लिये प्रसिद्ध हैं।

चूने की खदानों और गुफाओं में वाइटामो का नाम संसार में अग्रगण्य है। यों तो संसार में जहाँ-कहीं चूने की खानें हैं वहाँ Stalactites और Stalagmiles, तथा धरातल में छिपे हुए तालाब और नहरें हैं जो इन खानों की शोभा बढ़ाती हैं। लेकिन वाइटामो में प्राकृतिक सौंदर्य और विचित्रता की पराकाष्ठा है। सबसे आकर्षक और अनोखी बात वाइटामो में है "जुगनुओं की खोह" (Glowworm Grotta)। स्वाभाविक

रूप से सुन्दर देश में यह जुगनुओं की खोह अत्यन्त चित्ताकर्षक स्थान है। वास्तव में यह अपने ढंग का सारे संसार में एक ही स्थान है। इसकी प्रशंसा में दर्शकों के उद्‌गार सर्वथा उचित हैं। इन गुफाओं का वास्तविक सौंदर्य न तो आज तक किसी कैमरा में आ सका है न किसी वर्णन में। न किसी कलाकार की तूलिका उसे पूर्ण रूप से व्यक्त कर सकी है और न किसी लेखक की लेखनी। स्वयं देखने के बाद ही इन गुफाओं का चित्ताकर्षक अनोखा सौंदर्य हृदयंगम किया जा सकता है।

"जुगनुओं की खोह" का अनोखा सौंदर्य तुलना के परे है। लेकिन यह खोह न्यूजीलैंड के अनेक प्राकृतिक सौन्दर्यों में से केवल एक है। न्यूजीलैंड का सार्वभौमिक प्राकृतिक सौन्दर्य अनोखी और आकस्मिक वस्तुओं के कारण कई गुना बढ़ जाता है। "जुगनुओं की खोह" सभी दर्शकों को प्रभावित करती है। गुफा के अन्दर दूर तक गाइड के साथ पैदल जाने के बाद नाव में जाना पड़ता है। यहाँ बिल्कुल सन्नाटा छाया रहता है, केवल टपकती हुई बूंदों की ध्वनि बीच-बीच में सुनायी पड़ती है। दर्शक के चारों तरफ घोर अन्धकार को जाज्वल्यमान करनेवाले करोड़ों जुगनू आसमान में छाये रहते हैं।

हमारे ऊपर भी इन गुफाओं और जुगनुओं की खोह का कम प्रभाव नहीं पड़ा।

गुफाओं में घूमते हुये हमें ऐसा जान पड़ा जैसे कोई स्वप्न देख रहे हों और यह स्वप्न देखते-देखते जब हम नाव पर बैठ ग्लोवर्म से भरे हुए स्थान को देखने अँधेरा कर बिना एक शब्द भी बोले रवाना हुए तब तो इस स्वप्न की गहरी से गहरी स्थिति थी। अँधेरा कर चुपचाप इस प्रकार इस दृश्य को देखने का कारण यह था कि उजेला और शोरगुल होने पर ग्लोवर्म अन्तर्धान हो जाते हैं, यह कहा गया था।

नदी में नाव पर बैठे हुए हम सब चुपचाप ऊपर की ओर देख रहे थे। ऊपर नीली झाँई लिये हुए चमकीले ग्लोवर्म नीलाकाश में चमकते हुए तारों के पुंजों के समान थे; वरन् उनसे भी कहीं घने। अथवा अलग-अलग रहते हुए भी इन ग्लोवर्म के गुच्छों के गुच्छे ऊपर इस प्रकार जड़े से थे मानों नीले रंग की झाँई लिये हुए वनस्पति हीरों के नगों के पंजों के पुंज हों। या ये ग्लोवर्म उन जुगनुओं के सदृश दिख पड़ते थे जिनकी संख्या लाखों नहीं करोड़ों हो और जिनका रह-रह कर चमकना और बुझना न चलता हो, बल्कि जिनकी चमक स्थिर और स्थायी हो गयी हो।

जब हम लौटकर नाव से उतरे तब हमारे एक साथी ने कहा-'राजनैतिक व्यक्ति कदाचित् ऐसे स्थानों पर चुप रह सकते हैं' और जब हमारे इस साथी का यह वाक्य समाप्त हुआ तब सब लोग ठठाकर हँस पड़े। हमारी हँसी का शब्द ग्लोवर्म तक पहुँचा होगा और

वे अन्तर्धान हुए होंगे या नहीं यह तो हम न देख सके, पर इस अट्टहास से हमारा स्वप्न भंग अवश्य हो गया और हम फिर से जागृत अवस्था में आ गये।

ग्लोवर्म के इस दृश्य का हम पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि एक दिन भारतीय प्रतिनिधि मंडल के एक सदस्य मेरे साथी श्री वेंकटरमन ने अपने एक भाषण में भी इसका जिक्र कर डाला और उन्होंने कहा कि हमें अपने कामों में वैसे प्रकाश की आवश्यकता है जैसा ग्लोवर्म का प्रकाश था जिसमें गरमी नहीं थी, पर द्युति थी।

२१

ता० २१ के प्रातःकाल कोई खास बात नहीं हुई। आज दिन भर आराम-सा ही किया गया। तीसरे पहर चार बजे हम लोग होटल से रवाना हुए और संध्या को भोजन के पूर्व ६ बजे न्यूप्लीमथ नामक नगर को पहुँच गये। न्यूप्लीमथ के मेयर ने होटल के द्वार पर हमारा स्वागत किया।

हैमल्टीन से कुछ बड़ा वैसा ही नगर; वैसे ही मकान और वैसी ही सड़कें। वैसा ही बाजार, वैसी ही होटलें, वैसे ही सिनेमाघर। यहाँ कोई नयी बात दिखाने के लिये हम नहीं लाये गये थे, पर इसलिये आये थे कि हमारे दौरे के प्रधान साथी न्यूजीलैंड की धारा सभा के सदस्य श्री एडरमैन यहीं के रहने वाले थे और आकलैंड तथा वैलिंगटन के रास्ते में न्यू प्लीमथ पड़ता था।

जिस दिन हम वहाँ पहुँचे उस दिन शाम को कुछ नहीं हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल न्यूप्लीमथ के मेयर द्वारा हमारा स्वागत किया गया। उसके बाद लंच खाकर हमारे कुछ साथी घूमने-घामने गये पर मैंने आज दिन भर लिखने-पढ़ने का कुछ काम किया। मैं तो शाम को ही अपने कमरे से निकला जब हम लोगों को मि० एडरमैन द्वारा दी गयी एक पार्टी में जाना था।

बातों ही बातों में जब मैंने श्री एडरमैन को भारत आने के लिये कहा तब उन्होंने जो उत्तर दिया वह उल्लेखनीय है। वे बोले—"मैं बड़ा गरीब आदमी हूँ। अपने देश की धारा सभा के सदस्यता के कारण जो पैसा मुझे मिलता है, उससे सम्मान पूर्वक अपनी गुजर-बसर करता हूँ। भारत आने के लिये मेरे पास पैसा नहीं।"

मि० एडरमैन की यहाँ कितनी इज्जत थी यह हम लोग देख चुके थे और सब लोगों को यह मालूम था कि श्री एडरमैन की जीविका उनकी पार्लिमेंट की सदस्यता के मासिक पारिश्रमिक से चलती है। यह बात उनकी प्रतिष्ठा के बढ़ाने का कारण हुई थी, घटाने का नहीं। लोग यह मानते थे कि श्री एडरमैन और कोई काम न कर उस धन से अपनी

गुजर-बसर करते हुए अपने देश का काम कर एक प्रकार का त्याग कर रहे हैं और जब मैंने यह देखा तब मुझे भारत की परिस्थिति का स्मरण हो आया। हमारे यहाँ इस प्रकार जीविका चलाना प्रतिष्ठा नहीं, अप्रतिष्ठा का कारण होता है। ऐसे व्यक्ति जो सार्वजनिक कार्य अपने निर्वाह के योग्य थोड़ा सा सार्वजनिक धन लेकर करते हैं वे नीची नजर से देखे जाते हैं। उस समय लोग यह तक भूल जाते हैं कि इन व्यक्तियों ने यदि अपना निज का अन्य कोई काम किया होता तो इन्हें जनता के धन से जो कुछ मिलता है उससे कहीं अधिक प्राप्त होता। धारा सभाओं के सदस्यों तक को यह स्वीकार करने में बड़ी कठि-नाई होती है कि उनका गुजर-बसर जो कुछ उन्हें धारा सभा की सदस्यता से मिलता है, उससे चलता है। किसी प्रकार के भी सार्वजनिक धन से गुजर-बसर करना हमारे लिये पाप माना जाता है और ऐसे व्यक्तियों का जहाँ हमें उलटा अधिक सम्मान करना चाहिये, हम उन्हें हेय दृष्टि से देखते हैं। इसका यह अर्थ भी होता है कि हम समाज में समानता लाने के इच्छुक होते हुए भी अभी भी धनवान की ही कद्र करते हैं, निर्धन की नहीं। सच्चे मूल्यों को हम न जाने कब समझ सकेंगे ?

२२

न्यूप्लीमथ से वैलिंगटन अब तक की सारी यात्राओं से लम्बी यात्रा थी। ता० २२ को हम वैलिंगटन पहुँचने वाले थे और हमें २३५ मील सफर करना था। अतः हम प्रातःकाल ९ बजे न्यूप्लीमथ से रवाना हो गये। मार्ग में एक होटल में हमने दोपहर का भोजन किया और बिना किसी विशेष घटना के शाम को ६ बजे वैलिंगटन पहुँचे।

आज दो बड़े कारुणिक दृश्यों को हमें देखना पड़ा--एक हमारे मोटर बस के ड्राइवर और दूसरे हमारे दौरे के प्रबन्धक मि० मिडिल मैस की बिदाई।

हमारे मोटर ड्राइवर की प्रतिष्ठा हम में से किसी से कम नहीं थी। उसका सिगरैट कभी कैनडा, कभी आस्ट्रेलिया, कभी न्यूजीलैंड और कभी भारत तथा अन्य देशों के धारा सभाओं के सदस्य उसी प्रकार जलाते थे जिस प्रकार अपना तथा अपने अन्य साथियों का। हमारा ड्राइवर भी हमारे साथ हमारी टेबिल पर भोजन करता था। वह वैसाही पढ़ा-लिखा, सभ्य और सुसंस्कृत था जैसा हममें से अन्य कोई। उसकी आय भी न्यूजीलैंड के अन्य देशों वाले व्यक्तियों के समान थी याने कोई पाँच सौ पौंड प्रति वर्ष। किसी ने वहाँ कोई पेशा पसन्द किया था और किसी ने कोई। हमारे ड्राइवर ने ड्राइवरी का पेशा पसन्द किया था। सब पढ़े-लिखे थे, सभ्य थे, सुसंस्कृत थे, एक से छोटे-छोटे मकानों में रहते थे, प्रायः एक सी आय वाले थे और कोई , कोई काम करते थे और कोई, कोई। कुछ व्यक्तियों को छोड़ कर, जिनकी संख्या उँगलियों की पोरों पर गिनी जा सकती है, न्यूजीलैंड का शेष समाज सर्वथा वर्गहीन समाज है, सभी को जीवन निर्वाह की वस्तुएँ प्राप्त हैं, अधिकांश को मोटरें तक, और सभी संतुष्ट हैं। न्यूजीलैंड की लगभग २० लाख की आबादी में अस्सी प्रतिशत कुटुम्बों के पास उनके खुद के बड़े अच्छे साफ-सुथरे बिजली की रोशनी तथा फ्लश के पैखानों एवं बन्द स्नानागारों और टैलीफोन से युक्त मकान हैं। २० लाख मानवों के देश में तीन लाख मोटरें हैं। जिसका यह अर्थ हुआ कि नब्बे प्रतिशत कुटुम्बों के पास मोटरें हैं और चूँकि सारी जनता को आवश्यकता की सारी वस्तुएँ प्राप्त

है और वह संतुष्ट है तथा सबका एकसा सम्मान है इसलिये व्यक्तिगत संपत्ति के कारण किसी इक्के-दुक्के के पास अधिक संपत्ति भी है तो उस ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता। एक बार जब मैंने एक महाशय से पूछा कि जिनके पास अधिक धन है उनसे आपको ईर्षा नहीं होती तो उसने उत्तर दिया कि 'मुझे जितना चाहिये वह मेरे पास है अतः यदि किसी के पास अधिक बुद्धि है या अधिक धन है तो जिस प्रकार उसकी बुद्धिमत्ता के कारण मुझे उससे ईर्षा नहीं होती उसी प्रकार अधिक धन के कारण भी नहीं।'

हमारे ड्राइवर को हम सबने मिलकर एक छोटी सी भेंट दी। सबने उससे उसी प्रकार हाथ मिलाया जैसे भाई-भाई से मिलाता है।

दूसरी विदाई श्री मिडिल मैस की थी। कितनी क्रियाशीलता और मृदुता थी इस व्यक्ति में। सबके आराम के लिये स्वयं अत्यधिक परिश्रम करता और इतने पर भी यदि किसी को कुछ भी आवश्यकता होती और वह रात को १२ बजे भी मिडिल मैस के पास जाकर कोई निवेदन करता तो मिडिल मैस उसकी आवश्यकता की पूर्ति के लिये तैयार। और इतने परिश्रम तथा भिन्न-भिन्न लोगों की भिन्न-भिन्न अभिरुचियों की पूर्ति करते हुए भी इन आठ दिनों में भृकुटी चढ़ना तो दूर रहा, ललाट पर सिकुड़न आना भी दूर रहा मि० मिडिलमैस की मुस्कराहट तक का एक क्षण के लिये भी लोप नहीं हुआ था। मैंने अनेक सार्वजनिक आयोजनों के प्रबन्ध केवल देखे ही नहीं, किये भी हैं, त्रिपुरी के कांग्रेस अधिवेशन का मैं स्वागताध्यक्ष ही था, पर किसी आयोजन में भी मैंने मिडिल मैस के सदृश व्यक्ति नहीं देखा। न्यूजीलेंड देश के उत्तर द्वीप का यह दौरा मुझे सदा याद रहेगा। प्राकृतिक दृश्य, माओरी कला, दौरे का सुप्रबन्ध, सभी याद रखने की वस्तु हैं। और एक बात और याद रहेगी। कैनेडा के एक प्रतिनिधि श्री जान्सन का अनेक बार गायन, जिसमें बाद में हम सबने उनका साथ देना भी शुरू कर दिया था।

वैलिंगटन पहुँचते ही ज्योंही हम सेंट जार्ज होटल में ठहरे त्योंही श्री० सन्याल तथा श्रीमती सन्याल पहुँचे और उसी समय वैलिंगटन से लौटने का कार्यक्रम भी तय हुआ, क्योंकि बुकिंग के लिये इसका जल्दी से जल्दी निर्णय होना अत्यावश्यक था, यद्यपि इसमें आगे चलकर अनेक परिवर्तन हुए।

इसके बाद ही हमें कांफरैन्स का सारा कार्यक्रम, अनेक आयोजनों के निमंत्रण पत्र तथा न्यूजीलैंड की बसों, ट्रामों, रेलों, सिनेमाघरों और धारा सभा में जाने के पास प्राप्त हुए। सुना गया कि न्यूजीलैंड सरकार इस प्रकार के यात्रियों के लिये इन सुविधाओं का सदा प्रबन्ध किया करती है। हाँ, हम इन सुविधाओं में से एक के सिवा अन्य का उपयोग
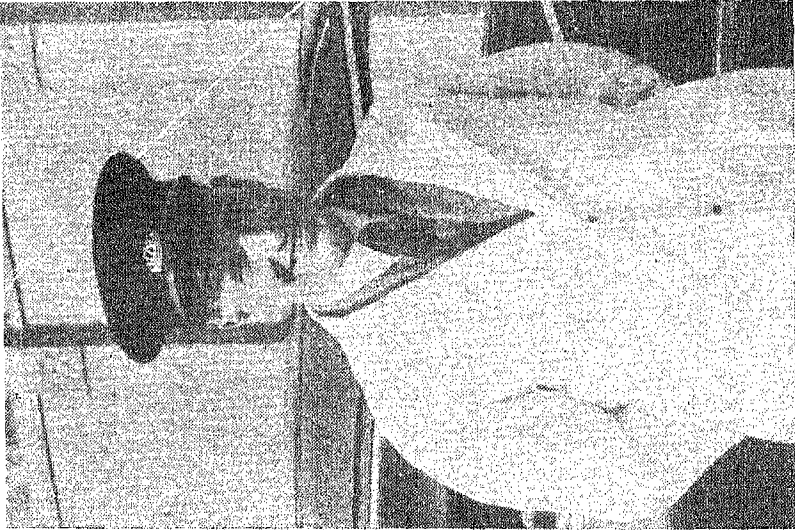
भारतीय प्रतिनिधि मंडल की बस के ड्राइवर श्री नेलसन
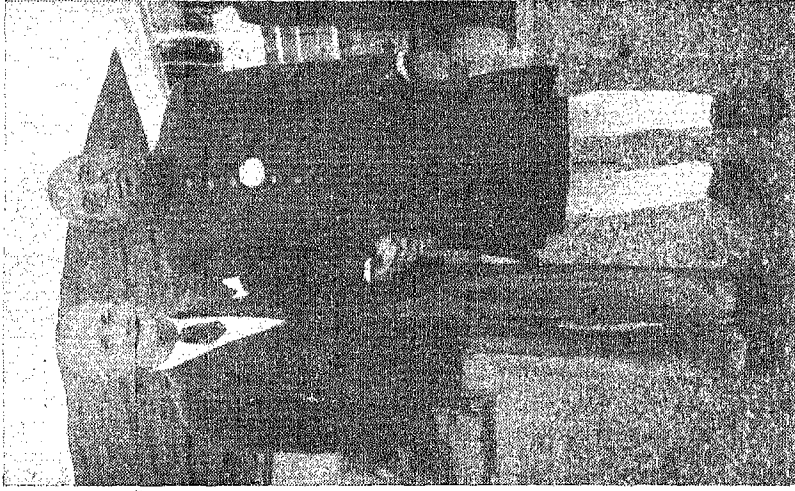
लेखक श्री मिडिलमैस के साथ

श्रीमती सन्याल
न्यूजीलैंड के भारतीय ट्रेड कमिश्नर की पत्नी

अवश्य न कर सके। हर जगह जाने के लिये जब मोटर भी मौजूद थी तब ट्रामों बसों में कौन जाता, रेल में कहीं जाने का अवकाश ही न था, सिनेमा देखने की किसे फुरसत थी। इन पासों में से हमने केवल एक जगह के पास का उपयोग किया वह था न्यूजीलैंड की धारा सभा में जाने का पास और जब हम वहाँ गये तब हमें यह देख कर आश्चर्य हुआ कि हमारे बैठने का प्रबन्ध किसी विजिटर गैलरी में न होकर हाउस के अन्दर स्पीकर की कुर्सी के बगल में कुर्सियाँ रख कर किया गया था।

न्यूजीलैंड का सारा स्वागत, सारा सत्कार, सारी सौजन्यता अद्भुत थी, हर व्यक्ति को गद्-गद् बना देने वाली।

२३

ता० २३ की शाम को ब्राडकास्टिंग स्टेशन जाने के अतिरिक्त अन्य कोई काम न था अतः हम लोग वैलिंगटन घूमे। वैलिंगटन समुद्र के किनारे बसा हुआ होने पर भी पहाड़ियों पर बसा है और भूमध्य रेखा से काफी नीचा होने के कारण बम्बई आदि समुद्र के किनारे के नगरों के सदृश यहाँ सदा पसीना नहीं आया करता। सागर-तट और शैल-शिखर दोनों की हवा का यहाँ संयुक्त आनन्द है। बुरी बात एक ही है कि पवन यहाँ प्रायः बड़ी द्रुत गति से चलती है। उसे पवन न कह कर प्रभंजन कहना अधिक उपयुक्त होगा। इस तेज हवा के कारण कई बार तो ऐसा लगता है कि आदमी हवा में उड़ जायगा। इस वायु के वेग की वजह से वैलिंगटन को अंग्रेजी में 'विंडी वैलिंगटन' अर्थात् पवनप्रवेग वाला पुर कहा करते हैं।

वैलिंगटन भी न्यूजीलैंड के अन्य स्थानों के सदृश खूब फैल कर बसा है। रहने के मकान वैसे ही छोटे-छोटे हैं जैसे, न्यूजीलैंड के अन्य स्थानों के; हाँ, दफ्तर, होटल, सिनेमा और सरकारी इमारतें अवश्य बड़ी हैं।

यह न्यूजीलैंड की राजधानी है। उत्तरी द्वीप के दक्षिण भाग में यह स्थित है। वैलिंगटन न्यूजीलैंड का भौगोलिक केन्द्र है और व्यापार का बहुत बड़ा अड्डा। शहर के पास ही २३ मील लम्बे समुद्री किनारे पर १० डॉक हैं जिनमें बड़े-बड़े जहाज ठहर सकते हैं। बन्दरगाह २०,००० एकड़ भूमि में है। पास ही रेल्वे स्टेशन है और शहर का मुख्य व्यवसाय-केन्द्र, जिसमें कई आलीशान इमारतें हैं। ऊँची पहाड़ियों की तराई में और उसके सामने के लम्बे मैदान में ये सब इमारत बनी हैं मानो पहाड़ी की गोद में वैलिंगटन बसा हुआ है। माउन्ट विक्टोरिया नाम की पहाड़ी चोटी पर एक तरफ यह शहर बसा है, दूसरी ओर इवन्स बे (Evans Bay) नामक खाड़ी है। यह खाड़ी समुद्री हवाई जहाजों (Flying-Boat) का अड्डा है और पास ही रौंगाटई (Rongytoi) नामक हवाई अड्डा है।

वैलिंगटन के अनेक दर्शनीय स्थानों में मुख्य ये हैं—डोमीनियन म्यूजियम और आर्ट गैलरी जिसके अहाते में नेशनल वार मेमोरियल है; गवर्नर जनरल की कोठी; टाउनहाल;

पब्लिक लायब्रेरी। वैलिंगटन के बन्दरगाह के पास ही घनी आबादी का हिस्सा है। इस हिस्से में समुद्री किनारे से लगी हुई एक सुन्दर सड़क है। इस सड़क से आते-जाते समय अत्यन्त रमणीय दृश्य दिखायी देते हैं। पहाड़ी इलाके में होते हुए भी वैलिंगटन के कई हिस्से समतल भूमि में बसे हैं। इनमें सीटाउन (Seatown), मीरामर (Miramar), किलबर्नी (Kilbirnic) और ल्याल बे (Lyall Bay) नामक बस्तियाँ मुख्य हैं।

वैलिंगटन की आबादी १,८०,००० है। राजधानी होने के कारण पार्लमेंट की इमारतें, बड़े-बड़े सरकारी दफ्तर, व्यापार के केन्द्र और अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रधान कार्यालय यहाँ स्थित हैं।

वैलिंगटन के पास ही हटसिटी (Hutt City) नामक बड़ा औद्योगिक केन्द्र एक लम्बी घाटी में हाल ही में बस गया है। इस केन्द्र ने थोड़े समय में ही बड़ी उन्नति कर ली है। न्यूजीलैंड के अत्यन्त आधुनिक शहरों में इसकी गणना होती है। हट सिटी में आधुनिक ढंग के मकान, दूकानें और कारखानें बड़ी तादाद में तैयार हो गये हैं। खेल-कूद और मनोरंजन के कई बड़े केन्द्र भी यहाँ बन गये हैं।

वैलिंगटन बन्दरगाह के पूर्वी किनारे पर ईस्टबोर्न (East bourne) और डेज बे (Day's Bay) नामक दो बड़े लोकप्रिय स्थान हैं जहाँ लोग रहने हैं और छुट्टी मनाने के लिये बड़ी संख्यामें आते हैं। वैलिंगटन के उत्तर में समुद्री किनारे पर कई रमणीय स्थान हैं जहाँ मीलों तक बालू दिखायी देती है। पीकाकरीकी (Paektkariki) रोमाती (Raumati), पैरापैरौमू (Paraparaumu), और प्लिमरटन (Plimmer-ton) नामक स्थान समुद्री किनारे पर रहने के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। इस इलाके में आलीशान बसें और तेज चलनेवाली बिजली की रेलगाड़ियों का समुचित प्रबन्ध है। आवागमन की सुविधा के कारण इस इलाके में बस्ती खूब बढ़ रही है।

वैलिंगटन के एक हिस्से में हमें सड़कों के भारतीय नाम मिले—जैसे-बाम्बे रोड, कैलकटा रोड, बनारस रोड आदि। सड़कों के ये भारतीय नाम देख हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। इसका कारण भी हमें मालूम हो गया। भारत सरकार का एक पेंशनयाफ्ता अँग्रेज अफसर न्यूजीलैंड में आकर बसा था। वैलिंगटन की इस हिस्से की भूमि किसी समय इस अंग्रेज की थी। इसने इसके विभाग कर उन विभागों को भारतीय नाम देकर बेचा। इन विभागों की सड़कों पर अभी भी वही नाम चल रहे हैं।

आज दोपहर और शाम के दोनों भोजन श्री सन्याल के यहाँ हुए। श्रीमती

सन्याल ने स्काच महिला होते हुए तथा कभी भारत न जाने पर भी कितना सुन्दर भारतीय खाना बनाया था। श्री सन्याल तथा श्रीमती सन्याल की खातिरदारी भी अपूर्व थी और न्यूजीलैंड में रहते हुए मुझे मालूम हुआ कि श्रीमती सन्याल तो भारतीय संस्कृति आदि का जनता पर यहाँ प्रभाव डाल ही रही हैं पर श्री सन्याल भी अपने व्यापारी प्रतिनिधि के काम में पीछे नहीं हैं। यदि ऐसे लोग विदेशों में हमारे प्रतिनिधि के रूप में रह सकें तो क्या पूछना।

ब्राडकास्टिंग स्टेशन पर भिन्न-भिन्न प्रतिनिधि मंडलों में से कुछ के नेता कामनवेल्थ पार्लिमेंटरी कांफरेंस के संबन्ध में दो प्रश्नों का उत्तर देने बुलाये गये थे। ये प्रश्न थे—

(क) आज की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में कामनवेल्थ पार्लमेंटरी एसोसियेशन के न्यूजीलैंड अधिवेशन का क्या महत्त्व है ?

(ख) इस अधिवेशन से आपको क्या आशाएँ हैं ?

जिन्हें इन प्रश्नों का उत्तर देने बुलाया गया था उनमें मेरे अतिरिक्त नीचे लिखे सज्जन थे :—

राइट आनरेबुल वाइकाउन्ट एलेक्जेंडर आव् हिल्सबरो, सी० एच० (Right Hon. Viscount Alexander of Hillsborough, C. H.), लेफ्टिनेंट-कर्नल जी० जे० बोडेन, एम० सी०, एम० पी० (Lt. - Col. G. J, Bowden, M. C, M.P.), आनरेबुल पी० एफ० डीसोजा, एल० एल० बी० (Hon. P. F. DeSouza LL. B.), मि. डेनियल जॉनसन एम. एल. ए. (Mr. Daniel Johnson M. L. A.), आनरेबुल दतो निक अहमद बिन हाजी महमूद कामिल डी० के०, सी० बी० ई०, एम० एल० सी० (Hon. Dato Nik Ahmed bin Haji Mahmud Kamil D. K., C. B. E., M. L. C.), सीनेटर आनरेबुल राजपाकसे एल० ए०, के० सी०, एल०-एल० डी० (Senator the Hon. Rajapakse, L. A., K. C., LL. D.) सीनेटर आनरेबुल ए० डबल्यू० रोबक, के० सी० (Senator the Hon. A. W. Raebuck, K. C,) राइट आनरेबुल लार्ड विल्माट, एम० पी० (Right Hon. Lord Wilmot, M. P.)

भारत के प्रतिनिधि मंडल के नेता के रूप में मैंने इन प्रश्नों का निम्नलिखित उत्तर दिया—

(क) युद्ध की विभीषिका मानव-जाति को निगलना चाहती है। सभी राष्ट्र फिर से युद्ध की तैयारी में लग गये हैं और शत्रुता भयानक रूप धारण कर रही है। आक्रमण और जन-संहार की कला में स्पर्धा हो रही है। यह नितान्त आवश्यक है कि प्रजातंत्र में और मानवों की समानता तथा मानव-स्वातंत्र्य में विश्वास रखनेवाले सभी राष्ट्र मिल-जुल कर विचार करें और इस स्वातंत्र्य की रक्षा के उपाय सोचें। इस अधिवेशन में आये हुए विभिन्न पार्लमेंटों के सदस्य विश्व-शांति के लिए प्रचण्ड प्रयत्न करेंगे ही।

भारतवर्ष की इस कॉमनवेल्थ में ही नहीं, समस्त मानव-जाति की कॉमनवैल्थ में अटूट श्रद्धा है। जो राष्ट्र विश्व-शांति के लिए उद्यम कर रहे हैं उन सभी को भारतवर्ष अपना सहयोग दे रहा है। इस अधिवेशन का प्रमुख कार्य प्रजातंत्र के सिद्धांतों की रक्षा के उपाय निकालना होगा और इस महत् कार्य में भारतवर्ष कॉमनवैल्थ का अन्त तक साथ देगा।

(ख) मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि इस अधिवेशन में आये हुए विभिन्न देशों के प्रतिनिधि आपसी समस्याओं पर स्वतंत्र रूप से विचार कर कॉमनवैल्थ के देशों को एकता के सूत्र में बाँधेंगे ताकि कॉमनवैल्थ मानव-जाति के कल्याण का प्रयत्न कर सके। हम जानते हैं कि सफलता के लिए कोई सुगम मार्ग नहीं है। कला, विज्ञान और आर्थिक क्षेत्रों तथा जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में धैर्य और दृढ़ता के साथ परस्पर सहयोग देकर ही कॉमनवैल्थ के देश एक ऐसी शृंखला में बँध जायँगे जिसे कोई भी शक्ति कभी भी न तोड़ सकेगी।

इस उत्तर को जिस ढंग से दिया गया था तथा उत्तर में जो कुछ कहा गया था उस पर न्यूजीलैंड में कम चर्चा नहीं हुई।

आज वैलिंगटन की घटनाओं में एक और घटना हुई जिसका उल्लेख मनोरंजक होगा। यह घटना थी भोजन के संबन्ध में। हर जगह मैं कह दिया करता था कि मैं शाकाहारी हूँ और न माँस खाता, न मछली और न अंडा। वैलिंगटन की होटल में भी मैंने यह कह दिया। पर मेरे इस कथन के पश्चात् भी जब प्लेट में आलू के 'चकतों' के सदृश पर कुछ बैंगनी रंग की एक नीली-नीली चीज आयी और काँटा तथा छुरी उठाकर मैं उसे खाने के लिये उद्यत हुआ तब मेरे साथी श्री० बरुआ ने मुझे यह कह कर रोक दिया कि मेरे सामने जो कुछ रखा है वह सुअर का मांस है। जब मैंने परोसने वाली से पूछा कि मेरे नाहीं कर देने पर भी वह मेरे लिये मांस कैसे लाई तब उसने मुझे एक विलक्षण उत्तर दिया। मांस के लिये मैं अंग्रेजी शब्द 'मीट' का उपयोग किया करता था। वह बोली—'यह 'मीट' कहाँ है, यह तो 'पोर्क' है।' मुझे मालूम हुआ कि मांस के लिये 'मीट' शब्द व्यापक होते हुए भी 'मीट' बहुधा बकरे या भेड़ के मांस के लिये उपयोग में आता है। गोमांस 'बीफ़' और

सुअर का मांस 'पोर्क' इससे पृथक माने जाते हैं। अब मैं और भी सावधान हो गया तथा भोजन के पहले मांसों का ब्योरेवार नाम लेकर हर परोसने वालों को समझाने लगा कि मैं कोई भी मांस, मछली या अंडा नहीं खाता हूँ। मेरे इस कथन पर एक दो बार परोसने वालों ने तो यह तक कह डाला कि यदि मैं यह सब कुछ भी नहीं खाता तो जीता कैसे हूँ ?

भारतवर्ष लौटकर अन्य कुछ अनुभवों के साथ जब मैंने अपना यह अनुभव राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसादजी को बताया तब उन्होंने मुझे अपना एक और मनोरंजक अनुभव कहा। राजेन्द्र बाबू भी शाकाहारी हैं। विदेश में उन्हें एक बार मछली से मिश्रित एक शाकाहारी चीज खाने को दी गयी। वे उसे खाने वाले ही थे कि उनके एक मांसाहारी साथी ने उनसे कहा कि वह उस वस्तु को न खायँ। उसके स्वाद से उन्हें जान पड़ता है कि उसमें मछली है। जब रसोईदार को बुलाकर पूछा गया तब उसने कहा कि उसमें मछली नहीं है, हाँ, मछली का स्वाद मात्र (फ्लेवर) देने के लिये उसे उबालकर उसका थोड़ा सा रसा उसमें मिला दिया गया है।

जिस धार्मिक दृष्टि से इस देश के हम शाकाहारी लोग निरामिष भोजन करते हैं वह विदेशों के लोग समझते ही नहीं अतः इस विषय में बहुत अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है।
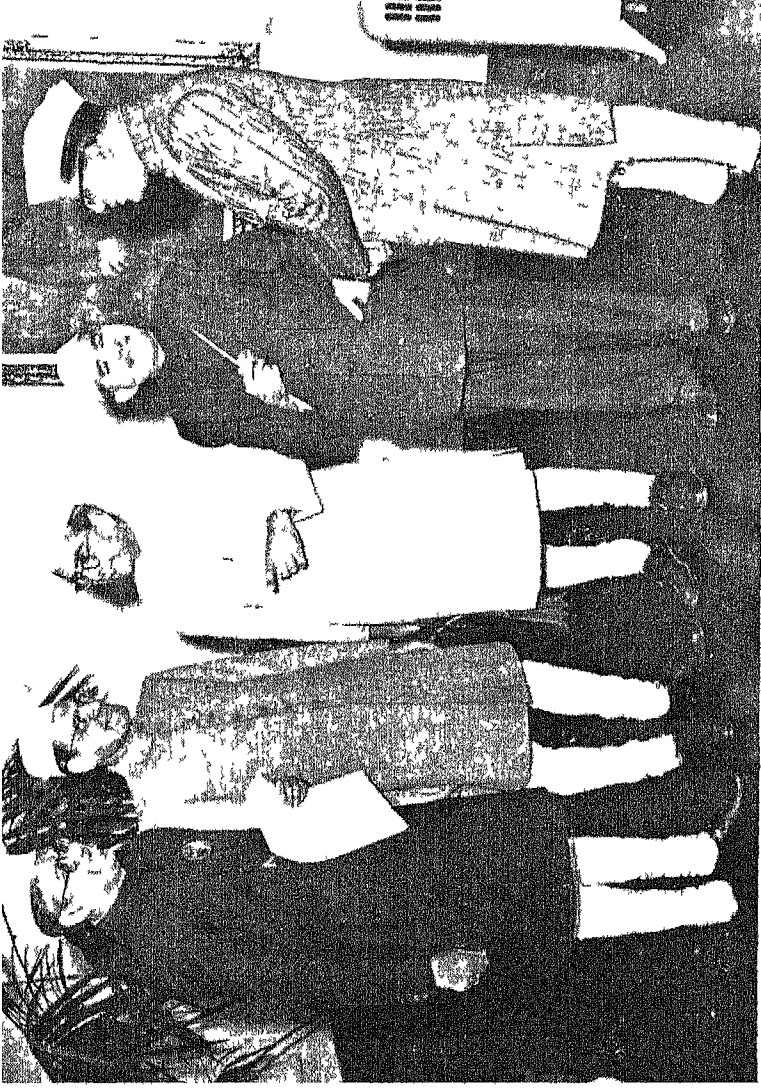
बाईं ओर से — भारतीय प्रतिनिधि मंडल

१. श्री वेंकटरमन २. श्री चमनलाल शाह ३ श्री गोविन्ददास ४. श्री आर. के. सिधवा ५. श्री देवकान्त बरुआ
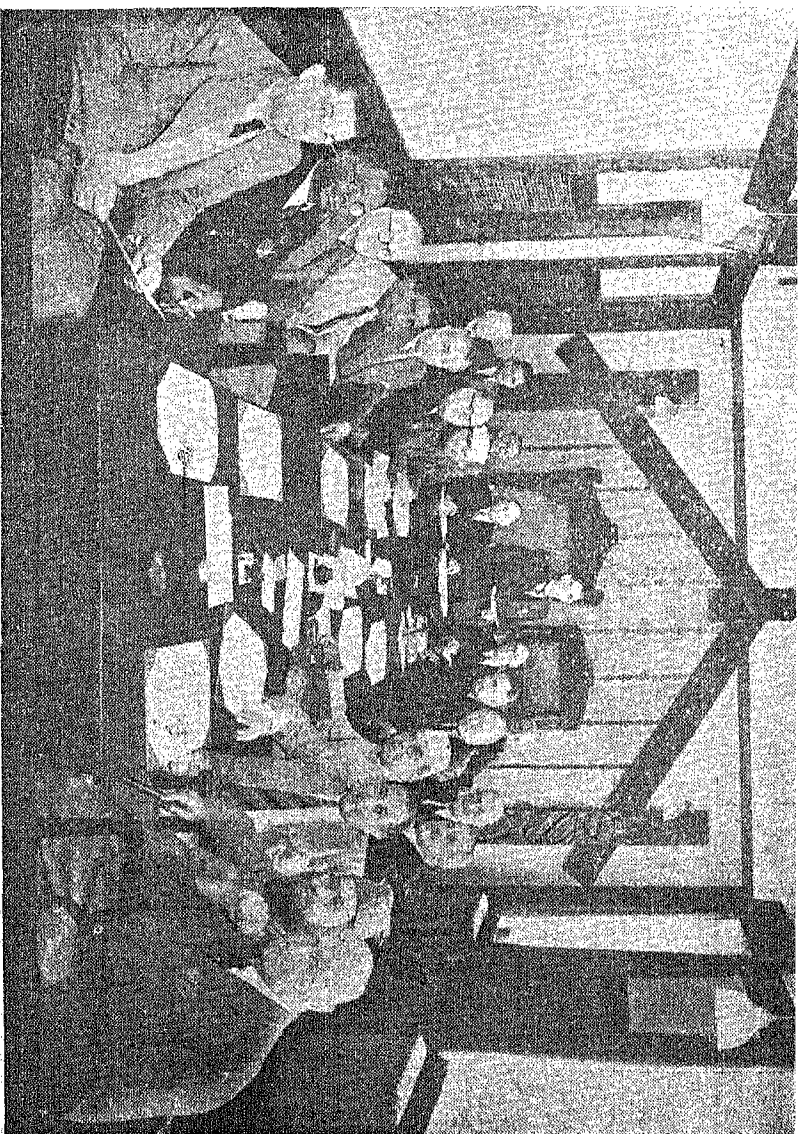
कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी एसोसियेशन की कार्यकारिणी

दाईं ओर से—श्री गोविन्ददास, लार्ड विलमोट और सर हावर्ड डेगविल जो कि कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी एसोसियेशन के प्रधान मंत्री थे
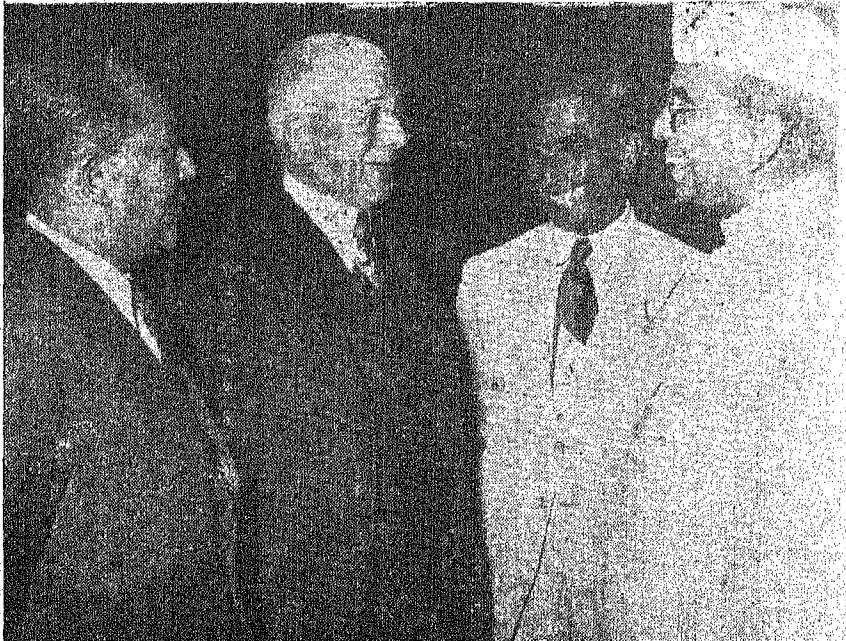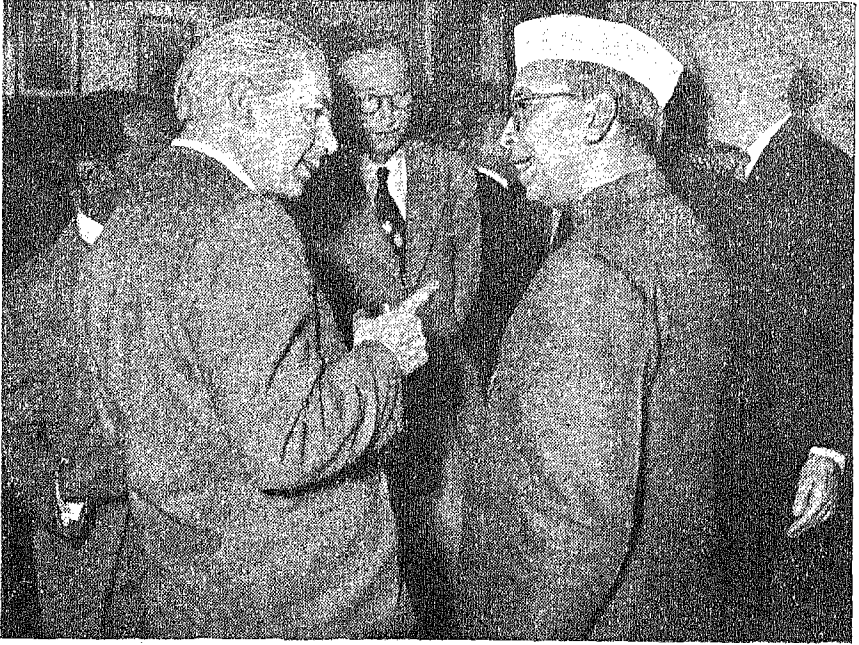
आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि मंडल के नेता माननीय श्री होल्ट के साथ लेखक

बैठे दायें से बायें—कर्नल बाउडेन प्रमुख आस्ट्रेलियन डेलीगेशन, श्री० केरो (हेमिल्टन के मेयर) श्री० गोविन्ददास, (प्रमुख इंडियन डेलीगेशन), श्री० डाइफेनबेकर (प्रमुख, कनेडा डेलीगेशन)

न्यूजीलैंड की पार्लियामेंट के विरोधी दल के उपनेता मिस्टर नैस (मध्य में) व इनके बाईं ओर श्री गोविन्ददास व दाहिनी ओर लार्ड विलमौट

श्री गोविन्ददास और श्री वेंकटरमन न्यूजीलैंड के प्रधान मंत्री राइट आनरेबिल

न्यूज़ीलैंड की धारासभा के अध्यक्ष और उनकी पत्नी के साथ श्री गोविन्ददास

[illegible] भिन्न भिन्न देशों के प्रतिनिधि मंडलों के

२४

ता० २४ को कामनवैल्थ पार्लिमेंटरी कांफरैन्स की प्रथम बैठक थी। यह बैठक यहाँ की आर्ट गैलरी के हाल में रखी गयी थी।

सबसे पहले मैं यहाँ कामनवैल्थ पार्लिमेंटरी एसोसियेशन के सेक्रेटरी जनरल श्री सर हावर्ड डेगविल से मिला। बड़े सज्जन और समझदार आदमी। उन्होंने मुझसे भारतीय प्रतिनिधि-मंडल के कौन-कौन सज्जन किस-किस विषय पर बोलेंगे, यह जानना चाहा और आज मुझे बोलना होगा यह मुझसे कहा। इसके बाद अनेक सदस्यों से मिलना-भेंटना हुआ। बयालीस देशों के अठत्तर प्रतिनिधि उपस्थित थे; अधिकांश गोरे, कुछ गेहुएँ और कुछ एकदम काले। कितनी-कितनी दूर से ये लोग आये थे। पाकिस्तान के प्रतिनिधि मंडल में से आज केवल बंगाल के एक सज्जन थे। शेष कल आने वाले थे। भारतीय प्रतिनिधि मंडल में से चार सदस्य मौजूद थे। श्री सिन्हा आज आने वाले थे। काफी प्रभावोत्पादक दृश्य था, भारतीयों को छोड़ सभी लोग योरपीय पोशाक में थे। पाकिस्तान के प्रतिनिधि के सिर पर जिन्ना-कैप अवश्य थी।

कैनेडा के सीनेटर श्री रूबक की अध्यक्षता में काम आरम्भ हुआ क्योंकि श्री रूबक जनरल कौंसिल (एसोसियेशन की कार्यकारिणी) के अध्यक्ष थे और एसोसियेशन के नियमानुसार उन्हीं की अध्यक्षता में आज की कार्रवाई हो सकती थी। आज की परिषद की कार्रवाई में मुख्य कार्य था दो वर्ष के कार्य की रिपोर्ट की स्वीकृति। रिपोर्ट का समर्थन सब प्रतिनिधि मंडलों के नेताओं ने किया। भारत की ओर से मैंने। परिषद में मेरा यह पहला भाषण था और इस भाषण पर भी मुझे सभी दिशाओं से बधाइयाँ मिलीं।

आज एक बजे न्यूजीलैंड के प्रधान मंत्री मि० हालैंड ने मुझे लंच के लिये बुलाया था। कुछ अन्य महमान भी थे। बड़ी अच्छी तरह लंच हुआ और बड़ी शिष्टता एवं मृदुता से मि० हालैंड ने हम सब के साथ बर्ताव किया।

आज ही शाम को न्यूजीलैंड की धारा सभा के दोनों चेम्बरों के अध्यक्षों की ओर से

हमारे सम्मान में एक पार्टी रखी गयी थी। वैलिंगटन का प्रायः सारा सभ्य समाज इस पार्टी में उपस्थित था।

आज रात को कुछ भारतीय मिले। ये लोग हमारे स्वागत और सहवास के लिये पूरा एक दिन चाहते थे। हमने इन्हें इतवार का समय दिया।

इसके बाद वैलिंगटन के प्रधान पत्र 'ईवनिंग पोस्ट' के संवाददाता श्री एरिक रैम्सडन भेंट करने को आये। इस भेंट का पूरा वृत्त बड़े-बड़े शीर्षकों से दूसरे दिन 'ईवनिंग पोस्ट' में निकला, जिसका सारांश भी नीचे दिया जाता है।

"माओरियों के समानाधिकार की भारतीय नेता द्वारा प्रशंसा"

"न्यूजीलैंड में माओरियों को समानाधिकार प्राप्त है यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। भारतीय दर्शक ने कहा कि उत्तरी द्वीप में वह जहाँ-जहाँ गया यूरोपियन और माओरियों में परस्पर स्नेह और भ्रातृभाव पाया। अगले ५० वर्षों में यह कहना कठिन होगा कि किस न्यूजीलैंडर में माओरी का रक्त है और किस में नहीं ....।

"आज भारत में ब्रिटेन के प्रति कोई शत्रुता का भाव नहीं। हम कई बातों के लिये ब्रिटेन के आभारी हैं। मैं अंग्रेजी सभ्यता को संसार की एक अत्यन्त महान् सभ्यता मानता हूँ। ब्रिटेन और भारत की इस मैत्री के लिये हम महात्मा गाँधी के सदा आभारी रहेंगे ....।"

२५

सोम० २९ नवम्बर को कामनवैल्थ पार्लिमेंटरी एसोसियेशन की जनरल कौंसिल अर्थात् कार्यकारिणी की बैठक थी। भारत से इसके दो सदस्य थे--श्री० सिंधवा और मैं। श्री० सिंधवा कल आ गये थे अतः हम दोनों इस बैठक में सम्मिलित हुए। इस बैठक में आगे के कार्य की रूप-रेखा, बजट, कार्यकारिणी की आगामी बैठक का स्थान तथा तिथियाँ एवं परिषद के अगले अधिवेशन के स्थान का निर्णय मुख्य विषय थे। परिषद के आगामी अधिवेशन के स्थान का निर्णय कार्यकारिणी के अगले अधिवेशन पर छोड़ शेष बातें शीघ्र ही निपट गयीं। कार्यकारिणी की अगली बैठक के लिये सीलोन का निमंत्रण स्वीकृत हुआ और तिथि निश्चित हुई सन् ५२ की जनवरी का प्रथम सप्ताह।

आज कार्य अधिक न था, इसलिये हम यहाँ की सरकार के प्रजा हितैषी कार्यों के संबन्ध में कुछ जानकारी प्राप्त करने के लिये यहाँ के सेक्रेटेरियट में गये। सरकार की प्रजा हितैषी योजनाओं में हम पर दो योजनाओं का बड़ा प्रभाव पड़ा। ये योजनाएँ थीं -- (१) सामाजिक-सुरक्षा योजना और (२) गृह-योजना। इन दोनों योजनाओं का यहाँ कुछ ब्यौरे वार वर्णन अनुपयुक्त न होगा।

सामाजिक-सुरक्षा योजना :--- सामाजिक-सुरक्षा (Social Security) बीसवीं सदी का सबसे प्रमुख नारा है। सभी प्रजातंत्र देश सामाजिक सुरक्षा का आदर्श सामने रख उसके अनुसार कार्य कर रहे हैं। न्यूजीलैंड का स्थान इन सभी देशों में अग्रगण्य है क्योंकि जन्म से मरण तक प्रत्येक स्थिति के लिये न्यूजीलैंड ने अपने नागरिकों के लिये सामाजिक सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की है। यह व्यवस्था इस प्रकार है :---

(१) सबसे पहले जननी को सूतिका-गृह (MaternityBenefit) **संबन्धी सहायता**--यह सन् १९३९ में प्रारम्भ किया गया। इस योजना के द्वारा यह प्रबन्ध है कि कोई भी गर्भवती स्त्री बच्चा जनने के दिन से १४ दिन तक किसी भी सरकारी अस्पताल में निःशुल्क रह सकती है। गैर-सरकारी सूतिका-गृह सरकारी लाइसेंस से चलते हैं। कोई

गर्भवती स्त्री सरकारी सूतिका-गृह में न जा गैर-सरकारी सूतिका-गृह में जाना चाहे तो उसको पूर्ण स्वतंत्रता है। गैरसरकारी सूतिका-गृहों का शुल्क सरकार निश्चय करती है और सामाजिक-सुरक्षा कोष (Social Security Fund) से वह दिया जाता है।

(२) **पारिवारिक सहायता** (Family Benefit)—बच्चा पैदा होने के बाद उसका पालन-पोषण आवश्यक है। १६ वर्ष की आयु तक के प्रत्येक बच्चे को १० शिलिंग प्रति सप्ताह दिया जाता है। स्कूल या कालेज में शिक्षा पाने वाले बालकों को यह सहायता १८ वर्ष की आयु तक दी जाती है। यदि वह रकम बच्चों के लिये न खर्च की जावे तो सोशल सिक्यूरिटी कमीशन को यह अधिकार है कि वह सहायता बन्द कर दे। पोस्ट आफिस सेविंग्ज बैंक के जरिये यह रकम वसूल की जा सकती है।

(३) **बेकारी में सहायता** (Unemployment Benefit)—१६ वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक व्यक्ति को बेकारी में सहायता मिलती है। बेकार लोगों की एक सूची तैयार की जाती है और सरकार उन्हें काम देने का प्रबन्ध करती है। प्रबन्ध न कर सकी या कर्मचारी काम करने में असमर्थ पाया गया तो उसे सहायता दी जाती है। १६ से २० वर्ष की आयु के लोगों को १ पौंड प्रति सप्ताह और शेष लोगों को २ पौंड १० शिलिंग प्रति सप्ताह दिया जाता है। यदि पत्नी पति पर निर्भर है तो उसे भी २ पौंड १० शिलिंग मिलता है। यदि पति या पत्नी कुछ कमाते हों तो उचित मात्रा में भत्ते की रकम काट ली जाती है। जायदाद या अन्य आमदनी होने पर भी सहायता की रकम में कटौती होती है। बिना उचित कारण के कोई व्यक्ति काम न करे या बदचलनी के सबब अपना काम खो दे तो सहायता बन्द कर दी जाती है। यह स्मरणीय बात है कि अभी न्यूजीलैंड में बेकारी है ही नहीं, करीब ३० हजार रिक्त स्थान हैं क्योंकि कर्मचारियों की कमी है।

(४) **वृद्धावस्था में सहायता**—६० वर्ष की आयु तक तो बेकारी में सहायता मिलती है, उसके बाद वृद्धावस्था की सहायता मृत्यु तक दी जाती है। यह सहायता २ पौंड १० शिलिंग प्रति सप्ताह के हिसाब से दी जाती है। यदि पत्नी पति पर निर्भर हो तो उसे भी इसी हिसाब से सहायता मिलती है। पहले माओरियों को वृद्धावस्था की सहायता नहीं मिलती थी लेकिन अब उन्हें भी मिलने लगी है।

(५) **विधवाओं को सहायता**—मानव-जीवन दुर्घटनाओं से पूर्ण है। किसी भी घर में सबसे बड़ी दुर्घटना किसी स्त्री का विधवा होना है। जब रोटी कमाने वाला चल बसे तो घर का भार, बच्चों का पालन-पोषण, विधवा पर आता है। न्यूजीलैंड में विधवा को

१३० पौंड सालाना, विधवा माता को ७० पौंड सालाना और प्रति बच्चे के लिये २६ पौंड सालाना सहायता मिलती है।

(६) निराश्रय बच्चों की सहायता -- सरकारी व्यवस्था के अनुसार निराश्रित बच्चों की देखभाल की जाती है। यदि निराश्रित बच्चे दूसरों के यहाँ रहें तो ६५ पौंड सालाना के हिसाब से उन्हें बच्चे के पालन-पोषण के लिये सहायता दी जाती है। यह सहायता बच्चे को १६ या १८ वर्ष की आयु तक दी जाती है।

(७) बीमारी में सहायता--रोटी कमाने वाले की मृत्यु से तो स्थायी क्षति होती है, लेकिन यदि वह बीमार हो जावे तो अस्थायी क्षति के साथ ही उसके इलाज के लिये खर्च भी आवश्यक होता है। न्यूजीलैंड में बीमार लोगों को सहायता दी जाती है। १६ से २० वर्ष की आयु के लोगों को १ पौंड १० शिलिंग प्रति सप्ताह और अन्य लोगों को २ पौंड १० शिलिंग। यदि पत्नी पति पर निर्भर हो तो उसे भी २ पौंड १० शिलिंग प्रति सप्ताह मिलता है।

सरकारी सहायता के सिवा कई सार्वजनिक संस्थाएँ हैं जो बीमारी में सहायता देती हैं। यह सहायता २० शिलिंग प्रति सप्ताह से अधिक नहीं होती।

(८) अपंगों (Invalid) **की सहायता**--१६ से ६० वर्ष की आयु का प्रत्येक व्यक्ति जो स्थायी रूप से काम करने के अयोग्य हो चुका है उसे १३० पौंड सालाना स्वयं के लिये और १३० पौंड सालाना पत्नी के लिये सहायता दी जाती है। सरकारी डाक्टर द्वारा यह जाँच की जाती है कि अर्जी देने वाला व्यक्ति स्थायी रूप से अपंग है।

(९) आकस्मिक विपदा (Emergency) **की सहायता**--उपर्युक्त किसी भी श्रेणी में न आने वाले व्यक्तियों को जो किसी भी प्रकार से पीड़ित हों उन्हें भी सामाजिक सुरक्षा कमीशन सहायता देता है। उदाहरण के लिये कैदियों के आश्रित लोग, महामारियों के समय सुरक्षा-गृह (Quarantine) में रहने वाले लोग, तथा स्थायी रूप से अपंग न होते हुए भी सदा रोगी रहने वाले लोग।

सभी प्रकार की सहायताएँ सोशल सिक्यूरिटी फंड (Social Security Fund) नामक कोष से दी जाती हैं। इस कोष का संग्रह न्यूजीलैंड के सभी कर्मचारियों के वेतन, कंपनियों की आमदनी, पार्लमेंट द्वारा दी गयी रकम तथा अन्य सूत्रों से प्राप्त रकम द्वारा होता है। प्रत्येक कर्म-चारी को अपनी कमाई में से प्रति पौंड डेढ़ शिलिंग के हिसाब से इस कोष में रकम जमा करना अनिवार्य है।

गृहयोजना :— सन् १९३५ में न्यूजीलैंड की सरकार ने एक कानून पास किया जिसके आदेश पर न्यूजीलैंड के मकानों की गणना की गयी। सरकारी गृहयोजना का यह पहला कदम था। सन् १९३६ में एक नये मुहकमें का निर्माण कर सरकार ने एक बृहद गृह-योजना के अनुसार मकान बनाना प्रारम्भ किया। इस योजना के अन्तर्गत सरकार ने तीन प्रकार से नये मकानों के निर्माण में प्रोत्साहन दिया—

(१) सरकार ने मकान बनाकर उन्हें किराये पर दिये।

(२) घर और खेत खरीदने के लिये तथा मकान बनाने के लिये नागरिकों को और महायुद्ध से लौटे हुए सैनिकों को सरकार ने कर्ज दिया।

(३) नयी इमारतों के बनने पर नियंत्रण कर रहने के मकान बनाने के लिये कानूनी मदद दी।

इस नीति का परिणाम यह हुआ कि सन् १९३६ से ३१ मार्च १९४९ तक ३०,७२४ सरकारी मकान बने; सरकार ने ३०,९३८ लड़ाई से लौटे हुए सैनिकों को और ३०,५४८ नागरिकों को कर्ज दिया। न्यूजीलैंड के १,२०,००० निवासियों को अभी तक इस गृह-योजना द्वारा रहने के लिये अच्छे आकर्षक और आरामदेह घर प्राप्त हो गये हैं। सन् १९३७ में २२ मकानों से प्रारम्भ हो सन् १९४९ में ४,१९३ मकान इस योजना के अन्तर्गत बनाये गये।

इन मकानों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मजबूती, सुन्दरता और उपयोगिता का पूर्ण ध्यान रखा गया है। सस्ते दामों में बनाकर इनका बलिदान नहीं किया गया। प्रत्येक मकान एक निराले ढँग का है। ईंट और लकड़ी का विभिन्न रूप से प्रयोग करके एक ही डिजाइन के मकानों को आकर्षक और निराला बना दिया गया है। यद्यपि इन सरकारी मकानों के नाम और नक्शे एक से हैं, दीवालों और छप्परों में भिन्न प्रकार की लकड़ी इत्यादि लगाकर, अलग-अलग रंग देकर तथा खिड़कियों और प्रवेश-मार्गों की स्थिति बदलकर हर मकान को अपने ढँग का बनाया गया है। ४० प्रतिशत सरकारी मकान लकड़ी के बने हैं और २५ प्रतिशत ईंटों से।

इन मकानों में काफी जगह रहती है। २५ से ४० फुट तक खाली जगह मकान के सामने छोड़ी गयी है। मकानों के बीच में एक तरफ ५ फुट और दूसरी तरफ ९ फुट की सीमा रखी गयी है। प्रत्येक घर में कपड़ा धोने की सुविधा, घर काम के लिये पर्याप्त स्थान और सभी सुविधायें प्राप्त हैं। मकान के पीछे बगीचे के लिये स्थान है जहाँ साग-भाजी

पैदा होती है और बच्चों के खेलने के लिए सुरक्षित स्थान रहता है। सोने के दो कमरे-वाले मकानों का क्षेत्रफल ८८२ वर्ग फुट, ३ कमरे वाले मकानों का १,०५५ वर्ग फुट और ४ कमरेवाले मकानों का १२४५ वर्ग फुट है। सोने के तीन कमरे वाले मकानों की सबसे अधिक माँग है। करीब ६७ प्रतिशत मकानों में सोने के तीन कमरे हैं; २० प्रतिशत में दो।

ऊँची भूमि में बने हुए मकान लम्बे और सकरे हैं। इनमें प्रवेश-मार्ग सामने न रहकर बाजू में हैं और ईंधन तथा बगीचे के काम आनेवाले औजारों को रखने के लिए तलघर हैं। आकर्षक दृश्य रखने के लिए मकानों को एक ढंग से बनाया गया है और एक एकड़ में चार मकानों से अधिक नहीं हैं। स्वस्थ और सुखद मकानों के लिये धूप आवश्यक है इसलिए रहने के कमरे इस हिसाब से बने हैं कि कम-से-कम आधे दिन उनमें सूर्य का प्रकाश रहे; सोने के कमरों में सुबह की धूप विशेषरूप से वांछनीय रहती है इसलिए वे कमरे इसी ढंग के बनाये गये हैं। भविष्य के मकानों में सारे दिन धूप आये इसके लिए उत्तरी दीवालें काँच की ही बनेंगी।

इन मकानों में रहने के कमरे इस उद्देश्य से बनाये गये हैं कि अवकाश के समय पूरा कुटुम्ब आराम से बैठ सके। बैठने के कमरे बड़े गर्म, सुखदायी और आकर्षक बने हैं। किरायेदारों की यह जिम्मेवारी है कि वे अपने-अपने मकान साफ-सुथरे रखें। मरम्मत वगैरा का जिम्मा सरकार का है।

इन मकानों का रसोई-घर सबसे आकर्षक और नितान्त स्वच्छ है। खाना पकाने और खाने के लिए पर्याप्त स्थान है। रसोई-घर की हर चीज स्वच्छ और चमकदार तथा वातावरण आनन्द से पूर्ण है। बिजली, गरम और ठंडे पानी के नलों तथा अनेक अल्मारियों में पर्याप्त जगह के कारण गृहिणी का कार्य अत्यन्त सुगम रहता है। एक बार के खानेपकाने और बर्तन साफ करने में डेढ़ घंटे से अधिक समय नहीं लगता। सुबह की धूप रसोई-घर में आ सके इसका प्रबन्ध रहता है और आकर्षक रँगों से रसोई-घर रँगा रहता है। भारतीय गृहिणियाँ इन रसोई-घरों से और न्यूजीलैंड की गृहिणियों से बहुत कुछ सीख सकती हैं।

बगीचों को चित्ताकर्षक रखने और फल-फूल, साग-सब्जी बोने के संबन्ध में सरकार कई प्रकार की मदद देती है। औद्योगिक केन्द्र, आवागमन की सुविधा, मित्रों का सामीप्य, बाजार की सुगमता और खेल-कूद तथा मनोरंजन के मैदान आदि का रहने के मकानों से घनिष्ठ संबन्ध है। इसलिये प्रत्येक एक हजार की आबादी के लिए ६½ से ७½ एकड़ भूमि खाली रखी गयी है। इस भूमि में जहाँ-तहाँ पेड़ भी हैं जो प्राकृतिक आकर्षण बढ़ाते हैं।

हमने इन बस्तियों को जाकर भी देखा। बड़ी साफ-सुथरी बस्तियाँ और इन बस्तियों के बीच बने मार्ग और सड़कें भी इतनी साफ-सुथरी है कि वे मकानों की शोभा बढ़ाती है। बिजली और टेलीफोन के तार जमीन के नीचे है या मकानों के पीछे। रेडियो के ऐरियल छप्परों में मिले रहते है। अर्थात् आँखों को खटकनेवाली या सौंदर्य कम करने-वाली कोई भी वस्तु सामने नहीं आती।

भविष्य के लिए हरएक शहर और गाँव की एक गृह-योजना है। गरीबों के लिए, उद्योग-धंधों में काम करने वालों के लिए, बूढ़े और पेंशन पाने वाले नागरिकों के लिए, पर्याप्त मकान बनाने की कई योजनाएँ है। न्यूजीलैंड की सरकार के एक मंत्री के शब्दों में, "सरकारी गृह-योजना का निर्माण एक स्थायी आधार पर हुआ है। इसका मुख्य उद्देश्य न्यूजीलैंड की अधिकांश जनता की एक बड़ी कमी की पूर्ति करना है—उनकी सहायता जो अपने रहने के लिए उचित मकान बनवाने में असमर्थ हैं। न्यूजीलैंड के इतिहास में सरकार ने पहली बार यह समझा कि जनता के स्वास्थ्य और सुख का उचित मकानों से कितना घनिष्ठ संबन्ध है। यह सत्य पूर्ण रूप से समझ लेने के बाद अनेक कठिनाइयों और कटु आलोचना होते हुए भी सरकार ने इस दिशा में उचित कदम उठाया।"

२६

ता० २६ को इतवार था और आज अन्य कोई काम न होने से हमने आज का पूरा दिन यहाँ के भारतीयों को दिया गया था। ११ बजे हम लोगों को लेने के लिये यहाँ के भारतीय आये। श्री सन्याल और श्रीमती सन्याल भी उनके साथ थे। हम पाँचों भारतीय प्रतिनिधि उनके संग रवाना हुए।

३॥ बजे यहाँ के एक सिनेमागृह में सार्वजनिक सभा थी। सभा में बड़ी अच्छी उपस्थिति थी। वैलिंगटन में रहने वाला कदाचित् ही कोई भारतीय उस सभा में न आया हो। वैलिंगटन के बाहर आसपास के कई लोग भी उपस्थित हुए थे। न्यूजीलैंड में आजतक भारत का कोई सार्वजनिक कार्यकर्ता नहीं आया था। पहले पहल हम ही लोग यहाँ आये थे। इस उत्साह का यही कारण था।

हम पाँचों के भाषण हुए। पहले गुजराती में श्री शाह बोले, उसके बाद अंग्रेजी में श्री वेंकटरमन और श्री बरुआ। इनके पश्चात् गुजराती में श्री सिधवा और अन्त में हिन्दी में मैं।

श्री शाह ने वहाँ के भारतीयों को अपने को न्यूजीलैंड निवासी समझकर वहाँ किस प्रकार रहना चाहिये, इसका विवेचन किया। श्री वेंकटरमन ने स्वतंत्र होने के पश्चात् भारत ने क्या-क्या किया है यह बताया। श्री बरुआ ने श्री वेंकटरमन के भाषण की पूर्ति की और श्री सिधवा ने श्री शाह के भाषण की। और मैंने गांधीवाद एवं अन्य वादों में क्या अन्तर है तथा समाज आर्थिक दृष्टि से चाहे किसी भी वाद के अनुसार संगठित हो जावे; पर बिना सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता और सेवा की भावनाओं के वह सुखी नहीं हो सकता, इसका दिग्दर्शन कराया। अन्त में सभापति ने श्री सन्याल और श्रीमती सन्याल से भी कुछ न कुछ बुलवाया। इन दोनों के बोल लेने पर श्री लक्ष्मीपति और इनकी पत्नी का परिचय कराया गया जो हाल ही में सियाम के बेंगकौक में भारतीय दूतावास से यहाँ के व्यापारी प्रतिनिधि मंडल के दफ्तर में भारत सरकार की आज्ञा से आये थे।

सभा कोई ३ घंटे, ३।। बजे से ६।। बजे तक चली; पर उपस्थित समुदाय एक क्षण के लिये भी न ऊबा। वे तो यह चाहते थे कि हम लोग बोलते ही रहें। कितना प्रेम और उत्साह जागृत हुआ था इन भारतीयों में आज !

शाम का भोजन कर हम भारतीयों द्वारा चलायी जानेवाली गीता-क्लास में पहुँचे। यह गीता-क्लास इक्कीस वर्षों से चलायी जा रही है और अत्यधिक सफलतापूर्वक। हर रविवार को इसकी बैठक होती है। श्री भगवद्गीता के एक मूल अध्याय का गुजराती भाषा में अर्थ सहित पाठ होता है और फिर उस अध्याय पर कुछ विवेचन। इसके पश्चात् कुछ गायन इत्यादि होकर यह क्लास समाप्त हो जाती है।

श्री शाह और मैं दो ही प्रतिनिधि आज की इस क्लास में गये। हमने पहुँचते ही देखा कि यद्यपि यह क्लास एक धार्मिक क्लास है तथा ये लोग मय कालर और नैकटाई के पूरा सूट डटाये, जूते पहने हुए कुर्सियों पर बैठे हैं। मुझे इन लोगों का इस प्रकार बैठना बड़ा अच्छा लगा। भारत गरम देश है और वहाँ की रहन-सहन दूसरी प्रकार की है। वहाँ के इस प्रकार के धार्मिक आयोजन स्नानकर या हाथपैर धो जमीन पर बैठकर होते हैं यह स्वाभाविक है, पर न्यूजीलैंड सदृश ठंडे देशों में, जहाँ की रहन-सहन पश्चिमी ढंग की हो गयी है, वहाँ के भारतीय धर्म और संस्कृति के आयोजन भी ऐसे देशों की आबहवा और इन देशों की रहन-सहन के अनुरूप ही होना चाहिये। मुझे यह देखकर भी अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आज के जमाने में भी ऐसी धार्मिक क्लास में कितने अधिक लोग उपस्थित थे और उनमें कितने अधिक तरुण थे।

आज गीता का दूसरा अध्याय पढ़ा गया। इसे एक तरुण भारतीय ने अत्यन्त शुद्ध उच्चारण से सन्धियाँ तोड़-तोड़ कर पढ़ा। इसके पश्चात् श्री शाह का और मेरा गीता पर ही भाषण हुआ। श्री शाह जैन धर्मावलंबी हैं, पर उनका गीता का अध्ययन देख तथा गीता पर की श्रद्धा देख मुझे कम हर्ष नहीं हुआ।

ग्यारह बजे रात को पूरे बारह घंटे का समय भारतीयों को दे हम लोग अपनी होटल को लौटे।

आज रात को मुझे भली भाँति नींद नहीं आयी। बहुत कम बार ऐसा होता है जब मैं सो न सकूँ और जब ऐसा होता है तब किसी न किसी गंभीर विषय के मानसिक विवेचन के कारण।

मुझे भारत से अन्य देशों को गये हुए भारतीयों की समस्या से सदा दिलचस्पी रही है। आफ्रिका की यात्रा के पश्चात् आज फिर मैंने बाहर बसे हुए भारतीयों को देखा था;

उनकी रहन-सहन देखी थी, उनका भोजन चखा था, उनकी विचारधारा पर कुछ सुना और कुछ कहा था, अतः उनके भूत, वर्तमान और भविष्य की सारी बातें मेरे सामने घूमने सी लगीं और मैं उन पर विचार करने लगा।

जब आजकल के सदृश शीघ्रगामी यातायात के साधन नहीं थे तब शताब्दियों पहले हमारे देश के लोग विदेशों को गये थे; सम्राट अशोक के समय धार्मिक और सांस्कृतिक दूतों के रूप में, बाद में उदर पोषणार्थ। शताब्दियों पूर्व जब वासकोडिगामा आफ्रिका के समुद्र-तट के स्थानों को आया था तब उसने अनेक भारतीयों को पूर्व आफ्रिका में व्यापार करते पाया था। इसके बहुत बाद कुली-प्रथा का जन्म हुआ और हमारे हजारों बन्धु एक प्रकार के गुलाम हो न जाने कहाँ-कहाँ भेजे गये।

जब भारत स्वतंत्र था, बलशाली था, यहाँ की जनसंख्या इतनी अधिक न थी, और यहाँ सोना बरसता था तब भी हमारे भाई शीघ्रगामी यातायात न रहने पर भी बाहर गये और देश के परतंत्र होने पर गरीबी के कारण भी। पर चाहे हम अच्छी अवस्था में गये हों और चाहे बुरी अवस्था में, हम कभी भी किसी की स्वतंत्रता का अपहरण कर अपना साम्राज्य जमाने कहीं नहीं गये। जब भारत स्वतंत्र और सम्पन्न था तथा योरपीय बल एवं सभ्यता का प्रसार नहीं हुआ था और बाहर जाने में रोक-टोक के कोई कानून नहीं बने थे तब यदि भारत चाहता तो अपने बल और धन के द्वारा पृथ्वी पर सूरज न डूबने वाले ब्रिटिश साम्राज्य से भी कहीं बड़ा साम्राज्य स्थापित कर लेता। यदि योरप की जातियों द्वारा जहाँ-जहाँ वे गये वहाँ की जातियों के ध्वंस के वर्णन को पढ़ा जाय तो जान पड़ता है कि भारतीय साम्राज्य योरपीय साम्राज्य से तो कहीं अच्छा होता। जब आर्य भारत में आये और वे उस समय भारत में रहनेवाली अन्य जातियों से मिल गये, यहाँ तक कि उन्होंने दक्षिण के द्राविडों को भी ब्राह्मण मान लिया; जब मुसलमानों को छोड़ भारत में आनेवाले यवन, शक, हूँण सब को हम ग्रहण कर सके और भिन्न-भिन्न जातियों के रक्त के मिश्रण के पश्चात् भी भारत में एक ही संस्कृति रह सकी तब यदि हमने यहाँ से यथेष्ट लोगों को बाहर भेजा होता तो वे वहाँ की जातियों से योरपीय लोगों के सदृश कभी व्यवहार न करते। अपनी सभ्यता और संस्कृति मूलनिवासियों को देकर वे मूलनिवासी और भारतीय मिलकर एक जाति बनती और संसार का रूप ही कुछ और हो जाता। खैर यह बात तो भूल की हुई।

वर्तमान में इस विषय में क्या हो, यह प्रश्न उठता है। जहाँ-जहाँ भारतीय गये हैं वहाँ वे आरम्भ में चाहे किसी भी रूप में गये हों, चाहे कुली बनकर ही क्यों न गये हों, आज आर्थिक

दृष्टि से वे प्राय: सभी सम्पन्न हैं । परन्तु राजनैतिक और सामाजिक दृष्टि से उनकी स्थिति चिन्ता का विषय है । प्राय: सभी स्थानों में या तो उन स्थानों के योरपियनों या वहाँ के मूल निवासियों से उनकी पटरी नहीं बैठती । जब तक भारत स्वतंत्र नहीं हुआ था तब तक वह इस संबन्ध में ब्रिटिश गवर्मेन्ट से लिखा-पढ़ी करने के सिवा और कुछ न कर सकता था और उसके स्वतंत्र होने के पश्चात् क्या वह कुछ कर सकता है ?

आज संसार में कई ऐसे देश हैं जहाँ की जनसंख्या इतनी अधिक है कि वे देश अपनी आबादी को सुख से रखना दूर रहा जीवित तक कठिनाई से रख सकते हैं । और कुछ देश ऐसे हैं जहाँ यथेष्ट जनसंख्या न होने के कारण वहाँ के नैसर्गिक पदार्थों का उपयोग नहीं हो सकता । कितने वर्ग मील पर कितनी आबादी है यह जानने से इसका स्पष्टीकरण हो जाता है । दृष्टांत के रूप में कुछ देशों की अवस्था देखिये । भारतवर्ष और पाकिस्तान में प्रतिवर्ग मील पर ३७१, यूनाइटेड किंगडम में ५०७, जापान में ४९० मनुष्य रहते हैं और कैनडा तथा आस्ट्रेलिया में केवल ४ एवं न्यूजीलैंड में केवल ८ । और जिन देशों में इतने कम मनुष्य रहते हैं वहाँ के कानूनों के अनुसार श्वेतांगों को छोड़ अन्य बाहर से आने-वाले लोगों को मुमानियत है । कैनडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड ये सारे देश अधिक आबादी चाहते हैं, उसके लिये भरसक प्रयत्न करते हैं, परन्तु केवल श्वेतांगों की । कुछ देश अपनी इतनी बढ़ी हुई तथा बढ़ती हुई जनसंख्या का किसी न किसी प्रकार पोषण करें और कुछ देश इतनी फाजिल भूमि को लिये हुए बैठे रहें तथा बाहर से किसी को न आने दें, संसार की यह स्थिति क्या सदा चल सकती है ? आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड इसीलिए तो जापान और चीन से काँपा करते हैं ।

भारत के सामने विदेशों में रहने वाले भारतीयों को सारे समान अधिकार मिलें यह प्रश्न तो है ही पर यह प्रश्न केवल वर्तमान का है । भविष्य में उसकी आबादी को भी बाहर जाकर बसने का हक मिले यह प्रश्न भी इस देश के जीवन-मरण का सवाल है ।

जब मैं आफ्रिका से लौटा था उस समय मैंने अपनी एक रिपोर्ट हरिपुरा कांग्रेस के अधिवेशन पर उस अधिवेशन के सभापति नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को दी थी । उस रिपोर्ट में भी मैंने कहा था कि भारत को अपनी जनसंख्या बाहर भेजकर बसाने के लिए एक योजना बनानी चाहिए । पर उस समय देश स्वतंत्र नहीं था अत: यह योजना लिमिटेड कंपनी के रूप में बनायी जाय, यह मैंने सुझाया था । अब भारत स्वतंत्र है तथा भारत सर-कार लाखों शरणार्थियों के बसाने के लिए करोड़ों रुपया प्रतिवर्ष खर्च कर रही है । हम कामनवैल्थ के एक सदस्य हैं और आस्ट्रेलिया , न्यूजीलैंड , कैनेडा, आफ्रिका आदि भी

कामनवैल्थ में है अतः इस प्रश्न को उठाकर इसका कोई न कोई हल होना ही चाहिए। आस्ट्रेलिया के उत्तर तथा मध्य में न जाने कितनी भूमि पड़ी हुई है जहाँ लाखों नहीं करोड़ों मानव बसाये जा सकते हैं। संसार में युद्धों की समाप्ति तथा संसार की शान्ति के लिए भी यह विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

हाँ, जो भारतीय बाहर गये हैं या जायें उन्हें भारत से प्रेम रखते हुए भी उन देशों को अपनी मातृभूमि मानना होगा जहाँ वे गये हुए हैं या जायें। मैंने इस बार की कामन-वैल्थ पार्लिमेंटरी कान्फरेन्स में देखा कि कैनेडा, आस्ट्रेलिया, आफ्रिका, न्यूजीलैंड के जो प्रतिनिधि आये थे यद्यपि उन्हें ग्रेट ब्रिटेन पर अभिमान था; और यद्यपि वे ग्रेट ब्रिटेन की पार्लिमेंट आदि संस्थाओं को 'मदर पार्लिमेंट' आदि अत्यधिक आदरपूर्ण शब्दों द्वारा संबोधित करते थे तथापि वे अपने को इंगलिस्तान का कहते हुए भी पहले कैनेडियन, आस्ट्रेलियन, आफ्रिकन और न्यूजीलैंडर मानते थे।

फिर जो भी भारतीय जहाँ भी बसे हैं या जहाँ भी बसने जाँय उन्हें वहाँ के निवासियों, विशेषकर मूलनिवासियों, से अपने को पृथक नहीं मानना चाहिए।

अन्त में एक प्रश्न मेरे मन में उठा कि पृथ्वी की सारी भूमि का वितरण भूमण्डल के सारे निवासियों में किया जाय तो क्या होगा? क्या इस तरह भूमि का वितरण करने पर विश्व की सबसे विकट समस्या हल नहीं हो सकती? आज विश्व की यही तो प्रधान समस्या है न कि संसार के आधे निवासी गरीब, नंगे, भूखे और बे-घरबार हैं। क्या इसका कारण यह है कि पृथ्वी की आबादी आवश्यकता से अधिक हो गयी है और दो अरब की आबादी के लिए पर्याप्त भूमि नहीं है? क्या इतनी बड़ी संख्या में लोग भूखे इसलिए रहते हैं कि हमारी पृथ्वी की सारी भूमि पर्याप्त भोजन-सामग्री पैदा नहीं कर सकती? क्या सभी देशों के सभी नैसर्गिक पदार्थों का पूर्ण उपयोग किया जा चुका है?

बहुत समय तक मैं इस प्रश्न पर विचार करता रहा। यदि इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' है तो यह मान लेना पड़ेगा कि विधि का विधान ही ऐसा है कि संसार के आधे लोग आनन्द से रहें और आधे लोग नंगे, भूखे और बेघरबार रहें। लेकिन बहुत मनन करने के बाद भी मैं इस निष्कर्ष पर न पहुँच सका। पहुँचता भी कैसे? अपनी आँखों से यह देखा – अभी अभी देखा था कि न्यूजीलैंड सदृश देशों में न जाने कितनी भूमि खाली पड़ी है। कहाँ तो भारतवर्ष में प्रतिवर्ग मील में ३४१ लोग बसे हैं और कहाँ न्यूजीलैंड में प्रति- वर्ग मील सिर्फ ८ लोग।

आस्ट्रेलिया और कैनेडा में तो करोड़ों एकड़ भूमि खाली पड़ी है। न इसमें मानव बसे

है, न वहाँ के नैसर्गिक पदार्थों की खोज हुई है। तब प्रश्न यह है कि हम सब मिलकर ऐसी योजना क्यों नहीं बनाते कि इस खाली भूमि का उपयोग हो और तमाम नैसर्गिक पदार्थों और शक्तियों का उपयोग हो ताकि संसार की अन्न, वस्त्र और इस प्रकार की सारी समस्याएँ हल हो सके, लोगों को रहने के लिए पर्याप्त भूमि मिल सके ।

क्या कभी वह दिन आवेगा जब सभी देश बुद्धि और उदारता से काम ले मानवजाति को सुखी बनाने का पुण्य कार्य करेंगे ? इस विचार सागर में गोते लगाते-लगाते न जाने कब मुझे नींद आ गयी ।

२७

आज ता० २७ नवम्बर से ता० १ दिसम्बर तक पाँच दिनों तक कामनवैल्थ पार्लिमेंटरी परिषद चली। बाकी सब प्रतिनिधि तो ता० २४ को ही आ गये थे, पाकिस्तान के प्रतिनिधियों में ता० २४ की बैठक में केवल बंगाल का एक प्रतिनिधि सम्मिलित था। आज पाकिस्तान के भी सब प्रतिनिधि परिषद में सम्मिलित हुए। इनमें दो ने सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया—श्री तमीजुद्दीन खाँ ने अपनी लम्बी दाढ़ी के कारण और श्री चट्टोपाध्याय ने अपनी धोती के कारण। तमीजुद्दीन खाँ के सिवा अन्य किसी प्रतिनिधि के दाढ़ी नहीं थी और चट्टोपाध्याय के अतिरिक्त और कोई धोती नहीं पहने था। तमीजुद्दीन खाँ पाकिस्तान की विधान परिषद के अध्यक्ष थे और पाकिस्तान के प्रतिनिधि मंडल के नेता। चट्टोपाध्याय पाकिस्तान की धारा सभा के विरोधीदल के नेता थे और अपने को कांग्रेसवादी कहते थे। ये दोनों ही सज्जन भारतवर्ष के स्वातंत्र्य संग्राम में भाग ले चुके थे और जेल भी हो आये थे।

ता० २७ से ता० १ तक परिषद ने एक-एक दिन एक-एक विषय पर चर्चा की। ये विषय थे – (१) कामनवैल्थ देशों का आर्थिक संबन्ध और विकास (२) पार्लिमेंटरी प्रथा के अनुसार चलने वाली सरकारें (३) प्रशान्त महासागर के देशों का संबन्ध और सुरक्षा (४) कामनवैल्थ के देशों में एक देश से दूसरे देश में जनसंख्या का तबादला (५) वैदेशिक नीति। विषय सभी अत्यन्त महत्त्व पूर्ण थे।

यद्यपि कामनवैल्थ पार्लिमेंटरी एसोसियेशन के सभापति फिर से कैनेडा के सेनेटर श्री रूबक चुन लिये गये थे, परन्तु पाँचों दिन की उपर्युक्त बहसों में हर दिन उस दिन के लिये अलग-अलग सभापति चुना गया। पाँचवें दिन भारतवर्ष को भी अवसर मिला और पांचवें दिन सभापति का आसन मैंने ग्रहणकर उस दिन की कार्रवाई का मैंने संचालन किया।

हर दिन की बहस का प्रातःकाल एक महाशय और भोजन के बाद तीसरे पहर एक महाशय उद्घाटन करते थे। वे आधा घंटा बोलते थे। जिन्होंने प्रातःकाल बहस का उद्-

घाटन किया होता था उन्हें अन्त में उत्तर के लिये बीस मिनिट दिये जाते थे। इन वक्ताओं के अतिरिक्त हर प्रतिनिधि मंडल की ओर से एक-एक वक्ता बोलता था, इसे पंद्रह मिनिट का समय दिया जाता था और इनके बाद जो सदस्य खड़े होते थे और जिन्हें सभापति पुकार लेता था उन्हें दस मिनिट का समय मिलता था। पहले कहा जा चुका है कि इस परिषद में कोई प्रस्ताव पास नहीं होता; केवल विचार-विनिमय तथा एक दूसरे की राय समझने का प्रयत्न किया जाता है। अतः हर दिन की बहस, परिषद के बिना किसी निर्णय के, समाप्त हो जाती थी। भारतीय प्रतिनिधि श्री सिधवा ने यह प्रश्न भी उठाया कि बिना किसी प्रस्ताव इत्यादि के संसार यह जान कैसे पावेगा कि इतने देशों के प्रतिनिधि इकट्ठे होकर किस निष्कर्ष पर पहुँचे; परन्तु श्री सिधवा के इस प्रश्न पर परिषद की राय यही रही कि जहाँ एक बार प्रस्तावों के चक्कर में पड़ा गया कि फिर मतभेद आरम्भ होंगे, अपने-अपने प्रस्ताव पर बहुमत प्राप्त करने के लिये प्रयत्न शुरू होगा और बहुमत-अल्पमत के झगड़े आरम्भ होकर सारा वायुमण्डल गन्दा हो जायगा एवं जो मिठास का वातावरण इस परिषद में रहता है वह न रहने पायगा। खासकर तब जब इस परिषद के प्रतिनिधियों के हाथ में अपने-अपने देश की सरकारों का संचालन नहीं है, यहाँ कोई प्रस्ताव पास करना गुनाह बे लज्जत ही होगा।

अब तक परिषद की कार्रवाई अखबारवालों के लिये खुली भी न रहती थी, पर इस बार तीसरे और पाँचवें दिन की कार्रवाई को छोड़ तीन दिनों की कार्रवाई पत्रों के लिये भी खोल दी गयी।

पाँचों दिनों की बहस का स्तर बहुत ऊँचा रहा। कई बड़े सुन्दर भाषण सुनने को मिले और अनेक नयी बातें भी मालूम हुईं। भारतीय प्रतिनिधि मंडल ने पाँच दिन अपने पाँच प्रतिनिधियों में बाँट दिये थे। पहले दिन श्री वेंकटरमन, दूसरे दिन श्री शाह, तीसरे दिन श्री बरुआ, चौथे दिन मैं और पांचवें दिन श्री सिधवा बोले। तीसरे दिन तीसरे पहर की कार्रवाई का उद्घाटन भारत को दिया गया था अतः वह श्री बरुआ ने किया। भारतीय प्रतिनिधियों के भाषण भी उच्च कोटि के रहे।

मुझे जो विषय दिया गया था वह मेरा पुराना विषय था—कामनवैल्थ देशों में एक देश से दूसरे देश में जनता का तबादला। यह बहस दक्षिण आफ्रिका के एक प्रतिनिधि के कारण बड़ी दिलचस्प हो गयी। मैंने अपना भाषण आरम्भ किया इस बात के अंक उपस्थित कर कि भारत आदि देशों में कितनी अधिक जनसंख्या है और आस्ट्रेलिया आदि देशों में कितनी कम तथा जिन देशों की जनसंख्या कम है उन्होंने, इस बात के लिये आतुर रहते

हुए भी कि उनके यहाँ और जनता आवे; किस प्रकार अपने देशों के दरवाजे, जो श्वेतांग नहीं हैं, उनके लिये बन्द कर रखे हैं। मैंने इस बात पर भी आश्चर्य प्रकट किया कि जिस जर्मनी और इटली से कामनवैल्थ के देश घोर युद्ध कर चुके हैं उन देशों से आस्ट्रेलिया आदि देशों को आबादी लेना मंजूर है पर कामनवैल्थ के देश भारत और पाकिस्तान आदि से नहीं। आगे चल कर मैंने आस्ट्रेलिया कैनडा, न्यूजीलैंड आदि देशों के नेताओं के भाषण उद्धृत कर बताया कि कितने आतुर हैं ये देश अधिक जनसंख्या के लिये, पर मैंने कहा कि जब तक 'इमीग्रेशन' कानून तथा 'इमीग्रेशन' की नीति में परिवर्तन नहीं होते एवं जो भारतीय अभी भिन्न-भिन्न देशों में बसे हुए हैं उनके साथ वहाँ बसे हुए अन्य लोगों के व्यवहार के समान व्यवहार नहीं होते तब तक भारत और पाकिस्तान आदि देशों से जनता का अन्य देशों में जाना असम्भव है। और यहाँ मैंने भारतीयों तथा पाकिस्तान के निवासियों के साथ दक्षिण आफ्रिका में कैसा व्यवहार किया जाता है इसका उल्लेख करते हुए, जब मैं दक्षिण आफ्रिका में था उस समय मुझ तक को एक लिफ्ट में जाने से रोक दिया गया था, यह बताया ।

मेरा यह कहना था कि बस दक्षिण आफ्रिका के एक प्रतिनिधि उठ खड़े हुए और आग बबूला होते हुए यू० एन० ओ० वाला तर्क यहाँ भी उपस्थित कर कि किसी देश की अन्तरंग नीति पर क्या इस परिषद में बहस हो सकती है, इस मसले पर सभापति का निर्णय माँगा ।

सभापति का निर्णय मेरे पक्ष में हुआ और ज्यों ही सभापति ने अपना निर्णय घोषित किया त्योंही ये महाशय परिषद से उठकर चले गये। इनकी सबसे बड़ी 'ट्रेजडी' यह हुई कि दक्षिण आफ्रिका के अन्य प्रतिनिधियों तक में से एक ने भी इनका साथ नहीं दिया।

अब तो परिषद के सारे वायुमण्डल में एक बिजली सी दौड़ गयी; मुझे भी कुछ अधिक जोश आया और उस जोश के कारण मेरा भाषण और अच्छा हो गया।

मैंने अपने भाषण का अन्त अवश्य मधुरता से किया। मैंने कहा कि भारत कामनवैल्थ में ईमानदारी के साथ शामिल हुआ है। उसे विश्वास है कि कामनवैल्थ से उसका, कामनवैल्थ का और संसार का सबका भला हो सकता है; पर यह तब जबकि कामनवैल्थ की नीति शब्दों में न रह कर कार्य में परिणत हो और सब रंगों, सब जातियों, सब संस्कृतियों के लोगों के साथ एकसा व्यवहार हो।

मेरे भाषण की समाप्ति पर शायद सबसे अधिक करतल ध्वनि हुई और तुरन्त कई लोगों के मेरे पास 'चिट' पहुँचे जिनमें हार्दिक बधाई लिखी हुई थी। जब परिषद लंच के

लिये उठी तब तो कई व्यक्ति मुझ से लिपट गये और मुझ से लिपटकर उन्होंने मुझे बधाई दी। मेरे भाषण के पश्चात् जितने भाषण हुए प्रायः सब में मेरे भाषण का जिक्र हुआ और सब भाषणों में मुझे बधाई मिली। इंगलिस्तान के एक प्रतिनिधि मि० मौरेसन और आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि मंडल के नेता तथा वहाँ के एक मंत्री मि० होल्स ने तो अपने भाषणों में मेरे भाषण की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दूसरे दिन के अखबारों में बड़े-बड़े शीर्षकों के साथ यह भाषण और दक्षिण आफ्रिका के प्रतिनिधि के 'वाक आउट' का वृत्त छपा। सारी परिषद की किसी कार्रवाई को अखबारों ने इतना महत्त्व न दिया जितना मेरे इस भाषण तथा दक्षिण आफ्रिका के प्रतिनिधि के उठकर जाने को।

और मैं स्वयं जब इस भाषण पर विचार करता हूँ तब मुझे कैसा जान पड़ता है? भाषण बुरा नहीं था। अंग्रेजी भी साधारणतया अच्छी थी। चूँकि भाषण लिखा हुआ न होकर मौखिक था, और मुझे निसर्ग ने ऊँची आवाज दी है तथा बोलने में चढ़ाव-उतार आदि का मैंने अभ्यास कर लिया है इसलिये उसका कुछ असर भी पड़ा। पर मैं यह समझता हूँ कि यदि आफ्रिका का वह प्रतिनिधि परिषद से उठकर जाने की मूर्खता न करता तो इस भाषण को अचानक जो महत्त्व मिल गया है वह न मिलता। फिर एक बात और क्या कोई भाषण भी इतने महत्व की चीज है? दुनिया में अब तक न जाने कितने महान् वक्ता हो चुके। अपने अपने समय में उन्होंने अपने भाषणों से न जाने कितने जोश को उत्पन्न किया, उनके भाषणों से उठे हुए जोश से प्रेरित हो न जाने कितने व्यक्तियों ने क्या क्या कर डाला और इतने पर भी दुनिया का हाल है "वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो अब भी है।" मुझे अपना कौंसिल आफ स्टेट का जीवन भी याद आया। मैं वहाँ अंग्रेजी में सब से अच्छे वक्ताओं में माना जाता था। उस समय के भारत के कमान्डर-इन-चीफ भी कौंसिल आफ स्टेट के सदस्य होते थे और सन् २७–२८ में जो कमान्डर-इन-चीफ थे वे तो जब कभी मेरा किसी से परिचय कराते तब यह कह कर कि मैं उनके 'हाउस' का सबसे अच्छा वक्ता हूँ। अपने प्रांत तथा कांग्रेस के अन्य क्षेत्रों में भी मैं अच्छा बोलने वाला माना जाता हूँ। परन्तु इतने पर भी ये भाषण, वक्तृत्वकी यह शक्ति, अरे सारे के सारे मानवकृत्य और स्वयं मानव भी इस सृष्टि में कौन सी चीज है? यदि हम सूर्य मंडल को देखें तो हमारी पृथ्वी कौन सी वस्तु है? यदि हम अन्य सूर्य मंडलों को देखें तो हमारा सूर्य मंडल ही क्या है? और इस सारी रचना में मानव! तुच्छ मानव, तुच्छाति तुच्छ मानव!! पर मानव अपनी ज्ञानशक्ति के कारण सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और

उसकी वक्तव्य शक्ति कदाचित् उसकी सारी शक्तियों से बड़ी शक्ति; परमाणु बम से भी बड़ी। तो चाहे यह मानव तुच्छ हो, क्षुद्र हो पर इस सृष्टि में सब से श्रेष्ठ अवश्य है। अपनी उस श्रेष्ठता के कारण उसे अपनी छोटी-छोटी बातों पर भी अभिमान होता है, वह उनकी दिल खोलकर सराहना करता है और इस सराहना से उसे हर्ष होता है, संतोष होता है।

मुझे भी एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन में अपने इस भाषण पर इन बधाइयों से हर्ष और संतोष नहीं हुआ, यह मैं नहीं कहता; ऐसा कहना तो मिथ्या कथन होगा। मुझे हर्ष और संतोष अवश्य हुआ, पर एक छोटे से साहित्यिक होने के कारण मैं दर्शन प्रेमी भी हूँ। मेरा तो मत है कि बिना दर्शन के कोई छोटे से छोटा साहित्यिक भी नहीं हो सकता। और इस दर्शन की दृष्टि के कारण आज-कल मेरे इस प्रकार के हर्ष की हिलोरों का ज्वार जल्दी से भाटे में परिणत हो जाता है।

परिषद नित्य दस बजे से एक बजे तक और २॥ बजे से ५॥ बजे तक होती थी। पाँचवें दिन, जब मैं सभापति था, परिषद के उस दिन के विवाद के समाप्त होने के पश्चात् मैंने फिर से सिनेटर रूबक को सभापति का आसन ग्रहण करने के लिये कहा और उन्होंने लगभग ६ बजे परिषद का काम समाप्त कर दिया। हाँ, एक घोषणा उन्होंने और की। अमरीका के दो प्रतिनिधि आस्ट्रेलिया आ रहे हैं अतः हमारी परिषद की एक बैठक आस्ट्रेलिया की राजधानी कैनबरा में ता० १०, ११ और १२ दिसम्बर को होगी अतः हम सब को वहाँ भी जाना होगा। मेरी आदत है कि अपना निश्चित कार्यक्रम में यथासंभव कभी नहीं बदलता। कैनबरा की इस बैठक के कारण मुझे अपने कार्यक्रम में परिवर्तन करना पड़ेगा, इसका मुझे बड़ा दुःख हुआ।

इन पाँचों दिन हमारे स्वागत में भी कहीं न कहीं समारोह होते रहे। ता० २७ को दोपहर को श्री सन्याल ने एक आफिशियल लंच दिया था। उसी दिन शाम को न्यूजीलैंड में रहने वाले कुछ विदेशी हाईकमिश्नरों की ओर का स्वागत था। ता० २७ की ही रात को न्यूजीलैंड की यूनिवरसिटी ने हमें निमंत्रित किया था जिसमें यूनिवरसिटी के एक प्रोफेसर ने राजनीति पर एक 'पेपर' पढ़ा था। ता० २८ को सायंकाल एसोसियेशन की कार्यकारिणी के सदस्यों के लिये न्यूजीलैंड पार्लिमेंट के अध्यक्ष ने एक आयोजन किया था। ता० २९ को न्यूजीलैंड की सरकार की ओर से बड़ा भारी लंच था और उसी दिन रात को वैलिंगटन के मेयर की ओर से वैलिंगटन के टाउन हाल में स्वागत। ता० ३० की रात को भारतीय प्रतिनिधि मंडल का मायरियों द्वारा स्वागत था और ता० १ की रात को भारतीय संस्कृति पर वैलिंगटन के यूरोपियनों के बीच मेरा भाषण था।

परिषद के साथ ही ये सारे के सारे आयोजन भी अभूतपूर्व सफलता के साथ समाप्त हुए। एक ओर यदि परिषद का काम चला था तो दूसरी ओर पारस्परिक निकट संपर्क के लिये ये आयोजन।

२८

मुझे भारत नाम, भारतीय संस्कृति और भारत की भाषा हिन्दी से कुछ अनुराग रहा है और है। इन चीजों से मुझे इसलिए तो प्रेम है ही कि मैं भारत देश में जन्मा हूँ, परन्तु इसके अलावा इसलिये भी प्रेम है कि मैं यह मानता हूँ कि आज भी भारत संसार को कुछ दे सकता है जिससे इस संसार का कल्याण हो सकता है। आज दुनिया गांधीजी की ओर कितनी आकृष्ट है और दुनिया के विचारक गांधीजी के विचारों पर कितना विचार कर रहे हैं? गांधीजी का संसार के अन्य किसी स्थान में न होकर भारत में होना यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है। भारतीय संस्कृति और उसकी शृंखलाबद्ध परम्परा ही गांधीजी को इस देश में उत्पन्न करा सकी।

भारतीय संस्कृति की नींव है विभिन्नता में एकता का दर्शन। हमारी जिस संस्कृति का प्रादुर्भाव तपोवनों में हुआ उन तपोवनों के अधिष्ठाता ऋषि महर्षियों ने विभिन्नता में इस एकता का दर्शन कर—दर्शन ही नहीं इस एकता का अनुभव कर इसे 'ब्रह्म' शब्द से पुकारा था। ऋग्वेद में, जो अब संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ सिद्ध हो गया है, कहा गया है—

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'

ईशावास्य उपनिषद् में इसी विचार को अन्य शब्दों में प्रकट किया गया है—

'यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानु पश्यति'

'सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विगुजुप्सते।'

और फिर भारतीय दर्शन के हर ग्रंथ में इसी विचार को अनेक प्रकार से प्रकट कर इसे सूत्रों में भी ले आया गया है; यथा—

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'

'अहं ब्रह्मास्मि'

'तत् त्वमसि'

और अन्त में यह कह दिया गया है कि —

' वसुधैव कुटुम्बकम् '

यदि हम समस्त सृष्टि को ब्रह्म मानते हैं और इसी को पूर्ण सत्य, तो इसके बाद हमारा व्यवहार अन्य दिखने वाले यथार्थ में हमारे ही विभिन्न रूपों से वैसा ही होना चाहिये जैसा हमारा अपने प्रति होता है और ऐसी स्थिति में हिंसा का स्थान ही कहाँ रह जाता है ? यदि कोई व्यक्ति अपने आप की हिंसा नहीं करता तो वह किसी की भी कैसे करेगा जो यथार्थ में वही है जो वह स्वयं।

गांधीजी ने इसी एकता रूपी सत्य का अनुभव कर विभिन्नता के प्रति सहिष्णुता की बात कह अहिंसा को जीवन के हर क्षेत्र में प्रस्थापित कर प्रेम मार्ग द्वारा सेवा धर्म को सर्वोपरि माना था। और भारतीय संस्कृति के इस आदि संदेश को संसार के सम्मुख रखा था। उन्होंने अन्याय के साथ युद्ध किया दक्षिण आफ्रिका में और भारतीय स्वतंत्रता के लिये भारत में; परन्तु जिनसे उन्होंने युद्ध किया उनके प्रति भी उन्हें घृणा या द्वेष न होकर प्रेम था। उन्होंने शत्रुओं को भी मित्र माना और उन्हें केवल ठीक मार्ग पर चलने के लिए कहा। समाज की रचना चाहे किसी भी वाद के अनुसार क्यों न रही हो या क्यों न हो जाय, मेरा निश्चित मत है कि भारतीय संस्कृति और गांधीजी का जो संदेश है वह हर सामाजिक रचना के लिये उपयोगी है। क्या साम्यवादी समाज में सत्य, सहिष्णुता, अहिंसा, प्रेम और सेवा की आवश्यकता न होगी ? कार्ल मार्क्स ने भी जिस पूर्ण विकसित समाज की कल्पना की है उसमें हिंसा का कोई स्थान नहीं है। उस साम्यवादी समाज में व्यक्तिगत संपत्ति न रहेगी और हर व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार उत्पादन करेगा तथा हर व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्ति। पर इसीके साथ जो राज्यव्यवस्था बिना पुलिस, बिना सेना, दूसरे शब्दों में बिना हिंसा, नहीं चलती वह भी मार्क्स के मतानुसार उस समाज में न रहेगी अर्थात् वह समाज पूर्णतया अहिंसात्मक समाज होगा। गांधीजी भी ऐसा ही समाज चाहते थे, पर मार्क्स और गांधीजी का मूल अन्तर है, समाज की इस रचना के लिये किन साधनों का उपभोग किया जाय। मार्क्स इसके लिये हिंसात्मक साधनों को भी उपयुक्त मानते हैं पर गांधीजी नहीं। गांधीजी इस प्रकार की सामाजिक रचना हृदय परिवर्तन और मूल्यों के परिवर्तन से लाना चाहते हैं। फरासीसी और रूसी क्रांतियाँ जो हिंसात्मक साधनों से हुईं उनका फल हम देख चुके। जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये वे क्रांतियां हुई थीं वे उद्देश्य सफल नहीं हुए। मेरा तो विश्वास है कि साम्यवादी समाज की रचना भी अहिंसा द्वारा हृदय और मूल्यों के परिवर्तन से हो सकती है; अन्य

किसी प्रकार वह की गयी तो स्थायी न रह सकेगी। जो कुछ हो, सत्य सहिष्णुता, अहिंसा प्रेम और सेवा की तो उस सामाजिक रचना में भी आवश्यकता होगी।

जब मेरा न्यूजीलैंड आना तय हुआ तभी मैंने तय कर लिया था कि इन पूर्वी देशों में जो पश्चिमी संस्कृति के अनुयायियों से भर गये हैं, मैं भारतीय संस्कृति तथा गांधी जी पर भी कुछ कहूंगा। और जब मैंने भारतीय संस्कृति तथा गांधीजी पर कुछ कहने का तय किया तब मेरे मन में नाट्यशास्त्र पर भी कुछ कहने की इच्छा हुई क्योंकि नाटक को मैं साहित्य के ललित कला विभाग का सर्वोत्कृष्ट रूप मानता हूं और यह मानता हूँ कि मानव-मन के निर्माण में साहित्य का सबसे प्रधान हाथ रहता है।

भारतीय संस्कृति और गांधीजी पर मेरे पहले भाषण का प्रबन्ध श्री सन्याल और श्रीमती सन्याल ने वैलिंगटन के सार्वजनिक पुस्तकालय के एक हाल में ता० १ दिसम्बर की रात को ८ बजे किया। सारा हाल योरोपीय पुरुषों तथा महिलाओं से खचाखच भरा हुआ था। मेरा भाषण कोई चालीस मिनिट तक चला, जिसमें मैंने भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों, उसीके अनुरूप गांधीजी के सिद्धांतों और भारतीय संस्कृति तथा गांधीजी का संसार को क्या संदेश है एवं इस संदेश के अनुसरण में संसार का किस प्रकार कल्याण हो सकता है, इस सारे विषय का अत्यन्त संक्षेप में प्रतिपादन करने का प्रयत्न किया।

जब तक मेरा भाषण चला, श्रोताओं ने एकदम शान्ति तथा पूर्ण तल्लीनता से उसे सुनने की कृपा की। और भाषण के अन्त में मुझे अगणित बधाइयाँ मिलीं। दूसरे दिन यह भाषण बड़े-बड़े शीर्षकों के साथ वैलिंगटन के प्रधान पत्रों में भी निकला और इस पर टिप्पणियाँ भी हुईं।

कामनवल्थ पार्लिमेंटरी कांफ्रेंस के कार्य की अपेक्षा मुझे यह भाषण देने तथा इस भाषण का जो असर लोगों पर पड़ा उसे देखकर कहीं अधिक संतोष हुआ।

कैनबरा की कांफ्रेंस १०, ११, १२ दिसम्बर को थी। उसमें मुझे जाने का प्रयत्न करना चाहिये यह भारत से भी आदेश आया था। कांफ्रेंस को अभी यथेष्ट समय था। बीच का समय किस प्रकार बिताया जाय जब यह समस्या खड़ी हुई तब हमने दो दिन के लिये आकलैंड और तीन दिन के लिये फीजी जाकर ता० ८ को सिडनी पहुंचने का निश्चय किया। आकलैंड जाने के दो कारण थे। वहां के प्रसिद्ध भारतीय डाक्टर सत्यानन्द ने मेरे भारतीय संस्कृति और गांधीजी, तथा 'नाटक का साहित्य और जीवन में स्थान' ये दो भाषण न्यूजीलैंड के यूनिवरसिटी कालेज में तय किये थे और वैलिंगटन के भारतीयों के समान आकलैंड के भारतीय भी हमारा एक दिन चाहते थे। फीजी जाना हमने इसलिये

तय किया था। कि यहां बसने वाले भारतीयों की बहुत बड़ी संख्या थी और प्रवासी में मेरा सदा से अनुराग रहने के कारण फीजी के भारतवासी मुझे वर्षों से बुला रहे थे। जब समय भी था और फीजी इतने निकट, तब मैंने इस अवसर का फीजी जाने में उपयोग करना उचित समझा।

परन्तु हम पांच भारतीय प्रतिनिधि आकलैंड और फीजी न जा सके। श्री सिधवा को भारत लौटने की जल्दी थी अतः वे ता० १ को कांफ्रेंस समाप्त होते ही वापस भारत के लिये रवाना हो गये, श्री शाह न्यूजीलैंड का उत्तर द्वीप के सदृश दक्षिण द्वीप भी देखना चाहते थे, इसलिये वे वेलिंगटन में ही रह गये और उन्होंने वेलिंगटन से सीधे कैनबरा आने का निर्णय किया। आकलैंड और फीजी श्री वेंकटरमन, श्री कक्का और मैं, तीन प्रतिनिधि गये।

२६

श्री वेंकटरमन और श्री बरुआ न्यूजीलेंड की रेलों का भी कुछ अनुभव करना चाहते थे अतः वे ता० २ दिसम्बर को रेल द्वारा रवाना हुए और ता० ३ के प्रातः काल आकलेंड पहुँचे, पर मेरा यूनिवरसिटी कालेज में ता० २ की रात को भाषण था अतः मैं एरोप्लेन से ता० २ की शाम को आकलेंड पहुँच गया। श्री रमन और श्री बरुआ से मुझे मालूम हुआ कि ट्रेनों में कोई खास बात उन्हें नहीं मिली, सिवा इसके कि ऊँची श्रेणी में यात्रा करने वालों को बिस्तर भी दिये जाते थे। एरोड्रोम पर डा० सत्यानन्द, आकलेंड के अनेक भारतीय और सरकारी प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे। आकलेंड की 'रायल होटल' में मेरे ठहरने की व्यवस्था थी। वहाँ सामान रख मैं डा० सत्यानन्द के यहाँ भोजन करने गया। भोजन में काशी के श्री चन्द्रप्रकाश और दक्षिण भारत के प्रसिद्ध नर्तक श्री शिवराम तथा उनकी योरपीय व्यवस्थापिका श्री लाइट फुट, एक अंग्रेजी महिला, भी मौजूद थीं। भोजनोपरान्त आठ बजे रात्रि को हम सब लोग यूनिवरसिटी कालेज पहुँच गये।

मेरा भाषण यूनिवरसिटी कालेज के हाल में कालेज के सभापति श्री डबल्यू० एच०कॉफिर के सभापतित्व में हुआ। कालेज के सभापति का न्यूजीलेंड में एक नया पद होता है जो कालेज के प्रिंसपाल से ऊँचा और यूनिवरसिटी के वाइस चांसलर के बराबर का माना जाता है। हाल में बड़ी अच्छी उपस्थिति थी—पुरुषों तथा महिलाओं, दोनों की; और फिर जो लोग उपस्थित थे वे बुद्धिवादी व्यक्ति थे। चूँकि यहाँ मुझे दोनों विषयों पर बोलना था इसलिये मेरा भाषण कोई सवा घंटे चला। इन दो विषयों को एक दूसरे से संबद्ध कर इनका नया प्रतिपादन कुछ कठिन था, पर मैं उसे कर सका और मैंने देखा कि वहाँ की उपस्थित जनता ने कितने अनुराग से तथा कितने ध्यानपूर्वक मेरा भाषण सुना। भाषण के पश्चात् अनेक प्रश्नोत्तर भी हुए। अन्त में जब सभापति मुझे धन्यवाद देने के लिये खड़े हुए तब अपने आप एक महिला ने उठकर मेरे भाषण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस आंग्ल महिला का नाम था मिस सी० डी० कारटर्ड। इनके बाद एक विद्यार्थी ने उठकर कहा कि

नाट्य कला पर तो मेरा भाषण इस प्रकार हुआ है कि उसे छपवा कर तमाम यूनिवरसिटी विद्यार्थियों को बाँटना चाहिये । मि० कॉकर ने भी यह कहने की कृपा की कि इतने संक्षेप में नाट्य शास्त्र की ऐसी विशद विवेचना उन्होंने न कहीं पढ़ी है और न सुनी । नाट्य शास्त्र पर मैंने जो भाषण दिया था वह मेरी 'नाट्य कला मीमांसा' पुस्तिका पर अवलंबित था, पर वह पुस्तिका इस भाषण से कहीं बढ़कर है । मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जो आदर मेरे इस भाषण का इस विश्वविद्यालय कालेज में हुआ वह उस पुस्तिका का भारत में नहीं । और जब मेरे मन में यह विचार उठा उस समय मुझे श्री रवीन्द्र बाबू, श्री उदय शंकर, श्री रामगोपाल न जाने कौन कौन याद आये जिन्हें भारत ने तब पहचाना जब वे विदेशों में सम्मानित हुए । हमें अपनी आँखों से न देख दूसरों की आँखों से देखने की कुछ आदत हो गयी है ।

३ दिसम्बर बुधवार आकलैंड के भारतीयों को दिया गया था । उन्होंने उसी प्रकार की सारी व्यवस्था की जैसी वैलिंगटन के भारतीय कर चुके थे । पहले लंच हुआ फिर सार्वजनिक सभा । सभा में वैलिंगटन के सदृश ही खूब उपस्थिति थी । यहाँ भी आसपास के अनेक स्थानों से भारतीय आये थे । आज गुजराती में भाषण देने वाला कोई नहीं था । श्री सिधवा भारत लौट गये थे और श्री शाह वैलिंगटन में रह गये थे, पर मैंने देखा कि मेरी संस्कृतनिष्ट हिन्दी वहाँ के गुजरातियों को बहुत अच्छी तरह समझ में आयी । श्री वैंकटरमन और श्री बरुआ अंग्रेजी में बोले ।

ता० ४ दिसम्बर को दस बजे दिन को एक नया आयोजन और रख दिया गया । यह था आकलैंड के रिसर्च ट्रेनिंग कालेज में जहाँ शिक्षकों को शिक्षा के लिये तैयार किया जाता है । सारा हाल शिक्षकों से भरा हुआ था और मैंने देखा कि उनमें पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ कहीं अधिक हैं । पूछने पर ज्ञात हुआ कि न्यूजीलैंड में शिक्षक का काम पुरुषों की अपेक्षा महिलायें ही अधिक करती हैं और यह जानकर मुझे अत्यधिक हर्ष भी हुआ । निसर्ग ने जीवित व्यक्ति के पैदा करने, उसके लालन-पालन का उत्तरदायित्व महिला पर रखा है, पुरुष पर नहीं । फिर उसके शरीर ही नहीं, मन का निर्माण भी आरम्भ में जिस प्रकार माता करती है, पिता नहीं; अतः यदि आगे चलकर गुरु का कार्य भी महिलाएँ करें, पुरुष नहीं; तो मानसिक निर्माण में भी कदाचित् अधिक सफलता मिल सकती है ।

आज के इस आयोजन का सभापतित्व इस कालेज के प्रिंसपाल श्री डिकी ने किया । पहले श्री वैंकटरमन, फिर श्री बरुआ और अन्त में मेरा भाषण हुआ । सार्वजनिक भाषणों के संबन्ध में अब हमने यही क्रम तय कर लिया था ।

मैंने अपने आज के भाषण का अधिकांश भाग महिलाओं के कर्तव्य के संबन्ध में ही रखा। मैंने कहा कि आज महिलाओं की जो यह वृत्ति हो रही है कि वे पुरुषों के हर क्षेत्र में काम करें इसे मैं कोई उचित बात नहीं मानता। पुरुषों को उन्हें हर क्षेत्र में समान अधिकार देना चाहिये, पर यह महिलाओं को सोचना है कि क्या पुरुषों के काम के हर क्षेत्र उनके लिये उपयुक्त हैं। मैंने जेल का एक दृष्टांत दिया और कहा कि जेल में जहाँ पुरुष कैदियों की संख्या दो हजार रहती है वहाँ स्त्रियों की केवल दो सौ। महिलाओं को सोच लेना चाहिये कि यदि उन्होंने पुरुषों के हर क्षेत्र में काम किया तो जेलों में भी उनकी संख्या पुरुष कैदियों के बराबर हो जायगी। कितना अधिक अट्टहास हुआ इस पर। आगे चलकर मैंने कहा कि बन्दूक कंधे पर रखरख कर युद्ध क्षेत्र में जाने की नारियों की इच्छा, यह भी कोई श्रेयस्कर बात नहीं है। देश पर आक्रमण के समय उसकी रक्षा के लिये वे शस्त्र चलाना सीखकर तैयार रहें, यह सर्वथा उचित है, पर इस प्रकार की हिंसा को यदि वे भी श्रेष्ठ वस्तु मानने लगेंगी तब तो उन्हीं के कारण जो यत्र तत्र अहिंसा दिखती है उसका भी लोप हो जायगा। अन्त में मैंने उनका ध्यान पत्नित्व और मातृत्व की ओर खींच उनके लिए इसी काम को सर्वश्रेष्ठ बताया। शिक्षा का काम एक प्रकार से मातृत्व का काम है अतः मैंने उनके इस कार्य में जुटने पर भी हर्ष प्रकट किया।

इस सभा में जो स्त्रियां थीं उनमें तरुणियों की अधिक संख्या थी और उनकी भी मुद्रा से मुझे यह जानकर संतोष हुआ कि उन्हें मेरी बातें पसन्द आयी हैं।

कालेज के प्रिंसपाल श्री डिकी ने भी मेरे भाषण पर मुझे कई बधाइयाँ दीं।

आज रात्रि को श्री शिवराम का हमारे देखने के लिये ही यहाँ के थियासोफिकल हाल में नृत्य रखा गया था। श्री शिवराम भारतीय नृत्यकला की 'भरत नाट्य', 'कथाकली', 'कत्थक', 'गरबा', और 'मैनपुरी', पाँच पद्धतियां में से कथाकली नृत्य के नर्तक हैं और योरप आदि विदेशों में हो आये हैं तथा वहाँ ख्याति प्राप्त कर आये हैं। आजकल न्यूजीलैंड सरकार की ओर से वे न्यूजीलैंड में भारतीय नृत्य का प्रदर्शन करने बुलाये गये थे। पहले उन्होंने नृत्य की मुद्राएँ बतायीं। किस मुद्रा का किस बात से संबन्ध है यह उनकी व्यवस्थापिका श्री लाइट फुट बताती जाती थीं। इस प्रदर्शन में जब उन्होंने नवो रसों का मुद्राओं द्वारा प्रदर्शन किया तब मैं तो मुग्ध सा हो गया। मुद्रा-प्रदर्शन के पश्चात् श्री शिवराम ने नृत्य भी किया जो सचमुच अत्यधिक आकर्षक था और उसमें भाव बोलते से जान पड़ते थे।

सिडनी से आकलैंड जाने वाले हवाई जहाज के सदृश ही हमारा फौजी जानेवाला

हवाई जहाज भी ११ बजकर ५९ मिनिट पर ही जाता था। इस नृत्य के पश्चात् हम फिर कुछ खाने-पीने के लिये थियोसोफिकल हाल की व्यवस्थापिका के यहाँ गये। न्यूजीलैंड वाले हर दिन छः बार खाते हैं--प्रातःकाल की चाय, फिर कलेवा, उसके पश्चात् लंच, फिर तीसरे पहर की चाय, उसके बाद डिनर और रात को सपर। जलवायु कुछ ऐसा है कि इतने अधिक बार खाने पर भी सब कुछ हजम हो जाता है।

खा पीकर जब हम समुद्री हवाई अड्डे पर पहुंचे तब कोई ११ बजे थे। हमें पहुंचाने आने वालों से हमने लौट जाने का कितना आग्रह किया, पर जब तक विमान बिदा न हो गया तब तक एक व्यक्ति भी वहाँ से न हटा। हम लोगों के प्रति कितना प्रेम और कितना उत्साह था उन सबके हृदयों में।

यह समुद्री वायुयान भी सिडनी के सदृश ही ११ बजकर ५९ मिनिट पर ही उड़ा।
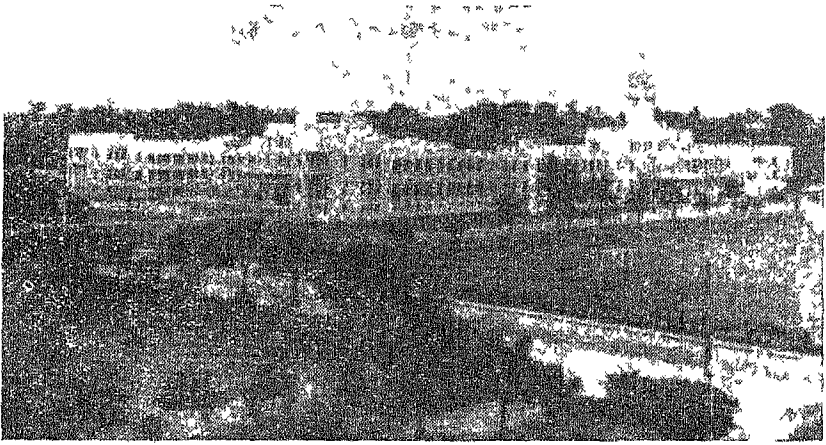
फीजी के सुआ नगर की सरकारी इमारत
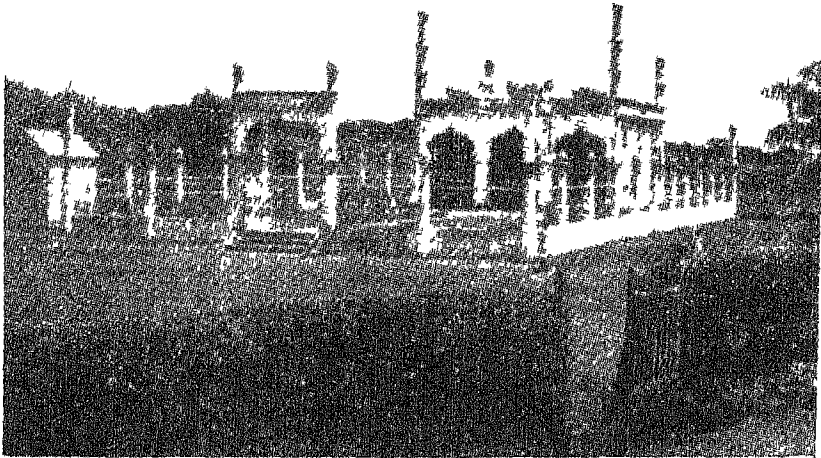
फीजी के सुआ नगर में एक भारतीय मंदिर

एक फीजियन पुरुष

अपनी त्योहार की पोशाक में
दो फीजियन नारियाँ

लेखक कुछ फीजियन नर नारियों के साथ

३०

हमारा हवाई जहाज फीजी की राजधानी सुआ सात बजे प्रातःकाल पहुँचा। खूब हरा भरा द्वीप था। और इस हरयाली में हम लोगों के आगमन के कारण फीजी का उत्साह जो सीमा को पार कर गया था उसने एक नयी रौनक पैदा कर दी थी। वहां का कोई ऐसा महत्वशाली व्यक्ति न था जो सबुकी हवाई अड्डे पर हमें लेने के लिये न आया हो। जो सज्जन हमें लेने को आये थे उनमें से मुख्य थे :—

पं० विष्णुदेव 'जल रतन'
पं० जे० पी० महराज, सभापति, आर्य समाज, सुआ
मि० जॉन ग्रांट, ओ० बी० ई०, जे० पी०
श्री० आर० परमेश्वर, मंत्री, आर्य समाज
डा० सी० एम० गोपालन
श्री० बी० डी० पटेल, सभापति, सनातन धर्म सभा
श्री० हरिचरन बी० ए० वकील
डा० राम लखन, डेन्टल सर्जन
श्री० रतनजी एम० नारसी
श्री० गंधाभाई के० हरी
श्री० बिदेशी सरदार
श्री० आर० प्रसाद
श्री० बी० राघवानन्द

फीजी पहुँचते ही मैंने वहाँ का जो वायुमंडल देखा उससे जान पड़ा जैसे हम भारत में ही आ गये हों, यद्यपि भारत से इस समय हम इस समय की यात्रा में सबसे अधिक दूरी पर थे। फीजी भारत से ९ हजार मील के लगभग है। वायुमंडल को जो वस्तुएँ बनाती

अधिक भारतीय बना रहीं थीं वे दो थीं—एक वस्तु थी आम के वृक्ष और दूसरी वहाँ के भारतीय। आम्र वृक्ष इस मार्ग शीर्ष मास में आमों से लदे हुए थे और एक विशेषता यह थी कि एक ही वृक्ष में पके आम, कैरियां और मौर साथ-साथ थे। मार्गशीर्ष मास में आम के फलों से लदे वृक्ष सुगन्धित थे। फीजी की गरमी थी इसीलिये बाद में हमें फूला हुआ मोगरा भी मिला। केवल एक बात ऐसी थी जो इस बात का संकेत कर देती थी कि हम भारत में नहीं हैं और यह भी वहाँ के आदिवासियों के दर्शन। इन आदिवासियों में जो चीज ध्यान को सबसे अधिक आकर्षित करती थी वह इनके बड़े ऊँचे उठे हुए घने काले बाल थे। इन बालों का इनके सिर पर मुकुट सा लगा रहता है।

स्वागत के लिये आये हुए महानुभावों से मिलकर हम 'ग्रांड पैसिफिक होटल' में पहुँचे, जहाँ हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। यहाँ हमें अपने भारतीय दूतावास के श्री भगतराम जी ने तीन दिन ठहरने का कार्यक्रम दिया जो अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी अत्यन्त व्यवस्थित था। यह कार्यक्रम इस प्रकार था —

मंगलवार १५ दिसम्बर, १९५०

—दोपहर का भोजन; श्री० जसुभाई के० देसाई - फर्म सी० जे० पटेल एन्ड कंपनी

—गवर्नर महोदय से मुलाकात

—सुआ के व्यापारियों के साथ चाय-पानी जिसमें फिजी के गवर्नर, सरकारी अफसर और सुआ के प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल हुए।

—टाउन हाल में आम सभा — फिजी सरकार के शिक्षा संचालक श्री० एच० हेडन की अध्यक्षता में

—नावसेरी (Nauseri, Rewa District) में श्री० के० बी० सिह, ओ० बी० ई०, जे० पी० की अध्यक्षता में सभा

बुधवार, ६ दिसम्बर, १९५०

—फीजी के दर्शनीय स्थानों को देखना।

—सरदार हुकम सिंह के यहाँ मध्यान्ह का भोजन और सभा

—टागी टागी स्कूल (Tagi Tagi School) का निरीक्षण

—चाय और पं० अमीचन्द्र विद्यालंकार एम. ए. की अध्यक्षता में सभा

—महात्मा गाँधी मेमोरियल कालेज में शाम का भोजन

गुरुवार, ७ दिसम्बर, १९५०

–श्री० ए० डे० पटेल, बार-एट-लॉ के यहाँ सुबह का नाश्ता

–संगम स्कूल में स्वामी रुद्रानन्द की अध्यक्षता में सभा

–सीगाटोका (Sigatoka) में श्री नानजी भाई के यहाँ मध्यान्ह का भोजन और सभा

–नौवा (Navwa) में चाय और श्री एम० एस० बख्श की अध्यक्षता में सभा

–नौवा भारतीय स्कूल का निरीक्षण

–माननीय गवर्नर महोदय से मुलाकात

–Indian Association के सदस्यों के साथ शाम का भोजन

–फीजी ब्राडकास्टिंग कंपनी में भाषणों का रिकार्ड कराना।

–फीजी धारा-सभा के सदस्यों और Indian Association के सदस्यों से मुलाकात

शुक्रवार, ८ दिसम्बर, १९५०

–सुबह ५–३० बजे लौकाला बे (Laucala Bay) सुआ से सिडनी के लिये प्रस्थान

होटल में जल्दी से स्नानादि से निवृत हो हम ९॥ बजे फीजी के गवर्नर से मिले। मुझे फीजी के भारतीयों की समस्याएँ ज्ञात थीं। उनमें मुख्य थी जमीन की समस्या। फीजी में बसे हुए लगभग सवा लाख भारतीय संख्या की दृष्टि से इस समय उस द्वीप के सबसे अधिक निवासी थे। इनमें अधिकांश गन्ने की खेती करते थे। अधिकतर भारतवासी कुली प्रथा के अनुसार यहाँ आये थे और इन्हीं भारतीयों ने यहाँ की जमीन को आबाद किया था। जो गन्ना यहाँ उत्पन्न होता था उसे यहाँ की एक योरोपीय कंपनी खरीदती थी, जिसके यहां शक्कर बनाने के मिल थे। इस कंपनी के सिवा अन्य किसी का शक्कर बनाने का कारखाना न था। गन्ने की खेती और शक्कर बनाना फीजी के मुख्य व्यापार थे–एक था भारतीयों के हाथ में और दूसरा योरप के लोगों के हाथ में। इस योरोपीय जनता की संख्या यहां केवल नाम मात्र ही थी। इन दो समुदायों के सिवा यहाँ के मूल निवासी फीजियन यहां रहते थे। भारतीयों से इनकी संख्या कुछ ही कम थी। यहां की जमीन फीजियनों की थी और उसके पट्टे भारतीयों को इसलिये मिले थे कि फीजियन जाति बड़ी आलसी जाति थी और इस जमीन को वह आबाद न कर सकती थी। अभी भी यद्यपि फीजियनों का आलस्य नहीं गया है पर अब जमीन आबाद हो चुकी है। यहां समय-समय पर पानी बरसते रहने के कारण आबपाशी

आदि की भी आवश्यकता नहीं है अतः अब इस आबाद जमीन में गन्ने बोने और काटने में विशेष परिश्रम की आवश्यकता नहीं है और पट्टों का समय समाप्त होने पर यहां की सरकार इस जमीन को भारतीयों से लेकर यहां के फीजियनों को देना चाहती है। पर ग्रेट ब्रिटेन की कलोनियल सत्ता है और यद्यपि वह कहती यही है कि फीजियन अपनी जमीन वापिस चाहते हैं अतः सरकार भारतवासियों के पट्टे किस प्रकार बढ़ा सकती है, पर यथार्थ में फीजियनों की आड़ लेकर यहां की सरकार ही भारतीयों से यहां की जमीन छीनना चाहती है, यह यहां के भारतीयों में से अनेक को शंका थी। इस संदेह का कारण यह बताया जाता था कि भारतवासी अब काफी चंट हो गये हैं और शक्कर की कारखाने वाली कंपनी को भारतीयों से व्यवहार करने में कठिनाई पड़ती है अतः जब वह यह देखती है कि जमीन भारतीयों के परिश्रम से आबाद हो गयी है और अब फीजियन उसे चला सकते हैं तब जमीन भारतीयों से लेकर फीजियनों को क्यों न दे दी जाय जिनके सीधेपन के कारण शक्कर बनाने वाली कंपनी उनसे जैसा चाहे वैसा व्यवहार कर सके। और सरकार यद्यपि लन्दन के कलोनियल आफिस की मातहती में काम करती थी तथापि शक्कर बनाने वाली इस कंपनी का सरकार पर इतना प्रभाव था कि कई लोग तो यहां की सरकार को शक्कर कंपनी की सरकार कहा करते हैं। कानूनी दृष्टि से इसमें संदेह नहीं कि फीजी की जमीन फीजियनों की है उसे भारतवासी शिकमी किसानों के रूप में जोतते हैं और यदि फीजियन सरकार से कहते हैं कि उनको जमीन उन्हें वापस मिलना चाहिये तो जब तक कानून में कोई परिवर्तन नहीं होता तब तक सरकार का कर्तव्य है कि वह जमीन को भारतीयों से लेकर फीजियनों को दे दे। परन्तु क्या कानूनों को सदा इस प्रकार काम में लाया जाता है? क्या कानूनों में कोई परिवर्तन नहीं होता? फीजी के भारतीय किसान कोई जमींदार, ताल्लुकेदार या मालगुजार नहीं हैं। अपने खून को पसीने के रूप में बहा, ऐड़ी का पसीना चोटी तक ले जा और चोटी का पसीना ऐड़ी तक ला अपनी जन्मभूमि से ९ हजार मील दूर आकर उन्होंने फीजी के जंगलों को साफ किया है। वहां की भूमि को कमाया, उपज के योग्य बनाया और अपने शरीर से बैलों और जानवरों का कामकर उसमें गन्ना बोया और काटा है। आज वे कुली प्रथा के कानून से मुक्त हैं, स्वतंत्र हैं, सम्पन्न भी हैं, पर आज भी वे स्वयं जमीन जोतते बोते और काटते हैं। मैं यह मानता हूं कि कि उनमें और फीजियनों में संघर्ष कदापि इष्ट नहीं और भारतीयों को फीजियनों के हितों के आड़े न आकर उनसे किसी प्रकार का समझौता करने का प्रयत्न करना चाहिये। भारतीयों और फीजियनों का समझौता कदाचित् असंभव भी नहीं, पर यहां के लोगों की शंका यह है कि यहां पर बसे हुए मुट्ठी भर योरोपियन यह समझौता नहीं होने देते और

चाहते हैं कि भारतीय और फीजियन कभी एक न होने पावें। एक बात मैंने भी वहां देखी—भारतीयों और फीजियनों को सदा एक दूसरे से अलग रखने का प्रयत्न अवश्य किया जाता है, यहां तक कि स्कूलों तक में दोनों जातियों के विद्यार्थी साथ-साथ नहीं पढ़ सकते।

जो कुछ हो, फीजी में भारतीयों की मूल समस्या यही जमीन की समस्या है और हम लोगों की गवर्नर महोदय से इसी विषय पर बातचीत हुई। गवर्नर साहब ने अपनी कानूनी अड़चनें हमें बतायीं और हमने कहा कि अगर भारतीयों को आपने जमीन पर से हटाया तो आखिर वे यहां पर क्या करेंगे यह भी आपने सोचा है ? हमारे बीच कोई निश्चयात्मक बात न हो सकी और फीजी छोड़ने के पहले फिर से एक बार मिलने को कह हम लोगों ने गवर्नर महोदय से छुट्टी ली। यहाँ मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि गवर्नर साहब का हमारे साथ सारा व्यवहार अत्यधिक शिष्टता और आदर का रहा। इस समस्या के सिवा यहां के भारतीयों की एक समस्या और है जिससे न सरकार से संबन्ध है न शक्कर की कंपनी वाले योरोपियनों से और न फीजियनों से। यह समस्या उनके बीच की है और उनके आपस के वैमनस्य एवं उनके आपस के झगड़े। यहां के भारतीय आपस में इतना लड़ते हैं कि जिसकी सीमा नहीं। न जाने कितने उनके फिरके हैं और कितने संगठन। जो फीजी में पैदा नहीं हुए हैं वे वहीं पैदा होने वालों द्वारा विदेशी माने जाते हैं। आफ्रिका में भी मैं इसी प्रकार का झगड़ा देख चुका था अतः यह देख मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। आपस में सदा लड़ते रहना कदाचित हमारे रक्त में आ गया है, चाहे हम कहीं भी क्यों न रहें।

११ बजे नवसारी में सर्व प्रथम भारतीयों की सभा में भाषण देना था। मुझे फीजी की समस्याएँ पहले से मालूम थीं। यहां आने पर उनका समर्थन हो गया था अतः मुझे इस सभा में क्या कहना है इस पर विशेष विचार करने की आवश्यकता न पड़ी।

जिस जगह सभा थी वहां इतनी अधिक भीड़ थी कि वह जगह सभा के लिये कदापि यथेष्ट न थी, पर अब क्या हो सकता था। सभा के सभापति का आसन ग्रहण किया श्री के० बी० सिंह ने।

मैंने वहां के भारतीयों से निम्नलिखित बातें कहीं—

(१) उन्हें भारत पर गर्व रखते हुए भी फीजी को उसी प्रकार अपनी जन्मभूमि मानना चाहिये जिस प्रकार कैनेडा, दक्षिण आफ्रिका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के अंग्रेज अपने को अंग्रेज मानते हुए भी तथा इंग्लिस्तान की संस्थाओं पर गर्व रखते हुए भी पहले अपने को कैनेडियन, आफ्रिकन, आस्ट्रेलियन और न्यूजीलैंडर मानते हैं।

(Polynesion) जाति का खूब प्रभाव दिखायी देता है। पंद्रहवीं शताब्दी के पालीनेशियन असभ्य नहीं थे। वास्तव में इस समय पालीनेशियन संस्कृति अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में थी। पालीनेशियनों ने समस्त प्रशांत महासागर में विचरण कर अपनी संस्कृति का प्रचार किया था। उनके स्मारक प्रशांत महासागर के कई टापुओं में हैं जिनसे मालूम पड़ता है कि उनकी संस्कृति का बहुत ह्रास हुआ है। वे नक्षत्रों की सहायता से अपनी मजबूत नौकाओं में दूर दूर यात्रा करते थे ।

संसार की सभी जातियों में पालीनेशियन जाति के लोग सबसे ऊँचे और हृष्ट-पुष्ट रहे हैं, अभी भी हैं। वे बड़े शूर-वीर, बुद्धिमान और अच्छे वक्ता होते थे। वे पदवियों और मान-सम्मान के बड़े शौकीन थे और अपने नेताओं का बहुत आदर करते थे। स्त्री वर्ग को ऊँचा स्थान पालीनेशियन समाज में प्राप्त था। धनुर्विद्या भी पालीनेशियन जानते थे लेकिन युद्ध में कभी उसका प्रयोग नहीं होता था।

फीजी द्वीप समुदाय में पालीनेशियन और मेलानेशियन जातियों का संगम हुआ। इसी के फलस्वरूप आज की फीजियन जाति का जन्म हुआ। उस संम्मिश्रण के परिणाम-स्वरूप जिस संस्कृति का जन्म हुआ वह पालीनेशियन और मेलानेशियन दोनों संस्कृतियों से श्रेष्ठ है। फीजी, टोंगा, (Tonga) और समोआ (Samoa) के द्वीप एक त्रिभुज के आकार में बसे हैं। इन्हीं द्वीपों में मुख्यतः यह सांस्कृतिक सम्मिश्रण हुआ। प्रशांत महासागर में प्रवासियों की यह धारा पूर्व से पश्चिम की ओर बही और फीजी के पूर्वी भाग म पालीनेशियन तथा पश्चिमी भाग में मेलानेशियन संस्कृति का प्राधान्य रहा।

फीजियन लोग आठ-दस पीढ़ियों के पहले अपना उद्गम उन लोगों से बतलाते हैं जो फीजी के विटी लेवू (Viti Levu) नामक द्वीप के उत्तरी भाग में कौवाद्रा (Kauvadra) नामक पहाड़ के पास आकर बसे थे। इसी समुदाय के लोग फीजी द्वीप समुदाय के अन्य सभी भागों में जाकर बसे और आज जो राज-घराने फीजी में हैं वे इसी समुदाय के लोगों की संतानें हैं। यदि हम एक पीढ़ी को तीस वर्ष का मानें तो ३००वर्षों से अधिक पुराने ये लोग नहीं हो सकते। लेकिन फीजियनों की भाषा, समाज-व्यवस्था आदि जो योरोपियनों ने प्रथम बार पायी, वह इतने कम समय में बनी संस्कृति न थी। अस्तु। इस विषय में कई मत हैं।

फीजियनों की समाज व्यवस्था में छः श्रेणियां थीं। सबसे ऊंची श्रेणी में मुखिया (Chiefs) और सबसे नीची श्रेणी में मजदूर और साधारण लोग (Commoner) गिने जाते थे। व्यक्ति की श्रेणी हमारी जातियों की तरह जन्म से याने माता-पिता की श्रेणी पर निर्भर

करती थीं। फीजियन प्रथा के अनुसार सभी सामाजिक कार्य, बड़ी धूम धाम से, निश्चित तरीकों से और पुरानी रूढ़ियों के अनुसार होते थे। इन प्राचीन रूढ़ियों में थोड़ी सी गलती भी अक्षम्य थी; इन गलतियों पर दंगा होना, खून बहना, युद्ध होना तक बड़ी बात न थी। प्रत्येक महत्वपूर्ण अवसर के लिये एक भव्य आयोजन होता था। साधारण अवसरों के लिए भी आम जलसे होते थे। उदाहरण के लिए नये प्रधान का सिंहासनारूढ़ होना; महत्वपूर्ण मेहमानों का आगमन और स्वागत, जायदाद, भोज और पहली फसल के फलों का वितरण; जन्म, यौवनावस्था का प्रारम्भ, शादी, मृत्यु और अंतःक्रिया; युद्ध के लिये जाने और वापिस आने वाले योद्धाओं का स्वागत। युद्ध में काम आने वाली नौकाओं के बनते समय, उनकी प्रथम यात्रा के समय, मंदिरों या प्रधानों के मकानों के बनते समय प्राचीन परम्परा के अनुसार पूजा या उत्सव होते थे। इन उत्सवों के समय व्हेल मछली के दांतों का आदान प्रदान होता था। फीजी के लोगों का विश्वास था कि व्हेल के दांतों में कोई अद्भुत शक्ति रहती है। इन दांतों को टबुआ (Tabua) कहते थे। टबुआ (Tabua) जीवन और मरण का मूल्य; शादी, संधि और षड्यंत्र के प्रस्ताव; निवेदन और क्षमा; देवताओं से प्रार्थना, और दुखियों से संवेदना प्रकट करने के लिये आवश्यक माना जाता था। इन बड़े बड़े दांतों में तेल लगा पालिश कर चित्रकारी की जाती और भंजी हुई रस्सी बाँधी जाती थी। इस रस्सी के सहारे इनको रखते उठाते थे।

इन आम जलसों में यकोना (Yaqona) नामक पेय के बनाने और पीने का भी एक महत्वपूर्ण स्थान रहता था। पाइपर मेथेस्टीकम (Piper Methysticum) नामक जड़ से यह पेय बनाया जाता था। लकड़ी के बड़े बड़े पात्रों में यह पेय तैयार किया जाता था और नारियल के कटोरों में पिया जाता था। मुखियों के प्याले अलग रहते थे, उन्हें कुशलता से बनाया जाता था और मुखियों के सिवा अन्य सभी इन पात्रों के उपयोग से वर्जित थे। यकोना के तैयार करते समय कई प्रथाओं का पालन अनिवार्य था। काम की गति के अनुसार बीच बीच में ताली बजाना और परम्परागत गानों का उच्चार करना आवश्यक था।

फीजियन के अधिकांश जलसों की पृष्ठभूमि में धर्म रहता था। वास्तव में धर्म और जादू-टोना जीवन के प्रत्येक अंग में शामिल था। इनका प्राचीन धर्म आदिकालीन था जिसमें कुटुम्ब या कुल का एक देवता रहता है उसी के नाम से उसको संबोधन किया जाता है। सर्प और शार्क (Shark) नाम की बड़ी मछली की पूजा इसी धर्म के अंग हैं। फीजियन कई देवताओं और स्वामियों में विश्वास करते थे। उस काल के अन्य आदम लोगों की तरह फीजियन भी ऐसी घटनाओं को जिन्हें वे समझ न सकते थे दैवी, दानवी या जादू की घटना

मानते थे। समुद्र यात्रा के समय उचित दिशा की वायु के लिये, फलों की अच्छी फसल के लिए, युद्ध में विजय के लिये और बीमारी से छुटकारा पाने के लिये देवताओं की पूजा की जाती थी। देवताओं में सभी मानवी दुर्गुण और भाव रहते थे तथा वे दैवी बल के साथ दुर्गुण का उपयोग करते थे; यदि कोई सुन्दरी मर जावे तो लोग कहते थे कोई देवता उससे प्रेम करने लगा था; यदि किसी की पत्नी बीमार हो तो लोग कहते थे उस स्त्री के किसी रिश्तेदार की आत्मा उस स्त्री के पति से रुष्ट हो गयी; मनुष्यों की तरह देवता भी झक्की होते हैं, और उनकी सेवा में वही भेंट और चढ़ोत्तरी लगती है जो जाति के मुखियों के लिये। यदि उपयुक्त ढंग से पूजा और सेवा करने के बाद भी देवता ने अपना पार्ट अदा न किया तो पुजारी को इसका जवाब देना पड़ता था; उस देवता को युद्ध के लिये चुनौती तक दी जाती थी।

देवता दो प्रकार के थे—जन्म से पैदा हुए देवता, और बुजुर्गों तथा मुखियों के स्वरूप देवता; कुछ ऐसे देवता थे जिनको संपूर्ण फीजी में पूजा जाता था; सैकड़ों ऐसे भी थे जो राज्यों, जिलों, कुटुम्बों और मुखियों के व्यक्तिगत देवता थे। स्थानीय देवता व्यापक देवताओं से छोटे गिने जाते थे लेकिन लोगों पर स्थानीय देवताओं का अधिक प्रभुत्व था। व्यापक देवताओं में डीगई (Degai) नामक देवता सब से अधिक महत्व-पूर्ण माना जाता था। डीगई का निवास कौवाब्रा नामक पहाड़ की चोटी में एक गुफा में था। यह डीगई सर्प देवता जब अपनी गुफा में करवट लेता या हिलता तो भूकम्प होता बादल गरजते। डीगई को अपने भक्तों के काम काज से कभी कोई दिलचस्पी न रहती, उसका जीवन केवल खाने और सोने के सिवा अन्य कुछ भी न था।

डाकूवका (Daquwaka) नामक देवता शार्क मछली के रूप में बेनाउ द्वीप (Benau Island) में रहता था। डाकूवाका समुद्र का देवता था, मछुओं का देवता था, और सुन्दर स्त्रियों को चुराकर ले जाने के कारण वह व्यभिचार का देवता भी माना जाता था। डाकूवाका के सम्मानार्थ सभी शार्कों की वन्दना की जाती थी। शार्क का माँस खाना वर्जित था। मछलियों के जाल में शार्क आ जाता तो उसे छोड़ दिया जाता। जब नौकाएँ समुद्र के उस भाग में से जातीं जहाँ डाकूवाका का निवास माना जाता तो यकोना पेय और भोजन उसके लिए समुद्र में फेंका जाता।

पुजारियों का स्थान देवताओं और मनुष्यों के बीच था। देवता पुजारियों के मुख से बोलता और देवताओं को जो चढ़ोत्तरी दी जाती उसे पुजारी पाते और उसका उपयोग करते। इसकी प्रथा सीधी थी। अपनी भूलों के लिए प्रायश्चित्त करके भोज की तैयारी

होती और पुजारी को आमंत्रण दिया जाता। मुखिया और बुजुर्ग मंदिर में बैठते, भोज और व्हेल के दाँत समर्पण किये जाते। इसके बाद सब लोग बिलकुल शांत हो पुजारी की ओर एकटक देखते। कुछ क्षणों में पुजारी का एक अंग फड़कने लगता। देखते देखते उसके सभी अंग फड़कने लगते और सारा शरीर हिलने लगता। उसे मूर्छा आ जाती, आंखें चढ़ जाती, और स्थूल शरीर से पसीना बहने लगता। तब देवता बोलता। भक्तगण बड़े आदर से विनम्र हो पुजारी के भरे हुए बोल सुनते; पुजारी का फड़कना धीरे-धीरे कम होता, देवता बिदा हो जाता, पुजारी शांत हो स्वस्थ हो जाता। यदि देवता ने सफलता का संदेश सुनाया तो आनन्द, यदि उसने असफलता का संदेश सुनाया तो बड़े से बड़ा मुखिया भी इस चेतावनी को हल कर सकता। व्यक्तिगत और छोटी मोटी बातों में भी देवता की सलाह ली जाती; और इन मामलों में बिना किसी बड़े जलसे के पुजारी किसी भी उपयुक्त स्थान में "हिल" सकता। अकसर देवताओं को खाद्य और पेय विशाल अनुपात में समर्पित किया जाता; अन्य कीमती पदार्थ जैसे व्हेल दाँत, कपड़े और हथियार भी समर्पित किये जाते। खाद्य और पेय सामग्री की आत्मा को ही देवता ग्रहण करता; पदार्थों का ग्रहण तो पुजारी सहर्ष करते और देवता के भक्तों को भी उसका हिस्सा देते।

साधारणतया देवता मंदिर में ही बोलता, लेकिन वह प्राणियों, पेड़ों और कुछ निर्जीव पदार्थों में भी निवास करता था। पवित्र पत्थर कई जगह रहते, कई प्रकार के पुरा डंडों में देवता या किसी बुजुर्ग की आत्मा का निवास मान उनकी पूजा की जाती और कभी कभी आड़ी-टेढ़ी मूर्तियां पायी जातीं। लेकिन फीजियन मूर्ति पूजक बिलकुल न थे न मूर्ति जैसी कोई वस्तु उनके समय में थी। कई फीजियन आज भी पक्षी, प्राणी, मछली, सर्प, पेड़, पौधे आदि को पूज्य मानते हैं और उन्हें हानि नहीं पहुँचाते।

फीजियन आत्मा में विश्वास करते और यह मानते थे कि शरीर मृत होने के बाद भी आत्मा जीवित रहती है। लेकिन आत्मा के संबन्ध में भिन्न-भिन्न स्थानों में अलग-अलग विचार थे। मृत व्यक्तियों की आत्मा उनके रहने के स्थान में रात तक रहती फिर अपनी लम्बी यात्रा के लिये जाती। विधवाओं का गला घोंट दिया जाता ताकि उनकी आत्मा उनके स्वामी के साथ जा सके। बीमारी और पागलपन भूत-प्रेत के कारण होता और खाद्य के बगीचे भी उन्हीं के प्रकोप से सूख जाते। इन मामलों में जादू-टोना का शक रहता और लोग तुरन्त जादूगर का पता लगा उससे अधिक शक्तिशाली जादू का उपयोग कराते। किसी कुटुम्ब में बीमारी आवे या कोई प्रेत-पिशाच तंग करे तो भोज और

पकौना उसे देकर बिदा होने की प्रार्थना की जाती। यदि इस से सफलता न मिलती तो जादूगर को बुलाया जाता जो उपयुक्त क्रिया द्वारा मंत्र वगैरा पढ़कर हानि पहुंचाने वाली आत्माओं को भगाता और हितैषी आत्माओं को बुलाता।

स्वप्न और शकुन बहुत महत्त्व के थे। बीमारी का इलाज, युद्ध के लिये अस्त्र और प्रेतों पर अधिकार स्वप्न में प्राप्त हो सकते थे; कार्य करने की प्रेरणा या हत्या करने की प्रेरणा स्वप्न में मिल सकती थी। नये बनते हुए मकान की लकड़ी पर उल्लू बैठे या शाम को किसी घर के ऊपर उड़े तो मकान मालिक के लिये महान आपत्ति का द्योतक होता था; रात में किसी गांव पर से तोते उड़ें या बात-चीत करें तो अपशकुन होता था। समुद्री किनारे पर यात्रा करते समय हेरन (Heron) नामक पक्षी रास्ता काट जाते या जिस दिशा से यात्री आये हैं उस दिशा में जावे तो अवश्य बुरा मौसम जल्द आवे। किंगफिशर (Kingfisher) नामक पक्षी जो मछलियाँ पकड़ता है वह रास्ते में दिख जावे तो युद्ध के लिये जाती हुई सेना अवश्य वापस चली जाती। अपने एक धागे से लटकी हुई मकड़ी यदि फिर से ऊपर उठ जाय तो ठीक; यदि वह जमीन पर गिर पड़े तो किसी की मृत्यु अवश्य हो। यदि कोई मुर्गी मुर्गे की तरह बोल उठे, तो वहाँ हाजिर हों उनमें से एक अवश्य मरे।

फीजियन को जन्म से मरण तक अनेक बातों का पूर्ण ध्यान रखना आवश्यक था; कुछ बातें निषिद्ध थीं, कुछ अवश्य करने की थीं।

फीजियनों के कला-प्रेम का दिग्दर्शन मीक (Meke) नामक नृत्य और संगीत में, शस्त्रों की सजावट में, कपड़ों और पॉटरी में, घरों और गृहस्थी के बर्तनों में होता था। विभिन्न जिलोंमें विभिन्न ढंग के नृत्य और गान थे। नृत्य और गान के समय सभी दर्शक ताल देने के लिये तालियाँ बजाते, लकड़ी के घंटे बजाते और गानों में साथ देते। कोरस गाते समय नाचने वाले मकानों और पेड़ों के पीछे छिपे रहते; फिर एकाएक सामने आते, फिर गाना प्रारम्भ होता और नाचने वाले एक नेता के दिग्दर्शन में कतारों में आगे बढ़ते। इन नेताओं की बातों और अभिनय से दर्शकों में आनन्द की लहरें दौड़तीं। पूर्णता को पहुँची हुई अपनी नृत्य-कला को दिखा नर्तक सभी का मनोरंजन करते।

माओरियों की तरह फीजियनों ने लकड़ी-पत्थर के खुदाव का काम नहीं सीखा। लकड़ी के कटोरों में फीजियन टर्टल (Turtle) पक्षी और नौकाओं के चित्र बनाते, लेकिन इनमें खुदाई का बारीक काम न होता। शस्त्रों के ऊपर कौड़ियों से कई प्रकार के चित्र बनाये जाते। विद्वानों का मत है कि फीजियन की पार्थिव संस्कृति प्रशाँत महासागर की अन्य सभी जातियों की संस्कृति से उच्च थी। अमेरिका के एक जाति-विशेषज्ञों के दल का कथन है

कि फीजी के लोग पालीनेशियनों की सभी कलाओं में निपुण थे; इतना ही नहीं, उन से भी अधिक कलाएँ वे जानते थे। इन विशेषज्ञों के कथनानुसार फीजी प्रशांत महासागर के सभीद्वीपों का "कला-निकेतन" था। फीजी के कारीगर मकानों और नौकाओं के बनाने में अत्यन्त निपुण थे और प्रसिद्ध भी। कुछ नौकाएँ तो इतनी बड़ी होती थीं कि २०० आदमी और उनका भोजन और पानी लेकर वे काफी लम्बे समय तक समुद्र की सैर कर सकतीं थीं।

औरतें पाटरी बनाती थीं। विभिन्न जिलों के लोग अलग-अलग चीजें बनाने में विशेषज्ञ होते थे। छोटे छोटे गिलासों से लेकर बड़े बड़े बर्तन तक मिट्टी से बनते थे। भोजन पकाने के बर्तन, पानी रखने के बर्तन, थालियाँ और कटोरियाँ प्रायः एक निश्चित नाप के रहते थे और सदा उसी नाप से बनाये जाते थे; लेकिन इनमें सजावट और चित्रकारी अलग-अलग रहती थी। पाटरी के काम में भी फीजी के लोग अन्य लोगों से अधिक चतुर थे।

फीजियन की पोशाक अधिक न थी लेकिन कई लोग बड़े परिश्रम से पोशाक बनाते और सज-धज से रहते। मासी (Masi) या पेपर-मलबरी (Paper-mulberry) नामक पेड़ की छाल से कपड़े बनाये जाते। ये पेड़ १० फीट ऊँचे होते थे। जब पेड़ परिपक्व हो जाता तो उसे काटकर छीला जाता। हरे रंग की ऊपरी छाल निकालकर अन्दर की छाल को पानी में भिगोकर उसका कपड़ा बनाया जाता और धूप में सूखने दिया जाता। मुखियों के पहिनने की पगड़ी का पतला कपड़ा तथा परदों के लिये मोटा कपड़ा इसी छाल से बनाया जाता। स्वाभाविक रूप से इस कपड़े का रंग सफेद रहता; लेकिन इस पर रंग द्वारा चित्रकारी की जाती या धुआँ में रखकर रंग बदला जाता। कपड़े के सिवा कई प्रकार की चटाइयाँ बनायी जाती थीं। पंखे, रस्से और मछली पकड़ने के जाल भी बनते थे। बाँस और हड्डी की सुइयाँ तथा एक कड़ी लकड़ी की कंघियाँ बनाते थे। बाँसुरी भी ये लोग बनाते थे जो नाक से बजाते थे।

एक लकड़ी का पुल रीवा (Rewa) नामक जिले में था जो १४७ फुट ऊँचा था। जिसमें १३ खंभे थे, सबसे ऊँचा खम्भा पानी से १४ फुट ऊँचे था। सीगाटोका (Sigatoka) नामक घाटी में लोगों ने बाँध-बाँधकर इतनी लम्बी जमीन को सींचने का प्रबन्ध किया था जिसके समान उस जमाने में दूर-दूर तक कोई बाँध न था। रीवा डेल्टा के दो प्रवाहों को जोड़ती हुई एक लम्बी नहर भी इन लोगों ने बनायी थी। इससे मालूम पड़ता है कि एंजीनियरिंग में भी ये लोग चतुर थे।

फीजियन जायदाद को जीवन से अधिक मूल्य देते थे इसलिए छोटी-छोटी बातों में खून बह जाना मामूली बात थी। जिन्दा लोगों को जमीन में गाड़ देना भी अनहोनी बात न थी। कैनीबलिज्म (Cannibalism) याने मनुष्यों को खा जाना इतना अधिक था कि बहुत पुराने जमाने में फीजी का नाम ही कैनीबल आइलैंड (Connibal Islands) था। यूरोपियनों के आने के पहले फीजियन बड़े उदार थे लेकिन आत्म-रक्षा के हेतु उन्हें आगन्तुकों के साथ अपना व्यवहार बदलना पड़ा। यूरोपियन चंदन की लकड़ी फीजी से ले जाने के लिये जहाजों में आते, और उसे, चीन, भारत आदि स्थानों में बेच बेहिसाब फायदा उठाते। फीजियनों की औरतें वे चुराकर ले जाते, उनकी जमीन पर आक्रमण करते और हर तरह से शोषण करते इसलिए यूरोपियनों का आदर करने के लिए फीजियनों के पास कोई कारण न था। फीजियनों के चरित्र में अत्यन्त प्रशंसनीय सद्‌गुणों और अत्यन्त निन्दनीय बर्बरता का सम्मिश्रण देख यूरोपियनों को बहुत आश्चर्य हुआ। पहले आये हुए यूरोपियनों ने फीजियनों की बर्बरता ही देखी और उसीका वर्णन किया और इसी का प्रचार हो जाने के कारण फीजियनों के सद्‌गुण और उनकी उच्च संस्कृति से संसार अनभिज्ञ रहा। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि फीजी के लोग संसार से अलग, मानव-सभ्यता से हजारों मील दूर समुद्र में रहते थे; उनकी उन्नति में कई बाधाएँ थीं; और फिर यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि आज के यूरोपियनों के बर्बर पूर्वज फीजियनों के कुछ अमानुषिक रीति-रिवाजों का स्वयं उपयोग करते थे—विधवाओं को गला घोंटकर मार डालने की फीजियन प्रथा यूरोपियनों की पिशाच कहकर मनुष्यों को जला देने की प्रथा से अधिक बर्बर न थी।

आज भी फीजियनों में उनकी अधिकांश पुरानी बातें मौजूद हैं। उनमें माओरियों के सदृश शीघ्र परिवर्तन नहीं हो रहा है। आधुनिक शिक्षा का प्रचार अभी भी फीजियनों में बहुत कम है।

सुआ छोड़ने के पहले हमारे उस दिन दो कार्यक्रम और थे—एक फिर से गवर्नर से मिलना और दूसरा सार्वजनिक भोज।

अब हम फीजी की सारी स्थिति स्वयं देख चुके थे और वहाँ की परिस्थिति के संबन्ध में सब बातें भारतीयों से सुन भी चुके थे। हमने उन भू-भागों को देख लिया था जिन्हें भारतीयों ने गन्ने की खेती के लिये अथक परिश्रम से तैयार किया है। फीजियनों का अत्यधिक सीधापन और उनके जीवन का भी हम निरीक्षण कर चुके थे और हमें भी मालूम

हो गया था कि स्वार्थपरायण लोग उनका किस प्रकार उपयोग कर सकते हैं। हमने गवर्नर महोदय को अपने अनुभव की सारी बातें स्पष्ट रूप से कहीं। हमनेउन्हें कह दिया कि वहाँ के भारतीयों को फीजियनों से किसी प्रकार का झगड़ा करने की अपेक्षा हम भारतीयों को भारत वापस लौट जाने तक के लिये कहेंगे, पर हमने गवर्नर को यह भी बता दिया कि हमारे मत से झगड़ा भारतीयों और फीजियनों का न होकर उन स्वार्थपरायण लोगों का है जो दोनों को लड़ा अपना उल्लू सीधा करने की सदा इच्छा रखते हैं। अन्त में हमने गवर्नर से संकेतात्मक ढंग से यह कहा कि भारतीयों के पास जो जमीनें हैं उनके यहां की अवधि यदि किसी प्रकार भी नहीं बढ़ायी जा सकती तो भारतीयों को नयी जमीनें आबाद करने को दे दी जायँ और उन्होंने जो जमीनें आबाद करने में परिश्रम किया है उसका उन्हें वहाँ की सरकार हर्जाना दे दे जिस धन से वे नई जमीनें आबाद कर लें। यह बात गवर्नर से हम इसलिये कह सके कि हमें मालूम हो गया था कि उस द्वीप में ऐसी भूमि भी मौजूद है जो फीजियनों की नहीं है। गवर्नर महोदय ने बड़ी शांति और सहानुभूति से हमारी नयी बातों को सुना और हमें आश्वासन दिया कि इस विषय में जो कुछ वे कर सकते हैं करने का अवश्य प्रयत्न करेंगे।

रात को जिस होटल में हम ठहरे थे उसी में सार्वजनिक भोज था और इस भोज के पश्चात् अंग्रेजी में कुछ भाषण हुए जिनका उत्तर अंग्रेजी में मैंने ही दिया।

इसके बाद हमें फीजी के ब्राडकास्टिंग स्टेशन जाना पड़ा क्योंकि वे फीजी निवासियों के लिये मेरा १५ मिनिट का तथा श्री रमन और श्री बरुआ का तीन-तीन, चार-चार मिनिट का संदेश रिकार्ड करना चाहते थे। ब्राडकास्टिंग में जो कुछ कहा जाता है सदा लिख लिया जाता है जिससे बोलने के बीच में कोई गड़बड़ी न हो और ठीक समय बोलना समाप्त हो जाय। परन्तु यहाँ तीन दिन में पन्द्रह मिनिट का भाषण लिखने का अवकाश किसे मिला था अतः मैंने बिना लिखे ही रिकार्डिंग कराने का प्रयत्न किया। घड़ी मैंने सामने रख ली और बोल चला। मेरे दोनों साथियों श्री रमन और श्री बरुआ एवं सभी को मय मेरे स्वयं के आश्चर्य हुआ कि बिना एक सेकंड भी रुके, या किसी भी शब्द अथवा वाक्य के परिवर्तित किये पंद्रह मिनिट में मैं अपना कथन रिकार्ड करवा सका। बिना लिखे हुए ब्राडकास्ट करने के लिए ठीक समय के भीतर इस प्रकार की कोई चीज रिकार्ड कराना मेरा एक नया अनुभव था। और रिकार्डिंग के बाद जब मैंने उसे सुना तब मुझे जान पड़ा कि यदि मैं लिखता भी तो भी इससे अच्छा मैं और कुछ नहीं लिख सकता था। जब तक मेरा संदेश रिकार्ड हुआ तब तक श्री रमन और श्री बरुआ ने अपने अपने संदेश लिख डाले अतः

उन्हें तो रिकार्डिंग कराने में कोई कष्ट हुआ ही नहीं ।

इसके बाद फीजी की धारा सभा के पाँचों भारतीय सदस्यों से मिलने का समय नियुक्त था । यह मुलाकात कोई १२ बजे रात को समाप्त हुई ।

हमारा हवाई जहाज दूसरे दिन प्रातःकाल ६ बजे जाना था । अतः १२ बजे से ४ बजे तक चार घंटे सोकर नित्य कर्मों से निपट हम पाँच बजे तैयार हो गये । समुद्री एरोड्रोम बहुत दूर न था अतः कोई सवा पाँच बजे हम वहाँ पहुँच गये । इतने सवेरे भी अनेक भारतीय हमें पहुँचाने आये ।

प्लेन ठीक समय उड़ा और जब प्लेन उड़ा उस समय मुझे कभी पढ़ी हुई एक बात याद आ गयी । फीजी टापू वह जगह है जिसके बीच से 'ग्रीनविच मीन टाइम' नामक रेखा जाती है । लन्दन के समय से फीजी के समय में १२ घंटे का अन्तर है अतः अन्तर्राष्ट्रीय समय के अनुसार फीजी से पूर्व में अमरीका की ओर एक तिथि की तिथि गणना पीछे की ओर करना पड़ती है और पश्चिम में एक तिथि की तिथि गणना आगे की ओर । दृष्टांत के लिये समझ लीजिए दस तारीख लिखना या कहना है तो फीजी के पूर्व की ओर वही तारीख नौ तारीख रहेगी और पश्चिम की ओर दस तारीख । ग्रीनविच एक जगह है और मीन का अर्थ है मध्यवर्ती ।

जिस द्वीप में आने पर पूर्व और पश्चिम में एक तिथि का अन्तर हो जाता है, जो इतना छोटा होने पर भी कि सारे भूमण्डल के नक्शे में एक बिन्दु सा दिखायी देता है, प्रशांत महासागर का स्वर्ग कहलाता है, जिसे जान वेसली कोल्टर (John wesley coulter) ने अपनी पुस्तक 'फीजी' में सुदूर दक्षिण पूर्व का भारत कहा है, इस द्वीप से बिदा होते हुए मैंने उसे बार-बार प्रणाम् किया । फीजी के हमारे इतने सफल दौरे का श्रेय बहुत दूर तक भारतीय दूतावास के श्री भगतरामजी को है ।

३१

पण्डितजी के सुआ से आस्ट्रेलिया के सिडनी तक की यात्रा अब तक की इस दौरे की सारी हवाई यात्राओं से लम्बी यात्रा थी। सुआ से सिडनी पहुँचने में विमान को १४॥ घंटे लगते थे और इतनी लम्बी यात्रा में विमान केवल डेढ़ घंटे के लिये 'न्यू कैलीडोनिया' के टापुओं में से 'नौमिया' नामक टापू पर उतरता था। प्रशाँत महासागर के ये न्यूकैलीडोनिया नामक टापू एवं प्रशाँत महासागर के ही 'टाहिटी' नामक टापू फ्रांस के अधिकार में हैं और यहाँ फरासीसी बस्ती है।

हमारा हवाई जहाज ठीक समय नौमिया में उतरा और अब तक हम जहाँ जहाँ गये थे वहाँ से इस स्थान में कितना अन्तर है यह मालूम होने में हमें बहुत समय नहीं लगा। पहला अन्तर हमें विदित हुआ उस वक्त जब हमारी मोटर बस बाँई ओर से न चलकर दाहिनी ओर से चली। दूसरा फर्क हमें मालूम हुआ भाषा का, वहाँ के लोगों को अंग्रेजी में कुछ भी समझाने में कठिनाई पड़ती थी और अधिकांश बातें इशारों से करनी पड़तीं थीं और तीसरा अन्तर मालूम हुआ होटल में काम करने वाली रमणियों के व्यवहार से। इन फरासीसी छोकरियों का व्यवहार कितना अधिक मृदु था और इनके ओठों पर कैसी सुन्दर मुस्कराहट रहती थी।

होटल में कुछ खा पीकर हम फिर हवाई जहाज पर आ गये और फिर से उड़ कर जब वह सिडनी पहुँचा उस समय चाहे सिडनी में ६॥ ही बजे हों पर यथार्थ में सुआ से चल कर हम यहाँ १२॥ घंटों में न आकर १४॥ घंटों में पहुँचे थे, क्यों कि सुआ से सिडनी का समय दो घंटे पीछे था।

समुद्री एरोड्रोम पर भारतीय व्यापारी प्रतिनिधि श्री बख्शी और आस्ट्रेलियन सरकार के प्रतिनिधि हमारे स्वागत के लिये मौजूद थे।

"मैटाकॉम" नामक सिडनी के एक प्राइवेट होटल में हमें ठहराया गया। इस होटल के मालिक सचमुच बड़ेही सज्जन थे और इन्होंने मेरे शाकाहारी भोजन का जितना सुन्दर प्रबन्ध किया उतना अब तक कहीं नहीं हुआ था।

श्री बख्शी ने मुझे बताया कि 'भारतीय संस्कृति और गांधीजी' पर मेरे भाषण का प्रबन्ध आज रात को है और नाट्य शास्त्र पर कल तीन बजे तीसरे पहर ।

यद्यपि १४॥ घंटे की इस यात्रा से मै कुछ थक अवश्य गया था पर जल्दी से मुंह-हाथ धो और कुछ खा-पीकर ठीक ८ बजे मैं अपने भाषण के स्थल पर पहुँच गया । यद्यपि श्री बख्शी ने मुझे कह दिया था कि मैं कुछ विश्रामकर ८ बजे के स्थान पर साढ़े आठ बजे भी पहुँच सकता हूँ, पर समय की पाबन्दी मै न रखूं, मुझ से यह कैसे हो सकता था ? कुछ लोगों को घड़ी के अनुसार चलने में झुंझलाहट होती हैं पर मुझे यदि कभी घड़ी के अनुसार न चलने का मौका आ जाय तो उसमें झुंझलाहट होती है ।

कितना अच्छा समुदाय जमा हुआ था आज के आयोजन में। यहाँ के प्रधान मंत्री, चीफ जस्टिस, अन्य मंत्री, धारासभा के सदस्य, साहित्यिक, सभी प्रकार के लोग उपस्थित थे । आयोजन का रूप सभा का न होकर पार्टी का था; घूमना-फिरना, खाना-पीना, बात-चीत । घूमते-फिरते, खाते-पीते और बातें चलते हुए ही कोई ९ बजे एक सज्जन ने घोषणा की कि मैं अब भारतीय संस्कृति और गांधी जी पर बोलना शुरू कर रहा हूँ । घोषणा होते ही उपस्थित महिलाएँ और पुरुष मेरे चारों ओर जमा हो गये, कोई सोफों में और कुर्सियों पर बैठ गये, कोई उनके हत्थों पर और कोई खड़े ही रहे । खाना-पीना भी चलता रहा । इस प्रकार के आयोजन में बोलने का मेरा पहला अवसर था और मैंने यह सोचकर कि ऐसे अवसर पर लोग आमोद-प्रमोद की मनस्थिति में होंगे न कि भाषण सुनने की । अपना भाषण कोई बीस मिनिट में ही समाप्त कर दिया । पर जब मैंने अपना भाषण समाप्त किया तब अनेक व्यक्तियों ने मुझे कहा कि मै और अधिक क्यों नहीं बोला; उनके लिये वह इतना नवीन विषय था कि वे उस पर और बहुत सुनना चाहते थे । मेरे भाषण के पश्चात् कोई डेढ़ घंटे तक वह आयोजन और चला और इन डेढ़ घंटों मे अधिकांश चर्चा मेरे भाषण की बातों पर ही होती रही । मैंने देखा कि ऐसे आमोद-प्रमोद के वातावरण में भी सभी लोगों ने अत्यधिक ध्यान से मेरी बातें सुनी हैं और उन पर वे विचार कर रहे हैं । कई लोगों ने मुझे स्पष्ट शब्दों में कहा कि वे इसे मानते हैं कि इस त्रस्त संसार का त्राण गांधीजी के बताये हुए मार्ग से ही हो सकता है ।

जब मैं होटल पहुँचा उस समय साढ़े ग्यारह बज रहे थे । अब तक की इस सारी यात्रा में आज पहला दिन था जब मुझे थकावट मालूम हो रही थी । फीजी का लगातार तीन दिन का व्यस्त कार्यक्रम, चौथे दिन १४॥ घंटे की हवाई उड़ान और उसके बाद ही ३॥ घंटे का यह आयोजन और उसमें भाषण यदि मेरे सदृश मजबूत आदमी को भी थका दे तो

यह आश्चर्य की बात न होना चाहिये ।

दूसरे दिन तीन बजे तक कोई काम नहीं था । सिडनी यद्यपि मैं सरसरी तौर पर न्यूजीलैंड जाते हुए देख चुका था, पर आज बाजार में कुछ खरीदने की इच्छा से निकला। कुछ स्टोरों में मैं गया । ये स्टोर भी आकलैंड के स्टोरों के सदृश ही थे; वरन् उनसे भी कहीं बड़े । मुझे कहा गया कि बड़े दिन के निकट होने के कारण यहाँ की चहल-पहल भी और बढ़ गई है । यहाँ के एक स्टोर में मैंने आज एक नयी चीज देखी—यह था चलता हुआ जीना । आदमी चढ़ने वाले जीने की किसी भी सीढ़ी पर चढ़ जाते या उतरने वाले जीने की किसी भी सीढ़ी पर और सीढ़ियाँ चढ़तीं तथा उतरतीं । बिना अपने पैर चलाये सात-सात मंजिल तक वे पहुँच जाते और सात-सात मंजिल से उतर आते । विचित्र सी चीज थे ये जीने ।

तीसरे पहर तीन बजे मेरा नाटक पर भाषण था । आज के समुदाय में केवल ऐसे लोग आये थे जिन्हें इस विषय से केवल प्रेम ही नहीं था, पर जिनमें से अनेक विविध नाटकों में अभिनय कर चुके थे । अभी हाल ही में इन्होंने कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तल को अंग्रेजी में बड़ी ही सफलतापूर्वक खेला था । इस नाटक में जिन पुरुषों और महिलाओं ने अभिनय किया था उनका परिचय मुझे दुष्यन्त, शकुन्तला, कण्व, प्रियम्वदा आदि नामों से कराया गया । शकुन्तला तो सचमुच शकुन्तला सी ही दिखती थी । बहुत थोड़े से वस्त्र उसके अंगों पर थे अतः उसे देख उस काल की वस्त्र भूषा तक का स्मरण हो आता था ।

मेरे भाषण को अत्यधिक शाँति और तन्मयता से इन लोगों ने सुना और भाषण के पश्चात् इन्होंने मुझसे बहुत से प्रश्न भी पूछे । इस भाषण की लिखी हुई प्रति की यहाँ भी माँग हुई ।

कैनबरा हमारा विमान ९ बजे रात को जाता था । यह स्पेशल चार्टर्ड विमान था, क्योंकि कैनबरा कान्फरेन्स के तीस प्रतिनिधि इस विमान से कैनबरा जा रहे थे । इन तीस प्रतिनिधियों में भारतीय प्रतिनिधि मैं अकेला ही था क्योंकि श्री शाह न्यूजीलैंड से आस्ट्रेलिया आकर आस्ट्रेलिया के दूसरे प्रधान नगर मैलबर्न देखने चले गये थे और वहाँ से कैनबरा पहुँचने वाले थे तथा श्री वैंकटरमन और श्री बरुआ आस्ट्रेलिया के दृश्य देखने के लिये आज प्रातःकाल ही मोटर से कैनबरा रवाना हो गये थे ।

सिडनी से कैनबरा लगभग २०० मील है । हमारे प्लेन को वहाँ पहुँचने में केवल एक घंटा लगा । हम कोई १० बजे कैनबरा पहुँच गये । हवाई अड्डे पर आस्ट्रेलियन सरकार के प्रतिनिधियों के सिवा भारत के आस्ट्रेलिया के हाई कमिश्नर श्री दिलीपसिंहजी तथा

उनके मातहत सब लोग उपस्थित थे ।

"कैनबरा होटल" नामक होटल में हमें ठहराया गया और कल होने वाली परिषद के कार्यक्रम तथा समय की भी उसी समय हमें सूचना मिली । परिषद कल २।। बजे से थी ।

परिषद में भाग लेने के लिये अमेरिका से दो महाशय आये थे । इनके नाम थे—सीनेटर थियोडर फ्रेंसिस ग्रीन और नेटर होमर फर्ग्यूसन । इनके अतिरिक्त कालोनी के प्रतिनिधियों को छोड़ बाकी सब प्रतिनिधि बुलाये गये थे । कैनेडा के प्रतिनिधियों के सिवा शेष प्रतिनिधि आ भी चुके थे । कैनेडा के प्रतिनिधियों के न पहुँच सकने का कारण 'विन्डी वैलिंगटन' की 'विन्ड' थी । जब वे लोग वहाँ से रवाना होने वाले थे उस समय से इतनी ज्यादा तेज हवा चल रही थी कि हवाई जहाज का उड़ सकना संभव न था । हमारे अध्यक्ष सीनेटर रुबक भी इन्हीं लोगों में से थे और अब ये लोग कल रात को पहुँचने वाले थे; परन्तु इसके कारण परिषद अधिवेशन मुल्तवी नहीं किया जा रहा था जो उचित बात थी ।

३२

कैनबरा आस्ट्रेलिया की राजधानी है। छोटी सी जगह। आबादी कोई बीस हजार; और जो लोग कैनबरा में रहते हैं प्रायः सरकार से संबन्धित। कैनबरा में कुछ देखने योग्य नहीं है यह मानकर कान्फरेन्स के आरम्भ होने तक का समय मैंने लिखने पढ़ने में लगाने का तय किया, पर मेरे तीनों साथी घूमने के लिये अवश्य निकले। इन्होंने लौटकर मुझसे कहा कि कैनबरा में और तो सचमुच कुछ भी दर्शनीय नहीं है, पर मैं वहाँ की लड़ाई की यादगार (वार मेमोरियल) अवश्य देखूं। साथियों के इस सुझाव के कारण मैं इस यादगार को देखने गया। सचमुच में यह यादगार दर्शनीय है। यह यादगार गत युद्ध की नहीं सन् १४–१८ वाले युद्ध की है। भवन तो इसका भव्य है ही, पर विशेषता भवन में न होकर उसके भीतर जो चीजें रखी और सजायी गयी हैं उनमें है। सुन्दर से सुन्दर चित्रों में लड़ाइयों का चित्रण, स्वाभाविक से स्वाभाविक आदमकद मूर्तियों के समूह और उनके भी लड़ाइयों के दृश्य, बड़ी-बड़ी टेबिलों पर लड़ाई के नक्शे, सब कुछ दर्शनीय हैं। फिर सन् १४–१८ वाले युद्ध में जिन आयुधों का उपयोग किया गया था वे आयुध, यहाँ तक कि टैंक, एरोप्लेन आदि भी सजाये गये हैं।

इस स्मारक के निर्माण का निश्चय युद्ध-स्थल में हुआ। बुलकोर्ट (Bulle Court) के मैदान में आस्ट्रेलियन सैनिकों ने, अपने दिवंगत साथियों की यादगार में यह स्मारक बनाने का पुण्य निश्चय किया और उन्होंने इसका निर्माण कराया। यह इस स्मारक की अद्वितीयता है कि न तो वह युद्ध का दिग्दर्शन कराने वाला अजायब घर है, न युद्ध का गुणगान करने वाला केन्द्र; वह तो एक पुनीत स्मारक है जिसका आदि से अन्त तक निर्माण आस्ट्रेलिया के सिपाही, नाविक और हवाई सैनिकों ने किया। प्रथम महायुद्ध १९१४–१८ के बाद ब्रिटेन, ब्रिटिश डोमिनियन और मित्र राष्ट्रों की सरकारों ने कई बहुमूल्य स्मारक इस संस्था को भेंट किये हैं। मृत सैनिकों के मित्रों और कुटुम्बियों से भी अनेक वस्तुएँ इस संस्था को प्राप्त हुई हैं। इन भेंटों से इस संस्था की महत्ता कई गुनी बढ़ गयी है।

आस्ट्रेलिया के इस महान स्मारक में प्रवेश करते ही दर्शक को एक अत्यन्त अगाध और अविनाशी आनंदानुभव होता है। प्रवेश मार्ग के बाद बड़ा सुन्दर चौक है जिसमें परम शांति प्रदान करनेवाला बाग है और विचार-कुंड (Pool of Reflection) नामक बड़ा चित्ताकर्षक तालाब। इसके आगे बड़ी लम्बी स्मृति-दालान जिसके दोनों ओर दीवालों पर दिवंगत बहादुरों के नाम अनश्वर ढंग से अंकित हैं। इस स्मारक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण विभाग हैं—

(१) समुद्री सेना विभाग

(२) गैलीपोली (Gallipoli) विभाग

(३) पैलेस्टाइन विभाग

(४) वायुयान विभाग

(५) चिकित्सा विभाग

(६) फ्रांस और बेल्जियम विभाग

(७) वर्दी और पारितोषक विभाग

(८) तोप विभाग

(९) बृहद् शस्त्र, विशिष्ट युद्ध-कला-प्रदर्शनी और टैंक विभाग

इस यादगार को देखकर मेरे मन में उठा कि गांधीजी की जो यादगार हम बनाना चाहते हैं, क्या ही अच्छा हो यदि वह भी इसी प्रकार उनके जीवन तथा उस समय के भारतीय इतिहास से संबन्ध रखने वाली मूर्तियों, चित्रों, नक्शों आदि के सहित बन सके। इस यादगार को देखकर तो मैं इस मत पर पहुँचा हूँ कि गांधीजी की यादगार बनाने के लिये हम जिन शिल्पकारों को नियुक्त करें उन्हें पहले सारे संसार की मुख्य-मुख्य यादगारों को देखने के लिये भेजना चाहिये और इन सब यादगारों को देखकर वे गांधीजी के यादगार की योजना बनावें।

न्यूजीलैंड के नैसर्गिक दृश्यों के सिवा इस यात्रा में हमने जो कुछ देखा था उन सबमें आस्ट्रेलिया की लड़ाई की इस यादगार का प्रथम स्थान है, यह मैं मुक्त कंठ से कह सकता हूँ।
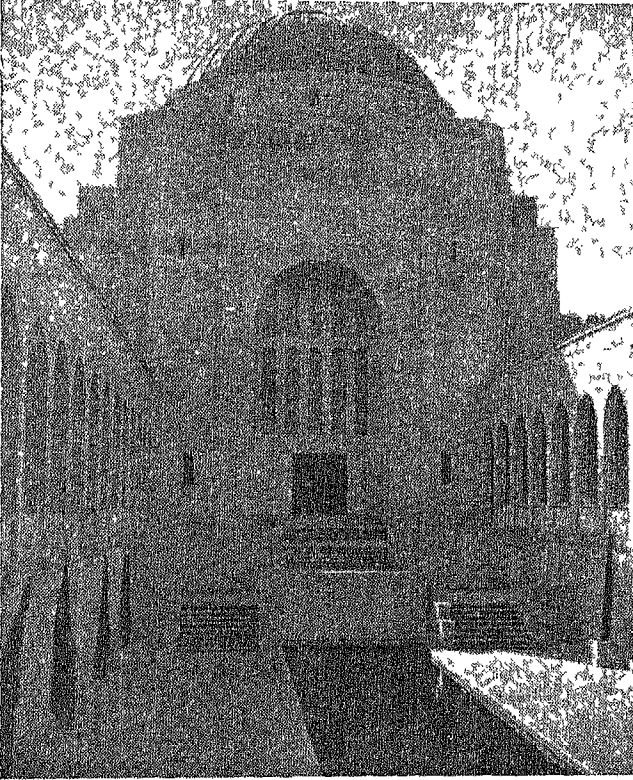
आस्ट्रेलिया के केनीबरा में लड़ाई की यादगार का भवन
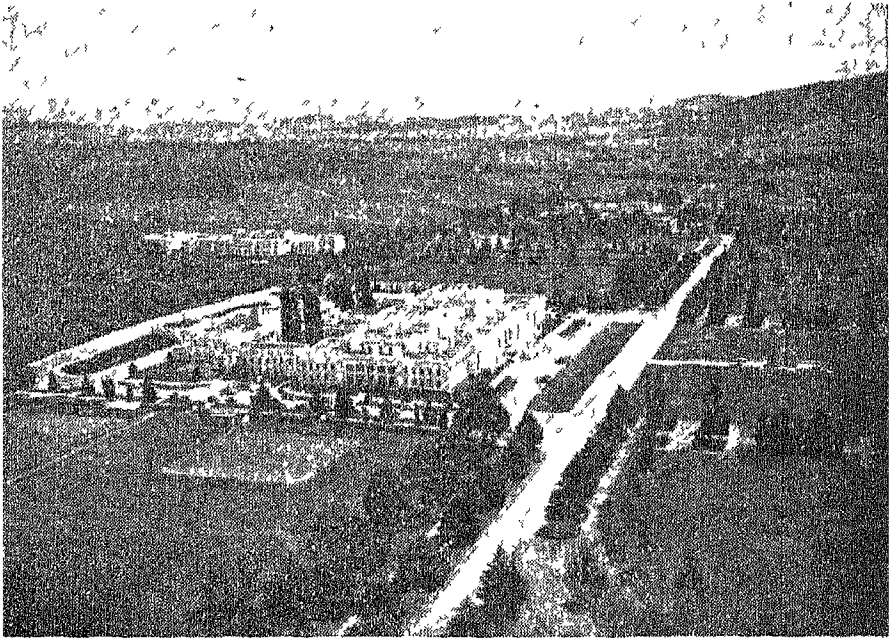
आस्ट्रेलिया के केनीबरा की सरकारी इमारतें

३३

कैनबरा की परिषद ता० १० दिसम्बर को ठीक समय २॥ बजे आरम्भ हो गयी।

न्यूजीलैंड और कैनबरा कान्फरैन्स का अन्तर हमें उस परिषद के प्रारम्भ होते ही ज्ञात हो गया। न्यूजीलैंड की परिषद में सब देश बराबर के हैं यह जान पड़ता था और लड़ाई में सुरक्षा कैसे की जाय इस पर तथा अन्य भी अनेक महत्वशाली विषयों पर विचार विमर्श हुआ था। पर कैनबरा में यह बात नहीं थी। कैनबरा में तो सबसे प्रधान स्थान था अमरिका के दो प्रतिनिधियों का, चाहे अन्य देश कितने ही महत्वशाली क्यों न हों और चाहे अन्य देशों के प्रतिनिधियों की संख्या भी कितनी ही अधिक क्यों न हो। अमरीका के प्रतिनिधियों के बैठने का स्थान सबसे प्रथम था, इंग्लिस्तान के प्रतिनिधियों से भी पहले और वे सबसे ऊँचे स्थान पर बैठाये गये थे, इतना ही नहीं, हर देश के प्रतिनिधि अपने भाषण में अमरीका की प्रशंसा ही नहीं उनकी खुशामद करता हुआ, अमरीकन नीति की हाँ में हाँ मिलाता था, इंग्लिस्तान के प्रतिनिधि सबसे अधिक। और फिर जिस विषय पर कैनबरा में वाद विवाद हुआ वह लड़ाई से सुरक्षा अथवा अन्य कोई विषय नहीं, लड़ाई आक्रमणकारी लड़ाई थी। लड़ाई की तैयारी बड़े से बड़े परिमाण में सब देश करें, अमेरिका का इशारा पाते ही बिना स्वयं कुछ भी समझे बूझे उस लड़ाई में आँखें बंदकर कूद पड़ें। लड़ाई ही सबके दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न हो और हर बात में अमरिका के इशारे पर यदि आवश्यकता हो तो लोग नहीं, सारा देश नंगे होकर नंगा नाच नहीं, नग्न महाताण्डव करे। जो यह न करे वह शांति का उपासक नहीं, जो इस पर आलोचनात्मक विचार तक करना चाहे वह संसार द्रोही, बुजदिल, निकम्मा। यह कैनबरा कान्फरैन्स का संक्षिप्त वर्णन है।

कान्फरैन्स का उद्घाटन आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री श्री मेनजीज ने किया। उसके पश्चात् हर देश के प्रतिनिधिमंडल के नेताओं के भाषण हुए। आज मेरा भाषण यहाँ जरा भी पसन्द नहीं किया गया। भाषण की भाषा, बोलने की प्रणाली इन सब बातों में कोई दोष नहीं, पर भाषण में जो कुछ कहा गया वह भारतीय प्रतिनिधि मंडल को छोड़ अन्य किसी को पसन्द नहीं आया। मेरे कथन का सारांश था कि भारत युद्ध नहीं शांति

चाहता है और झगड़ों को परस्पर वार्तालाप द्वारा निपटाना चाहता है। भारत की यही परम्परा रही है, यही गांधीजी ने हमें सिखाया है और यही हमारे प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू तथा भारत सरकार की नीति है। मैंने यह भी कह दिया कि यदि चीन को यू० एन० ओ० में ले लिया जाता और ३८वीं रेखा को पार न किया जाता तो आज जो परिस्थिति उत्पन्न हुई है वह न होती। कैनबरा कान्फरैन्स के वायुमंडल में भला ऐसा भाषण किसी को रुचिकर कैसे हो सकता था?

दूसरे दिन जब श्री शाह ने भी इन्हीं बातों को अन्य ढँग से कहा तब तो भारत के प्रति अप्रसन्नता और बढ़ गई।

जो कुछ हो, भारत का जो दृष्टिकोण है उसे भारतीय प्रतिनिधि मंडल ने बड़े मृदु शब्दों में पर सर्वथा स्पष्ट रूप से रखने का प्रयत्न किया जो उसका कर्तव्य था।

कैनबरा में पहले दिन २॥ बजे दिन से तीसरे दिन १ बजे दिन तक इसी एक विषय पर वादविवाद होता रहा। भारत के प्रतिनिधियों को छोड़ शेष प्रतिनिधियों की मुद्रा, उनके भाषण आदि सब से एक ही बात जान पड़ती थी कि उन्हें लड़ाई का हिस्टीरिया हो गया है। और उन्हें आज दुनिया में ही नहीं, अपने भी आगे-पीछे, दायें-बायें, ऊपर-नीचे, सर्वत्र लड़ाई, केवल लड़ाई दीख पड़ रही है।

कैनबरा कान्फरैन्स १२ तारीख को समाप्त हुई, पर श्री शाह और मैं तारीख ११ की शाम को ही प्लेन से सिडनी लौट आये क्योंकि निश्चित कार्यक्रम के अनुसार उसी दिन रात को हम हिन्देशिया जा रहे थे।

और जब हम कैनबरा से सिडनी प्लेन में लौट रहे थे उस समय कितनी बातें मेरे मन में उठीं।

आज कामनवैल्थ में अमरीका के शामिल न रहने पर भी वही कामनवैल्थ का सच्चा नेता है। शान्ति के नाम पर, शान्ति की स्थापना के लिये युद्ध का यह महान् आयोजन, यह महान् अनुष्ठान किया जा रहा है। समर पहले भी था, पर उस समर में वीरता थी, बाहु-बल का स्थान था, आज के युद्ध को क्या उस काल के युद्ध की संज्ञा दी जा सकती है? आज का युद्ध था हत्याकाण्ड, बड़े से बड़ा हत्याकाण्ड। उस काल के रण को केवल बुरा ही नहीं, अच्छा भी माना जाता था, क्यों कि उसमें व्यक्तिगत वीरता भी जो रहती थी, आज के युद्ध को कोई अच्छा नहीं कहता, सब भरपेट उसकी निंदा करते हैं, फिर भी प्रवृत्त उसी में हैं। बारूद ईजाद होने के बाद समर के जो साधन बनने लगे, उन में वीरता धीरे-धीरे कम होती गयी। विस्फोटक पदार्थ का आरम्भ बारूद से हुआ और विस्फोटक

पदार्थ में आज जगत् पहुँच गया है परमाणु बम तक। यदि मानव की हिंसा वृत्ति और अधिकार लिप्सा ऐसी ही रही तो यह भी असम्भव नहीं कि कोई ऐसे विस्फोटक पदार्थ का निर्माण हो जिससे हमारी इस पृथ्वी तक के टुकड़े-टुकड़े होकर सारी सभ्यता, सारी संस्कृति, अरे ! मानव तक का पूर्ण विनाश हो जाय। और यदि ऐसा हुआ तो इस नाश का जिम्मे-दार कौन होगा--मानव, सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना, जिसमें पशुत्व के साथ देवत्व भी निवास करता है यह कहा जाता है ! पर इस प्रलय के बचाने का भी कोई उपाय है ? बहुत सोचने पर भी मुझे हिंसा से सामना करने के लिये अहिंसा के अतिरिक्त और कुछ भी नजर न आया। गांधीजी का मार्ग ही इस संसार को बचा सकता है। पर उस पर संसार को चलाने के लिये गांधी जी के सदृश महापुरुषों की भी तो आवश्यकता है ? काश गांधीजी कुछ वर्ष और जी सकते ! बार-बार मेरे मष्तिस्क में यही वाक्य चक्कर काटने लगा और फिर मुझे इंग्लिस्तान द्वारा अमरीका की खुशामद याद आते ही ब्रिटिश साम्राज्य के पुराने दिन याद आ गये जिन्हें मैंने स्वयं देखा था। इस राज्य में भौगोलिक दृष्टि से सूर्य नहीं डूबता था। यही नहीं, कैसी शान शौकत भी थी इसकी। सन् १९११ में सम्राट पंचम जार्ज के राज्याभिषेक का जो दरबार दिल्ली में हुआ था वह ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्णोत्कर्ष का शायद सबसे बड़ा आयोजन, सबसे बड़ा दृश्य था। मैं भी उस दरबार में गया था। उस काल के न जाने कितने दृश्य मुझे याद आये। वही इंग्लिस्तान आज अमरिका का चरण-चुंबन कर रहा था। मुझे संस्कृत की एक उक्ति का एकाएक स्मरण आ गया।

"नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण"

तो चाहे साम्राज्य हो, चाहे कुटुम्ब, चाहे व्यक्ति, एकसा समय सचमुच किसी का नहीं रहता।

सिडनी पहुँचते-पहुँचते मैं न जाने इसी प्रकार के कितने विचारों में डूबता और तैरता रहा।

जब हम लोग सिडनी पहुँचे तब मालूम हुआ कि पोर्ट डारविन का मौसम खराब होने से आज रात को प्लेन ही नहीं जायगा। रात को हवाई जहाज की यात्रा से मैं पहले घब-राता था, पर आज उससे छुटकारा मिलने पर मुझे हर्ष न होकर उल्टा खेद हुआ। अब मैं जल्दी से जल्दी घर पहुँचना चाहता था। यहाँ तक कि कैनबरा से लौटते हुए मुझे इस बात पर भी खेद हुआ था कि मैंने हिन्देशिया आदि जाने का कार्यक्रम बना डाला। कैनबरा कान्फरैन्स के पश्चात् जिस काम को मैं आया था वह समाप्त हो चुका था। भारत और घर के लोगों को छोड़ इतनी दूर आने में मुझे एक दो दिन बड़ा अटपटा भी लगा था। मेरी

इस मनस्थिति का वर्णन पीछे किया भी जा चुका है। काम समाप्त होते ही मैं फिर जिसे अंग्रेजी में 'होमसिक' कहते हैं, वह हो गया था 'घर के लिये आतुर'। यद्यपि मैं वर्षों जेल में रहा हूँ, यात्रा भी कम नहीं करता, घर वालों से अलग भी बहुत रहता हूँ पर इतने पर भी मैं समझता हूँ कि सार्वजनिक प्राणी की अपेक्षा मैं घरेलू जीव अधिक हूँ।

हाँ, कैनबरा का हाल एक बात और कहे बिना तो अधूरा ही रह जायगा। भारतीय प्रतिनिधि श्री दिलीपसिंह भी एक आदर्श प्रतिनिधि हैं। उन्हें अपने वंश से भी परम्परा प्राप्त हुई है, शिक्षा प्राप्ति में उन्होंने उसे बढ़ाया और अधिक बढ़ाया और अपने क्रिकेट के खेल में। उनकी मिठास, उनकी सौजन्यता, आदि ने इन गुणों में मिलकर उनको एक आदर्श दूत बना दिया है। उनकी पत्नी इस सोने में सुगन्ध हैं। मैंने सुना, वे यहाँ बड़े ही लोकप्रिय हैं। जो व्यक्ति अपने नौकरों तक की बीमारी में टहल करता हो, स्वयं बाजार जाकर उनको दवा लाता हो, वह लोकप्रिय न होगा तो होगा क्या ? हमारी भी इस दम्पति ने बड़ी खातिर की, जिसमें सबसे बड़ी खातिर थी बड़ा अच्छा खाना देना। इस दूतावास के अन्य व्यक्ति भी बड़े अच्छे हैं।

३४

सिडनी से हिन्देशिया जाने का हमारा कार्यक्रम तारीख ११ की रात को था और ता० १२ की दोपहर से ता० १७ के प्रातःकाल तक हिन्देशिया में ठहर वहां के प्राचीन सांस्कृतिक स्थानों के देखने का, परन्तु ता० ११ की रात को ही नहीं ता० १४ के प्रातःकाल तक हम सिडनी नहीं छोड़ सके। इसका पहला कारण तो यह हुआ कि पोर्ट डारविन में बड़ा भारी तूफान आ गया और तूफान में हवाई जहाज का पोर्ट डारविन में उतर सकना खतरे से खाली नहीं था। डारविन और सिडनी के बीच के तूफान को हम न्यूजीलैंड जाते हुए भी देख चुके थे। दूसरे जब यह नैसर्गिक तूफान समाप्त होने को आया तब सिंगापूर के मानवों ने दंगा कर सिंगापूर में मानवी तूफान को खड़ा कर दिया। इन तूफानों का नतीजा हमें भी भोगना पड़ा। ता० १२ की दोपहर के बदले हम जकारटा ता० १५ के प्रातःकाल पहुँचे। ता० १५ के प्रातःकाल से ता० १७ के प्रातःकाल तक हिन्देशिया में कुछ भी देख सकना असंभव था। आगे और कुछ दिन ठहरने का प्रश्न इसलिये नहीं उठता था कि भारतीय संसद का अधिवेशन ता० २० दिसम्बर या उसके १, २ दिन बाद समाप्त हो रहा था और मुझे दिल्ली से सूचना पर सूचना मिल रही थी कि अधिवेशन समाप्त होने के पहले या उसके समाप्त होते होते मुझे इस प्रतिनिधि मंडल का नेता होने के कारण दिल्ली अवश्य पहुँच जाना चाहिये, क्योंकि एक तो भारतीय संसद के सदस्य इस प्रतिनिधि मंडल के कार्य के संबन्ध में कुछ सुनना चाहते हैं, दूसरे हमारे प्रधान मंत्री श्री नेहरू लन्दन जा रहे हैं अतः उनसे भी मुझे जल्दी से जल्दी मिलना आवश्यक है। भारतीय संस्कृति से दिलचस्पी होने के कारण मैं हिन्देशिया के स्थानों को देखने के लिये बड़ा उत्सुक था और न्यूजीलैंड जाते हुए हिन्देशिया घूमने का मैंने भारतीय दूतावास के प्रतिनिधि की सलाह के अनुसार एक कार्यक्रम भी बनाया था। यद्यपि कैनबरा कांफ्रेन्स के बाद मैं 'होमसिक' हो गया था फिर भी हिन्देशिया जा सकता तो मुझे हर्ष ही होता, परन्तु उपर्युक्त कारणों से मुझे इस लोभ का संवरण कर सिडनी से सीधे कलकत्ता आने का निश्चय करना पड़ा। और जब हिन्देशिया में कुछ देखने की संभावना न थी तथा कलकत्ता सीधे आना था तब मैंने

जल्दी से जल्दी कलकत्ता पहुँचना उचित समझ ता० १९ के बदले ता० १६ को ही कलकत्ता पहुँचने का कार्यक्रम बनाया। जहां तक मेरे अन्य साथियों का संबन्ध था—श्री सिधवा तो बहुत पहले भारत पहुँच चुके थे, श्री शाह बंबई जाना चाहते थे और उन्हें ता० १९ के पहले सिंगापूर से बम्बई कोई वायुयान न मिल रहा था। श्री वेंकटरमन चाहे एक ही दिन को क्यों न हो, हिन्देशिया ठहरना चाहते थे और श्री बरुआ तो मौजी जीव थे ही, उन्होंने १५ दिन हिन्देशिया में ठहरने का तय कर लिया था। अतः जकारटा में मेरे सब साथियों का और मेरा साथ छूट गया और मैं अकेला ही आगे बढ़ा।

यह मानव मन कैसा अद्‌भुत है इसका मुझे फिर एक अनुभव हुआ। न्यूजीलैंड आते हुए इस अकेलेपन के कारण मैं कितना व्यथित था, पर आज इस अकेलेपन का मेरे मन पर जरा भी प्रभाव न था। हिन्देशिया न जा सकने का मुझे दुख भी हुआ था, पर वह भी मैं बड़ी जल्दी भूल गया। मेरे शरीर के भारत पहुँचने के कहीं पहले मेरा मन भारत पहुंच गया था। वहां फिर से माता जी के दर्शन होंगे, पत्नी से मिलूँगा, लड़के लड़कियों, बहुएं दामादों पौत्र पौत्रियों, मित्रों साथियों सब से भेंट होगी। पुनः उस पुण्य भूमि, उस सुजला सुफला शस्य श्यामला धरा के दर्शन होंगे। कितना हर्ष होगा मुझे भारत पहुँचकर और इन सब बान्धवों से मिलकर तथा स्वर्गादपि गरीयसी जन्म भूमि को देखकर, कितने ये सारे बान्धव हर्षित होंगे मुझसे मिलकर और किस प्रकार मेरी जन्मभूमि मुस्करायगी मुझे विदेशों में जो ऐसी सफलता मिली है इस पर। नेताओं को, साथियों को, जनता को जिन्होंने मुझे बड़ी बड़ी आशाओं और आकांक्षाओं से बड़े बड़े समारोह कर इतनी दूर भेजा था, सभी को तो मेरे लौटने से और जो कुछ भारतीय प्रतिनिधि मंडल कर सका उस सब के सुनने से संतोष होगा। इन भावनाओं से मेरा मन ओतप्रोत भरा हुआ था और इन भावनाओं के कारण मैं सर्वथा भूल गया अपने अकेलेपन को, मैंने एकदम विस्मृत कर दिया हिन्देशिया न जा सकने के दुःख को। एरोप्लेन की जगह कहीं राकेट होता तो इस समय उस में बैठ कर मैं भारत लौटता। मन के वेग के सदृश कोई अन्य वाहन होता तो उसका मैंने उपयोग किया होता। एरोप्लेन की चाल भी मुझे धीमी अत्यन्त धीमी जान पड़ने लगी। सिडनी से कलकत्ता पहुँचने में इसे कितना अधिक समय लगता है ? बार-बार यह जमीन पर उतर उतर कर इतना समय आखिर नष्ट क्यों करता है ? कितना धीरे धीरे चलता है यह कि सिडनी से कलकत्ता सात हजार मील की यात्रा में अढ़ाई दिन ! कितना अधिक समय है यह ओह ? मानव इतना प्रयत्न करने पर भी अब तक केवल छकड़ा गाड़ी से लेकर एरोप्लेन तक ही पहुंच सका। कितना श्रम, कितना धन खर्च हुआ, कितनी जानें गयीं

और प्रगति बस इतनी ही कि छकड़ा गाड़ी से एरोप्लेन। सात हजार मील की यात्रा अढ़ाई दिन में।

और जब मैं सिंगापुर बिना किसी घटना, कष्ट या 'बंपिंग' के ता० १५ की दोपहर को पहुँचा तो मैंने देखा कि सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन हो गये हैं। भूमध्यरेखा के दक्षिण में उत्तरायण का ठीक मध्य था और जब था दक्षिणायन का मध्य। महीने, पक्ष, सप्ताह कुछ भी नहीं लगे थे भगवान भास्कर को उत्तरायण के मध्य से एकदम दक्षिणायण के मध्य में आने में। एक ही दिन में आदित्य उत्तरायण से एकदम दक्षिणायन में आ गये थे। आज सायंकाल की संध्या से ही मैंने संध्या का संकल्प पुनः परिवर्तित करने का निश्चय किया।

सिंगापुर में तस्वीर उतारने का कैमरा, फाउन्टेनपैन, चश्मे के फ्रेम आदि चुंगी के महसूल न रहने के कारण बहुत सस्ते मिलते हैं यह मैंने सुना था अतः भारतीय दूतावास के बैरिस्टर श्री रेगी को साथ लेकर मैं कुछ खरीद करने बाजार गया। दंगे के कारण यहाँ लोग बड़े शंकित से थे और यद्यपि कुछ दूकानें खुल गयीं थीं तथा परिस्थिति अब काबू में आ गयी थी तथापि ७ बजे शाम से करफ्यू लगने वाला था, अतः खरीद के काम को मैं जल्दी समाप्त कर लेना चाहता था; इसलिये मैंने आज लंच का मोह भी छोड़ संध्या के भोजन तक उपवास करने की ठानी। सिंगापुर की परिस्थिति के कारण कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि बाजार में घूमना कुछ बहुत अच्छी बात न होगी, पर मुझ पर इसका कोई असर न पड़ा। इसका कारण था। मैं न जाने कितने इस प्रकार के हिन्दू-मुस्लिम दंगे देख चुका था; उन दंगों के समय लोगों के सहायतार्थ जबलपुर के उन क्षेत्रों में घूम चुका था जहाँ ये दंगे होते थे। हाँ, इस समय मुझे उन दंगों के कुछ दृश्य अवश्य स्मरण आये। कैसे पागल हो जाते थे लोग इन दंगों के समय! व्यक्तिगत शत्रुता किसी की किसी से न होने पर भी किसी का किसी एक विशेष समुदाय का होना और किसी का दूसरी विशेष समुदाय का, एक दूसरे को लड़ा देने के लिये, अरे एक दूसरे की जान तक लेने के लिए काफी होता था। भारत के उन दंगों के मूल में जो साम्प्रदायिकता थी उसने भारत का विभाजन तक करा डाला। और जब इस विभाजन की बात मेरे मन में आयी तब मैं सोचने लगा कि यदि हमें आतुरता ने प्रेरित न किया होता और हम कुछ धैर्य से काम लेते तो शायद देश का विभाजन भी न होता और हम स्वतंत्र भी हो जाते। यह विभाजन—ओह! यह विभाजन ही हमारे इस समय के प्रधान अन्न कष्ट, शरणार्थियों की समस्या, काश्मीर युद्ध, न जाने कितने कष्टों और समस्याओं की जड़ था। जो कुछ हो, अब तो वह हो ही

चुका था। और वही दंगा आज सिंगापुर में हो रहा था। न जानें यहाँ यह वृत्ति आगे चलकर क्या करायेगी, मैं सोचता-सोचता अपनी चीजें खरीदने लगा।

खरीद समाप्त कर जब मैं अपने होटल को लौट स्नानादि से निवृत हो संध्या के खाने की प्रतीक्षा कर रहा था, क्योंकि दिन भर कुछ न खाने के कारण मुझे काफी भूख लग आयी थी तब भारतीय दूतावास के श्री थान पहुँचे और उन्होंने मुझे जो संवाद सुनाया उस से मैं एकदम स्तब्ध रह गया।

यह संवाद था, सरदार पटेल की मृत्यु का। कुछ देर तक तो मेरी समझ में ही न आया कि क्या किया जाय। जब मन कुछ सोचने की अवस्था में आया तब एक पर एक विचार मन में उठने लगे। स्वतंत्र होते ही हमने अपनी सबसे महान विभूति महात्मा गांधी को खोया। वे रहते तो क्या यह कन्ट्रोल, भ्रष्टाचार इत्यादि देश में रह पाते और संसार की शाँति के लिये भी वे न जाने और क्या-क्या करते ? इस समय संसार, हमारा देश और हमारे देश की एकमात्र संगठित राजनैतिक संस्था कांग्रेस बड़ी ही नाजुक परिस्थिति में है। हमारे देश के दो ही कर्णधार थे जो इस मझधार में देश की नाव को खे रहे थे। मैं तो कहूँगा कि दोनों मिलकर एक थे। एक में जो कमी थी उसे दूसरा पूरी करता था। नेहरूजी की यदि अत्यधिक व्यापक दृष्टि थी, उस दृष्टि के कारण उनमें यदि सूझ-बूझ (Vision) थी, उसके कारण उनका यदि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान था तो सरदार पटेल में संगठन शक्ति थी व्यक्तियों की पहचान थी, परिस्थिति का अध्ययनकर उसका सामना करने का असीम बल था; इसी के कारण तो वे भारत के लौह-पुरुष कहलाते थे। ऐसे समय जब संसार, देश और कांग्रेस की यह परिस्थिति थी; ऐसे समय जब भारत के आम चुनाव इतने समीप थे; सरदार पटेल का हमारे बीच से उठ जाना। अब क्या होगा यह सोच एक बार तो मुझे चक्कर सा आ गया।

एक समय ऐसा था जब सरदार सा० मुझ से अप्रसन्न हो गये थे। वह वक्त भी मुझे याद आया, पर आज मैं उनके विश्वास पात्रों में एक था। मुझे मालूम हुआ था कि राजर्षि टंडनजी ने जब मुझे कांग्रेस की कार्य समिति में रखा तब उस में सरदार साहब का भी हाथ था। मेरा कुछ ऐसा स्वभाव है कि जब तक दूसरी ओर से मैं समीप न खींचा जाऊ तब तक उस ओर मैं स्वयं नहीं खिच पाता, इसी लिये बिना बुलाये या बिना कोई काम हुए मैं किसी के पास नहीं जाता। यही कारण है कि सार्वजनिक जीवन में मैं कुछ पीछे रह गया। जहाँ मैं आज हूँ वहाँ मुझे बीस वर्ष पहले होना चाहिये था। गांधीजी की मुझ पर सदा कृपा रही, पर उनके पास भी मैं बिना बुलाये नहीं जाता था। वर्धा शायद

जितना कम में गया उतना कोई नहीं। अखिल भारतीय नेताओं में मेरा व्यक्तिगत संबन्ध दो ही व्यक्तियों से हो पाया—पं० मोतीलालजी नेहरू से और सरदार पटेल से, पर मेरा दुर्भाग्य है कि जब मोतीलालजी से मेरा निकट का संबन्ध हुआ तब मोतीलालजी चले गये और जब सरदार से हुआ तब वे। सरदार की मृत्यु से सार्वजनिक दृष्टि के सिवा मुझे व्यक्तिगत भी बड़ा भारी धक्का लगा।

दिन भर मैंने नहीं खाया था, भूख भी मुझे लग आयी थी, पर यह संवाद सुनते ही मेरी भूख कोसों भाग गयी। मैं समय पर भोजनालय में गया अवश्य पर दिन भर कुछ न खाने पर भी जरा भी न खा सका। बार-बार मेरा गला और आंखें भर भर आती थीं और लाख प्रयत्न करने पर भी कौर गले न उतरता था।

रात को मुझे भली भांति नींद भी न आयी और सबेरे जब मैं रवाना होने की तैयारी कर रहा था उस समय मेरे भारत लौटने का जो उत्साह था वह सबका सब गायब हो गया था। मेरी इस प्रतिनिधि मंडल की सफलता पर जो व्यक्ति मुझे सबसे अधिक बधाइयां देता, वह आज चला गया था।

साढ़े सात बजे हमारे वायुयान ने सिंगापूर का हवाई अड्डा छोड़ दिया।

३५

कलकत्ता पहुंचने तक यद्यपि कोई नई घटना नहीं हुई और मौसम बहुत अच्छा होने के कारण वायुयान भी बड़ी शांति से चला तथापि हर क्षण मुझे यही जान पड़ा कि कलकत्ता पहुंचने में बड़ी देर लग रही है। कलकत्ता पहुंचने का समय था डेढ़ बजे। सिंगापूर और कलकत्ते के समय में दो घंटे का अन्तर होने के कारण घड़ी के अनुसार यद्यपि डेढ़ बजे वायुयान कलकत्ते पहुंचा तथापि यथार्थ में उसे दो घंटे अधिक लगे और यह समय आज इतना लम्बा जान पड़ा कि क्या कहूं।

कलकत्ता पहुंचकर गवर्नमेंट हाउस जाते-जाते जान पड़ा जैसे कलकत्ता आज सर्वथा निर्जन हो गया है। सरदार बल्लभ भाई की मृत्यु के कारण आज शहर में पूरी हड़ताल थी। निर्जनता का यही कारण था।

गवर्नमेंट हाउस पहुंचने के कुछ ही देर बाद राज्यपाल श्री काटजू साहब से भेंट हुई और कोई दो घंटे तक उनसे बातें। ये बातें अधिकांश सरदार बल्लभ भाई के संबन्ध में ही थीं। डा० काटजू साहब के बाद मेरे समधी श्री गोवर्धनदास जी बिन्नानी और दामाद घनश्यामदास जी आ गये और इसके बाद फोन द्वारा जबलपूर में अपने कुटुम्बियों से मैंने बातें कीं।

यद्यपि मुझे भारत छोड़े केवल एक महीना और पांच दिन ही हुए थे, पर जान पड़ता था जैसे युग बीत गये हैं। बड़ी लम्बी दूर जाने पर बीता हुआ थोड़ा समय भी कदाचित बड़ा लम्बा जान पड़ता है। इसका क्या कारण है यह मनोवैज्ञानिक ही बता सकते हैं।

दिल्ली में जल्दी से जल्दी पहुँचूं यह दिल्ली वालों की मांग थी और जबलपुर में जल्दी से जल्दी आऊं यह जबलपूर वालों की। पार्लिमेंट का अधिवेशन ता० २० को समाप्त होने वाला था, पर उसके दो-तीन दिन के बढ़ जाने की भी संभावना थी। अतः मैं जबलपुर होकर दिल्ली जाऊं या दिल्ली होकर जबलपुर, इसके निर्णय में मुझे थोड़ा समय लग गया। अन्त में फिर जबलपुर फोन कर दिल्ली होकर जबलपुर आने का निश्चय किया।

दूसरे ही दिन दोपहर के हवाई जहाज से मैं दिल्ली के लिये रवाना हो गया। भारत में प्रायः दो एंजिन वाले 'डकोटा' वायुयान चलते हैं। मैं न जाने कितने बार इन पर यात्रा कर चुका था, परन्तु आज मुझे यह विमान जितना छोटा जान पड़ा इसके पहले कभी न जान पड़ा था। साथ ही लगभग ६००० फुट की उंचाई पर यह उड़ रहा था, वह उंचाई भी मुझे बहुत ही कम मालूम पड़ी। कभी कभी तो ऐसा भास होता था जैसे यह जमीन पर ही चल रहा है। चार चार एंजिन के बड़े बड़े एरोप्लेनों में पन्द्रह हजार से बाईस हजार फुट की उंचाई पर इधर लगातार उड़ते रहने के कारण ही मन में इस प्रकार की भावनाएं थीं।

दिल्ली हमारा विमान लगभग ५॥ बजे पहुंचा। संध्या हो रही थी, आकाश निर्मल था और सूर्य अस्ताचल के समीप। साढ़े पांच बजे ही अस्त होते हुए अंशुमाली को देख मुझे एकाएक न्यूजीलेंड की याद आयी। वहां तो अभी सूर्यास्त में घंटों का विलम्ब होगा और यहां आधे घंटे के भीतर-भीतर जो अंधेरा होने वाला था उस अंधेरे होने में तो एक पहर। हमारी पृथ्वी पर ही समय, ऋतु आदि सभी बातों में एक दूसरे स्थान से कितनी विभिन्नता है और जब हमारी पृथ्वी का यह हाल है तब अनन्त ब्रह्मांडों वाली इस सृष्टि की रचना में एक ब्रह्मांड और दूसरे ब्रह्मांड की इन सभी बातों में कितना अन्तर होगा।

दिल्ली मेरे पहुंचने की सूचना मैं कलकत्ते से भेज चुका था अतः मेरी मोटर वैलिंगटन हवाई अड्डे पर मौजूद थी। मैं कोई ६ बजे अंधेरा होते होते अपने दिल्ली के निवास स्थान ३ कैनिंग लेन में पहुंच गया।

जब रात को मैंने पार्लिमेंट के सेक्रेटरी श्री कॉल को फोन द्वारा अपने आने की सूचना दी तब कैसा हार्दिक स्वागत किया उन्होंने मेरा और कितनी बधाइयां दी हमारे प्रतिनिधि-मंडल की सफलता पर मुझे। श्री कॉल से मुझे ज्ञात हो गया कि हमारे प्रतिनिधिमंडल के कार्य से हमारी पार्लिमेंट के अध्यक्ष श्री मावलंकर, हमारे प्रधान मंत्री श्री नेहरू तथा सभी अवगत हो चुके हैं एवं सभी पूर्णतया संतुष्ट हैं।

दूसरे दिन जब मैं पार्लिमेंट के अधिवेशन में पहुंचा तब मैंने देखा कि सरदार वल्लभ भाई को छोड़ शेष सब लोग पूर्ववत मौजूद हैं और यद्यपि सरदार के देहान्त का आज केवल चौथा दिन था तथापि धारा सभा की सारी कार्रवाई जैसी की तैसी चल रही थी। और इस दृश्य को देखते ही इन सत्ताइस वर्षों की कुछ ऐसी ही घटनाओं के दृश्य मेरे नेत्रों के सामने घूम से गये। पं० मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में सन् १९२३ में मैंने इस केन्द्रीय धारा सभा में सर्व प्रथम प्रवेश किया था। कितने बड़े-बड़े आदमी थे उस समय यहां और

कितने बड़े-बड़े लोग उसके बाद भी आये। पं० मोतीलाल नेहरू, पं० मदनमोहन मालवीय लाला लाजपतराय, श्री विट्ठल भाई पटैल, श्री विपिन चन्द्र पाल, श्री मोहम्मद अली जिन्ना, श्री श्रीनिवास आयंगर, श्री भूलाभाई देसाई, श्री सत्यमूर्ति आदि आदि। इस सभा की कार्यवाहियों में कैसा भाग लेते हुए इन सब और इनके अनेक साथियों को मैंने ही देखा था यहां पर। और आज इनमें से कोई भी न था। सरदार बल्लभभाई पटैल अभी अभी गये थे। आज जो थे वे भी किसी न किसी दिन कोई जल्दी और कोई देर से जाने वाले थे। जिस मैंने यह सब देखा था और जो मैं आज भी यह सब देख रहा था वह भी अमर नहीं था। कैसा है यह मर्त्य लोक ? कैसी है यहां की रचना। सब कुछ कैसा क्षणिक है। पर सब कुछ अनित्य होते हुए यहां का कार्य अवश्य नित्य है। रोज अगणित आते और जाते हैं, पर कोई काम नहीं रुकता। वह सदा चला करता है। न जाने कब से चल रहा है और कब तक चलता रहेगा।

उसी दिन तीसरे पहर मैं श्री मावलंकर से मिला। उन्होंने भी मुझे अनेक बधाइयां दीं और प्रतिनिधि मंडल के कार्य का सारा व्यौरा धारा सभा के सदस्यों को सुनाने के लिये दूसरे संध्या को पार्लिमेंट के उठने के पश्चात् का समय नियुक्त किया।

ता० १९ को ४। बजे मैं राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी से मिला। न्यूजीलैंड के प्रतिनिधि मंडल की सफलता का संवाद उन्हें भी मिल चुका था अतः उन्होंने भी मुझे हार्दिक बधाइयां दीं। पार्लिमेंट का अधिवेशन जल्दी से जल्दी समाप्त हो सके इसलिये ता० १९ से ५ बजे के स्थान पर ६ बजे तक पार्लिमेंट बैठेगी यह तय हो गया था। ता० १९ को १५ मिनिट पार्लिमेंट और अधिक बैठी अतः मेरा भाषण कोई ६।। बजे आरम्भ हो सका। यद्यपि बहुत देर हो चुकी थी और पौने ग्यारह बजे से आये हुए सदस्य काफी थक भी गये थे फिर भी अधिकांश सदस्य इस भाषण में मौजूद थे। सभापतित्व कर रहे थे स्वयं श्री मावलंकर। मद्रास के सदस्यों के विशेष आग्रह के कारण आज मुझे अंग्रेजी में बोलना पड़ा और मैंने देखा कि यद्यपि मेरा भाषण कोई एक घंटे चला पर सभी उपस्थित सज्जनों ने उसे बड़े चाव से सुना। भाषण के पश्चात मेरे न्यूजीलैंड के कार्य तथा भाषण दोनों पर मुझे बधाइयां भी कम नहीं मिलीं।

ता० २० को मैं नेहरूजी से मिला। उन्होंने भी मुझे हम लोगों के काम पर अनेक बधाइयां दीं।

मुझे जबलपुर पहुँचने की इस समय जितनी जल्दी थी उतनी जीवन में कदाचित् कभी नहीं हुई; पांच बार जेल से रिहाई के समय भी नहीं। अतः यद्यपि पार्लिमेंट का अधि-

सेशन दो दिनों के लिये बढ़ गया था तथापि श्री मावलंकर, श्री राजेन्द्रबाबू, श्री नेहरू और पार्लियामेंट के सदस्यों से मिल लेने के पश्चात् मैं जबलपुर ता० २० की ही संध्या की गाड़ी से रवाना हो गया। जबलपुर एरोप्लेन सर्विस न होने का आज मुझे जितना खेद हुआ उतना इसके पहले कभी न हुआ था। इस समय जब मुझे हवाई जहाज की रफ्तार भी अत्यधिक धीमी जान पड़ती थी तब रेल की चाल। वह तो मुझे छकड़ा गाड़ी से भी धीमी जान पड़ी।

ता० २१ के तीसरे पहर मेरी गाड़ी जबलपुर पहुँचने वाली थी। एक एक क्षण मुझे कितना भारी जान पड़ रहा था। पर समय तो किसी न किसी तरह बीतता ही है। आखिर जबलपुर पहुँचने का समय आया ही। और जब गाड़ी जबलपूर स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ी हुई तथा मुझे लेने के लिए आने वाले मेरे कुटुम्बियों, मित्रों तथा कांग्रेस वालों को मैंने देखा तब कितना हर्ष मुझे हुआ उसका शब्दों में वर्णन संभव नहीं है।

स्टेशन पर सबसे मिल भेंट कर मैं घर पहुँचा। सबसे पहले अपने मंदिर में मैंने भगवान को शाष्टांग प्रणाम किया और फिर आकर माताजी के चरण स्पर्श किये। प्रथम बार की जेल यात्रा से लौटने के पश्चात् उन्होंने राजा गोकुलदास के महल के फाटक पर मेरी जिस प्रकार आरती की थी और जिसका उल्लेख उन्होंने अपने उस पत्र तक में किया था, जो मेरी रवानगी के समय उन्होंने मेरे पुत्र मनमोहनदास के साथ कलकत्ते भेजा था, उस प्रकार आरती करने की आज उनके शरीर में शक्ति न थी, पर आरती के स्थान पर उन्होंने अपने आँसुओं से उनके चरणों में झुके हुए मेरे मस्तक पर पवित्र मार्जन अवश्य कर दिया।

जब मैंने अपना सिर उठाया तब मैंने देखा कि उन्हीं के निकट खड़ी हुई मेरी पत्नी मुस्करा रही थीं।

कितना हर्ष हुआ मुझे अपने सब सुहृद्वरों से मिलकर। सर्व प्रथम मानव जंगलों में रहता था। धीरे धीरे सभ्य हो उसने विवाह संस्था का निर्माण कर कुटुम्ब की रचना की। मेरा निश्चित मत है कि मानसिक दृष्टि से इस रचना से बड़ी और कोई रचना वह अब तक नहीं कर सका है।

भारत लौटने का मेरा जो हर्ष सिंगापुर में सरदार पटेल की मृत्यु का संवाद सुन सर्वथा विलीन हो गया था आज वह पुनः उतना ही हो गया जितना इस संवाद के सुनने के पूर्व था। हर्ष-शोक की इस जगत में सदा ही कैसी धूप-छाँह रहती है ?

सिंहावलोकन

मेरी इस यात्रा के स्मरणीय स्थान

सुदूर दक्षिण पूर्व में मैंने सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और फीजी देखा। कुल मिलाकर लगभग ५ सप्ताह मैं भारतवर्ष के बाहर रहा। वायुयान की यात्रा के कारण यात्रा में अधिक समय न लगा। यह सारा समय प्रायः इन देशों और कामनवेल्थ पार्लमेंटरी कान्फ्रेंस में व्यतीत हुआ। न्यूजीलैंड के उत्तरीय द्वीप को देखने के लिए मोटर की कोई ६०० मील की यात्रा को छोड़ शेष सारी यात्रा, जो जाते-आते में लगभग बीस हजार मील की हुई, हवाई जहाज द्वारा की गयी। जिस तरह हमारे भारतवर्ष में अनेक प्राकृतिक और मानवीय रमणीय तथा भव्य स्थान हैं उसी प्रकार न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया और फीजी में भी। सिंगापुर में मैं केवल नगर में ही रहा, इसलिए मलाया के इस प्रकार के दर्शनीय स्थानों को देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त न हो सका। अपनी इस यात्रा का सिंहावलोकन करते समय मुझे जो स्थान सबसे अधिक सुन्दर मालूम होते हैं वे निम्नलिखित हैं:—

(क) न्यूजीलैंड के परम रमणीय विशाल डेरी फार्म।

(ख) न्यूजीलैंड की वाइटमो गुफा। इस गुफा के ग्लोवर्म नामक जुगनू के सदृश चमकते कीड़े, गरम पानी के झरने और झीलें, कुछ झीलों में से उठने वाले गरम पानी के ऊंचे फव्वारे, उबलता कीचड़ ज्वालामुखी पहाड़ों के अवशेष तथा गंधक के पहाड़।

(ग) माओरियों का नृत्य और संगीत।

(घ) आस्ट्रेलिया के सिडनी का जू।

(ङ) आस्ट्रेलिया के कैनबरा का युद्ध स्मारक और,

(च) फीजी की हरियाली।

इन सबका वर्णन साथ ही जिन व्यक्तियों, अथवा समुदायों एवं समाजों को मैंने देखा उनका वर्णन भी पिछले अध्यायों में प्रसंग-प्रसंग पर आया है। यात्रा में चिन्तन तथा दर्शन के कारण जो भावनाएँ मेरे मन में उठीं उनका उल्लेख भी स्थान-स्थान पर किया जा चुका है।

इन देशों के मानवों ने क्या क्या किया है ?

न्यूजीलैंड , आस्ट्रेलिया, सिंगापुर और फीजी में वहाँ के निवासियों ने जो कुछ किया है उसमें सबसे अधिक आकर्षक बात है जीवन-धोरण की उच्चता । न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया का जीवन-धोरण संसार के उन्नत देशों के जीवन-धोरण से कम नहीं । एशिया के देशों में प्रधान समस्या जीवन-धोरण को ऊँचा उठाने की है । इस तरह की कोई समस्या न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया में नहीं है ।

जीवन-धोरण की इस उच्चता के प्रधान कारण दो हैं--इन देशों की कम आबादी और उत्पादन का बाहुल्य ।

न्यूजीलैंड में प्रति इकाई उत्पादन तथा प्रति एकड़ भूमि का उत्पादन संसार में सर्वश्रेष्ठ है । न्यूजीलैंड के पुरुष मजदूरों का प्रति इकाई उत्पादन आस्ट्रेलिया के मजदूरों के उत्पादन से भी ५० प्रतिशत अधिक और अमेरिका के मजदूरों से तो चार गुना अधिक है । उत्पादन के वितरण की भी ऐसी व्यवस्था है जिसके कारण समाज में न बहुत धनवान हैं और न गरीब, गरीब तो हैं ही नहीं । इस विषय में भी न्यूजीलैंड कदाचित संसार का सर्वश्रेष्ठ देश है, और न्यूजीलैंड की विशेषता यह है कि जिस साम्य-वादी सामाजिक रचना में व्यक्तिगत प्रोत्साहन की प्रायः समाप्ति हो जाती है वह साम्य-वादी सामाजिक रचना न रहते हुए तथा व्यक्तिगत प्रोत्साहन के संपूर्ण रीति से विद्यमान रहते हुए भी यह समता आ सकी है । न्यूजीलैंड के सम्बन्ध में तो यह कहा जा सकता है कि उस देश की सामाजिक व्यवस्था साम्यवाद को एक चुनौती है । वहाँ के लोग हर दृष्टि से सुखी हैं, सन्तुष्ट हैं । न्यूजीलैंड के लोगों की औसत आयु जो संसार में सबसे अधिक है उसका श्रेय वहाँ की जलवायु के अतिरिक्त इस सुख और सन्तोष को भी है ।

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड दोनों देश कामनवैल्थ में रहते हुए भी पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं और वहाँ की राज्यप्रणाली प्रजातंत्रात्मक है, जो बड़ी सफलता चल रही है । वहाँ के निवासियों को बालिग मताधिकार हैं और राजनैतिक क्षेत्र में भिन्न-भिन्न दल हैं । जहाँ तक कानूनों का सम्बन्ध है न्यूजीलैंड के सामाजिक सुरक्षा (Social security) कानूनों के सदृश कानून संसार के किसी देश में नहीं हैं यह कहा जाता है । इन कानूनों के कारण न्यूजीलैंड की जनता में किसी प्रकार की चिन्ता और आशंका नहीं रह गयी है । बड़ी-बड़ी जायदादें लोग इसलिए बनाते हैं कि उन्हें भविष्य में किसी प्रकार का कष्ट न हो । जब समाज व्यवस्था न्यूजीलैंड की तरह हो, जहाँ जन्म से मृत्यु तक सामाजिक सुरक्षा का प्रबन्ध है तो भविष्य की चिन्ता और भय के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता । लोग

ईमानदारी से काम करते हैं और उनके व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन का नैतिक स्तर उच्च रहता है। न्यूजीलैंड के लोगों का नैतिक स्तर संसार के कई देशों से ऊँचा है यह आश्चर्य की बात नहीं।

आस्ट्रेलिया इस दृष्टि से न्यूजीलैंड से बहुत पीछे है, पर न्यूजीलैंड का पड़ोसी होने के कारण उसे न्यूजीलैंड का अनुसरण करना पड़ता है।

सिंगापुर और फीजी के निवासियों का भी जीवन-धोरण तो काफ़ी ऊँचा है, पर ये देश ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेश हैं। यहाँ न राजनैतिक स्वतंत्रता है न सामाजिक समता और न सुरक्षा सम्बन्धी कानून। जीवन-धोरण की ऊँचाई को यदि छोड़ दिया तो इन देशों में वे सभी संघर्ष मौजूद हैं जो राजनैतिक पराधीनता एवं सामाजिक समता न रहने के कारण पैदा होते हैं।

न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया कीजो समस्याएँ हल नहीं हुई हैं—

पिछले प्रकरण में न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा गया है उससे यह न समझ लिया जावे कि इन देशों में कोई समस्याएँ हल होने को रह ही नहीं गयी हैं। इन देशों की कम आबादी जो इन देशों के जीवन-धोरण की उच्चता का एक प्रधान कारण है वही, इन देशों की जो समस्याएँ हल नहीं हुई हैं उसका भी प्रधान कारण है, साथ ही इन देशों की कम आबादी ने विश्व की दृष्टि से कई समस्याओं को उत्पन्न कर दिया है।

यहाँ की जो प्रधान समस्याएँ हल नहीं हुई हैं, वे निम्नलिखित हैं—

(क) आबादी की कमी। न्यूजीलैंड में प्रति वर्ग मील ८ व्यक्ति बसते हैं, आस्ट्रेलिया में ४।

(ख) लाखों एकड़ भूमि खाली पड़ी है।

(ग) प्राकृतिक द्रव्य और साधनों की खोज तक नहीं हुई। उनके उपयोग का प्रश्न पीछे उठेगा।

(घ) आबादी की कमी के कारण सुरक्षा की उचित व्यवस्था नहीं है।

(ङ) यद्यपि न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया की सरकारें विदेशियों को अपने देश में बसाने के लिये सतत प्रयत्न कर रही हैं पर वे सिर्फ गोरी चमड़ी के लोगों को बसाना चाहती हैं, दूसरे रंग के लोगों को नहीं। इसके कारण चाहे वे कुछ भी बतावें, परन्तु मूल कारण यही है कि उन्हें दूसरे रंग के

लोगों से नफ़रत है । पिछले महायुद्ध के अपने दुश्मन जर्मन लोगों तक को बसाने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं, परन्तु जिसे वे कामनवैल्थ कहते हैं उसके गेहुंएँ अथवा श्याम निवासियों को नहीं ।

(थ) विदेशों के सम्बन्ध में जानकारी कम है । परम्परागत अंध-विश्वास, रंग-भेद, वैमनस्य आदि को ज्ञान द्वारा दूर करने के लिए पर्याप्त उपाय नहीं हो रहे हैं ।

इन समस्याओं को हल करने में क्या हम सहायक हो सकते हैं ?

सुदूर दक्षिण पूर्व में समस्याओं को हल करने के लिए हमें अपनी समस्याओं को भी देखना पड़ेगा । स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद बड़ी विकट समस्याएँ हमारे सामने आयी हैं । हमारा देश पुराना होते हुए भी हमारी स्वतंत्रता बिलकुल नयी है । एक तरफ तो इस स्वतंत्रता की रक्षा का प्रश्न है, दूसरी ओर अपना जीवन-स्तर ऊँचा उठाने का प्रश्न है । इधर कुछ दिनों से अन्न संकट अत्यन्त उग्र रूप में हमारे सामने उपस्थित है, करोड़ों रुपये का अन्न प्रतिवर्ष हम विदेशों से मँगा रहे हैं । हमारे देश में प्रति वर्ग मील ३७१ लोग रहते हैं, इतना ही नहीं, हमारी आबादी दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ रही है । हमारी अनेक समस्याओं के रहते हुए भी हमारी प्रधान समस्या है हमारी जन-संख्या । हमें भूमि की आवश्यकता है, और सुदूर दक्षिण पूर्व के आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड देशों को अपनी सभी समस्याओं को हल करने के लिए जन-शक्ति की ।

कनेडा के सीनेटर रूबैक का यह कथन कितना उपयुक्त है— "इतिहास इस बात का साक्षी है कि यदि आप अपनी भूमि में न बसें और उसका उपयोग न करें तो आप उसकी रक्षा करने में असमर्थ होंगे, फलतः अवसर पाते ही कोई न कोई उसका उपयोग करेगा और अधिकार भी जमा लेगा ।" आस्ट्रेलिया के एक मंत्री और बंगाल के भूतपूर्व गवर्नर श्री आर० जी० केसी ने भी कहा है, "यदि हम शीघ्र ही आस्ट्रेलिया को आबाद न करेंगे तो हम अपने देश को खो बैठेंगे ।" अभी समय है कि ये देश इन चेतावनियों पर ध्यान दें । हमारी जन-शक्ति का उचित उपयोग हो तो हम सुदूर दक्षिण पूर्व की समस्याओं को हल करने में सहायक हो सकते हैं ।

ये समस्याएँ और कामनवैल्थ

न्यूजीलैंड में कामनवैल्थ पार्लमेंटरी एसोसियेशन का अधिवेशन ही मेरी इस

यात्रा का कारण था। इस अधिवेशन में जो कार्यवाही हुई उसका उल्लेख अन्यत्र किया गया है। इस एसोसियेशन ने अपने ४० वर्ष के जीवन में जो कुछ प्राप्त किया वह विशेष गौरव की बात नहीं है, लेकिन पिछले ३–४ वर्ष में इस एसोसियेशन में नया जीवन और नयी स्फूर्ति आयी है। सन् १९४८ के लंदन अधिवेशन से इस नये जीवन का परिचय मिला। सन् १९५० के न्यूजीलैंड अधिवेशन में यह स्पष्ट दिखायी दिया कि एसोसियेशन अपने आज तक के जीवन से बहुत असंतुष्ट है और अब कोई महान् कार्य करना चाहता है, जिससे उसका भावी जीवन सार्थक हो। हमें इस बात का हर्ष है कि समय की गति के साथ एसोसियेशन अपना कार्यक्रम, विधान और विचार धारा बदल नये युग में नये कार्य के लिए तत्पर हुआ है।

इस नवीन उत्साह का एक ज्वलंत उदाहरण कोलम्बो योजना है। कामनवैल्थ के देशों की आर्थिक उन्नति के लिए कामनवैल्थ के इतिहास में यह प्रथम योजना है जिसमें ईमानदारी से कुछ काम किया गया है और अधिकांश होने वाला है। यह ठीक है कि योजना बनाना ही सब कुछ नहीं है उसको कार्यान्वित करना आवश्यक है, किन्तु योजना बनाना पहला और आवश्यक कदम है। अब आवश्यकता इस बात की है कि कोलम्बो योजना के लिए समुचित सहयोग और साधन जुटा उसके अनुसार कार्य किया जावे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कोलम्बो योजना के कार्यान्वित होने से भारत, पाकिस्तान, लंका, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, फिजी, कैनेडा, इंग्लैंड आदि कामनवैल्थ के सभी देशों को लाभ होगा। परस्पर विश्वास और प्रेम से प्रेरित हो जातीय और धार्मिक भेदों तथा संकुचित स्वार्थों से परे उठ अदम्य साहस एवं लगन से कार्य करने की आवश्यकता है। पार्थिव दृष्टि से संसारमें सबसे निम्न कोटि का जीवन कामनवैल्थ के अधिकांश देशों में है। इस जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सारी भूमि और सारे प्राकृतिक साधनों का उपयोग करना जरूरी है। लगभग दो वर्ष पहले संयुक्तराष्ट्र संस्था के "एशिया और सुदूर पूर्व कमीशन" ने जो रिपोर्ट निकाली है वह बड़ी उपयोगी है। इस रिपोर्ट में यह बतलाया गया है कि एशियाई देशों का पार्थिव जीवन निम्नतम होने का प्रधान कारण है उत्पादन की कमी। इन देशों में प्रति इकाई जमीन का उत्पादन, प्रति मजदूर जमीन और कारखानों का उत्पादन यह सब दूसरे देशों के प्रति इकाई उत्पादन का दसवाँ भाग भी नहीं है। हमें प्रत्येक कृषक प्रत्येक मजदूर की उत्पादन-शक्ति बढ़ाना है, प्रत्येक एकड़ भूमि का उत्पादन बढ़ाना है। न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, कनैडा में लाखों एकड़ भूमि खाली पड़ी है, आबादी की सख्त जरूरत है। इसके विपरीत भारतवर्ष और पाकिस्तान में अत्यधिक आबादी है और प्रति वर्ष ५० लाख के हिसाब से बढ़ रही है।

यदि कामनवैल्थ का कोई अर्थ है तो इन देशों को मिल-जुलकर परस्पर सहायता कर अपनी समस्याएँ हल करना चाहिए। जाति और रंग के भेद की बड़ी दीवार परम्परा से खड़ी थी, अब उसकी नींव हिलने लगी है। संसार के आधे मानव सुख में रहें और आधे दुःख में पिसें यह परिस्थिति अधिक समय न रह सकेगी। मनुष्य की बुद्धि, उसकी कार्य-कुशलता और उसके मनुष्यत्व पर लानत है यदि वह भूमंडल की सारी भूमि का उपयोग नहीं करता और सारे प्राकृतिक साधनों को काम में नहीं लाता। क्या कारण है कि विज्ञान के महान् आविष्कारों का उपयोग सब मनुष्यों को सुखी बनाने के लिए नहीं हो रहा है ?

कामनवैल्थ के सदस्य देशों में पुराना मैत्री सम्बन्ध है। बिना किसी विधान के हम सब परस्पर प्रेम के सूत्र में बँधे हैं। अब समय आ गया है कि इस प्रेम सम्बन्ध का पार्थिव क्षेत्र में पूर्ण उपयोग हो। इसके लिए सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि कामन-वैल्थ के सदस्य देश तथा सुदूर दक्षिण पूर्व के अन्य देश भी एक दूसरे की समस्याओं पर सहानुभूति से विचार करें। आपसी समस्याओं को गम्भीरता से समझकर यह देखें कि वे न केवल मानवता के कारण बल्कि परस्पर लाभ के लिए क्या कर सकते हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि आपसी ज्ञान बढ़े। यों तो ज्ञान की वृद्धि पुस्तकें पढ़ने से हो जाती है लेकिन सहानुभूति का उदय स्वयं निरीक्षण और व्यक्तिगत सम्बन्ध से ही होता है। इस लिए विदेश यात्रा का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। कई बार तो यह देखा जाता है कि पुस्तकों द्वारा अपने अंध-विश्वासों और संकुचित भावनाओं तथा विचारों की पुष्टि होती है, किन्तु स्वयं के साक्षात् अनुभव के बाद यह संभावना कम रहती है। हवाई जहाज, रेडियो, टेली-फोन आदि आविष्कारों की सहायता से देश- विदेश का संपर्क इतना बढ़ गया है कि संसार वास्तव में छोटा मालूम पड़ता है। सभी देश एक दूसरे के समीप आ गये हैं। आवागमन और यातायात की सुविधा के कारण मानवों का सम्पर्क बढ़ा है, दिनोंदिन बढ़ रहा है। इस सम्पर्क को सार्थक और परस्पर लाभ के हेतु उपयोगी बनाने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं:—

(क) शिक्षा, व्यापार, विज्ञान, कला आदि क्षेत्रों में विचार-विनिमय के लिए प्रतिनिधि-मंडल, परिषदों और सम्मेलनों का आयोजन।

(ख) विद्यार्थियों, अध्यापकों, व्यापारियों, वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों और कला-कारों का विनिमय, जिससे सहानुभूति के साथ पारस्परिक समस्याओं पर विचार हो और जीवन के सभी क्षेत्रों में सहयोग का आदान-प्रदान हो।

(ग) भिन्न-भिन्न देशों में व्यापारी सचिवों के द्वारा वाणिज्य और औद्योगिक

प्रदर्शनी, बुलेटिन, अखबारों और पुस्तकों द्वारा आयात-निर्यात व्यापार का प्रोत्साहन।

(घ) विदेशी यात्रियों और दर्शकों को अपना जीवन और अपनी संस्कृति से परिचित कराने के लिए सरकारों की ओर से समुचित प्रबंध।

(ङ) कालेजों और विश्वविद्यालयों में विदेशी संस्कृतियों का अध्ययन इस दृष्टि से हो कि आपसी वैमनस्य दूर हों, परस्पर सहानुभूति बढ़े, एक दूसरे से अच्छी बातें सीखें, अपने जीवन को सुखी बनाने का उपाय सोचें।

"न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया की जो समस्याएँ हल नहीं हुई हैं", तथा "इन समस्याओं को हल करने में क्या हम सहायक हो सकते हैं", इन शीर्षकों में जो कुछ लिखा गया है उसके हल का आरम्भ कामनवैल्थ देशों द्वारा होना चाहिए। कामनवैल्थ पार्लमेंटरी एसोसियेशन के सदृश एक पुरानी संस्था मौजूद है, जिसका दफ्तर है, जहाँ सदा कार्य होता रहता है तथा समय-समय पर इस एसोसियेशन की परिषदें भी होती हैं।

अब तक के विश्व के इतिहास में देखा गया है कि जब कोई भी समस्या या समस्याएँ उत्कट रूप ग्रहण कर लेती हैं तब उनके हल के लिए युद्ध होते हैं, विप्लव होते हैं, क्रांतियाँ होती हैं। इस प्रकार के संघर्षों के निवारण के लिए आज का सभ्य मानव शांतिमय उपायों की खोज कर रहा है। क्या कामनवैल्थ कहलाने वाले भू-भाग के विचारक कामनवैल्थ-पार्लमेंटरी एसोसियेशन के सदृश संस्थाओं द्वारा इन समस्याओं पर सहानुभूति पूर्वक विचार कर और इन विचारों को कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न कर कामनवैल्थ के नाम को सार्थक करेंगे। यदि इस दिशा में शांतिपूर्ण उपायों द्वारा सफलता न मिली तो संघर्ष हो कर नाश होना अनिवार्य है।

ये समस्याएँ और वर्तमान युग की चुनौती

सुदूर दक्षिण पूर्व और भारतवर्ष की समस्याओं के चिन्तन के पश्चात् विश्व की वर्तमान स्थिति और विश्व की समस्याओं पर भी दृष्टिपात करना आवश्यक है। विज्ञान की मदद से मानव ने समय और दूरी को जीत लिया है। पृथ्वी का २५ हजार मील का चक्कर मनुष्य हवाई जहाज से ६० घंटे में लगाता है। संसार के एक कोने से दूसरे कोने में कुछ मिनटों में रेडियो द्वारा खबरें जाती हैं। टेलीफोन द्वारा मनुष्य अपने घर बैठे-बैठे संसार के किसी भी कोने में दूसरे मनुष्यों से बात करता है। अपने एक बड़े दुश्मन भाँति-भाँति के रोगों को जीतने में मनुष्य काफी दूर तक सफल हुआ है। विज्ञान की मदद से मनुष्य ने एक ओर तो पार्थिव सुख और आराम के लिए अनगिनती साधन जुटाये हैं दूसरी

और युद्धों में भीषण नर-संहार के लिए परमाणु बम जैसे घातक आविष्कार किये हैं। यह ध्यान देने की बात है कि परमाणु शक्ति का आविष्कार शायद मनुष्य जाति का सबसे बड़ा दुश्मन और सबसे बड़ा मित्र भी है। इस शक्ति के प्रयोग से मनुष्य अपने आप को मिटा सकता है, चाहे तो रचनात्मक कार्यों के लिए उसका उपयोग कर सारी मनुष्य जाति का जीवन सुखमय बना सकता है।

इस सत्य को अच्छी तरह समझना आवश्यक है कि वर्तमान युग में जितने साधन मानव को मिटा देने वाले हैं उतने ही उसको बना देने वाले हैं। वर्तमान युग में मनुष्य के पास क्या नहीं है? शताब्दियों के अत्यन्त कल्याणकारी वैज्ञानिक अनुसन्धानों की राशि उसके इशारों पर नाचने को तैयार है। विपुल नैसर्गिक साधनों का अनन्त धन उसकी सेवा के लिए उत्सुक है। उसके पास अपार शक्ति है, जिसका वह मनचाहा उपयोग कर सकता है। उसके पास अपरिमित ज्ञान का भंडार है जिस पर उसका पूर्ण अधिकार है। उसके पास सैकड़ों प्रकार की कला और विज्ञान के पंडित और विशेषज्ञ हैं जो असंभव को संभव बना सकते हैं। इस पंडितों और विशेषज्ञों की अद्भुत कार्य-क्षमता के नमूने देखकर तो दानव भी दंग रह जावेगा। अत्यन्त प्रचंड नदियों में ऊँचे-ऊँचे बाँध बाँधकर करोड़ों किलोवाट बिजली पैदाकर जीवन के हर क्षेत्र में उसका उपयोग कर मानव ने पार्थिव जीवन कितना सुखी बनाया है। विशाल जंगलों को काट कैसे भव्य नगर मानव ने बसाये हैं। जल-थल और आकाश में आवागमन के कितने प्रचुर और गतिमान साधन उसने बनाये हैं। भू-गर्भ में प्रवेश कर क्या-क्या द्रव्य उसने खोज निकाले हैं। आसमान को चीरकर वह राकेट के द्वारा चन्द्रमा ही नहीं अन्य कई नक्षत्रों और लोकों में पहुँचने का सतत प्रयत्न कर रहा है। शनैः शनैः प्रकृति के सभी रहस्यों की कुंजी वह अपने अधिकार में कर रहा है।

सारांश यह कि वर्तमान युग में मनुष्य के पास एक नये संसार के निर्माण का अपूर्व अवसर है। कितनी शताब्दियों से मानव का यह सुनहला स्वप्न रहा है कि वह एक ऐसे संसार का निर्माण करे जिसमें सभी मानव सुखी रहें। आज तक कितने महापुरुषों की यह अभिलाषा रही, कितने दार्शनिक और कर्मकांडी मानव कल्याण के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर चुके। पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानव ने प्रयत्न किया कि वह अपने स्वप्न का सुनहला संसार अपने प्रयत्नों से बसा ले, लेकिन वास्तव में पिछली कई सदियों में जब इस प्रकार के विश्व हितैषी मानव यह स्वप्न देखते थे तब उन साधनों की कमी थी जिनसे वे इस साध्य की प्राप्ति करते। सौभाग्य से आज हमारे पास ऐसे साधन हैं। शायद मानव

इतिहास में प्रथम बार यह स्वर्ण अवसर आया है । इस युग के मानवों को इस अवसर का पूर्ण महत्व हृदयंगम कर अपनी जिम्मेदारी का भार सँभालना चाहिए। यदि हम अपनी जिम्मेदारी न सँभालेंगे, और जो अपूर्व अवसर हमारे हाथ है उसे खो देंगे, तो भावी पीढ़ियाँ हमें मूर्ख ही न कहेंगी, हमें न जाने क्या–क्या कहेंगी ।

इस प्रश्न पर विचार करना आवश्यक है कि यदि इतने विपुल साधन और ऐसा स्वर्ण अवसर हमारे हाथ है तो फिर हम समस्त मानव-जाति के लिए सुख का संसार क्यों नहीं बसाते ? क्या कठिनाइयाँ हैं हमारे सामने ?

वर्तमान युग के विचारकों का मत है कि इस दिशा में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि मनुष्य ने अपने आप पर विजय नहीं पायी है । मानव ने अपनी बुद्धि का उपयोग कर प्रकृति पर आशातीत विजय प्राप्त की है। अत्यंत प्रचंड प्राकृतिक शक्तियों और विपुल प्राकृतिक साधनों को उसने अपने वश में कर लिया है, इसके लिए वह बधाई का पात्र है, लेकिन मानव समाज में भाँति-भाँति के संघर्ष और मनुष्य जाति को सदा के लिए मिटा देने वाली युद्ध की विभीषिका इस सत्य के भी द्योतक हैं कि मानव अभी तक अपने आप पर विजयी नहीं हुआ है । प्रकृति पर मानव की विजय अत्यन्त प्रशंसनीय है, लेकिन प्रशंसा के लिए और इस विजय का अपने सुख और समृद्धि के लिए उपयोग करने के हेतु यह परमावश्यक है कि मानव जीवित रहे । यदि हमारे युग के मानव ने परमाणु बम और हाइड्रोजन बम जैसे महाविनाशकारी शस्त्रों से मनुष्य जाति का अन्त कर दिया तो शताब्दियों के अखंड महायज्ञ द्वारा प्राप्त अनुसन्धानों का उपभोग कौन करेगा ?

क्या शताब्दियों के इस मानवी परिश्रम को हम खाक में मिला देंगे ? क्या कहेंगी उन मृत मानवों की आत्माएँ जिन्होंने अपने अध्यवसाय से प्रकृति पर विजय पा हमारी सेवा में प्रकृति के विपुल ऐश्वर्य प्रस्तुत किये ? क्या कहेगा वह परम पिता जगदीश्वर जिसने अपनी ही प्रतिमूर्ति में मानव को गढ़ा । नहीं, नहीं, हम मानव जाति को समाप्त न होने देंगे । हमारे ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी है । जिम्मेदारी के साथ ही एक अपूर्व अवसर । वास्तव में स्वर्ण अवसर है एक नये युग के निर्माण के लिए । हमें अपने युग की महान् चुनौती को समझना चाहिए। हमें इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए । `` चुनौती है स्वयं पर विजय पाने की । यह काल्पनिक चुनौती नहीं है । यह स्पष्ट दिखायी दे रहा है कि यदि मानव ने स्वयं पर विजय न पायी तो यह परम सुहावनी वसुन्धरा मनुष्य जाति समेत रसातल को चली जावेगी।

यह स्पष्ट रूप से बतलाना कि मानव स्वयं पर विजय कैसे पावे आसान बात नहीं है; लेकिन कुछ बातें स्पष्ट हैं जिनसे गन्तव्य की दिशा दिखायी देती है—मार्ग हमें निर्माण करना होगा। परम प्राचीन भारतीय संस्कृति अपने पुण्य प्रताप के कारण आज तक जीवित है। वह मानव को, इस युग के मानव को, एक संदेश देना चाहती है। जाति के उत्थान में भारतीय संस्कृति ने पूर्ण सहयोग दिया है। आज भी भारतीय संस्कृति मानव की सेवा के लिए प्रस्तुत ही नहीं अधीर है। इस गौरव-शालिनी संस्कृति में ईसा के भी हजारों वर्ष पहले से योगिराज शिव की पूजा हो रही है। योगिराज शिव की प्रतिमा हर युग के मानव को संदेश दे रही है कि दूसरों पर नहीं स्वयं पर शासन करना सीखो; दूसरों पर नहीं स्वयं पर राज्य करना सीखो, अपने आप पर विजय प्राप्त करो। हमारे अवतारों और ऋषि महर्षियों ने भी मानव को यही संदेश दिया है। संसार के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक ग्रंथ भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण के सारे उपदेशों का यही निचोड़ है। जहाँ तक हम भारतीयों ने इसे समझा है स्वयं पर विजय प्राप्त करने का अर्थ है दानवता पर विजय पाना; मानवी और दैवी गुणों के अनुसार आचरण करना। दानवता के लक्षण हैं वैमनस्य, द्वेष और विध्वंस। मानवी और दैवी गुण हैं स्नेह, मैत्री और सृजन। स्वयं पर विजय प्राप्त करने का अर्थ है अपनी इच्छाओं और वासनाओं को वश में कर विश्व-कल्याण और मानव प्रगति के लिए सतत प्रयत्न करना। स्वयं पर विजय पाने का अर्थ है अपने स्वार्थों से परे उठ जन—हित और लोक—कल्याण के कार्य करना। स्वयं पर विजय पाने का अर्थ है समस्त मानवों की समस्त बुद्धि और प्रतिभा का उपयोग कर मानव जाति का जीवन सुखी बनाना। जब संपूर्ण मानव जाति की पार्थिव आवश्यक-ताओं की पूर्ति हो सके, निसर्ग तथा पृथ्वी की विपुल संपत्ति का समुचित उपयोग मानव को सुखी बनाने में किया जा सके, सभी प्रकार के भेद—वर्ण, धन, पदवी—मिटाकर मानव मात्र एकता और स्नेह के सूत्र में बँध सके तभी मानव स्वयं पर विजय पा चुकने का अपूर्व श्रेय पावेगा।

वर्तमान युग की चुनौती है कि मनुष्य जाति हिल-मिलकर न रहेगी तो ध्वंस का तांडव नृत्य होगा और मनुष्य का नामोनिशान संसार से मिट जावेगा। मानव सभ्यता के प्रारम्भ से आज के मानव ने जो कुछ यश और शक्ति प्राप्त की है वह वास्तव में कुछ भी नहीं है। वर्तमान और भविष्य में उसे इससे कई गुनी अधिक

कीर्ति प्राप्त करना है। हमारी पीढ़ी का यह अपूर्व सौभाग्य है कि मानव के लिए एक परम उज्ज्वल भविष्य के निर्माण का पुण्य कार्य हमें सौंपा गया है। विधि का विधान है कि मनुष्य चराचर का सरताज और विधि की परम श्रेयस्कर सृजनता का श्रेष्ठतम उदाहरण रहे। वर्तमान युग भूतकाल का निचोड़ है तथा भविष्य का लक्षण। हमारा युग मानव इतिहास का परम पुनीत अध्याय है। यदि हम अपने पर विजय पा वर्तमान युग की चुनौती को स्वीकार कर विश्व के कल्याण में रत हो सके तो इस अध्याय में हमारे कर्तृत्व और पराक्रम की पुण्य गाथा लिखी जावेगी अन्यथा............!

समाप्त

परिशिष्ट १

कामनवेल्थ पार्लिमेन्टरी एसोसियेशन के विधान की मुख्य बातें—

१ नाम—

इस संस्था का नाम कामनवेल्थ पार्लमेंटरी एसोसियेशन होगा ।

२ उद्देश्य—

कामनवेल्थ के देशों में, जहाँ पार्लमेंटरी ढंग की सरकारें हैं, पारस्परिक स्नेह और सहयोग बढ़ाना इस संस्था का उद्देश्य है। विचारों के आदान-प्रदान, दर्शकों के आवागमन तथा परिषदों के आयोजन द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति करने का प्रयत्न किया जावेगा। इन्हीं उपायों द्वारा कामनवेल्थ के बाहर के उन देशों के बीच जिनकी राजनैतिक विचार-धारा कामनवेल्थ की विचार-धारा से मिलती-जुलती और जिनकी सरकारें पार्लमेंटरी ढंग की होंगी उनके बीच भी स्नेह और सहयोग बढ़ाना इस संस्था का कार्य होगा ।

३ प्रधान कार्यालय—

कामनवेल्थ पार्लमेंटरी एसोसियेशन का प्रधान कार्यालय लन्दन या कामनवेल्थ के भीतर किसी ऐसे स्थान में होगा जो जनरल कौंसिल द्वारा निश्चय किया जाय ।

४ गठन—

इस संस्था का गठन तीन तरह से होगा—

क—ब्रिटेन और कामनवेल्थ के पूर्ण स्वतंत्र देशों की राष्ट्रीय धारा-सभा की ओर से ।

ख—उपर्युक्त देशों की प्रांतीय धारा-सभाओं की ओर से ।

ग—कामनवेल्थ के अन्य देशों की धारा-सभाओं की ओर से ।

५ सदस्यता—

क—४ में बतायी हुई धारा-सभाओं के सदस्य पार्लमेंटरी एसोसियेशन के सदस्य बन सकते हैं ।

ख—उपर्युक्त धारा-सभाओं के भूतपूर्व सदस्य पार्लमेंटरी एसोसियेशन के ऑनरेरी या एसोसियेट सदस्य बन सकते हैं ।

ग—जिन देशों में एसोसियेशन की शाखा है उनमें भ्रमण के लिये आये हुए अन्य देशों की शाखाओं के सदस्य भ्रमण के देश में साधारणतया तीन माह तक एसोसियेशन के सदस्य माने जावेंगे ।

६ शाखाओं के पदाधिकारी—

क—जब तक इसके विपरीत कोई निर्णय न हो, धारा-सभा का सभापति एसोसियेशन की शाखा का अवैतनिक सभापति होगा।

ख—विपरीत निर्णय न होने पर, धारा-सभा के मुख्य राजनैतिक दलों के नेता उप-सभापति रहेंगे।

ग—विपरीत निर्णय न होने पर, धारा-सभा का मंत्री एसोशियेशन की शाखा का मंत्री रहेगा।

घ—प्रत्येक शाखा का कार्य एक कार्य-कारिणी समिति चलायेगी। यह समिति अपना सभापति और आवश्यकतानुसार अन्य पदाधिकारी चुनेगी। प्रत्येक शाखा अपने लिए ऐसे नियम बना सकेगी जो पार्लमेंटरी एसोसियेशन के विधान के विपरीत न हों। अपनी सदस्यता का शुल्क भी प्रत्येक शाखा निर्धारित करेगी। प्रत्येक शाखा अपनी पूर्ण नियमावली एसोसियेशन के सेक्रेटरी-जनरल के पास भेजेगी।

७ सदस्यों के अधिकार—

क—जिन देशों में एसोसियेशन की शाखायें हैं उनमें आने वाले विदेशी सदस्यों को भ्रमण, मुलाकात इत्यादि की पूर्ण सुविधायें प्रदान करने का जिम्मा स्थानीय शाखा का होगा।

ख—विदेश-यात्रा संबन्धी सुविधा प्राप्त करने के लिए प्रत्येक शाखा के मंत्री रेल, स्टीमर और हवाई जहाजों की कंपनियों से लिखा-पढ़ी कर विदेशी सदस्यों की पूरी मदद करेंगे।

ग—प्रत्येक सदस्य को 'जर्नल आफ दी पार्लमेंट्स ऑफ़ दी कामनवेल्थ', 'समरी ऑफ़ कांग्रेसनल प्रोसीडिंग्स', '(यू. एस. ए.)' नामक पत्रिकाएँ तथा एसोसियेशन द्वारा प्रकाशित अन्य पत्रिकाएँ नियमपूर्वक भेजी जावेंगी।

घ—भ्रमण के लिए आये हुए विदेशी सदस्यों को स्थानीय धारा-सभा में लाबी और गैलरी में जाकर वाद-विवाद सुनने तथा धारा-सभा के सदस्यों से मुलाकात करने की पूरी सुविधा प्रदान की जावेगी।

ङ—सेक्रेटरी-जनरल तथा प्रत्येक शाखा के मंत्री एसोसियेशन के सदस्यों को इच्छित विषयों पर विशेष जानकारी प्राप्त कराने का पूरा प्रबन्ध करेंगे।

८ कार्यक्रम—

सेक्रेटरी-जनरल के द्वारा एसोसियेशन अपनी शाखाओं के लिए निम्नांकित प्रबन्ध करेगा—

क—कामनवेल्थ पार्लमेंटरी कांफ्रेंस : दो वर्ष में एक बार इस कांफ्रेंस का आयोजन होगा। जो शाखा इस कांफ्रेंस का आमंत्रण देगी उसे सेक्रेटरी-जनरल पूरा सहयोग देकर कांफ्रेंस का प्रबन्ध करेगा।

ख—सेक्रेटरी-जनरल शाखाओं के मंत्रियों के सहयोग से विदेश से आये हुए सदस्यों को स्थानीय सदस्यों से मिलाने और उनके बीच मुलाकातों के प्रबन्ध में पूर्ण सहायता देगा।

ग—सेक्रेटरी-जनरल एसोसियेशन की सभी शाखाओं को उचित सहायता देकर सदस्यों के अध्ययन संघ (Study Group) बनाने का प्रबन्ध करेगा। इन सदस्यों को इच्छित विषयों पर सब प्रकार की जानकारी प्राप्त कराने में मदद देकर विदेशी नीति, आर्थिक सहयोग, रक्षा आदि परस्पर दिलचस्पी के विषयों के अध्ययन में सेक्रेटरी-जनरल सब प्रकार की सहायता देगा।

घ—सदस्य देशों की पार्लमेंट के सदस्यों के बीच अधिकाधिक संपर्क और सहयोग बढ़ाने के लिये एसोसियेशन की सारी शक्तियों का पूरा उपयोग किया जायगा।

परिशिष्ट २

कामनवेल्थ पार्लमेंटरी कान्फ्रेंस के न्यूजीलैंड अधिवेशन में आये हुए विदेशी प्रतिनिधियों के नाम:—

यूनाइटेड किंगडम

क

ब्रिटेन

१ राइट आनरेबुल एलक्जेंडर, वाइकाउन्ट आफ हिल्सबरो, सी० एच० (लेबर पार्टी) प्रतिनिधि-मंडल के नेता

२ राइट आनरेबुल विलियम शेफर्ड मॉरीसन, एम० सी०, के० सी०, एम० पी० (कंजरवेटिव पार्टी)

३ राइट आनरेबुल लार्ड ल्यूलिन, सी० बी० ई०, एम० सी० (कंजरवेटिव पार्टी)

४ राइट आनरेबुल लार्ड विलमाट, जे० पी० (लेबर पार्टी)

५ कर्नल एलन गम-डंकन, एम० सी०, एम० पी० (कंजरवेटिव पार्टी)

६ ब्रिगेडियर सर जार्ज स्टीवन हार्वेवट, के० सी०, एम० पी०, (कंजरवेटिव पार्टी)

७ मिस्टर एन्टनी रिचर्ड हर्ड, एम० पी० (कंजरवेटिव पार्टी)

८ मिस्टर डेविड टॉमस जोन्स, एम० पी० (लेबर पार्टी)

९ मिस्टर गिलबर्ट मैकालिस्टर, एम० पी० (लेबर पार्टी)

१० मिस्टर टॉमस स्टील, एम० पी० (लेबर पार्टी)

११ मेजर फ्रेडरिक जॉन वाइज, एम० पी० (लेबर पार्टी)

उत्तरी आयरलैंड पार्लमेंट

—कैपटेन दी राइट आनरेबुल सर नार्मन स्ट्रोंज, एम० सी०, एम० पी० (यूनियनिस्ट)

—मेजर जार्ज टॉमसन, डी० एस० ओ०

आइल आफ् मेन पार्लमेंट

—लेफ्टिनेंट-कमान्डर जॉन लिडसे क्विन (इन्डिपेंडेंट)

ख केनेडा

केनेडियन पार्लमेंट

१ सीनेटर दी आनरेबुल आर्थर वेंटवर्थ रयूबैंक, के० सी० (लिबरल पार्टी)
२ मिस्टर लुई रेने ब्यूडौन, एम० पी० (लिबरल पार्टी)
३ मिस्टर विलियम ब्राइस, एम० पी० (सी० सी० एफ़० पार्टी)
४ मिस्टर जॉन जार्ज डीफ़ेनबेकर, के०सी०,एम०पी० (प्रोग्रेसिव कंजरवेटिव पार्टी)
५ मिस्टर जार्ज टेलर फुलफोर्ड, एम० पी० (लिबरल पार्टी)
६ मिस्टर जॉन वाटसन मैकनॉट, के० सी०, एम० पी० (लिबरल पार्टी)
७ मिस्टर लेआनू जे० रेमन्ड, ओ० बी० ई०

प्राविंशियल पार्लमेंट्स

क्यूबेक

—मिस्टर डेनियल जॉनसन, के० सी०, एम० एल० ए०, (यूनियन नेशनल पार्टी)

मेनीटोबा

—आनरेबुल चार्ल्स ई० ग्रीनले, एम० एल० ए० (प्रोग्रेसिव कंजरवेटिव पार्टी)

ब्रिटिश कोलम्बिया

—आनरेबुल हर्बर्ट एन्सकोम्ब, एम० एल० ए० (प्रोग्रेसिव कंजरवेटिव)

ससकेच्वान

—आनरेबुल टॉम जॉन्सटन, एम० एल० ए०

न्यूफाउन्डलैंड

—आनरेबुल आर० एस० स्पार्कस्, एम० एच० ए० (लिबरल पार्टी)

ग आस्ट्रेलिया

कामनवेल्थ पार्लमेंट

१ आनरेबुल हैरल्ड ई० होल्ट, एम० पी० (लिबरल पार्टी)
२ लेफ्टिनेंट कर्नल जार्ज जेम्स बोडेन, एम० सी०, एम० पी० (कन्ट्री पार्टी)
३ मिस्टर विलियम फ्रेडरिक एडमन्ड्स, एम० पी०, (लेबर पार्टी)

४ मिस्टर जोसेफ फ्रॅसिस फ़िटजेरल्ड, एम० पी० (लेबर पार्टी)
५ मिस्टर गार्डन फ्रीथ, एम० पी० (लिबरल पार्टी)
६ मिस्टर डेविड ऑलीवर वाटकिन्स, एम० पी० (लेबर पार्टी)
७ सीनेटर रेजीनाल्ड चार्ल्स राइट (लिबरल पार्टी)

स्टेट पार्लमेंट्स

न्यू साउथ वेल्स
—आनरेबुल मॉरिस ओसलीवन, एम० एल० ए० (लेबर पार्टी)
—आनरेबुल राय स्टेनले विन्सेन्ट, एम० एल० ए० (कन्ट्री पार्टी)

विक्टोरिया
—आनरेबुल लेसली विलियम गेलब्रिन, एम० एल० ए०

क्वीन्सलैंड
—आनरेबुल विन्सेन्ट क्लेअर गॉयर, एम० एल० ए०

साउथ आस्ट्रेलिया
—आनरेबुल एलेक्जेंडर लायल मेकईविन, एम०एल०सी० (लिबरल एन्ड कन्ट्री पार्टी)

वेस्टर्न आस्ट्रेलिया
—आनरेबुल गिलबर्ट फ्रेजर, एम० एल० सी० (लेबर पार्टी)

तसमानिया
—आनरेबुल ऐरिक ईलियट रीस, एम० एच० ए० (लेबर पार्टी)

घ यूनियन आफ साउथ आफ्रिका

१ आनरेबुल विलफर्ड मायर वेन कोलर, जे० पी०, एम० पी० (यूनाइटेड पार्टी) प्रतिनिधि मंडल के नेता
२ सीनेटर दी आनरेबुल जॉन अर्थी
३ मिस्टर जार्ज जेम्स सटर, जे० पी०, एम० पी० (यूनाइटेड पार्टी)
४ डाक्टर पीटर्स जोहन वेन नाइरॉप, एम० पी० (नेशनल पार्टी)
५ मिस्टर जे० एफ़० नॉल

ङ भारत

१ सेठ गोविन्ददास, एम० पी० (कांग्रेस, मध्यप्रदेश) प्रतिनिधि-मंडल के नेता
२ श्री आर० के० सिधवा, एम० पी० (कांग्रेस, मध्यप्रदेश)

३ श्री देवकांत बरुआ, एम० पी० (कांग्रेस, आसाम)

४ श्री चीमनलाल चाकूभाई शाह, एम० पी० (कांग्रेस, सौराष्ट्र)

५ श्री आर० वेंकटरमन (कांग्रेस, मद्रास)

ख

पाकिस्तान

पाकिस्तान विधान परिषद्

१ आनरेबुल मिस्टर तमीजुद्दीन खान, एम० सी० ए०, प्रतिनिधि-मंडल के नेता

२ हिज एक्सेलेंसी डाक्टर दी आनरेबुल उमर हयात मलिक, एम० सी० ए०

३ श्री श्रीशचन्द्र चट्टोपाध्याय, एम० सी० ए०

४ आनरेबुल मिस्टर मोहम्मद हाशिम गजदर, एम० सी० ए०

५ मिस्टर एस० बी० अहमद

पाकिस्तान प्राविंशियल लेजिस्लेचर

पूर्वी बंगाल

—मिस्टर ख्वाजा नसीरुल्ला, एम० एल० ए०

छ

लंका

१ आनरेबुल सर फ्रेंसिस मोलामूर, के० बी० ई०, एम० पी० (यूनाइटेड नेशनल पार्टी)

२ आनरेबुल मिस्टर जी० जी० पुनाम्बलम, के० सी०, एम० पी० (लीडर तामिल कांग्रेस पार्टी)

३ सीनेटर डाक्टर दी आनरेबुल ललिता अभय राजपाक्से (यूनाइटेड नेशनल पार्टी)

४ मिस्टर रॉफ सेन्ट लुई प्येरीस डेरानीयागला, एम० बी० ई०

ज

दक्षिण रोडेशिया

—मिस्टर रेमन्ड आसबोर्न स्टाकिल, एम० पी० (लिबरल पार्टी)

झ

जमैका

—आनरेबुल डानेल्ड बर्न्स सेंगस्टर, एम० एच० आर० (लेबर)

ञ

बरमूडा

—मेजर गिलबर्ट एलेक्जेन्डर कूपर, एम० एच० ए०

त **बारबाडोस**

—मिस्टर एफ़० ई० सी० बेथेल, एम० एच० ए०

थ **बहामा**

—मिस्टर चार्ल्स वाल्टर फ्रेडरिक बेथेल, एम० एच० ए०

द **गोल्ड कोस्ट**

—आनरेबुल ई० ओ० ओबेटसेबी लेम्पटे, एम० एल० सी०

ध **ब्रिटिश गायना**

—आनरेबुल जॉन फरनेन्डीज़, एम० एल० सी०

न **मारीशस**

—डाक्टर दी आनरेबुल चार्ल्स एडगर मिलियेन, एम० एल० सी०, एम० डी०

प **उत्तरी रोडेशिया**

—लेफ्टिनेंट-कर्नल सर स्टीवर्ट गोर-ब्राउन, डी०एस०ओ०, एम०एल०सी०

फ **सिंगापुर**

—आनरेबुल पीटर फ्रेंसिस डीसूजा, एम० एल० सी०

ब **ब्रिटिश होन्डूरास**

—आनरेबुल मिस्टर वोल्डरिच हैरीसन, ओ० बी० ई०, एम० एल० सी०

भ **विन्डवर्ड द्वीप**

—आनरेबुल ए० एम० लेविस, एम० एल० सी०

म **नाइजीरिया**

—आनरेबुल अलवन इकोकू, ओ० बी० ई०, एम० एल० सी०

य **फ़ेडरेशन ऑफ़ मलाया**

—आनरेबुल दातोनिक अहमद बिन हाजी महमूद कामिल, डी० के०, सी० बी० ई०, एम० एल० सी०